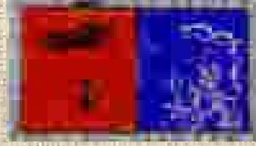
ISSN 2229-547X

'विदेह' ३५१ म अंक ०१ अगस्त २०२२ (वर्ष १५ मास १७६ अंक ३५१)

(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha e-Learning

Gajendra Thakur



ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रतिएवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।
(c) २०००- २०२२। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
(c)२०००- २०२२। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.
रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).
ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

Videha e-Journal: Issue No. 351 at www.videha.co.in

अनुक्रम

२.८. गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली (खण्ड १-४) (पृ. ४६४-५२५)



२. गद्य

निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (धारावाहिक उपन्यास)

तेसर खेप

पूर्व कथा - पूर्णिमाक दिन उर्वशी सँ मिलन होयबाक सन्देश रम्भाक मुख सँ सुनि पुरुरवा प्रसन्न भय जाइत छथि ।

आब आगाँक कथाक अवलोकन करु ।

नील अनन्त आकाशक प्राँगण मे पूर्णिमाक चाँद अपन पूर्ण ज्योत्स्ना पसारने सुशोभित छल । शुभ्र चाँदनी समस्त पृथ्वीक आँचर पर अपन शुभ्र आलोक पूर्ण सहृदयता सँऽ दान करैत छल तारा झुण्ड बान्हि दीवालिक दीप सन झलमल झलमल कऽ अपन प्रसन्नता देखबैत उत्फुल्ल मगन भय विचरण करैत रहैथ । अनन्त आकाश मे उत्फुल्ल रजनीश छटा देखि रजनी सेहो प्रेम मे मगन छली । रजनी अपन प्रियतम रजनीशक मुस्कान पर विमुग्ध प्रेम रस मे ऊब डूब होइत अपनों के बिसराइत अपन प्रसन्नता सम्पूर्ण जगत पर उदारता सँ पसारने जाइत छलैथि । मुदा एक प्राणी एहनो छलथि जिनका पर एहि प्रसन्नताक कनियों धरि प्रभाव नहि परल रहैन्ह। ओ मोनेमोन कानैत छलैथ । रजनी अपन प्रियतम सँग विंहसैत छली मुदा ओ प्राण रजनीक हँसीक चोट सँऽ तरपैत छलाह । रजनीक उत्फुल्लता प्रसन्नता ओहि प्राणीक नस नस मे काँट सन चुभईत छल । ओ प्राणी छलैथ पुरुरवा जे एहि पूर्णिमाक राति अपन प्रेयसीक प्रतीक्षा सरस्वती नदीक कछार पर सन्ध्या काल सँऽ करैत आब प्रायः निराश हताश भय गेल छलाह । अपन प्रेयसीक विरह दुःख हुनका दुनू आँखि सँऽ अविरल

बहैत जाइत छल। रजनी-रजनीशक मिलन हुनक प्रेम विदग्ध हृदय के सुनगैत चिनगारी के लपलपाइत ज्वाला बना देने छल। ओ आब पूर्ण निराश भय गेल छलाह।

हठात मधुर सँगीत ध्वनि पवन सँग लहराईत हुनका कर्णगोचर भेलैन्ह। करुण रस सँ ओत प्रोत ओ ध्वनि पुरुर्वाक ध्यान अपना दिशि आकर्षित कयलक।

नदीक ओहि पार मधुर स्वर मे गायन एवँ लास्य मुद्रा मे उर्वशी देखेलैथि। शीतल मन्द मलयानिल के सुगन्ध सँ पुरुरवा अभिभूत भऽ गेलाह। उर्वशी निकट उपस्थित भय गेलीह,दुनूक दृष्टि मिलल। किछु काल धरि दुनू ओहिना निःशब्द ठाढ़ रहलैथ।

कने काल धरि दुनू गोटे निःशब्द ठाढ़ रहलैथ फेर पुरुरवा अपन दुनू बाँहि पसारने दउरलैथ आ उर्वशी के आलिंगन बद्ध कय लेलैथ। उर्वशी सेहो हुनका सँ आबद्ध अपन सुधि-बुधि बिसरि गेलैथ। कतेको काल धरी दुनू प्राणी अहिना एक दोसर सँ आबद्ध अपन आँखि मुनने कल्पना लोक मे विचरण करैत रहलाह। प्रथमतः उर्वशी मौन भङ्ग केलैथ।

उर्वशी- "प्रिये अहाँ एतेक अधीर कियेक होइत छी"?

पुरुरवा- "ई अहाँ हमरा सँऽ नहि अपन हृदय सँ पुछू उर्वशी"।

उर्वशी- "अहाँ के एना हमरा लेल उन्मत्त भेनाइ उचित नहि किछु चिंता अपन प्रजा जन के सेहो करु"।

पुरुरवा- "हमरा सँ आब हमर अपन चिंता कएल नहि होइत अछि तऽ प्रजाक चिन्ता कोना क भऽ सकत"?

"ई बात त अहाँक नीक नहि कहल जायत"|

"हम आब नीक वा अधलाह किछु नहि बुझैत छी, हमरा मात्र अहाँ सँ मतलब अछि प्रिये"|

"स्त्रीक प्रेम स्वार्थमय होइत अछि, ताहि सँ ओ विश्वसनीय नहीं अछि"|

"होइत हेतीह मुदा हम अहाँ के एहन नहि बुझैत छी । अहाँ हमरा लेल सर्वदा विनीता आ कर्त्तव्य परायणा पत्नीक रूप मे रहलहुँ"|

"प्रिये हम कर्त्तव्य बन्धन मे बन्हाइल इन्द्रक हाथक एकटा खिलौना मात्र छी"|

हम बुझैत छी प्रिये, मुदा अहाँ स्वर्ग के ठोकर मारि हमरा लँग आबि त सकैत छी"?

"नहि प्रिये इहो असभव अछि विधाता हमर रचना स्वर्ग मे रहवा लेल केलैथि अहन पूजा पथ एवं पुण्य कार्य कय स्वर्ग प्राप्त कय सकैत छी । तखनि अहाँ के हमरो प्राप्त कय सकैत छी । मुदा हमरा पृथ्वी पर आबि प्रेम करवाक अधिकार नहि अछि" |

"एहेन बात नहि बाजू प्रिये, की आब हम सतत अहाँक विरहानल मे जरैत रहब"?

"हँ हमर अहाँक प्रेमक यैह भवितव्य अछि । ल पृथ्वी आ स्वर्गक मिलन असम्भव थिक । पृथ्वी वासी चाहैथ तऽ ओ अपन पुण्य सँचित

कय किछु दिनक वास्ते स्वर्ग जा सकैत छैथ । मुदा पुनः पुण्य क्षय भेलाक पश्चात् हुनका पृथ्वी पर वापस पठाओल जाइत अछि । स्वर्ग सँऽ इन्द्रक आदेश पर लोक कल्याण हेतू कोनो देवता अथवा हमहुँ आबि सकैत छी। परञ्च ई एनाइ गेनाइ इन्द्रक इच्छा पर निर्भर अछि"| हम अथवा की कोनो अन्य देवता एहि लेल स्वतन्त्र नहि छी"|

एकर अर्थ भेल जे अहाँ एखनहुँ इन्द्रक इचछा सँ हमरा लंग ऐलहुँ अछि"|

कतेक अनुनय विनय केलाक उपरान्त हमरा अहाँ सँ भेँट करवाक अनुमति भेटल अछि"|

"आब फेर हम कथि करु अहीं बताऊ प्रिये अहाँ बिनु हम जीवित नहि रहि पायेब"|

"अहाँ धैर्य धारण करु प्रियतम । धर्म पूर्वक राज्य सञ्चालन करु जाहि सँ पुनः धर्म सञ्चित भेला उपरान्त अहाँ के स्वर्गक प्राप्ति होयत आ पुनः अपन सभक मिलन होयत एकर अतिरिक्त अन्य कोनो विधि नहि अछि अपन सभक मिलन केर"|

पुरुरवा ऊर्वशीक जघन स्थल पर अपन मस्तक राखि ओतहि विश्रामक मुद्रा मे लेट गेलथि आ हुनक अपन हाथ मे लैत कहय लागलखिन -

"उर्वशी अहाँ हमरा छोड़ि कऽ नहि जाऊ । हमर करुण दशा पर दृष्टिपात तऽ करू आ हमर विनती पर ध्यान दिय प्रिये । हम अहाँक विरह मे विदग्ध भेल रहलहुँ एतेक दिन" ।

ओह राजन अहाँ कनिक राखु । अहाँ बुझू हमर बात । हमर सीमा निर्धारित अछि । अहाँक ई शरीर क्षण भङ्गुर अछि, आ हम अमर्त्य थिकहुँ । सँसार मे सभ जीवक रचना ईश्वर कें द्वारा एक विशेष कार्यक पूर्ति हेतु कएल जाइत अछि । एक क्षणिक भावनाक उद्वेग मे हम अहाँकेँ अपन हृदय समर्पित कय देलहुँ । परंच विधि रचल लेख छल जे भरत मुनिक कृपा सँ सम्पन्न भेल । अहाँ एतबहि मे अपना के संतुष्ट मानू । स्वर्ग-धरा सँऽ किन्नहु प्रेम नहि कय सकैत अछि । एहि दूनुक मेल नहि भय सकैत अछि कदापि नहि"|

"ओह उर्वशी छोड़ू एहि सभ बात के हमरा प्रेम पयोधि मे अपना कें विस्मृत करय दिय"|

हाँ प्रियतम ई पूर्ण चन्द्रक धवल रात्रि मे अपन दुःख बिसरि प्रकृतिक सँग अपनाकेँ एकाकार करवाक समय अछि ।

प्रेम-मिलन प्रकृतिक सानिध्य मे अलौकिक होयत एकर कोनो उपमा सम्भव नहि अछि"|

दुनू प्राणी प्राणी प्रेमक आवेग मे एकदोसर सँऽ आबद्ध विस्मृत भेल कतेको काल धरि रहलाह ।

रजनी पृथ्वीक आलिंगन कय कखनि प्रस्थान केलीह ज्ञात नहि भेलनि । जखनि उषा रानीक लज्जा जनित रक्ताभ कपोलक दर्शन प्राचीक प्राँगण मे होमय लागल तखनि अलसायल आँखि हठात फुजि गेल । ओ उठि कय अपन चारू कात दृष्टिपात केलैथ मुदा आश्रय उर्वशी कतहु नहि भेटलखिन । ओह उर्वशी के नहि पाबि ओ पुनः दुःखी

भय गेलाह । किछु आगू बालुका राशि पर हुनका किछु सन्देश लिखल देखेलैंह । ई देखि ओ प्रसन्न भय गेलाह । लिखल छल -

"आब पुनः एक वर्ष बाद अपन सभक मिलन होयत परञ्च एतय नहि, अपन मिलन होयत "कुरुक्षेत्र" मे दिन रहत पूर्णिमाक । एतेक दिनक उपयोग अपन बीतल समय कैँ स्मरण करैत करब अहींक उर्वशी ...."|

(अनुवर्तते)

(पाठकक सुविधा लेल पूर्वमे ई-प्रकाशित भाग-१ आ २ सेहो नीचाँ देल जा रहल अछि- सम्पादक)

पहिल खेप

वसुधाक हरिताभ आँचर अनेकों आकर, प्रकार, रँग, बिरंगक पुष्पसँऽ सज्जित देखनिहारके विमुग्ध करैत छल । विशाल वृक्ष एवँ लतागुल्मसँ आच्छादित गन्धमादन पर्वतपर स्थित कुमार वनक शोभा ओहुना अद्वितीय छल ताहिपर चन्दनक दीर्घाकार वृक्षक सुगन्धि अलौकिक स्वर्गीय आनंदक अनुभूति करबैत छल । समीपस्थ पर्वतसँ कलकल निनाद करैत वेगसँ उतरैत झरना अपन मधुर संगीतमय आवाजसँ वातावरणके विलक्षणता प्रदान करैत छल । किछुए दूरपर ब्रह्मपुत्र नदीक उद्गम स्थल छल जे आगू गेलाक बाद विशाल जलधारामे परिवर्तित भऽ गेल छल, ओकर दुग्ध-धवल फेनिल जल क्षीरसागरक भ्रान्ति उत्पन्न करइत छल ।

ओहि नदीक तटपर एक गोट पुरुष बहुत कालसँ अन्यमनस्क सन बैसल छल । एहेन निर्जन स्थानमे ई के थिक? की कोनो योगी? सामान्य जन एहेन निर्जन प्रान्तमे कोन प्रयोजन सऽ अछि । ओ कखनो-कखनो एकटा प्रस्तरक छोट-छोट-खण्ड उठा नदीक पाइनमे फेंकय आ पाइनमे उठल लहरि देखिविंहसै, पुनः गम्भीरताक आवरण ओकर मुख-मण्डलपर व्याप्त भय जाई ।

ओकर अस्त-व्यस्त केश गुच्छ बढ़ि कऽ जटाक रूप लय लेने छल । दाढ़ी एवँ मोछ सेहो बढ़ि कऽ साधु सन बुझना जाइत छल । शरीरक वस्त्र जीर्ण-शीर्ण मलिन अवस्थामे ओहि पुरुषक दुर्भाग्यक गाथा सुनबैत छल । आब ओ पुरुष कंकड़ फेंकि फेंकि श्रान्त भय गेल, तखनि ओ हठात पाइनमे उतरि गेल आ अपन दुनू हाथें पाइनके उछालैत पहिले विहुँसल ......फेर हँसल........ हँसैत चलि गेल । ओकर हँसी अब भयङ्कर अटटहासमे परिवर्तित भय गेल छल ।

हँसैत-हँसैत ओ पुरुष नदीसँ बाहर निकलि तीतले कपड़ामे एक दिशामे दौड़ गेल । ओकरा देखि प्रतीत होइत छल जेना ओकरा चिरकालसँऽ कोनो प्रियजनक प्रतीक्षा छल जेकर आवक सन्देश सुनि ओ स्वागतमे प्रेम-विह्वल भय मिलन हेतु भागल जाइत होय । कतेको काल धरि ओ ओहि वनप्रान्तमे अपसियांत भऽ दौड़ैत रहल आ फेर एक प्रस्तरशिला सँऽ चोटिल भय तृणच्छादित भूमिपर खसि परल । कतेको देरतक ओ भू-लुंठित रहल । संभवतः ओ चेतना हीन भय गेल छल ।

मन्थर गतिसँ बहैत पवन तीव्र-तीव्रसौं तीव्रतर भेल जाइत छल । नभ श्यामवर्णी घनसँ आच्छादित होमय लागल। अनगिनत जलद कुमार नभमे विचरण करय लागल । ओ जलद कुमार सूर्यदेवसँग नुका-छुपी

खेलय लागल । आप सूर्यदेवके एहि चञ्चल कुमारसँ हारि-मानि नुकय परलैन । सूर्यदेवके नुकाइते वातावरणमे पूर्ण अन्धकार परिव्याप्त भय गेल ।

पहिले पृथ्वीक आँचरपर गुलाब जलसँ पाइनक फुहार पड़ल....... फेर मोट-मोट जलकण खसल एकर बाद मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ भय गेल । सम्पूर्ण वनप्रान्त जलप्लावित होमय लागल ।

एतेक बर्षा जलसौं प्लावित होइतो ओ भूलुंठित पुरुष ओहिना भूमिपर परल रहल । बुझाइत छल जेना ओ चिरनिद्रामे लीन होय । आब वर्षा प्रायःसमाप्तिपर छल परञ्च ओहि पुरुषक शरीरपर वृक्षक पातसँऽ खसि-खसि एखनो वर्षाक जल-पतन चलि रहल छल ।

हठात ओहि पुरुषक आँखि फुजल ओ किछु क्षण भूमिपर ओहि मुद्रामे रहितहि अपन चारु दिशि आश्चर्यसौं देखलक फेर ओ उठि कऽ ठाढ़ भेल । ओ विकल भय करुण विलाप करय लागल । ओकर विलापक मध्य किछु अस्पष्ट ध्वनि मुँहसँ बाहर ओहि जन-शून्य वातावरणमे पसरैत रहल । - "हाप्रिये | अहाँ कतऽ चलि गेलहुँ, अहाँ कियेक हमरा छोड़ि गेलहुँ । अहाँ घुरिकऽ त आउ कने, देखू अहाँ बिन हमर हाल केहेन भेल अछि । देखू अहाँक प्रतीक्षा करैत-करैत हम पूरा भींजि गेलहुँ । प्रिये अहाँ आबि जाऊ, अहाँ हमरा छोड़ि कऽ नहि जा सकैत छी । अहाँ कतऽ नुकायल छी, हम अहाँके तलाश करैत विकल छी । मुदा हम छोड़ब नहि हम अहाँक तलाश करिये धरि लेब" ।

एहि भाँति विलाप करैत ओ एम्हर-ओम्हर घुमैत आगाँ बढ़ैत रहल बहुत काल धरि । एक गुफाके बाहर राखल एक विशाल प्रस्तर-खण्डपर

ओ बैसि गेल संभवतः आब ओ आर चलबामे असमर्थ छल मुदा ओकर रुदन थमल नहि | चलैत रहल ....चलैत ....रहल ।

(अनुवर्तते)

दोसर खेप

पूर्व कथा - एकगोट व्यथित बेकल पुरुष बरसात मे भिजइत कनैत वन मे जाइत अछि आ एकटा गुफा लग बैसि सिसैक सिसैक कऽ कनैत अछि ।

आब अगिला भाग

कानैत कानैत ओ पुरुष थाकि कऽ निढाल भऽ गेल । आब बनक एकपैरिया रस्ता पर निरुद्देश्य फेर सँ विदा भऽ गेल ।

किछु देर ओहिना भटकैत रहल तखनि ओ एकटा घनगर झाड़ लँग ठाढ़ भऽ गेल । ओहि झारक ओहि पार एकटा पोखरि छल जाहि मे खूब रास कमलक फूल खिलल छल । ओहि पोखरिक स्वच्छ निर्मल जल मे किछु सुन्दर रमणी जलक्रीड़ा मे निमग्न स्नान रत छलैथ । ओ सभ एक दोसरा पर आँजुर मे भरि भरि पाइन फेकैथ संगही अपन सुकोमल गौर वर्ण शरीरक सफाई से हो करैथ । किछु रमणी मधुर स्वर मे गीत सेहो गावैत रहैथ । किछु रमणी स्नान कऽ जल सँऽ बाहर निकलि रहल छलीह हुनक सुकोमल गात, अलौकिक सौंदर्य भरल मुखमण्डल, आ रेशमी श्यामवर्णी कुन्तल राशि कोनो ऋषि मुनिक तपस्या भङ्ग करवा मे पूर्ण सक्षम छल, मुदा ओ युवा पुरुष हुनकर सौंदर्य सँऽ अप्रभावित अन्यमनस्क सन झुरमुटक विवरसौं देखैत रहल, जेना ओकरा ओहि जमघट मे कोनो एक विशेष

व्यक्तित्वक तलाश होइ । ओ पूर्ण शांतचित्त भय अपन खोज पूर्ण दृष्टि ओहि सुन्दरी बाला सभ पर स्थिर केने रहल । ओकर मुखमण्डल पर निराशा व्याप्त होमय लागल । एहन प्रतीत होइत छल ओकर तलाश निष्फल भऽ गेल छल । ओ कुहुकि उठल । दर्द भरल आह ओकर आत्मा सँ बहरायल । ओकर मुखमण्डल पर निराशा व्याप्त भऽ गेल । ओ एक प्रस्तर खण्डक सहारा लय अर्ध निमीलित नेत्र सँऽ एक वन्य पुष्प के निहारैत रहल । ओ नील पुष्प अत्यन्त सुन्दर छल । ओहि पुरुषक मुखमण्डल के देखि बुझाइत छल जेना ओहि पुष्प सँ ओकरा किछु विशेष लगाव होइ । ओहि पुष्प मे ओकरा अपन प्रेयसीक दर्शन होमय लागल । ओकरा बुझना गेलैक जेना ओ पुष्प नहि, नील परिधान धारण केने एक सुन्दर रमणी ओकरा समक्ष आबि गेल होइ । ओ आभासी रमणी युवक के देखि विहँसि उठलीह । युवक अपलक दृष्टि सँऽ निहारैत रहल रमणी के । नील परिधान सँऽ सुशोभित रमणी एना प्रतीत होइत छलैक जेना श्याम घन कानन मे विद्युत् प्रस्फुटित भय गेल होय । कल्पनालोक मे विचरण करैत युवकक मोन अधैर्य होमय लागल । अपन प्रेयसीक अँग प्रत्यङ्गक सुमधुर कल्पना करैत निमग्न भऽ रहल छल । ओ अपन प्रेयसी के अलिंगगनबद्ध करवा हेतु उद्गिन भय अपन दुनू विशाल बाहु पसारने दौड़ परल । ओ प्रमत्त सन दौड़ल जाइत छल मुदा एक शैलखण्ड सँऽ ठोकर लगला सँ ओ भू-लुण्ठित भय गेल | ओकर कल्पनालोक विच्छिन्न भय गेल छल । ओ विक्षिप्त सन विलाप करय लागल - हा प्रिया अहाँ कतऽ चलि गेलहुँ, हमरा एना छोड़ि क, हम अहाँ बिनु नहि रहि सकैत छी आबि जाऊ। विरह वेदना सँऽ व्याकुल ओ पुनः उठल मुदा अपना के सम्हारि नहि सकल, मूर्छित भय भू लुण्ठित भय गेल । ओहि युवक के विलाप दूर तक गुञ्जित भेल छल । पुनः ओकर

खसवाक तीव्र आवाज पोखरि मे जलक्रीड़ा मे निमग्न रमणी सभ कैँ आकर्षित केलक । ओ सभ एक दोसराके प्रश्नपूर्ण दृष्टि सँ देखs लगलीह । बुझाइत अछि कोनो अभागल प्रेम विदग्ध अछि|

एक सुन्दरी कहलैथि । दोसर सखी कहलखिन - तों सभ एतहि रहs हम देखने अबैत छी| देखs सखी विलम्ब नहि करिह, नहि त हमरा सभ के स्वर्ग लोक जाइ मे बहुत विलम्ब भय जायत|

एक अन्य रमणी बाजि उठलीह । नहि नहि हम शीघ्र आयब ता धरि तों सभ प्रतीक्षा करह । कहैत ओ रमणी शब्दक उद्गम दिशा दिशि दौड़ गेलीह । हुनकर दृष्टि चेतनाहीन युवक पर परलैन्ह तs ओ फीरि कsपुनः तालाब दिशि दौड़ गेलीह । सेनजित ओतह एकटा पुरुष चेतनाहीन अवस्था मे छथि, हम कमल पत्र मे जल भरि लs जाइत छी । जलक बून्द ओकरा सचेत करवा मे संभवतः सफल होई| लेकिन तों ओकरा सचेत करवा लेल एतेक प्रयासरत किएक छह रम्भे? तों नहि बुझबह| जीव मात्रक कल्याण केनाइ हमर सबहक अपन परम् कर्त्तव्य हेबाक चाही, हम ई मानैत छी, तों सभ ई बात नहि मानैत छह की? कहैत ओ पाइन लsपुनः दौड़ गेली चेतनाहीन युवक दिस । अई सखी कहीं तोहर मोन सेहो त हमर सभक प्रिय सखी उर्वशी सन कोनो युवक के प्रेमपाश मे आबद्ध नहि भय गेलह? जाइत जाइत रम्भा के ई वाक्य कर्णगोचर भेलैन्ह मुदा ओ बिनु प्रत्युत्तर देनहि भागति भागति ओहि पुरुष के समीप पहुँचलीह आ आँजुर सँ पाइन ल-ल ओकरा मुख पर छींटs लगलीह । ओ युवक के मुख मण्डल के ध्यान पूर्वक देखलीह आ करुणा विगलित भ गेलीह । की प्रेम मे एहेन अवस्था भ जाइत छैक? सहसा युवक के आँखि फुजल आ ओकर दृष्टि रम्भाक मुखमण्डल पर परल । क्षणिक

मुस्कान ओकर मुख पर दृष्टिगोचर भेल, पुनः ओ हरबरायल सन उठि क बैसि गेल आ कहय लागल - नहि नहि अहाँ हमर प्रेयसी नहि थिकहुँ । हम अहाँक विरह मे व्याकुल नहि छी । हम अहाँ के नहि चिन्हैत छी । हमर प्रिया त उर्वशी थिकीह । उर्वशी ....उर्वशी.... उर्वशी ....उर्वशी.... स्वर्गक सभ अप्सरा सँ सुन्दर.....विनीता..... आ ... आ... आ....|

किछु सोचैत युवक पुनः मौन धारण कय लेलक । रम्भाक मुख पर मधुर हास्य प्रस्फुटित भय गेलैन्ह । ओ विहुँसैत बजलीह - ओ..... आब हम चिन्हलहुँ अहाँ पुरूरवा छी, सोमवंशक सूर्य राजा, पुरूरवा|

युवक आश्चर्यचकित भय सुन्दर रमणी के देखलक फेर आदरपूर्वक कहल - हँ देवी, अहाँ ठीके चिन्हलहुँ । मुदा अपनेक सत्कार हेतु एतह हमरा लग किछु सामग्री नहि अछि । तथापि हमर विनम्र आग्रह अछि अपने एहि त्रिणाच्छादित भूमि के आसन ग्रहण करु| रम्भा संकोच पूर्वक ओतहि भूमि पर बैसि रहली । रम्भा किछु छण पुरुर्वाक पुरुषोचित सौंदर्य के विमुग्ध भय देखैत रहली, मुदा पुरुर्वाक दृष्टि हिनका दिसि नहि छलैन्हि । ओ रम्भाक सौंदर्य सँ चुटकियो धरि आकृष्ट नहि भेल छलाह । रम्भा उर्वशीक प्रति पुरुर्वाक अप्रतिम प्रेमक प्रशंसिका भऽ गेलीह, आ मोने मोन ओ उर्वशीक चयन के सेहो प्रशंसा केलथि । स्वर्गलोकक कठोर अनुशासनप्रियता पर हुनका खिन्नता सेहो भेलनि जेहि कारण उर्वशी के पुरुरवा सँऽ दूर होमय परलनि ।

रम्भा उर्वशी आ पुरुर्वाक सम्बन्ध मे सोचैत विचारमग्न छलीह कि पुरूरवा के धीर गम्भीर आवाज सुनि चिंहुकि उठलैथ - अपनेक परिचय सुन्दरी?

मान्यवर हमर नाम रम्भा अछि, हम स्वर्ग लोकक अप्सरा थिकहुँ | हम अपन सखी सबहक सँग कुमार वन मे

स्नान हेतु अयलहुँ अछि|

अच्छा ¡ हमर उर्वशी सेहो आयल छथि की? - प्रसन्नता सँ उताहुल होइत पूछल पुरूरवा ।

-नहि ओ नहि आयल |

रम्भाक सँक्षिप्त उत्तर सँऽ पुरुर्वाक उल्लसित मुखमण्डल पर उदासीक गहन लेपन भऽ गेल । हमर प्रियतमाक की समाचार अछि?

वैह जे अहाँक अछि । भिन्नता एतबहि अछि जे ओ नारी होमय के कारण अपन दुःख केकरो पर प्रकट नहि कऽ सकैत अछि, संगहि स्वर्गक अनुशासन मे निबद्ध नियमपूर्वक सभ काज अन्यमनस्क भय पूरा करैत अछि|

नारीक धैर्य हिमालय सन अडिग होइत अछि । हुनकर अन्तःस्थल मे दुःखक श्रोत प्रस्फुटित भेल होय, विरहाग्नि सँ हुनक हृदय विदग्ध रहनि, मुदा ओ ऊपर सँऽ लज्जाक हिम सँ आच्छादित रहैत छैथ । स्वयं लांक्षणा, प्रतारणा, अपमानक उल्कापात के सहैत जीवन पर्यंत दैवक कठोर अनुशासन मे अचल अडिग रहैत छैथ । रम्भा आ पुरूरवा दुनू उर्वशी के विषय मे सोचि दुखित भ गेलैथ । पुरूरवा तऽ उर्वशीक समाचार पाबि आरो दुःखित भऽ गेलाह, आब हुनका किछु पुछबाक साहस नहि रहलैक ।

मौन भँग करैत रम्भा बाजली - आब अपनेहु प्रेमक ई खेल बन्द करू राजन|

-हम..... हम ... नहि किन्नहु नहि I हमर मोन आब आन कोनो बात मे नहि लागैत अछि I हमर जीवनक उद्देश्य

आब मात्र उर्वशीक प्रेम मे विदग्ध भS हुनकर अनन्त प्रतीक्षा रहि गेल अछि|

रम्भा- ई बात उचित नहि अछि नृप श्रेष्ठ I अहाँ राजा छी, प्रजा पालन प्रमुख कर्तव्य होइत छैक कुशल राजाक|

पुरूरवा- हम आब राज्य सञ्चालन मे असमर्थ भS गेल छी देवी I ई काज आब हम कोनहुना नहि कS सकब|

कहि राजा कनिकाल धरि मौन रहलाह I पुनः किछु स्मरण करैत ओ बाजि उठलाह - आब हमरा उर्वशी सौं पुनः कहिया साक्षात्कार होयत I ओ हमर परित्यागक एक वर्ष पश्चात् पुनः भेंट होयबाक बात कहने रहैथ|

-हाँ राजन आगामी पूर्णिमा के दिन सरस्वती नदीक तट पर ओकरा सँ अहाँक पुनः भेंट होयत|

राजा पुरूरवा एहि सुखद सम्वाद के सुनि अत्यन्त प्रसन्न भेलाह I ओ उपहार स्वरुप रम्भा कैँ किछु देबाक हेतु अपन दृष्टि हुनका दिशि घुमौलाथि, परंतु महान आश्चर्य स्थान रिक्त छल I ओतह मात्र राजा के अन्य कोई प्राणी नहि छलI पुरूरवा विहँसि उठलाह I विहँसैत स्वतः बाजलैथ - ओह ई अप्सरा सभ कतेक विचित्र होइ छथि,

अपन इच्छा भेल तऽ कतहु प्रकट भय जाइत छथि आ फेर अपन मोन होइतहि अदृश्य भऽ जाइत छथि|

(अनुवर्तते)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)-आगाँ

रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)-आगाँ

८

जयन्त जानकी धामसँ कतेको विषयमे पारंगत भए गाम वापस आबि कौलिक मर्यादाक पालन करैत जीवन निर्वाह करए चाहैत छलाह। ओ पाठशाला हुनकर वंशक कै पुस्तसँ चलि रहल छल। तकरे आगा बढ़ेबाक हेतु ओ कालीकान्तक आग्रहकेँ अस्वीकार कए देने छलाह। ओ पाठशालकेँ विकसित कए आधुनिक सुविधा संपन्नक विश्वविद्यालय स्थापना करए चाहैत छलाह जतए आधुनिक विज्ञानसँ लए कए भारतक प्राचीन संसकृतिक ज्ञान जिज्ञासु लोकनिकेँ उपलब्ध हेतनि ।

जयन्त क शारदा कुंजमे शिक्षा-दीक्षा पूर्ण भए गेलनि अछि आ आब ओ अपन मातृभूमि वापस हेताह से समाचार कालीकान्तक कान धरि सेहो पहुँचल। कालीकान्त जयन्तक विद्वताक चर्च बहुत सुनने रहथि आ हुनकर इच्छा रहनि जे ओ हुनकर राज-पाट सम्हारथि।

जखन दूत सभसँ किछु नहि भेल तँ एक दिन कालीकान्त स्वयं चुपचाप जयन्तसँ भेंट करए बिदा भेलाह। नदीसँ सटले आश्रममे अपन आचार्य संग शास्त्र चर्चामे जयन्त लीन छलाह। आश्रमक विद्यार्थी दत्तचित्त भए हुनका लोकनिक पारस्परिक संवाद सुनि रहल

छलाह। कतहु कोनो प्रकारक गतिविधि नहि छल। ओहि निःश्ब्द वातावरणमे कालीकान्तक पदचापसँ एकाएक सभक ध्यान ओमहर चलि गेल। आचार्यजी उठि कए ठाढ़ भए गेलाह।

"अपने किएक कष्ट केलहुँ। समाददितहुँ। हम स्वयं अपनेक दरबारमे आबि जइतहुँ।"

"आचार्यजी कँ सादर प्रणाम। असलमे हम जाहि काजे अएलहुँ से समादे नहि भए सकैत छल, ताहि हेतु हमर आएब अनिवार्य छल।"

"से की? एहन कोन बात भेलैक जे अहाँक स्वयं एतए आएब जरूरी भेल? की हमरा लोकनिसँ कुनु अधर्म भए गेल? की हमर आश्रमक विद्यार्थीसँ किछु त्रुटि भए गेलनि अछि?"

"ई सभ किछु नहि भेल अछि।"

"तखन अपने कष्ट किएक केलहुँ? ई आश्रम तँ अपनेक कृपासँ चलि रहल अछि। अपनेक पूर्वज लोकनि अत्यंत उदारताक परिचय दैत एकर स्थापना केलाह आ कतेको मेधावी विध्यार्थीकेँ आश्रय दए विद्या लाभ करओलनि। एहि आश्रमक परंपरा बनओने रखबामे अपनेक महान योगदान अछि। तँ अपने निःसंकोच कहू जे हम सभ कोन तरहें अपनेक आज्ञाक पालन कए सकैत छी।"

"आज्ञाक तँ कोनो प्रश्ने नहि अछि आचार्यजी!"

आचार्यजी बकर-बकर कालीकान्तक मुँह तकैत रहि गेलाह। किछु बुझएमे नहि आबनि जे आखिर बात की अछि? किछु अंदाज नहि लागि रहल छलनि। कालीकान्त आश्रमक चारू कात निहारि

रहल छलाह। आश्रमक समस्त विद्यार्थी सभ तेजोमय रहथि। ललाटपर तृपुंड लगओने, कुशक आसनपर विद्यमान समस्त विद्यार्थीपर हुनकर ध्यान गेल। ओ जे चाहैत रहथि, जिनका तकैत ओ चुपचाप पैरे एतए धरि चलि आएल रहथि से नहि भेटलखिन। ‘‘ओ कतए छथि?’’- कालीकान्त मोने-मोन सोचैत रहथि ।

"आश्रमक कोनपर नदीसँ सटले एकटा तेजस्वी युवक निरंतर वेद मंत्रक सस्वर पाठ कए रहल छलाह। हुनका कालीकान्तक आगमन आ तदुपरंत आचार्य संग भए रहल वार्तालापसँ किछु मतलब नहि बुझा रहल छल। ओ तेजस्वी बालक के छथि? कहीँ ओएह तँ नहि छथि?"- कालीकान्त मोने-मोन सोचलथि। मुदा समाधान नहि होइत देखि ओ आचार्यसँ स्पष्ट कहलखिन -

"आचार्यजी! अपने हमर वंश परंपरासँ पूर्ण परिचित छी। फेर हमरा लोकनिक शुभचिंतक छी। जँ अपनेसँ नहि कहब तँ कहबै कककरा? आ बिना अहाँक कृपाकेँ एहि समस्याक समाधान नहि भए सकैत अछि।"

"अपने आज्ञा तँ देल जाए। हम सभ एकर सहर्ष पालन करब। ई तँ हमरा लोकनिक अहोभाग्य होएत।"

"आचार्यजी! अपने तँ महाज्ञानी छी। अपनेकेँ की नहि बूझल अछि। तथापि अपनेक आज्ञानुसार हम अपन मंतव्य स्पष्ट करैत छी।"

एतबा बाजि ओ आचार्य संगे कात भए गेलाह आ एकांत पाबि हुनका कहलखिन-

"आचार्यजी! हमर राजपाट बहुत पसरि गेल अछि । असगर हमरासँ सम्हरि नहि रहल अछि । हमर एकमात्र संतान चंद्रिका सेहो आब छेटगर भेलथि। जयन्त चंद्रिकाक हेतु उपयुक्त बर बुझाइत छथि । जँ ओ तैयार भए जाथि तँ हमर चिंता कम होअए । दुनू गोटे मिलि कए हमर राजपाट सम्हारि लेताह तँ हमर समय नीकसँ कटि जाएत ।"

"हम एहि समस्यासँ वाकिफ छी। अहाँक लोक सभ हमरासँ एहि विषयपर कै बेर चर्चो केलथि मुदा जयन्त सर्वथा उपयुक्त होइतहुँ अखन बिआह करबाक हेतु उत्सुक नहि छथि। हुनका माथमे अपन गाममे पाठशाला स्थापित करबाक धुन सबार छनि । कहैत छथि जाबे से नहि होएत हुनक जिनाइ सर्वथा व्यर्थ होएत । तेँ ई काज ठामहि रहि गेल।"

ई सभ गप्प करैत-करैत आचार्यजी कालीकान्तक संगे जयन्तक लगीच आबि गेल रहथि। कालीकान्त सेहो हुनका संगे-संगे जयन्तक पाछामे ठाढ़ भए गेलथि। यद्यपि कालीकान्त आचार्यजीक संगे जयन्तसँ सटले ठाढ़ रहथि मुदा ओ आँखि मुनने तेना ने ध्यानमग्न रहथि जे आचार्योकेँ हुनका टोकबाक साहस नहि भेलनि। कालीकान्त एहि बातकेँ बुझलनि आ आचार्य संगे ठामहि वापस भए गेलाह। त्रिकुट भवन वापस जाइत काल हुनका बेरि-बेरि ओहि तेजस्वी युवकक ध्यान अबैत रहलनि।

(अनुवर्तते)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गढ़-नारिकेल उपन्यास-त्रयीक पहिल उपन्यास "सहस्त्रशीर्षा" क बाद दोसर उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

द .... फाइल्स (आगाँ)

१

हमर नाम छी... ... .आ गाम ‘‘गढ़ नारिकेल’’

शुक्र दिन ऑफिससँ दस बजे रातिमे घुरलहुँ तँ डेरा पहुँचिते बेटी स्वागत केलक। बुझा गेल जे रूसल अछि। पुछलिऐ जे की भेल तँ ओ मोन पाड़लक जे अझुका सिनेमा देखबाक प्रोग्राम छलै। हमर एहि जवाबपर कि देरी भऽ गेल अछि आ थाकल छी, ओ सोफापर मुँह घुमा कऽ बैसि गेल आ कथुक उत्तरे नै दिअए। कनियाँकेँ कहलियन्हि जे काल्हि सिनेमा चलै चलब से नै हेतै कारण ८-११ बला शो तँ खतम भऽ गेल हेतै। ओ बेटीसँ पुछि कऽ ओतहियेसँ चिकरि कऽ कहलन्हि जे अहाँ अझुका प्रॉमिस केने रहिऐ। हँ प्रॉमिस तँ केने रहिऐ, तकरा पूरा तँ करैये पड़त। फेर मोन पड़ल जे सरकार नाइट शो देखेबाक अनुमति थियेटर सभकेँ देने छै, से आइ काल्हि ११ सँ २ बजेक शो सेहो देखि सकै छी। ‘‘बूक माइ शो’’ साइटपर ऑनलाइन टिकट कटेलौं आ से देखि बेटीक रुसब खतम भेलै। बेटा, कनियाँ आ माँ तीनू गोटे तैयार भऽ जाइ गेला आ सिनेमो जे पड़ि लागल सेहो सनगर। सालमे एक्के दू टा तँ नीक सिनेमा बनै छै बॉलीवुडमे।

दू बजे रातिमे सिनेमा देखि कऽ घुरि रहल छलौं, रस्तामे गाड़ीक

लाइट एकटा बड़का होर्डिंगपर पड़लै, आ ओहने बहुत रास होर्डिंग अबैत गेल।

ओइ होर्डिंग सभपर राज्यक महिला मुख्यमंत्रीक कनी अगरायल सन अभयमुद्राबला फोटो छलै। ओना तँ बेटीसँ बेशी रनिंग कमेण्ट्री हमहीं करै छी, रस्ताक सभटा चीजक विस्तृत विवरण दैत गाड़ी चलबै छी, कखनो काल जखन दुनू हाथ छोड़ि खिस्सा आगू बढ़बै छिऐ तँ ओ टोकितो अछि आ सड़कक सभटा कानून, रेड-लाइट, ग्रीन लाइट, जेब्रा क्रॉसिंग, सभटा ओ बुझबऽ लगैए। मुदा ऐ होर्डिंग सभकेँ हम अनठा देलिऐ ई सोचिकऽ जेजँ कहबै तँ उनटे सुना देत जे ई सभ हमरा बुझले अछि। मुदा ऐबेर से नै भेल। शीसा खोलि कऽ ओ अचरजसँ हमरासँ पुछलक-

“ई ककर फोटो छिऐ डैडी?”

“ईहो नै बूझल अछि, फलना दीदी मुख्यमंत्रीक फोटो छियन्हि ई”।

“मरि गेलखिन्ह की? कहिया?”

कनी काल तँ हमरा बुझबामे नै आएल आ जखन आयल तँ ततेक हँसी लागल जे गाड़ी चलेनाइ मुश्किल। माँ कनियाँ आ बेटाकेँ कहलियन्हि जे ई किताबमे पढ़ैए जे मुइलाक बाद बड़का फोटो आ मूर्ति बनै छै से एकरा भेलै जे मरि गेलीह मुख्यमंत्री आ स्कूलमे एक्को दिनक छुट्टी नै भेटल। मुदा आइ काल्हि तँ जिबितेमे बड़का फोटो आ मूर्ति सभ बनऽ लागल छै। हमरा संगे सभ पेट पकड़ि कऽ हँसऽ लगला। बेटी हतप्रभ सभकेँ देखैत रहल। तखने हमर फोनक घण्टी बाजल आ हम जेबीसँ फोन निकालनहिये रही तखने ओ हमरा दिस

इशारा कऽ कय स्टीयरिंगपर ध्यानदेबा लऽ कहलक तँ हम गाड़ीकेँ सड़कक कात लगा कऽ गाड़ी ठाढ़ कऽ लेलौं।

"सूतल छलौं की, उठा देलौं।"- फोनमेसँ अबाज बहराइए।

"नै, एते जल्दी कहाँ सूतै छी, कि कोनो जरूरी गप अछि?", दू बजे राति कऽ ऑफिसक हाकिम बिना काजेक फोन किए करत, से जकरा इंस्टिंक्ट कहै छै तहिना पुछा गेल छल।

"एम्सक ट्रॉमा सेन्टर आबि सकै छी, आउ तँ फेर आगाँ गप हेतै"।

डेरा पहुँचि, कपड़ा बदलि कऽ ऊबरकेँ बजबै छी, अपन गाड़ी लऽ जायब तँ पार्किंग भेटत आकि नै से सोचि कऽ। गेटपर उतरि कऽ जखने ट्रॉमा सेन्टरक भीतर जाइ छी तँ अबाज अबैए-

"सर, एम्हर छी हम"। हमर इंस्पेक्टर सहैब गालकेँ हाथसँ साटने हमरा शोर करै छथि।

"अहूँ एतै छी, हाकिम बजेने छथि, तँ हम आयल छी"।

"हमरे दुआरे बजेने छथि, अटैक कऽ देलक गुण्डा सभ"।

"कतऽ, कोना?"

ओ अपन गालपरसँ हाथ हटबै छथि तँ गाल दू टुकड़ी दुनू दिस भेल देखाइत अछि।

हमर "हाँ, हाँ"कहला उत्तर ओ धड़फड़ा कऽ अपन हाथसँ गालकेँ

साटि लै छथि।

हम कहै छिएन्हि- “अहिना केने रहू, अहाँकेँ अपन गाल देखा नै पड़ि रहल अछि तँ अहाँकेँ पता नै अछि जे ....”। चुप भऽ जाइ छी।

“कते कालसँ एतऽ छी?”

“एक घण्टासँ छी। जखन आइ.जी., डी.आइ.जी. सहैब सभ कनी काल पहिने एला तखनसँ कनी ध्यान देलकहेँ। ईहो सभ की करतै, देखै नै छिऐ भीड़”।

एकटा डॉक्टर हुनका बजाकेँ लऽ जाइ छन्हि एकटा कोठलीमे। ओइ कोठलीक बाहर सभ हाकिम जमा छथि, सभ गम्भीर मुद्रा बनेने छथि। लोकल थाना बला सभ सेहो आबि गेल अछि। थाना बला सभ सहटि कऽ हमरा लग आबि गेल।

दरोगाजी हमरा अपन मोबाइल निकालि एकटा वी.डी.ओ. देखबै छथि।

“देखू ऐ गुण्डा सभकेँ, हमरेपर पाथर फेकि रहल अछि”।

हवलदार सहैब टिपलखिन्ह जे ओइ सारकेँ हुजूर जेल पठा देलखिन, सभटा गजेरी-चरसी सभ छै। कोनो डरे-भर नै होइ छै। हुजूरे कऽ मोटरसाइकिल थानेपरसँ चोरा लेलकन्हि, तकर अखनि धरि पते नै चलल छै।

हम दरोगाजीसँ पुछलियन्हि- “अहाँकेँ की लगैए, की ई लॉ एण्ड ऑर्डरक गप छै आकि ऑफिसक काजसँ एकर कोनो सम्बन्ध छै”?

ओ कहै छथि जे मामिलामे पेंच छै। तहकीकात तँ जबरदस्त ढंगसँ

हेतै। मुदा ओ सेहो कहै छथि जे मोटा-मोटी ई ‘‘लॉ आ ऑर्डरे’’क समस्या छिऐ। मुदा देखू तहकीकातमे की निकलैए...

इंसपेक्टर सहैबक गाल सीबि देल गेल छन्हि। इन्सपेक्टर सहैब हमरा कहै छथि जे गाल तँ दू टुकड़ी भऽ गेल छलै से हुनका बुझले नै छलन्हि, सीलाक बाद डॉक्टर अएना देखेने छलन्हि से देखि कऽ पता चललन्हि।

सभ हाकिम अपना-अपना घर दिस बिदा भेला। सरकारी गाड़ी इंस्पेक्टर साहैब कऽ लऽ गेलन्हि आ हम ऊबरकेँ फोन लगेलौं।

... ...
... ...

अगिला दिन भोरे-भोर ऑफिस गेलौं तँ अर्दली इशारामे कहलक जे एकटा इनफॉर्मर आयल अछि। हम कहलिऐ जे ककरोसँ भेँट करा दैतिऐ, एतेक गोटे ऑफिसमे अछि तँ कहलक जे कहैए जे अहींसँ भेँट करत, कहैए जे हमर इलाकाक हाकिम छथि, अनकापर ओकरा भरोस नै छै।

‘‘हमर इलाकाक छी? कतुक्का छी? नामो-गाम बता देलक की?’’

‘‘नाम तँ नै बतेलक मुदा कहलक जे गामक नाम कहि दियौन्ह हाकिमकेँ, अपने बजा लेता। गामक नाम जे कहलक से विचित्रे.... किदन तँ ... ‘‘गढ़ नारिकेल’’!’’

२

कएक दिन बीति गेल, डेटा, डेटा, डेटा...

बैलेंस शीट, एक्सेल फाइल, फेक अकाउण्ट, फेक इनवोइस..

फेर सभ फेक अकाउण्ट लेल एकटा कनसोलिडेटेड इनवोइस..आ तइसँ बनल ट्रायल बैलेंस... आ से डेटा गेल चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट लग। आ तखन बनल ऑडिटेड बैलेंस शीट.. पकिया बला!

“एतेक सामग्री अहाँ लग अछि, अहाँ कोनो पैघे लोक छी, कारण कोनो संगठनक छोट-छीन लोकक हाथमे एतेक डेटा नै एतै। गढ़-नारिकेल एकटा रहस्य छै आ ई रहस्ये छिऐ ई दुनियाँ”।

“हमहूँ छी एकटा रहस्ये। गढ़-नारिकेलक कर्ज। हम सभटा गप कहब, किछुओ नुकाएब नै अहाँसँ, से समए आएत। एकबेर जखने शुरू कऽ देलौं अहाँ ई काज, तखने हम निश्चिन्त भऽ गेलौं। हमरा बुझल छल जे अनका ई डेटा देखेबै तँ ओ बुझबो करत आकि नै, आ जँ बुझि कय डेरा बा बिका जाय। आइक बाद हमरा आ अहाँक भेँट नै हएत, कोनो सूचनाक आदान-प्रदान आइक बाद आब डार्क-वेब टा पर हएत”।

... ...

आ ओ चलि गेल।

ओकरा जिताएब हम।

ओ जीतत तँ जीतब हम।

एतेक सूचना, एतेक धरि खसि गेल लोकक सूचना?

सूचना आ डेटा बनि गेल अछि बड़का खेल। सभकेँ बूझल छै सभटा गप आ सभ गबदी मारने अछि बैसल।

डर..

कियो एकर कारण घर्-द्वार-परिवारकेँ बचाएब कहैए, फैमिली बला छी, अपन नै तँ परिवारक चिन्ता तँ करैए पड़त, तँ अपना लेल नै परिवारक लेल डेराइत छी... ओकरा की छै, ने आगू नाथ ने पाछू पगहा...

आ कियो-कियो होइत अछि बताह, ने अपन चिन्ता आ ने परिवारक.. बौआइत छै ओकर परिवार...

कियो कनी कालमे थम्हि जाइत अछि कियो कोनो पैघ दुर्घटनाक बाद थम्हैत अछि आ कियो किछुअ भऽ जाउ थम्हिते नै अछि... आ एहनो लोक सभ अछि जकरा संग दुर्घटना होइते नै छै.. से ओ किए थम्हत.. बुझाइ छै जे ओकर बड़कति होइत छै अधलाह काज केने..,.

लागि रहल अछि जे कोनो अन्हार तरहड़ि मे उतरल जा रहल छी, सीढ़ी नीचाँ दिसि जाइ छाइ, पहिने कनी-मनी इजोत, फेर झलफल, फेर राति सन अन्हार आ फेर अन्हार गुज-गुज, आगिपरक खापड़िक अधोभाग...

इजोत कोनो आस नै? आ जँ आबि जाएत इजोत तँ भऽ नै जाइ आन्हर...

इजोतसँ डेरा रहल लोक?

अन्हारेमे लागि रहल छै मोन आकि लगा रहल अछि मोन...

आ जे अछि बताह?

शोनितक रङ देखा पड़ि रहल अछि डेटामे, शोनित-शोनितामे... मुदा शोनितक रङ सेहो कारी, अन्हार-गुज्ज... शोनित तँ होइत अछि लाल टुह-टुह... मुदा ऐ डेटाकेँ हमरा लग अबैत-अबैत देरी भऽ गेलै.. लाल-रङ बेसी गाढ़ भेने कारी भऽ जाइ छै, आ देरी भेने सेहो...

देरी किए भेलै? बताह लोकक कमी तँ कहियो नै छलै ऐ लोकमे... मुदा लगैए जे आब भऽ गेल छै, आ से नै रहितै तँ एतेक शोनित युक्त डेटा, एतेक मात्रामे कोना थकिया जइतैक? आ जँ रहबो करितैक तँ तकर रङ लाल रहितैक, गरम रहितैक, कारी-पपड़ी पड़ल नै रहितैक।

सीढ़ी पहुँचि गेल अछि तरहड़िमे... तेहन ब्लैक-होलमे जतऽ जा कऽ सभ किछु गुरुत्वाकर्षणक अधीन भऽ जाइत अछि, जकर मध्य विचित्र आकृति अछि जन्म लऽ लेने, डेराओन आ ध्वनि उत्पन्न करैत... जेना समुद्रमे उठल अछि चक्रवात...

सभ आकृति घेर लैत अछि हमरा... पहिने हमर गप सुनू तँ पहिने हमर... हॉस्पीटलमे जे हालत होइत छै डॉक्टरक, रोगी सभ जखन घेरने रहै छइ ओकरा... ओतऽ तँ रोगीक सङ ओकर परिवारक लोक सेहो रहै छै, मुदा एतऽ तँ मात्र रोगीये टा छै..

३

पहिल फाइल

“सभ मानैए जे एकटा दैवीय शक्ति होइ छै, सभ तरहेँ नीक, सभसँ बेशी जानकार आ सभसँ बेशी शक्तिशाली, जकरामे कोनो अवगुण नै होइ छै, जे सभ ठाम अनुभव कएल जा सकैए आ जे सभ बौस्तुक ज्ञाता अछि। मुदा फेर दुष्ट शक्तिक कोन तरहेँ व्याख्या हएत? फेर कोना होइए दुष्ट कृति, किए होमए दैत अछि ओ ई दुष्कृति”?

अन्हारसँ निकलि रहल ई अबाज, दर्शनक एकटा समस्याकेँ अकानैत अछि। नाम छिऐ गोप कुमार।

“सभ हमरे दोखी मानैत अछि, मुदा दोखी कइएक तरहक होइत अछि, एकटा होइ छै गैंगस्टर, एकटा नक्सल आ एकटा आतंकवादी आ एकटा हमरो सभ सन लोक”।

“तीनूमे हमरा लेखेँ कोनो अन्तर नै छै, जे राज्यक विरुद्ध शस्त्र उठेलक से भेल दोखी, आ तकरा भेटतै सजा”।

“मुदा जँ गैंगस्टर कहए जे ओ देशभक्त अछि आ अहाँकेँ नक्सल आ अतंकवादीक विरुद्ध अपन सहयोग दिअए, तखन”?

“तखन ओकर सहयोग लैत छी हम, मुदा ओइसँ ओकर केलहा माफ नै होइ छै। हँ, ओकरा पश्चातापक एकटा अवसर भेटै छै। आ से तँ नक्सली आ आतंकवादीकेँ सेहो भेटै छै”।

आ ओ कथा शुरू करैत अछि, सत्यकथा। मानवक समस्त प्रकृतिपर

विजयक पश्चात, मानवक मानवसँ संघर्षक कथा। दोसर महाभारतक प्रारम्भ, वैश्विक कुरुक्षेत्रक युद्धस्थलपर। देखा चाही कतेक निअम टुटैत अछि ऐ महाभारतमे, कतेक नव निअम बनैत अछि ऐ क्रीड़ाक। कएकटा आशाक संचार होइत अछि आ कएकटा निराशाक। गढ़ नारिकेल बला ओ इन्फॉर्मर फेरसँ हमरा भीतर कृष्णक चपलता आनि देने अछि।

“जे अहाँ करबै सएह सही हएत आ जकर अहाँ विरोध करबै से गलत हएत”। यएह कहने रहए गढ़ नारिकेलक बसिन्दा आ यएह कहि रहल अछि गोप कुमार।

हमर बड़ाइ कऽ कय जान लऽ जाइ जो- हम सोचैत छी।

“बड़ाइ नै अछि ई। दुष्ट शक्तिक कोन तरहेँ व्याख्या हएत? बुझू जे ई छी प्रारब्ध जे अहाँकेँ अतए आनल गेल अछि। सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान आ सभठाम उपस्थित शक्तिक अछैत दुष्ट शक्तिक व्याख्याक द्वार खुजत”।

हमर सोचलाहो गपक उत्तर दऽ रहल अछि गोप कुमार। ई एकटा नव अनुभूति अछि हमरा लेल। आइसँ पहिने हमर सोचलाहा गपक उत्तर स्वप्नमे बा अर्द्ध-चेतनावस्थामे कोनो शक्ति दऽ दइ छल। अर्द्ध-चेतनावस्थामे माने जखन हम सोचब बन्द करैत छी, थाकि जाइ छी जे आब एकर उत्तर नै भेटत, तखने कइएक घण्टाक बाद कोनो ट्रैफिक जाममे बा सिनेमा देखैत काल बा खाइत काल, कइएक बेर सरल समाधान भेटि जाइत अछि। स्वप्नक समाधानकेँ तँ हम दैवीय हस्तक्षेप मानैत छलौं मुदा अर्द्ध-चेतनावस्थामे भेटल सरल समाधानकेँ शुरुहमे अपने ताकल समाधान मानैत छलौं। आर तँ आर अर्द्ध-

चेतनावस्थाकेँ चेतनावस्थे मानैत छलौं शुरुहमे। मुदा स्वप्न कालक बढ़ैत सरल समाधान अर्द्ध-चेतनावस्थाकेँ परिभाषित केलक आ अर्द्ध-चेतनावस्थामे भेटल सरल समाधानकेँ सेहो दैवीय हस्तक्षेप सिद्ध केलक।

“मुदा हमरा सभकेँ सिखाओल जाइत अछि जे ठाढ़ नाक, गोर-नार आ नमगर लोक नीक, जँ ककरो सभ अंग सही छै तखनो ओ असुन्दर अछि। आ जँ कोनो अंग सही नै छै, कोनो पअए छै, तँ ओकरामे दुष्टता भरल हेतै। आ जँ ओकर मोन खराप भऽ गेलै बा बेमारी भऽ गेलै तँ सुन्दर-असुन्दरक भेद आ पअए केर अतिरिक्त वर्तमान बा पूर्व-जन्मक कोनो दोख आबि जेतै। से हमरा सभकेँ एक दोसरासँ तुलना करब सिखाओल जाइत अछि। ओ तोरासँ कम सुन्दर बा बेशी सुन्दर। ओ तोरासँ बेशी बलगर बा कम बलगर, बेशी काजुल बा कम काजुल। हमर देश दोसरा देशसँ कमजोर बा मजगूत, हमर संस्कृति दोसरसँ नीक बा अधला। मुदा जँ अहाँ दोसर संस्कृति, दोसर नाक-मुँहबला लोकक सम्पर्कमे आयब तँ अहाँकेँ लागत जे ई सभ झुट्ठेक भेद अछि, ओहो अहिन सोचैत अछि। जँ कियो सुन्दर-असुन्दर अछि बा बेशी-कम काजुल आ जँ तकर कोनो नपनाकेँ सत्य मानियो ली तँ ओइमे अहाँक कोन योगदान?”

“तँ तकर कोन उपाय? स्कूल कॉलेजमे नामांकनसँ लऽ कऽ नोकरी-चाकरी, कृषि-उद्योग सभ ठाम नीक-अधला कोना तय-तमन्ना हएत, तकनीक उत्कृष्ट अछि बा नै तकर कोना निर्धारण करब”?

“तुलना अपनासँ करू, अनकासँ नै, काल्हि आ आइ, पुरान आ नव, अपन आ अपन देश-समाजक तुलना अपनेसँ। आ से नै केने हिंसाकेँ

अहाँ नै रोकि सकब”।

“अहाँ तँ हिंसा छोड़ि देब, मुदा जँ अहाँक प्रति हिंसा हएत तँ से केना रोकब”?

“जँ अहाँ अपनेसँ अपन तुलना करब बा जखन अहाँ अनकासँ अपन तुलना करब तँ अहाँ देखब जे पहिल स्थितिमे धनात्मक वृद्धि हएत, नीक भाव रहलापर प्रगतिमे कोनो बाधा नै होइ छै। दोसर स्थितिमे अहाँक प्रगति ऋणात्मक वृद्धि बाधित करत, अहाँ मात्र दोसराक अनुसरण करब, ओ जे रस्ता निर्धारित करत तहीपर अहाँ आगाँ बढ़ब। अहाँक रस्ते जखन अनकर अछि तँ कखनो ओइमे ओ खधाइ खुनि देत आ अहाँक प्रगति बाधित कऽ देत। आ सएह भेल ऐ पहिल फाइलमे… … ….

…. एकटा कम्पनीमे हम काज करैत छलौं। पढ़ि लिखि कऽ नोकरी भेटि गेल। आ ई कम्पनी बड्ड नीक लागल। एतेक सुन्दर वेबसाइट छै एकर। वेब टेक्नोलोजीक सभसँ आधुनिक स्वरूपक उपयोग केने अछि। कम्पनीक विषयमे जानकारी लेबाक हुअए तँ एकर वेबसाइटपर जाउ, मल्टीनेशनल कम्पनी, सत्य हरिचन्द्रक कम्पनी संस्करण, मोन प्रसन्न भऽ जायत। ऑफिसो चकमक। ओना हमर गामोपर साफ-सफाइ जबरदस्त छल, मुदा ओतऽ अंगनामे माय बाढ़निसँ आ दलानपर बाबू खरड़ासँ जे काज करै छला से एतऽ कर्मचारीक एकटा नव वर्ग करैत छल। चतुर्वर्णक मल्टीनेशनल संस्करण ऐ फिरंगी कम्पनीमे छल। डिसीप्लीन तँ पूरा, अनुशासन देशकेँ महान बनबैत अछि से तँ कतौ लिखल नै छलै मुदा चारू वर्गक कर्मचरी एक दोसरासँ छोड़ू आपसोमे गप-सप्प कम्मे करैत रहथि। किछु तँ काजक बोझक दुआरे आ दोसर कोनो सूचना-लीक होयबाक बा निंदा शिकाइतक आरोप

लगबाक डरक दुआरे। मुदा ओइ डरकेँ डिसीप्लीनक नाम देल गेल छल।

सालक अन्तमे सभक कएल काजक समीक्षा होइ छलै, तही समीक्षाक आधारपर दरमाहामे बढ़ोत्तरी होइ बा नै होइ छलै, मुदा ककरा कतेक भेटलै से एक-दोसरासँ गुप्त रखबाक शर्त रहै छलै। आ नव साल फेरसँ शुरू... भरि साल मेहनति करू, ओइ सालक-अन्तक कार्य-समीक्षा लेल।

भागा-दौड़ी दोकान-दौड़ी सन। सभ दिनुका काज। कोन परियोजना केना बनत, पी.पी.टी. एक्सेल सीट, बार-पाइ चार्ट, प्रोजेक्ट प्रपोजल, भागा-दौड़ी। सेमीनार राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय विश्विद्यालयमे, हावर्डमे सेहो।

४

<u>सत्य हरिचन्द्र-कम्पनी आ हमर कंट्री-हेड प्रभाकरन सुन्दरम</u>

हमर कंट्री-हेड केर भाषण भेल रहै ओतय, सत्य हरिचन्द्रक कम्पनी संस्करणक जे विवरण अन्तर्जालपर रहय तहूसँ बेशी नीक विवरण। अमेरिका तँ बाबू अमेरिका छलै, एहेन-एहेन सत्य हरिचन्द्र-कम्पनी सभ, एक-दूटा नै हैँजक हैँज रहै, सभ एक-दोसरासँ बेशी बड़का सत्य-हरिचन्द्र कम्पनी। एकटा गप ओइ दिन सेहो हमरा टोकारा मारने रहय- सेमीनारक कएक टा सत्य-हरिचन्द्र कम्पनीक वक्ता सेमीनारमे कहने रहथि- ‘‘अमेरिकाक बाहर सेहो हम नैतिकताक पालनक प्रयास करै छी मुदा अमेरिकामे तँ हमरा सभक अनैतिकताक प्रति ’शून्य-सहिष्णुता’ अछि’’। माने?...

प्रभाकरन सुन्दरम रहथि हमर नव कंट्री हेड। आ हम गोप कुमार। हमरा दुनू गोटे संग बहुत रास लोक गेल रहथि ओइ सेमीनारमे। ऐ यात्राक बाद हमर जिनगी पी.पी.टी. एक्सेल सीट, बार-पाइ चार्ट, प्रोजेक्ट प्रपोजलसँ आगाँ बढ़ैबला छल। कम्पनीक दूटा टेरीटरी छै, पहिल छै ओतऽ जतऽ छै हावर्ड विश्वविद्याल से छै "'शून्य-सहिष्णुता" बला क्षेत्र आ हमर देशमे कम्पनीक जे शाखा छै आ जतऽ हम काज कऽ रहल छी से अछि "नैतिकताक पालनक प्रयास"बला टेरीटरी।

प्रभाकरन सुन्दरम हमरासँ हिलि-मिलि गेल रहथि। हमर काज करबाक गति आ काजक गुणवत्ता रहै आकि "नइ नै" कहबाक हमर आदति। आकि कोनो काज एला पर खाइतो काल खेनाइ छोड़ि हाथ धो कऽ ओइ काजकेँ कइये कऽ आ तखने फेर खेनाइ पर बैसबाक आदति। आकि कोनो काज आगाँ लेल नै छोड़बाक आदति। आकि "हँ" आ "नै" केर भेदक पूर्ण ज्ञान आ "हँ तँ हँ" आ "नै तँ नै" बला आदति। आकि कोन काज ठीक छै आ कोन काज नै तइ मे कोनो तरहक कोनो अस्पष्टता नै हेबाक गुण। आकि घरक आ ऑफिसक कार्यकेँ फराक-फराक रखबाक हमर आदति। आकि ऑफिसक लोकसँ गॉशिप नै करबाक हमर आदति..

प्रभाकरन सुन्दरमकेँ सम्भवतः हमर चाहपर गप-सरक्का बला ग्रुपसँ हमर दूरी बेशी पसिन्न पड़लन्हि, कारण हमर बॉसक बॉससँ ओ हमर ऐ सभटा गुणक चर्च केलन्हि, मुदा अन्तिम गुणपर बेशी जोर देलन्हि।

आ भारत घुमिते हम सोझे कंट्री हेड प्रभाकरन सुन्दरमकेँ रिपोर्ट करय लगलौं।

प्रभाकरन सुन्दरम छल ओ नाम जे ऐ कम्पनीकेँ कतऽ सँ कतऽ लऽ

अनलक। एन.आइ.टी. तिरुअनन्तपुरम् सँ बी.टेक आ आइ.आइ.टी. मद्राससँ एम.टेक छल प्रभाकरन सुन्दरम। भारतक ''इन्फ्रास्ट्रक्चर बूस्ट''मे ओकरा ऐ कम्पनीमे आनल गेल रहै, एकटा पैघ पैकेजपर। ई अमेरिकन कम्पनी भारतकेँ काज सिखेतै, कोना काजक गुण-दोख देखल जाइ छै, कोना सड़कपर आ फैक्ट्रीमे दुर्घटना कम कयल जाइ छै। कोना समयपर काज कयल जाइ छै।

(अनुवर्तते)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर

दूटा बीहनि कथा

१

प्रवचन

दिल्लीमे एकटा प्रवचनमे गोनर भाइ प्रसिद्ध स्वामीजी बाजि रहल रहथि-

“हम बहुत दिनक बाद प्रवचन कऽ रहल छी, कारण एम्हर हम पटना गेल रही। ओतऽ एकटा मोहल्ला छै राजेन्द्र-नगर। ओतऽ भारतक पहिल राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करैत छथि। ओतऽ एकटा प्रवचन मे ई प्रश्न उठल छल जे... ...”।

गोनर भाइके पछाति हम पुछलियन्हि- “गोनर भाइ, हम पटना नग्रमे २० बर्ख रहलौं मुदा ई तँ हमरो नै बुझल छल जे ओतुक्का राजेन्द्र-नगरमे राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करैत छथि। आ अहाँ तँ धान कटाबै लेल गाम गेल रही तखन ई पटनाबला प्रवचन प्रसंग कहिया भेलै...!”

“हौ बुझहक, ई सभ नै कहबै तँ ई सार पंजाबी सभ कि एकोटा पाइ देत।”

२

गछल गप

‘‘गोनर भाइ, वरागत कहै छला जे अहाँ गछलाहा कोनो बौस्तु नै देलियन्हि, हम घटक रही आब ओ जखन देखू हमरा हुथैत रहै छथि।’’ घटक महराज गोनर भाइसँ पुछलन्हि।

‘‘यौ, ओइ धुइनमे हम की-की गछलियन्हि आ की-की नै गछलियन्हि से-कि हमरा मोन अछि। ओ कहैत गेलाह आ हम हँ-हँ करैत गेलौं।’’

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रणव झा

विभीषण के चरित्र चित्रण (मैथिली गल्प)

किछ आमभावना(perception) लोक सब के बीच अनेरे प्रचलित रहई छैक जेना नरेंद्र मोदी के बात बात पर कोसनाई, राहुल गांधी के बिना सुनने, ओकर बात के बिना बुझने ओकरा पप्पू कहनाई, अरविंद केजरीवाल के बिना बात के एना गरिएनाई जेना कि ओ हिनकर पाहून होय। एहने ट्रेंड मे से एकटा ट्रेंड छैक विभीषण जी के देशद्रोही आ गद्दार कहनाई। जे कि हमरा लेखे एकदम अनुचित आ अदूरदर्शी सोच छैक। जे लोक सियावर रामचन्द्र जी के नै मानई छैक हुनका सब के त खैर किछ नै कहल जा सकई अछि मुदा जे लोक जानकिरमान राजा राम के मानई छैथ, हुनकर अनुव्रती आ उपासक छईथ (किछु शिकायत के संगो) ओ सब ओय विभीषण पर कोना के आंगुर उठाबै छईथ से नै जानि जिनका साक्षात भगवान राम आपन मित्र आ बराबरी के दर्जा देने छलाह! आ वास्तविकतो यैह थीक नै त लोक मेघनाद आ कुम्हकर्ण के बजाय विभीषने के ने पुतला जराबथिन। लेकिन एहन बात नै छैक। वास्तविकता त ई छैक जे रामेश्वरम मे विभीषण जी के मंदिरो छैक।

विभीषण जी सदिखन देश आ न्याय के पक्ष मे छलाह। एकरा किछ उद्धरण से बुझल जा सकई अछि:

जखन सूर्पनखा अपन निजी स्वार्थ आ प्रतिशोध लेल रावण के दरबार मे ओकरा एकटा अनावश्यक युद्ध के लेल भड़काब' आयल छलीह आ अपन डाह के शान कर' लेल हुनका मोन मे सीता के लेल लालसा आ मोह भरि रहल छलीह तखन विभीषण रावण के सलाह दैने छलाह जे मामिला के बिना ठीक-ठीक बुझने एकटा प्रबल योद्धा से बैर ठानब राज्य के हित मे नै थीक, किए त रामजी के लंका पर चढ़ाई के कोनो इरादा नै छल।

जखन रावण सीताजी के हरि के ल आनलक तखनो विभीषण जी एकटा सच्चा हितैषी मंत्री के रूप मे रावण के स्त्री मर्यादा के पाठ पढ़बैत चेतेलखिन जे परदारा हरण अधर्म थीक, पाप थीक। ई कुल आ देश दुनू के कलंकित करे बला कृत्य अछि। तै रावण के सीताजी के ससममान वापस राम जी लग पहुंचा देबा के चाहिए। मुदा अपन स्वार्थ आ सत्ता आ शक्ति के अहंकार मे डूबल रावण के मति मे कहाँ ई सब बात ढुकलय!

जखन रामजी के सेना लंका पहुँच गेल छल तखनो विभीषण देशाहित मे रावण के बुझेलखिन जे राजा के निजी हित आ इच्छा के पूर्ति के लेल देश के अनावश्यक युद्ध मे झोंकनाई आ ओई कारण होमय बला नुकसान के खतरा मे ठेलनाई सर्वथा अनुचित थीक। तै, देश के बिनमतलब के नुकसान से बचाब' लेल आ स्त्री मर्यादा के रक्षार्थ रामजी से संधि क लिय'। मुदा ऐ पर रावण हुनका तिरस्कृत क के देशनिकाला द देलक।

राजा आ पईघ भाय से तिरस्कृत भेला आ देशनिकाला के सजा पाबय के बादो विभीषण जी अपन देश के विषय मे चिंतित रहलाह

आ अपन हितैषी के सलाह पर रामजी से संधि कर' लेल पहुँच जाय छईथ जे हे मर्यादापुरषोत्तम अहाँ के बैर त रावण से थीक ने, तै कृपा क के ओकरे से युद्ध कैल जाय आ लंकावासी के अनावश्यक नुकसान जुनि करबई। विभीषण जी के लेल देश से मतलब देश के भूमि, देश के लोक, देश के संसाधन छल नै की राजा के निजी स्वार्थ आ निजी सोच। रावण के मृत्यु के बाद ओ रामजी के संधि अनुसार लंका के राजा बनय छईथ आ लंबा समय तक ओत' सुशासन के संग राज केलाह।

दोसर विश्व युद्ध के समय भारत के ब्रिटिश राज के खिलाफ नेताजी सुभाष चंद्र बोस सेहो एहिना आजाद हिन्द फौज ठाढ़ केने छलाह आ लड़ल छलाह जै से भारत देश आ भारत'क लोक के अङ्ग्रेज़ी राज से मुक्ति भेटय आ कुनु बेहतर लोकतान्त्रिक व्यवस्था एत बनी सकय।

ऐ से ई प्रमाणित होय छैक जे विभीषण जी एकटा देशभक्त आ मर्यादाप्रिय व्यक्ति छलाह। आ राजा के आलोचना से ल क राजा के प्रति विद्रोह सब के पाछू हुनकर मंशा देशहित आ मर्यादा से जुडल छल। हाँ मुदा ई त छैहे ने जे कलंक से कियौ नै बचल अछि जखन मर्यादापुरुषोत्तम स्वयं नै बचि सकलाह त हुनकर मित्र कत' से बचताह, स्वाईत विभीषण जी पर देशद्रोह आ कुलद्रोह के कलंक लगायल गेल। तै भेड़चाल मे या कोनो प्रोपगेंडा के तहत केकरो गद्दार या देशद्रोही कहबा से पहिने दू मिनट रुकि के अवश्य सोचबाक चाहिए जे जेकरा पर आरोप लगा रहल छी ओकर कृत्य की थीक आ ओकरा पाछाँ मंशा की थीक।

देशद्रोह के आरोप केहन खोखला थीक से देखला के बाद आब कुलद्रोह पर चर्चा क ली। निश्चित रुपे ओ अपन कुल के लोक (भाई, भतीजा) सब के नाश के एकटा पईघ कारक बनलाह। मुदा किए? किएकि नारी तर्जन आ स्त्री मर्यादा के विरुद्ध आचरण कर बला अपन समांग सब के सेहो विरोध करबाक साहस हुनका मे छलईन्ह। सामाजिक आ मानवीय मर्यादा के विरुद्ध आचरण करई बला अपन समांग के प्रति ओ पक्षपात नै करे छथीन अपितु पहिने ओ हुनका सब के बुझेबाक प्रयत्न करे छईथ, हुनका सन्मार्ग पर लाब' के प्रयत्न करे छईथ। आ नै मानला पर अपन समांग के भी पाप के समुचित सजा दियाबई छथीन। आई हम देखई छी जे अक्सर देश मे नारी के विरुद्ध होय बला अपराध मे अपराधी के घर'क लोक, रिस्तेदार, पार्टी के लोक सब ओकर अपराध के जानितो ओकरा संगे ठाढ़ भ क ओकरा बचाबई छैक। वर्तमान मे देश आ समाज मे नारी के प्रति बढ़इत अपराध के ई एकटा प्रमुख कारण थीक। सेंगर, चिन्मयनन्द, आशाराम, रामरहिम, आदि एहेन सैकड़ो उदाहरण थीक। स्वाईत आई समाज मे विभीषण सन उदाहरण के आवश्यकता थीक कि यदि समाज मे एहेन अपराध आ कुकृत्य आहाके अपन परिवार के लोक भी करय छईथ त हुनको विरूद्ध अहाँ ठाढ़ भ सकि से साहस अहाँ मे होय। आब अहिं बताऊ जे एहन साहस के काज सराहनीय थीक कि निंदनीय!

ओना त पूर्वानुमान यैह छल जे युद्ध मे राम जी के विजय हेतई, एना मे हुनका से संधि क के एक तरहे देखल जाय त विभीषण जी महर्षि पुलत्स्य के कुल के नाश हेबा से सेहो बचा नेने छलाह। किछ लोक लांक्षण लगाब' के क्रम मे कहय छईथ जे कियौ विभीषण नामो नै राखय छै। से हे आदरणीय लोक सब से त लोक सुग्रीव आ

जामवंत सेहो नाम नै राखय छैक। नाम त एकटा चलन छैक जे जुग अनुसार प्रचालन मे रहे छय। एक समय मे सबसे प्रचलित रामे नाम आब कतेक लोक अपन बालक के राखय य?

अंतिम बात मुहावरा पर आबाय छी। ‘‘घर’क भेदी लंका डाहई’’ मुहावरा के अर्थ भेल कि यदि अंदरे के आदमी भेदी निकलि जाय त लंका सन शक्तिशाली राज सेहो ढहि जाय छैक। तै शासक के अंदर के लोक मे एतेक असंतोष नै पनप’ देबाके चाहिए जे ओ शत्रु के अहाँ’क भेद बता दै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

संतोष कुमार राय 'बटोही'

'मंगरौना' (धारावाहिक उपन्यास)- आगाँ (६आ७)

<u>६</u>

कलियुग मे सभ कियो अपन नीक देखैत छथिन्ह। नीक लोक केँ बड़ि सताउल जाएत छै। भिनभिनौज आओर जड़-जमीन केर बँटवारा सभ सs पैघ अधकपाड़ छियैए। संतोष केँ जिनगी मे बड़ि दु:ख छलैन्ह। व्यासजी केँ कोंरियाही बेमारी छलैन्ह। भाई सभ अधपागल , दोसरक गप्प सुनियार भौजै छलैन्ह। जखन संतोष इंटर मे पढैत छलाह तँ हुनकर मैझली भौजाई नियारलीहि जे एकरा नहि पढ़s देबै। हमर स्वामी केँ कमेलाहा पर इ डाकटर भs जेताह, मूरख के लाठी बीचे कपाड़ । फेर की भेलै ? ओ सियालदह केँ गाड़ी पकड़ि कs कलकत्ता पहुँच गेलीह। मंगरौना केँ मरद अपन कनिया केँ गुलाम।

संतोष कुनौह धरानी आई एससी मे दरिभंगा मे सी एम साइंस कॉलेज मे नामांकन लेलाह आओर पढ़s लगलाह। आई एससी केलाह। घरक गरीबी आओर आगा पढ़वाक कोनहु चारा नहि छलैन्ह। बाबूजी फुसिंयौह केँ व्यासजी! कर्महीन व्यासजी ! हुनकर माए आओर बहिन मिलि कs हिनका पढ़ौलकैन्ह। माए केँ दोसरक घर मे कुटौन-पिसौन करs पड़लैन्ह।

बहिन कें उमिर बेसी भ' रहल छलैन्ह। हुनका सँ छोट चचेरी बहिन केर ब्याह भऽ गेलैन्ह। व्यास जी बेमार भेलाक बाद 2001 मे गुजैर गेलाह। धर्म नीक काज छियैए, परञ्च कर्म सँ मुँह नहि मोड़क चाही । ओ पार उतैर गेलाह। अपन लीला समाप्त केलाह। 2002 मे संतोष केर बड़ भाई अपन बेटी केर ब्याह कऽ लेलैत। बहिन हुनकर बेटी सँ पैघ छलैन्ह। कलियुग मे सभ आचार-विचार पर जेना डोम मूति देने छै ! घोर कलियुग !!

पुत्रक की कर्म होएत छै, सेहो लोक विसैर रहल छथिन्ह। एकर सबूत 'वृद्धाश्रम' अछि। व्यास जी कें गाँड़िक धोती तक हुनकर बड़ लड़का छिन्न लेलकैन्ह। व्यास जी धोती, गमछा आदि उतैर कऽ बड़ लड़का कें सोझा मे फेंक देलकीहिन। चारि टा दशरथ कें एको टा नहि काम कें। भूख आओर पै कें अभाव मे दवाई-दारू नहि भेलैन्ह। आओर ओ बेमार भऽ गेलाह। पिता कें की मतलब होएत छै से संतोष कें जामिया मे विशेष खललैन्ह। पै सँ बेसी जरूरत विचार कें अखनो होएत छै। विचार सँ जग जीत सकैत छी।

मंगरौना मे पैर खींचनाहर बेसी अछि। राजनीति पुरूख बेसी छथि। गाम बौरा गेल छै। जेकरा जे मोन से करैत छथि। 'शिष्टाचार' शब्द गाम सँ निपत्ता भऽ गेल छै। सभ कियो विद्वान भऽ गेल छथि। गप्प छोड़वा मे गोनू झा कें पितामह भऽ गेलाह अछि। सभ कियो। दारू कें ठेका गाम मे चलि रहल अछि। समाज, परिवार, व्यक्ति सभ कियो दिशाहीन भऽ गेलाह छथि। मुँहा-ठिठ्ठुर, गुँहा-गिज्जर आम गप्प भऽ गेल छै। भाई-बहिनक रिश्ता खत्म भऽ गेल छै। समाजक प्रतिष्ठा दाऊ पर लागल छन्हि, परञ्च अइ गप्प सँ किनको किछु

मतलब नहि छन्हि। सभ कहैत छथि - '' अपन माथा साहौर-साहौर करू।"

गाम शहर भऽ सकैत अछि ? परञ्च संस्कार कें शहरी नहि होमऽ देल जाउ। मनुख कें मनुख बुझल जाउ। चिटिंगबाजी समाज कें दिशाहीन कऽ सकैत अछि। बेसी सँ बेसी लोक फिरिशान भऽ सकैत अछि। सत्य कुंठित भऽ सकैत छै, परञ्च सत्य कें जीत हेबे करतै - 'सत्यमेव जयते' । सामाजिक समरसता कें कृत्रिमता खतम कऽ रहल छै।

गाम मे फुँसियौंह कें राजनीति भऽ रहल छै। पद कें की गरिमा होएत छै, जिम्मेदारी की होयत छै से बुझिनिहार कियो नहि छथि। बस, हुनका अपन पेट भरवाक चाही आओर सभ किछु जाउ भाँड़ मे। गाम मे सभ किछु मे राजनीति केनिहार सामाजिक मेलजोल के खतम कऽ रहल अछि। बड़ि दुखक गप्प छियैय जे गाम मरि रहल छै। कियो देखनिहार नहि छै।

संतोष कें गरीबी मे जन्म भेलन्हि। हुनकर बाबू जी गुमान मे छलाथि जे चारिटा पुत्र अछि। परञ्च विद्वान रहितौंह ओ अपन संतान कें नीक संस्कार देवा मे असफल रहलाह। तकरे परिणाम भेलन्हि जे चारि टा बेटा रहैतहुँ हुनकर अकाल मृत्यु भेलन्हि।

हुनकर तेसर बेटा दसवीं पास कऽकेऽ कोलकाता में काज करऽ रगलाहा। ज्ञान कें अभाव मे एवं पारिवारीक विखण्डन कें कारणे ओ पथ सँ भटैक गेलाह आओर 'डोली मोंडल' सँ ब्याह केलाथि। काली

मंदिर मे मंगरौना कँ किछु बिगाड़ै वाला लोकनि मिलि कS किशन कँ ब्याह करवा देलकन्हि। ब्याहक कय्यैन सालक बादो हुनका मुसरियो नहि गिरलन्हि। 'डोली मोंडल' कँ ओ छोड़ि देलथिन्ह।

हिनकर देखादेखी हुनकर भतीजा नीतीश आओर अभिषेक केलाथि । दुनू भैय्यारी बिन दहेज कँ 'लव मैरीज' केलाह। देहज-प्रथा कँ खतम कके मिसाल देलाथि। हुनकर माए-बाप कँ मोन लगले रहि गेलन्हि जे बेटा कँ ब्याह धूमधाम सँ करताह। बकरी बकरी होएत छै ; सूअर सूअर । से समाज कँ बुझS पड़तन्हि। जिनगी अनमोल होएत छै। बेपटरी पर रेलगाड़ी नहि चलि सकैत छै।

गामक छौड़ा शहर जाकS 'इंटरकास्ट मैरीज' कS रहल छथि। वैदिक वर्ण-बेवस्था आओर जाति-प्रथा के तोड़ि रहल छथि। आब कुनहुँ रोक-टोक नहि छै। जिनका जे मोन होएत अछि से करू। गाँड़ि खोलि कS नाचू ; नहि देखल जेतन्हि तँ जिनका शरम हेतैन्ह , ओ आँखि बन्न कS लेताह। घोर कलियुग बीत रहल अछि ! मंगरौना बताह भS रहल अछि। भांग खा कS ; गांजा पीबि कS आओर दारू पीबि कS लोक बौरा रहल अछि। युवाजन भोला बाबा बनि रहल छथिन्ह। आक-धतूर खेनै आम गप्प भS गेल छै।

गामक शरम बिका रहल अछि - "झिनि-झिनि बिनि चदरिया ।" परेम कँ खुल्लेआम प्रदर्शन भS रहल छै। देह कँ नुमाईश खुल्लेआम भS रहल छै। इतिहास मे नीक छवि दर्ज़ हुइए इ कोशिश करकS चाही। युवा धरम कँ प्रति आग्रह भ रहल छथि। ओ करम सँ दुरि बनौने

जा रहल छथि। जे कर्तव्य सँ विमुख हेताह ओ मिट जेताह। घड़ीक पहिया नाचि रहल अछि।

७

'घरक भेदिया लंका डाह' इ कहबी ठीके सही छै। दुनिया नीक नहि छै। बड़ि ठकनाहर लोकनि छथि। परञ्च किछु निको लोकनि छथि। मंगरौना गाम मे भगिनमान कँ कोनहुँ इतिहास मे नाम नहि छै। वंश वृक्ष बेनिहार सभ कँ अइ गप्प पर ध्यान देवाक छलैह। सभ कियो अपन पूर्वज कँ खोजि सकैत छथि। तर्पण केनिहार सभ सँ विशेष निवेदन हेबाक चाही जे कम-सँ- कम सात पुश्त धरि नाम याद रहक चाही।

गाम मे बूढ़-वृद्धा कँ देखनिहार बड़ि कम रहलै। अपन बेटा-पुतौह बूढ़ माए-बाप कँ नहि देखि रहल छै। आइ दुर्गा स्थान मे धीरू राम भेटलाह।

हम पूछलियन्हि, " की समाचार अछि ?"
ओ कहलाह, " की कहू बउवा , कियो नहि देखनिहार अछि। देखैत छियैय - एकटा आँखि खराब भ गेल अछि। तीनों छौड़ा मे सँ कियो नहि देखा दैत अछि। बूढ़ाड़ी मे गिर-पइर कँ मरि जायब। इएहे रहि गेल आब जिनगी मे।

मुइला पर लोक कंटाहा आओर पुरहित कँ कतेक दान करैत अछि। परञ्च जिला पर दुखे-दुख। कियो देखनाहर नहि। समाज आओर परिवार आब मरि रहल अछि। संवेदना आब हरा गेल छै। सभ कियो

हबड़-हबड़ मे लागल छथि। कथि कँ हबड़-हबड़ छै जे अनबुझ अछि। माए-बाप तड़पि रहल छन्हि आओर अपने एश-मौज मे लागल रहति छथि। इएह कलियुग छियैय। जिअल मे गुहाँ भत्ता मरल मे दूद्धा भत्ता।

रामपरी कहियो सासु कँ सेवा नहि केलीह, परञ्च मुइला पर हुनकर साँरा पर जुड़ी-शीतल मे जल चढ़ाबैत छथि। जिन्दा मे सासु कँ झोंटा उखैर लेलकै। मंगरौना मरि रहल अछि; धधकि रहल छै मंगरौना । मुइला पर जबार न्यौता देलाह सँ किछु नहि होएत। माए -बाप सँ बढ़ि कS किछु नहि होएत छै।।

गाम गाम नहि रहि गेलै। गाम शहर भS रहल छै। शहर जकाँ आचार-विचार छौर भS रहल छै। इज्जत कँ गुँह-गोबर भS रहल छै। आँखि कन्हा केने रहS पड़ैत छै। डीजे मे ’ लॉली पॉप’ वाला गीत बजला सँ सभ कियो देखार भS जाएत छथि। होएत छन्हि धोती- कुरता फाड़ि कS नाची। ललनवा के भरि देह गुदगुदी होएत छै। होएत छै कखन बरूआ कें गाड़ी मे सँ कूदि कS कुरता फाड़ि दियै। रौशन तS डीजे गाड़ी पर चढ़ि कS गरदा उड़ा देलकै। इ भेलै नाच ! लबड़ा नाच ! हाथ कँ तेना घुमबै छै जे ओ बिरजू महराज कँ फेल कS देतै। इ की भेलै - मारि फँसि गेलै। गारि-गराबैल भS रहल छै।

" तोरा माय .... ।"
" तोरे बहिन.... ।"

लाठी निकैल गेलै - मार त मार सार के...।
प्लास्टिक कँ कुर्सी एक- दोसर कँ देह पर तोड़ि रहल छथि नचनियाँ सब। ब्याह मे इ सभ आइ-काल्हि हेबे टा करैत छै। बरयातिया सभ दारू पीब कऽ शेर भऽ जाएत छथि। दोसर गाम जाकऽ हिरिंग - भिरिंग केलक कि दे घुस्सा...दे घुस्सा... दे लाठी...दे लाठी ।चारू नाल चित ! शेर बकरी भऽ क मिमियैत छथि।
वाह रे ! डीजे वीर !

मिथिला संस्कृति मे छेद भऽ गेल अछि। पारंपरिक ब्याह पद्धति समाप्त भ रहल अछि।विधि-विधान मे कटौती भऽ रहल छै।

(अनुवर्तते)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

केशव भारद्वाज- (आइ-काल्हि कम्पाला, युगाण्डामे)

किछु बीहनि कथा, किछु लघुकथा, एकटा दीर्घकथा आ एकटा उपन्यास

ओ बच्चा (बीहनि कथा)

कमिटमेट (बीहनिकथा)

मनु:गंध (बीहनि कथा)

सोच (बीहनि कथा)

गलत निर्णय (बीहनि कथा)

खाली हाथ (बीहनि कथा)

नबका धनिक (बीहनि कथा)

किस्मत (बीहनि कथा)

प्रेम विवाह-नब प्रयोग (बीहनि कथा)

दही वाली बुढ़ी (बीहनि कथा)

भुत-बंगला (बीहनि कथा)

मध्यस्थ (बीहनि कथा)

गामक माइट नसीब नञि (बीहनि कथा)

कन्यादान (लघुकथा)

पछतावा (लघुकथा)

उपराग (लघुकथा)

अएना (लघुकथा)

हत्यारा (लघुकथा)

हुब्बा (लघुकथा)

इच्छा (लघुकथा)

मिशन एडमिशन (लघुकथा)

अपन लोक (लघुकथा)

बख्शीश (लघुकथा)

टीस (लघुकथा)

विश्वासघात (लघुकथा)

पापक फल (लघुकथा)

हाथक लकीर (लघुकथा)

छक्का-पुराण (लघुकथा)

सरप्राइज (लघुकथा)

अफेयर (लघुकथा)

ओ बच्चा (बीहनि कथा)

किछु लोक जीवन मे एहन होइत छइ जे कनियो काल मे अप्पन छाप छोड़ि जाइत छइ। उनकासऽ आहाकऽ कम्फर्ट लेवल कम्मे काल मेभऽ जाइत अछि।एना बुझाइत जे कहियाकऽ पुरान परिचित छी।कतउ किछु छइ जे खीचैत छइ एक दोसर के।विस्मृति मे ओ चेहरा अबइत रहइ छइ।

ओही मेसऽ एककऽ विषय मे कहइ छी। बच्चा मे संबंधी कत गेल रही ओत ओइ बच्चासऽ भेंट भेल। ओ उमर मे हमरासऽ पैघ रहितो, हमरा पैघ जेका आदर दिअय। हमरा देखते ओ बच्चा खुशभऽ जाय। अप्पन सब संगीसऽ हमरा भेंट कराबय।तहिया ओतेक धनिक गरीब त नञि बुझियइ, मुदा ई बुझि गेल रहियइ की ओ परिवारकऽ आर्थिक हालात ठीक नञि छइ। हम जखइन ओकरा संग ओकर घर जाइ त ओकर पुरा परिवार खुब मान करय। अतेक मान, अप्पन गाम मे नञि भेटय ताहि लेल बेशिये नीक लागय। ओ बच्चा हमर संबंधी कतकऽ हाट-बाजार ,टहल- टिकोरा सेहोकऽ दिअय।हाट जायकऽ काल मे हमहु ओकरा संगे जाइ त ओ बड खुशभऽ जाय।जेतबा स्मृति अछि, ओ किछु सामानक खरीद मे गड़बड़ी करय, मुदा नञि हमरा खराब लागय आ नञि हम अप्पन संबंधीकऽ किछु कहियइ। कारण ई छल जे ओ बच्चा ओइ पाइसऽ अप्पन घर खातिर किछु सामान खरीदइ छलइ। दोकानदार आ ओकरा मे इशारा मे गप्पभऽ जाइ। हमरा पाहुन बच्चा कहि किछु चाकलेटदऽ दिअय। हमरा जन्तवे, हमर संबंधीकऽ सेहो ई गडबडी बुझल छेलइन, लेकिन कियो किछु नञि कहइ।गाम घर मे बाबू-भइयाकऽ बच्चा ओतेक अनुशासित नञि कि दोकानसऽ

सामान आइन दय। नौकर चाकर भेटनाइ कमभऽ गेल छलइ। ओही स्थिति मे ईएह बच्चा पर सबके आस। ई त एक गुण भेल। दोसर जे ओ पढ मे सबस तेज सेहो छल। लेकिन जे बच्चा दोकानसऽ सामान आनऽ काल अतेक सज्जन, उएह बच्चा संगी संग खेल मे सबसऽ दबंग। खेल मे ओकरे चलती छलइ- कनी उम्र सेहो बेशी भेनाइ एक कारण। कहबाक जे कयेक टा ओकर रूप आ हम ओकर संग आनन्दसऽ बितबइ छलौं।

समय अप्पन रफ्तारसऽ चइल रहल छल। कयेक बरख कऽ बाद जखइन फेर हम ओइ गाम गेलौं आ ओकर पुछारी कयलौं त पता चलल कि ओ बच्चाकऽ दिलकऽ बीमारी छलइ आ ओकर मृत्यु तीन बरख पहिनेहेभऽ गेलइ। हम सुइनकऽ स्तब्धभऽ गेलौं। हम संबंधीसऽ पुछलइन कि ईलाज नञि कराओल गेलइ। जवाब भेटल- खाय पर आफत छलइन, ईलाज कतऽ सऽ करयतिन।हम १/२ दिनक बादय गाम वापस आबि गेलौं। कतऽ हम सोचई छेलौं कि ओ बच्चा अप्पन माय बापकऽ कष्ट दूर करत, त कत ओ बच्चा सबकऽ छोड़ कर चइल गेल।गरीबक जिम्मेदार बच्चा।

भगवानसऽ विनती जे ज्यों जन्म दइ छथिन त जीवन सेहो दियउन।

कमिटमेट (बीहनि कथा)

कमिटमेट शब्दकऽ युवा सब सलमान खानकऽ डायलॉगसऽ जोइड़कऽ गाहे-बगाहे उपयोग करइत छथि। आइ हम एक टा मैथिल मनीषीकऽ कमिटमेटकऽ बारे मे लिख रहल छी। हाल तक मिथिला मे संयुक्त परिवार बहुल मे देखल जाइत छल। संयुक्त परिवारकऽ अप्पन किछु सीमा , अनुशासन व गरिमा होइत छइ जे कयेक बेर विकास विरोधीभऽ जाइत छल।

कथाकऽ किरदारकऽ काल्पनिक नाम हम राम बाबू रखइ छी।आजादी पुर्वकऽ समय छल।

राम बाबू सुभ्यस्त गृहस्थ संयुक्त परिवारकऽ छलाह। घरक सामुहिक खर्चसऽ कलकत्ता मे पढलाह उपरांत सरकारी सेवा मे कार्यरत छलाह। हुनक सहोदर छोट भाइ आ पितियौत भाइ दुनु एक रंगाहे विद्यार्थी छलाह । एक्के संगे मैट्रिक पास केलाह। आब सवाल ठार भेलइ कि आगु के, की, कोना।फैसला भेलइ कि चुंकि राम बाबूकऽ बाहर पठाकऽ घरक सामुहिक आमदनीसऽ पढावल गेल छइन, ताहि लेल अइ बेर आगुकऽ पढ़ाइकऽ मौका उनकर पितियौत भाइकऽ भेटतइन। आ पढ़ाइकऽ खर्च, राम बाबूकऽ देबाक छइन। राम बाबूकऽ विचार छलइन जे दुनु भाइकऽ आगु पढावल जाय। मुदा उनकर मत पर सहमति नञि भेलइन। राम बाबूकऽ सहोदर अनुजकऽ अंग्रेज सरकार मे नौकरी ज्वाइन कर परलइन। ओ चाहियोकऽ ग्रेजुएट नञि करा सकला अप्पन छोट

भाइ के। मुदा ताहि समय अपने आपसऽ कमिटमेट कयलाह कि हम अप्पन भातिजकऽ जरूर ग्रेजुएट करायब। घरक फैसलाकऽ अनुसार पितियौत भाइकऽ ग्रेजुएट करेलाह, आ ओ भाइ सेहो सम्मानित पद प्राप्त कयलाह।

राम बाबूकऽ अइ बीच अपनो परिवार बढलइन। तखनो ओ भातिज की भतीजीकऽ सेहो पढेलाह आ ग्रेजुएट बनेलाह। ई भेलइ कमिटमेट। हालांकि राम बाबूकऽ जीवन काल बेशी नञि रहलइन, मुदा परिवार खातिर हुनक त्याग आ योगदान अमिट छइन।

आब जे हमर कहबाक आशय अछि जे अतेक त्याग की हमरा सब मे अछि?

हम अप्पन कमाइसऽ इच्छाकऽ विरुद्ध पितियौत भाइकऽ पढबइकऽ खर्च उठा सकइ छी?

परिवारकऽ अनुशासनकऽ एना पालनकऽ सकइ छी?

कमिटमेटकऽ पुरा करबाक इच्छा शक्ति अछि?

संयुक्त परिवार एना चलइ छलइ। त्याग पर परिवारकऽ गरीमा टीकल रहइ छलइ।

आइ त कमउआ किनको सुनताह अप्पन खर्चकऽ बारे मे।ओइ मनीषीकऽ हमर नमन। हमर संबंधी सब बुझि गेल हेताह।

मनु:गंध (बीहनि कथा)

कयेक लोक युवावस्था मे बहुते सामाजिक रहइ छथि, मुदा बाद मे एकाकीभऽ जाइत छथि। ओही मेसऽ एक छथि- राम बाबू। आब दिल्ली मे रहइ छथि। बहुत कम अबरजात गामघर स। भगवती सब किछु देलखिन गामो मे, मुदा कियो देख बाला नञि। भम्म पड़इ छइन, घर - दुआर। जतऽ गाम- समाज के,के कहय, दुर दुरकऽ संबंधी सब परल रहइ छल, ओत कियो सांझ देबबाला नञि।

हमर ओ संबंधी नञि , अनुबंधी छलाह। हुनक चला- चली हम देखने छलियन।ओ व्यक्ति एना असगरुआ किअए भऽ गेलाह। हमर जिज्ञासा बढइत गेल। एकसऽ एक खिस्सा हुनक रूख्खर स्वभावकऽ दिल्लीकऽ मैथिल समाज मे फैलल अछि। कियो कहइ छइ जे हम गेलौं भेंट करऽ त हमरा रामबाबू कहलाह- ई दिल्ली छइ । अतऽ एक सांझ लोक खुआ त दइ छइ, मुदा रहअकऽ नञि दइ छइ। हम सुनिते घुरी गेलौं। बरका छथि त अपना के। हमरो सारकऽ दिल्ली मे कोठा-सोफा छइ। हम ओत चइल गेलौं। अहिना दस मूंह- दस गप्प।

जखइन मूल कारण पता लागल, त सोचऽ पर विवशभऽ गेलौं कीकऽ जिम्मेदार।

रामबाबू वन विभाग मे पैघ अधिकारी छलाह। सब दिअयद-बाद, गौआ, संबंधी,ईस्ट मित्र, जे आग्रह केलकइन , छोट छिन सरकारी नौकरी दियेलकिन। ईहो कहू, कनिको कियो दरबारी केलक, किछु न किछु भेटलइ। ताहि लेल बुढ़ी दाई माई सब रामबाबूकऽ खुब आशीष

दइ छलकिन आ कियो बेटा, कियो जमाय, कियो नाती, पोता, भागिनकऽ नौकरी खातिर कहतिन। रामबाबू अपना संग एक टा ललका डायरी रखइ छलाह। जिनकर नाम डायरी मे लिखा गेल- बुझु नौकरीभऽ गेल। उनकर पद त बढइत गेलइन लेकिन बाद मे सरकारी तंत्र मे आयल नियमावलीकऽ कारण नौकरी लगबऽ मे असमर्थभऽ गेलाह। बड जश- प्रतिष्ठा छलइन। ओतबे खाई जे मोछ मे नञि लागे- ई सिद्धांत पर चल बाला। जई शहर गेलाह, सामाजिक कार्य मे भरपूर योगदान कयलाह।

रिटायरमेटकऽ एक साल पुर्व कर्मचारी यूनियन उनकर खिलाफ बड़का आन्दोलन केलकइन। ओइ मे किछु लोक माईकलऽ क उनकर घर पर गाइड़- गुप्ता सेहो देलकइन। अकर नेतृत्व उनके द्वारा लगावल नौकरी हुनके दोसर टोलकऽ गौआ करय छल। ओकरा नौकरी ओ बहूत कठिनाईसऽ दियौने छलाह- ओकर मसोमात दाईकऽ आग्रह पर। ई सबकऽ पाछु किछु लाबी काज करय छल- आ मोहरा नबका कामरेड हुनके लगायल लोक छल। ई घटना उनका अन्दरसऽ तोइड़ देलकइन। फेर उनका मनु: गंध लागऽ लगलइन। ओ कह लगलखिन की जेकरा आहा कवनो नीक नञि करबइ, ओ कमसऽ कम गाइड़ नञि पढत।

आब सवाल ई सामने अइछ कि एकर जिम्मेदार के। अतेक सामाजिक लोक एहन एकाकी किअए भेल-जिम्मेदार के।

जीवन मे ज्यों उपकृत कनियो छी, त उनकर खिलाफ नञि जाऊ। समाज मे उपकारी स्वभावकऽ कम्मे लोक बचल छथि। ओहो विमुखभऽ जयताह त सब सामाजिक व्यवस्था गड़बड़ा जाइत।

सोच- (बीहनि कथा)

पहिने राज, दरबार आ जमींदार सबकऽ कृतिसऽ आम लोक उपकृत होइत छल। जेना स्कूल, कालेज, धर्मशाला, मंदिर,खेलक मैदान, मेला, पढ़ वाला बच्चाकऽ वजीफा, पूजा, रामलीला, बड़का कलाकारकऽ कार्यक्रम सब अछि। लेकिन इनकर कृतिसऽ बेशी विकृतिकऽ खिस्सा, गांव-घर मे फैलल अछि। सच्चाई पता नञि। आब ओइ स्थान पर अधिकारी आ किछु नेता/नेत्री छथि। नेता सबहक अपने अतेक टा पेट जे ओ भरतइन तखइन ने समाजकऽ सोचताह। बचलाह अधिकारी सब।एक टाकऽ सोचऽ कऽ दृष्टिकोण आहा सबकऽ साझाकऽ रहल छी। किछु गोटेकऽ बुझलो होइत।हमर किरदार रामबाबू (छद्म नाम) छथि।

राम बाबू भारत सरकार मे शीर्ष पद पर छलाह। एक बेर कोनो काज मे गाम गेलाह। दु दिनभऽ गेलइन, कियो गंउआ भेंट करऽ नञि अयलइन।कान ठार भेलइन। हमेशा लोकसऽ घिरल रहअ वाला लोक।पता लगलइन जे दिल्ली मे उनकर घर पर गेलाह पर उचित व्यवहार हुनका संग नञि कयल गेल छलइन। जाइनकऽ दुख भेलइन। ओ अपने सबहक कतऽ गेलाह आ दिल्ली आबऽ कऽ नोत देलखिन। आब की छल। शुरू भेल लोकक रेला। मिथिला मे बेरोजगारी सब दिनसऽ महामारी। कियैक त काज आ खेलकऽ सेहो छोटका बरका मे बाटल। दिल्ली मे उएह काज करताह मुदा दरभंगा मे कोना।

रामबाबू एकटा कर्मचारीकऽ लगा देने छलखिन- मैथिल सबहक सत्कार मे। अपनहु खोज-खबर रखइ छलखिन। नौकरीकऽ प्रत्याशी सबकऽ पहिले दिन स्पष्ट शब्द मे कहि लेल जाइत

छलइन। ठीक छइ नौकरी नीक- बेजाय, आगु- पाछु भेटत, मुदा ताबइत आहांकऽ श्रम करऽ परत। बहुत मैथिल श्रमकऽ नामे पर परा जाइत छलाह। जे बचई छलाह, हुनका सबकऽ झाड़ू, खुरपी, कोदाइड़, झरनादि थमा देल जाइ छलइन। परिसर बड़की टा छलइन आ आगंतुक मैथिल ओहोसऽ बेशी। खुब तरकारी उपजई, बिकाइ आ सरकारी एकाउंट मे जमा होइ। जे काजक नाम लइते भाइग जाइ छलाह ओ खुब नुन तेल लगाकऽ खिनान्स करय छलाह। जे सब टीकलाह, सबके नौकरी भेटलइन। एक आर खास गुण छलइन जे छुट्टीकऽ दिन ओ सब आगंतुकक संगहि भोजन करय छलाह।

अइ काज करेबाक पाछु जे सोच छइ ओ प्रणम्य छइ। हुनक कहब छलइन जे ई सब बइसकऽ खाली खेताह से राष्ट्रीय क्षति छइ। किछु ओ उत्पादकता होबाक चाही। कहुं सब खाली बइसकऽ समय नञि बिताऊ। ई आहाक नञि राष्ट्रक क्षति अइ।

हमरा तरफसऽ हुनक सोचकऽ सैल्यूट।

गलत निर्णय (बीहनि कथा)

रामबाबू दिल्ली मे सरकारी अस्पताल मे डाक्टर छलाह। ओतेक सामाजिक त नञि मुदा कियो पहुंच जाइ छलइन त किछु मददकऽ दइत छलखिन। सबसं पैघ ई विशेषता छलइन जे काज करथिन वा की नञि, बोली मधुर छलइन। मोहन मिश्रा जेका फीस देलोह पर उवाच कथा नञि कहइ छलखिन। अप्पन समाज मे बोली बानीकऽ लकऽ नीक इज्जत छलइन। रामबाबूकऽ एक टा संतान छलइन। नाम छइन - रिया। आब त धीयापुता कम्मे होइ छइ आ जे छइ से महा दुलारु। एकलौताकऽ त बाते अलग। ज्यों माय - बाप पाइ बाला, त ओ आबेश अलगेसऽ देखाई छइ।

एक दिन रामबाबू लग गामक बगलक गामक एक गोटे देखबऽ एलखिन। गप्पकऽ क्रम मे चर्चा भेलइ की उनके गामक रमन नामक बच्चाकऽ दिल्ली मे MAMC मे नाम लिखेलइ अछि। रमनक पिताकऽ अस्था- पात बेशी नञि छइन। आरो बच्चा सब पईढ लिख रहल छइन।ओ चाहइ छथि की कियो रमनक पढाइक भार गछि लियाय आ बियाहक खर्चदऽ दिअयह त ओ कथाकऽ लेताह। रामबाबू जखइन दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे पढइ छलाह त उनकर एकटा संगीकऽ अहीना बिबाह भेल छलइ। बड ठसकबाजी मे ओ संगी बियाहक बाद रहअ लागल छेलाह। बाद मे सासुरे वाला ओकरा सरकारी नौकरी बिहारे मे लगा देलकइ। रामबाबूकऽ ई कथा ठीक बुझेलइन। आ ओ ओइ सम्भ्रांत व्यक्तिकऽ गप्प बढबइ

लेल कहलखिन। बिबाहक खर्चकऽ अर्थ सामने वालाकऽ हैसिइत पर निर्भर करइत छइ। जेना तेना बिबाह निश्चित भेल। घी कत हरायल, रहरी दाइल मे। रामबाबू एक टा संतानकऽ लेल पुरा खर्च कयलाह।

बिबाह तभऽ गेल। मुदा रमन आ रियाकऽ सोच मे कतउ मेल नञि। रिया बिबाहकऽ सामाजिक समझौता बस मानञि छलीह। समाजक रीति-रिवाज कमजोरकऽ लेल होअइ छइ- ई हुनक मान्यता छल। समाजकऽ लेल रमन आ रिया दम्पति मुदा असल मे दुनु अलग । रामबाबू सब देखइत बुझइत छलाह। अप्पन संतानकऽ जनञित छलाह। ई भरोस छलइन जे सब ठीकभऽ जेतइ।

इमहर रमन MBBS केलाक बाद MD करऽ लागल छलाह।रिया सेहो ग्रैजुएशनकऽ संग स्त्री शक्तिकऽ एक्टिविस्टभऽ गेल छली। ओ अपनाकऽ सेहो सामाजिक विसंगतिकऽ शिकार मानञि छलीह। हुनक कयेकटा रिपोर्ट अमेरिकाकऽ जर्नल मे छपि चुकल छलइन। मानवाधिकार पर आगुकऽ पढ़ाइकऽ वास्ते छात्रवृत्ति संग वजीफा सेहो भेटलइन। ओ अमेरिका चइल गेलीह। ओतइ एकटा आर एशियाई मूलक लोक सऽ हुनक विचार मिलइ छलइन। आ बाद मे पढ़ाइकऽ बाद दुनु संगे रहअ लगलीह। रमन सेहो MDकऽ बाद बड़का अस्पताल मे कन्सलटेन्टभऽ गेलाह । नीक दरमाहा भेटई छलइन। आब रामबाबूसऽ मासिक पाइ लेनाई छोड़ि देने छलाह। रमन आ रिया दुनुकऽ माय- बापकऽ असलिइत कमोबेश पता चइल गेल रहइन। उपाय की। जखन कखनो रामबाबूकऽ कनिया रियाकऽ फोन करथिन त रियाकऽ

पहिल जबाब जे रमनकऽ छोड़िकऽ ज्यों कवनो आर गप्प अइ त ओ करू। माय लग आर कवनो गप्प नञि छलइन। बहुत साहसकऽ क रमन, रिया लग तलाकक प्रस्ताव पठेलाह, मुदा रिया ईहो लेल तैयार नञि। दुनु परिवार लोकक व्यंग्य बान सहइत छल। रियाकऽ रामबाबूकऽ धन सम्पत्तिकऽ सेहो कवनो लिप्सा नञि। रामबाबू साल दु साल पर कनिया संग अमेरिका जाइत । किछु समय रिया संग बितबइत आ वापस दिल्ली आइब जाइथ। ओ अपनाकऽ ई बेमेल बिबाहक दोषी मानञि छलाह।

बहुते आग्रह पर रिया तलाक पर सहमति देलखिन आ रमनकऽ दोसर बियाह एकटा जुनियर डाक्टरसऽ भेलइन। रामबाबू अइ बियाह मे अपनहु शामिल भेलाह। रामबाबू रिटायरमेटकऽ बाद अपनाकऽ व्यस्त राखइ लेल एक टा प्राईवेट हास्पिटल जाय लगलाह । रमन सेहो नब जिनगी शुरू करबाक लेल लन्दनकऽ अस्पताल ज्वाइन केलाह ताकि इतिहास पीछा नञि करयन।एक टा गलत निर्णय दु परिवारकऽ देश निकालाकऽ देलक।

अइ लेलकऽ दोषी। माय - बाप त नीके सोचइत अछि- संतानकऽ वास्ते मुदा ....होनीकऽ आगे ककर चललइ अछि।

<u>खाली हाथ (बीहनि कथा)</u>

रामबाबू प्रगतिशील गिरहथ छलाह।दु टा बेटा छलइन। दुनुकऽ पढ़ाइ बढ़ियासऽ होइन, अपनाकऽ ओही लेल झोंईक देने छलाह। शिमलाकऽ नामी स्कूल मे दुनु बच्चा पढलकइन। सोइच सकइ छी कि बिना नियमित आमदनीकऽ ई काज कतेक कठिन। इमहर उमहरसऽ जोर तोरकऽ क काज करय छलाह। सालों भरी अही मे लागल रहइ छलाह। कखनो बच्चा सबकऽ लकऽ शिमला जाइत छइत त कखनोलऽ क अबइ छथि।हरदम जतरे मे रहइ छलाह आ खाली हाथे। कनिया ओतेक सक्रिय नञि छलखिन जे ओहो कखनो असगर शिमला चइल जइतइथ। आइ काल्हि त माय सबकऽ ई बिभाग छइ। मजबुरी वा शौक, से स्पष्ट नञि। कयेक बेर त रेलवे टिकट वेटिंग मे रही गेलइन, तखनो बच्चा सबकऽ कवनो दिक्कत नञि होबऽ देलखिन। जुनुनी छलाह।

गाम- घर मे सब कहइन जे अप्पन अतृप्त इच्छाकऽ बच्चाकऽ माध्यमसऽ पुरा करइत छथि। सत जे हुआय। शिमलाकऽ बाद दिल्ली विश्वविद्यालय मे बच्चा सब पढ़लकइन। बड़का बेटा दोसरे प्रयास मे संघ लोक सेवा आयोग मे उत्तीर्ण भेलाह आ IPS मे चयन भेलइन। रामबाबूकऽ तपस्या पुर्ण भेलइन। जे समाज मजाक उरबइत छलइन, आब ओकरा खातिर सबसं सफल लोक छथि। बेटा सेहो घरक स्थितिसऽ अवगत छलइन।ओ ट्रेनिंग मे जाइते, रामबाबूकऽ छोट भाइकऽ पाइ पठबऽ सऽ मुक्तकऽ देलकइन। बेटा पर बड्ड कथा सब आब लगलइन। रामबाबूकऽ बेटा अनुशासित छल। रामबाबू सब बड़का लोककऽ छोअइड़कऽ सामान्य परिवार मे कुटमइती कयलाह। उनकर अप्पन दर्शन छलइन

जे बेटाकऽ बिबाह अपनासऽ आर्थिक आधाररसऽ न्युन मे करी त पुतोहु मान देत। सब ठीक चइल रहल छलइन। पुतोहुसऽ सेहो रामबाबू पुरा प्रसन्न छलाह। पारिवारिक प्रतिष्ठा बेटाक लगभग आदर्श बिबाहकऽ बाद आर बढ़ि गेलइन।

अहि बीच मे ककर नजर लाइग गेलइ। रामबाबूकऽ बेटा जे जिला पुलिस कप्तानभऽ गेल छलाह, एक दिन लैण्ड माइन्स बिस्फोट मे घायलभऽ गेलाह। दिल्ली रेफर कायल गेलइन, मुदा बइच नञि सकलाह। अस्पताल मे जाबइत भर्ती छलाह त मंत्री अधिकारीकऽ लाइन लागल छलइन। टीवी बला सब रामबाबू आ हुनकर पुतोहुकऽ हमेशा देखबइत छलइन। लोक सब इनका सबकऽ जानऽ लगलइन।

बेटाकऽ मृत्युकऽ बाद रामबाबू गाम आइब गेलाह। सरकारीआ गैर-सरकारी तरफसऽ बहुत रास पाइ उनकर पुतोहुकऽ खाता मे जमाकऽ देल गेल। पुतोहु जे काजक बाद नैहर गेलीह से फेर नञि अयलीह। रामबाबू उनका बजबऽ गेलाह मुदा ओ नञि अयलीह।उल्टा शिकाइत। नैहर बाला सब उएह पाइकऽ हिसाब लगबऽ मे लागल। एक टा पेट्रोल पम्प सेहो भेटलइन। किछु दिनक बाद एक भलमानुषकऽ संग पुतोहुकऽ सेहो दोसर बिबाहभऽ गेल इन। रामबाबूकऽ कवनो खबर नञि। लोककऽ अनुसार, पाइकऽ लोभ मे ई बिबाह भेलइत अछि। बेटाकऽ यादकऽ अंतिम निशानी सेहो खत्मभऽ गेलइन।

जे रामबाबू बेटाकऽ मृत्युकऽ बादो साहस रखने छलाह से आब टुइट गेलाह। अर्धविक्षिप्त जेकाभऽ गेल छलाह। सरकारकऽ केहन कानुन जे माय बाप अप्पन सर्वस्व बेटा पर न्योछावरकऽ

दिअयह, ओकरा संतानकऽ सम्पत्ति मे कवनो भाग नञि। आर्थिक स्थिति त ततेक पातरभऽ गेलइन जे दोसरो बेटाकऽ सब छोअइरकऽ वापस गाम आबऽ परलइन।

रामबाबूकऽ जीवन फेर खाली हाथभऽ गेलइन।

नबका धनिक (बीहनि कथा)

रामबाबू (छद्म नाम) टुटल जमींदार परिवारसऽ छलाह। ओही समय मे गाम घर छोड़िकऽ महानगर अयलाह, जहिया घरक आर्थिक स्थिति केहनो होइ, निजी कम्पनी मे चाकरीकऽ नीकसऽ नञि देखल जाइ छलइ।बाप कहलखिन जे आहांकऽ जेते पाइ ओ कम्पनी वाला देत, ओइसँ१०० टका बेशी हमही देब। सच्चाई ई छलइ कि जथा- जर बेचकऽ ही सब किछु होअइत छलइ। मुदा एक टा टशन छलइ। सब होइतो रामबाबू टिनही बक्सालऽ क गामसऽ बिदा भेलाह।ओ बुझि गेल छलाह जे ई हवा-पानीसऽ किछु होबऽ वाला नञि छइ।

अप्पन अनुभव व अध्ययनकऽ आधार पर आगु बढ़इत गेलाह। एक तरहसऽ क्रान्तिकारी कदम उठेला। महानगर मे पहिने एक टा छोट घर, फेर बाद मे पैघ घर लेलाह। सामाजिक व सांस्कृतिक काज सब मे सेहो सहभागिता छलइन। व्यवहारिक लोक छलाह। गाम समाज मे सेहो यश छलइन।

आब देखू बदलाव। दु टा बच्चा छलइन। बेटा IIT आ IIM केलाक बाद कम्मे समय मे ओइ पद पर पहुंच गेलइन, जईसँओ सेवानिवृत भेल छलाह। गौरवान्वित छलाह। बेटा अपने संगीसऽ अंतर्जातीय विवाहकऽ लेलकइन। पुतोहु, बेटोसँउच्च पद पर छलइन।DIG(double income group)भऽ गेल छलाह।आब सब कोई कोठी मे रहअ लागल छेलाह। भनसिया आ खबासिन दुनु छलइन। बेटा पुतोहुकऽ अलग अलग गाड़ी ड्राईवर छलइन।

रामबाबू सपत्नीक अइ बदलल स्थिति मे डुबी गेल छलाह। जे कहियो काजबालीकऽ जोरसऽ बजितो नञि छलाह से आब सब पर रौब दाब करऽ लागल छलाह। अपनाकऽ आब स्टेटस वाला बुझअ लागल छलाह। सब जगह नञि जाइत छलाह। बेटा सेहो पुरनका समाजसऽ पुरा कइट गेल छलइन। अंतर्जातीय विवाह मे इ होअइ छइ जे ओकरा समाजक जरूरत नञि बुझाइत छइ। चयनित लोकसऽ अबरजात छलइन। पुरनका लोकसऽ दुरीभऽ गेलइन।

आब देखू बदलइत बदलइत केहनभऽ गेलाह।नब दुनिया मे दुनु बेगत ड़इम गेल छलाह। बेटीकऽ विवाह अपने समाज मे कयने छलाह। कतेक बरख बाद बेटी जमाय सब अयलइन। ओ सब खातिर सनेश अनने छलइन। रामबाबू ,हुनक कनिया आ पुतोह सब खुश भेल- सनेश देख क, मुदा बेटा ओ सनेश(टाई-पिन) बहिनकऽ सीधा वापसकऽ देलखिन जे हम आब टाई नञि पहिड़इ छी। भाइ ई नञि देखलखिन कि बहिन भाइकऽ अफसर बुझिकऽ कतेक शौकसऽ मंथनकऽ क अनने रहइन। रामबाबू आ हुनक कनियाकऽ अतेक साहस नञि जे बेटाकऽ किछु बुझईबतिन।सब हंसकऽ गप्प बदइल देलकइ। नौकर चाकरकऽ संग रहबाक कारण भावना शुन्य सबभऽ गेल छलाह।

आब बेटीकऽ वापस अपन शहर जयबाक छलइन। स्टेशन जाय खातिर ड्राइवरकऽ फोन केलखिन आ कहलखिन कि एक गेस्ट आयल छथि, उनका काल्हि ९ बजे स्टेशन छोड़ बाक अछि। बेटी ई फोन परहक गप्प सुइन लेलखिन्ह। माय सेहो सुनलखिन।घर मे चुप्पीभऽ गेल। माय माहौलकऽ हल्लुक करय लेल कहलखिन-

जे छथि, जेहन छथि, आहांकऽ बापे छथि, कतेक दिन जीता, बड्ड उत्साह मे छलाह, की कहू।राइत भर बेटी परेशान, जे बाप एक आवाज पर हाजिर, उनका लेल हम गेस्ट कहियाभऽ गेलियइन। अंत मे निष्कर्ष पर पहुंचली कि ई किछु नञि- नबका धनिकक नशा छइ।

बेटी माय मे की समझौता भेलइन, से ककरो नञि बुझल। रामबाबू सुतले छलाह आ बेटी सपरिवार टैक्सी बजेली आ साते बजे भोर मे सबके सुतले छोड़िकऽ स्टेशन लेल बिदाभऽ गेलीह।

किस्मत (बीहनि कथा)

ई ७०कऽ दशकक खिस्सा अइछ। रामबाबू (छद्म नाम) जहिया पटना विश्वविद्यालय पढअ गेल छलाह त हुनका बाबूजी (पिता) मोटरसाइकिल कीनकऽ देलखिन। तहिया ओ असकर छलाह क्लास मे जे मोटरसाइकिलसऽ अबइ छलाह। ओना बेशी दुर कालेजसऽ डेरा नञि छलइन। एकटा दिखावा छलइ , मोन मानयकऽ तैयार नञि जे ई फिजुलखर्च छइ। फिल्मी हीरो जेकां देख मे सेहो छलाह, ओहिने स्टाइल वाला कपड़ा लता आ शौक। सिगरेटसऽ गोल गोल धुआं निकालबा मे पारंगत। पाइ कतऽ सऽ अबइ छइ, से बुझबाकऽ फुर्सत ककरो नञि। पढ़ाइ कहूना चलइत रहइन। BSc करइत करइत एक अधिकारीकऽ कन्यासँविवाह सेहोभऽ गेलइन।

जखइन कनिया सासुर बसलीह त असलिइत पता चललइन। इमहर रामबाबू सेहो घींच घांचकऽ MScकऽ लेलाह। आब पटना मे रहीकऽ की करताह।हुनक बाबु जीकऽ आरो जिम्मेदारी छलइन। बहिनक विवाह, भाइ सबहक पढाइ आ दहेज मे आयल जमीनकऽ मोकदमा। सब मे खर्चे खर्चा। रामबाबूकऽ कनिया निर्णय केलीह जे अइ जहाजसऽ निकली। मुदा जायब त जायब कत। अतेक योग्यता नञि जे कोनो अफसरीकऽ नौकरीभऽ जाइ।व्यवसाय मे एक बेर हाथ पका चुकल छइ, ताहि लेल इहो आप्सन नञि। दु टा संतान सेहोभऽ गेलइन अही बीच। रामबाबू अइ सबस अनभिज्ञ बाबू साहेब बनल पटना मे रही रहल छलाह।

कनियाकऽ नहीं रहल गेलइन। जखइन रामबाबू गाम अयलाह त सब पता लगलइन।आब सिफारिश पर नौकरीकऽ सेहो समय चइल गेल छलइ। तहियो हुनक पिता अप्पन एकटा संबंधी आ अधिकारी , जे राजस्थान मे पदस्थापित छलाह,कऽ बेटाक लेल चिट्ठी लिखलखिन। रामबाबू ओतऽ गेलाह आ तृतीय वर्ग मे नौकरी ज्वाइन केलाह। किछु दिनक बाद परिवार सेहोलऽ गेलाह। ई नौकरीकऽ ओ मोनसऽ कइयो स्वीकार नञि केलाह। केना करतैथ, अखइन तकहक जीवन ड़इसी मे बीतल छलइन। अवसाद मे रह लगलाह। अधिकारी सबसऽ लइड़ लइ छलाह। तखनो दुनु बेटाकऽ सबसं महंग कान्वेंट स्कूल मे पढ़ेलाह। अप्पन अइ स्थितिकऽ लेल अप्पन बाबु जीकऽ जिम्मेदार मानऽ लागल छलाह। गाम घरसऽ पुर्ण रूपेण कइट गेल छलाह। ई मानसिक अवसादक असर एक टा बेटा पर सेहो परलइन। पढ़ाइ मे नीक रहलाहक बावजूद जयपुरकऽ स्वीमिंगपूल मे बेटाक लाश भेटलइन।ई घटना पुरा तोइड़ देलकइन। ६ महीनाकऽ बाद मामुली जरबोखारसँरामबाबूकऽ निधनभऽ गेलइन।

समय खराब होइ छइ त चारु कात स। दोसर बेटा छोट छलइन। ओ जखइन BAकऽ लक त, अनुकंपा पर ओकरा नौकरी कनिया दियेलकीन। जे पाइ सब भेटलइन ओ बेटाकऽ द देलखिन। किछु बरख त सब ठीक छलइन। बाद मे पुतोहुसऽ नञि बनलइन। हारऽ वाली रामबाबूकऽ कनिया नञि। पेंशन त भेंटते छलइन। सरकारी क्वार्टर त बेटाकऽ नामभऽ गेल छलइन।ओ किराया पर घर लेलीह आ बेटा पर केस केलीह। अतेक जल्दी फैसला थोड़बे होइ छइ। आब ओत रहअ मे ठीक नञि बुझेलइन। नैहर सासुर सब जगह खबर कयलीह, कतउसऽ उत्साहजनक

ज़बाब नञि भेटलइन।

वापस पटना मे जई मकान मे रामबाबू विद्यार्थी समय मे रहइ छलाह, ओ मकान टुइटकऽ अपार्टमेट बइन गेल छलइ। मकान मालिककऽ परिवारकऽ सोलह टा मकान हिस्सा मे छलइ। रामबाबू ओइ परिवारसऽ सम्पर्क मे छलाह। ओही पुरनका संबंधकऽ मर्यादाकऽ आदर करइत मामुली किराया पर रहबाक घर देलकइन। ओही मे रही रहल छथि। भाइ, देवर आ ननञिद सबकऽ पटना मे आइकऽ समय मे घर छइन, मुदा मुंहछुआइनो कियो रहक लेल नञि कहलकेन। ईएह किस्मत छइ।

प्रेम विवाह- नब प्रयोग (बीहनि कथा)

राम बाबू कहकलेल वकील छलाह।वकालतसऽ आमद नहियेबराबर। मकान किरायासऽ बढ़िया नियमित आमदनीभऽ जाइत छलइन। खेत - पथार सेहो पर्याप्त छलइन। गाछी सलाना बेच कऽ सेहो चिक्कन पाइ आइब जाइ छलइन। छोट शहरकऽ बड़का लोक छलाह। विवाह सेहो ओइ समयक सांसदकऽ कन्यासऽ भेल छलइन। ईहो परिचय, प्रतिष्ठा बढ़ेने छलइन।दु टा कन्या आ एक टा बेटा छलइन। परिवार मे सब कियो एकसऽ एक सुन्दर। पाइ अपने-आप मे सुंदरता छइ। खायल पीयल घरकऽ सदस्यकऽ सुन्दरता दुरऽ सऽ देखाअ जाइ छइ। सुकुमार सब अतेक जे आंगुर घोंइप दियउ त शोणित बहरेबाक अंदेशा।एक टा बेटीकऽ बिबाह नीक दान-दहेज दकऽ पुरा शान शौकतसऽ क चुकल छलाह। जमाय डाक्टर छलइन। बेटाकऽ पढ़बक लेल दिल्ली पठा देने रहइत।

छोट शहर मे बड़का लोकक धीया पुता सब पढ़ मे लुत्तिये होइत छइ। इनकर छोटकी बेटी जहिना पढ़ मे नीक, ओहिना सुन्नर आ संस्कारी सेहो। मैट्रिक मे जिला मे टौप केलाक बाद को- एड कालेज जाय लगलइन। पढ़ाइकऽ दौरान एकटा संगीसऽ किछु विशेष दोस्तीकऽ जानकारी भेलइन।पहल लड़का तरफसऽ छल। छोट शहर मे ई सब बात जल्दी फैलइ छइ।मिथिला मे पहिने विशेष दोस्तीकऽ कखनो सहर्ष स्वीकार नञि कायल जाइ छलइ।

रामबाबू सुलझल लोक छलाह। ओ एक दिन ओइ दोस्त जे एकटा प्रोफेसरकऽ बेटा छल, कतऽ गेला। कहलखिन जे हम आहां सबकऽ जनञि छी। आहां आगु पईढ़कऽ किछु बइन जाऊ,

हमरा आहांकऽ परिवारसऽ संबंध जोड़कऽ लेल तैयार छी। ई प्रस्ताव ओइ विद्यार्थी मे बड़का बदलाव अनलक।अकर बाद ओ विद्यार्थी मिशन मे लाअइग गेलाह। आगु बइढ़कऽ नीक पद प्राप्त कयलाह। दुनुकऽ बिबाह भेलइन। सम्प्रति ओ विद्यार्थी वरीय प्रशासनिक अधिकारी छथि आ रामबाबूकऽ कन्या जानल - मानल पत्रकार।

रामबाबूकऽ नब प्रयोगकऽ शहर मे खुब ओइ समय मे चर्चा भेल आ हुनक निर्णयसऽ स्वाभाविक आकर्षणकऽ सुखान्त मे बदलल गेल।

दही वाली बुढ़ी (बीहनि कथा)

गामक अलग लोकाचार छइ। बयसक कवनों बंधन नञि। ज्यों छइ त ओ संबंधक।दही वाली बुढ़ी।ओकऽ छलीह। किअए अबइ छलीह। कतऽ सऽ अबइ छलीह। कहिया एतीह। कखन जयतीह। किछु ककरो नञि बुझल आ ओइ पर अजीब चुप्पी। नञि कहियो अबइत देखलियइन आ नञि कहियो जाइत। तहिया कारण नञि पता चलल, आब हमरा जन्तवे ओ सांझक बाद अबइ छलीह आ फरीच होबऽ सऽ पहिने चइल जाइ छलीह- त कोना देखइतैत। तहिया रहस्य छल। ओ बंगली पर बइसल भेटई छलीह। गोर धबधब, उज्जर साड़ी, चमकइत आंईख आ छोटकी मोटरी संग मेएक मटकुर दही। हमरा उनकर संग नीक लागय। ओ हम सब बच्चाकऽ देखकऽ खुशभऽ जाइत छलीह। हमरा सबकऽ खिस्सा सुनबइ छलीह। हुनकर सब खिस्सा मे मां-बेटा, पुलिस दुआरा निर्दोषकऽ पकरनाई, केस चलनाई आ अंत मे जज साहेबकऽ रिहाइकऽ फैसला, घर वापस गेनाई, दही- मिठाई बंटनाई रहइ छलइन।

२/३महीना पर ओ अबइ छलीह। उनकर आनल दहीकऽ स्वाद हरदम मोन मे रहइ छल आ उनकासऽ बेशी दहीकऽ इंतजार रहइ छल। पुछला पर कहइ छलीह- हमर महीस खाली हरियर घास खाइत अछि। ओकर देल दुधकऽ हम अलग तरहसऽ दही पऊरकऽ आहां सब लेल आनञि छी। नीक कोना नञि होइत। उनकर मोटरी मे चुड़ा, सतुआ सब खायकऽ वस्तु रहइ छलइन। ओ घरबइया पर निर्भर नञि छलीह, तखनों खेनाई उनका लेल बंगली पर पठा देल जाइ छलइन। ओ ओत सुरक्षित राइत बितबऽ अबइ

छलीह।

जिज्ञासा कयलाह आ कनफुसकी सुइनकऽ अतबा पता लागल जे दुरसऽ अबइ छथि।इनका बड़ड जर जमीन छलइन।दिअयदी पहिने दिवानी मोकदमा फेर कयेक टा फौजदारी।बुढ़ीकऽ घरबालाकऽ ईएह मोकदमा मे हत्याभऽ गेलइन।बेटा छोटे छलइन। ताबइत ओ घरसऽ बाहर निकललो नञि छलीह। बेटा जखइन पैघ भेलइन तखने पिताकऽ आरोपीकऽ हत्याभऽ गेलइ। पुलिस सीधा ओकरा पकइड़कऽ जेल पठा देलकइन। आब एकलौता बेटा हत्याकऽ मोकदमा मे जेहल मे छइन।ओ बेटासऽ तारीख पर भेंट करय लेल अबइ छथि। दू मटकुर दही(बेटाकऽ प्रिय)लऽ क अबइ छथि। एक मटकुर बेटाकऽ द दइ छथिन आ दोसर हमरा सब लेल। तहिया जेहल मे खेनाई पिनाई जाइ छलइ। उनकर बेटा दुआरें, सब हमरो सबकऽ डराबय उनका लग जयबा सं।हम सब तइयो जाइ। कखनो डरक भाव मोन मे नञि आयल।

कहियो ओ बड खुश रहइत आ कहियो गंभीर।

उनका पुरा उम्मेद छलइन जे बेटाकऽ रिहाइभऽ जेतइन।जीवनक उद्देश्य सैह छलइन। बड़का वकील सेहो रखने छलीह।खिस्साकऽ लब्बोलुआब उएह जे निर्दोष बच्चाकऽ रिहाइ व ओकरा संग मायकऽ घर वापसी।बाद मे उनकर अयनाई बंदभऽ गेलइन।

पता चलल की बेटाकऽ आजन्म जेहलक सजाभऽ गेलइ आ भागलपुर जेहल पठा देल गेलइ।उनकर मुस्की संग रिहाइ वाला खिस्सा आ दही, दुनु ओहिना स्मृति मे अछि। पता नञि ओइ फैसलाकऽ ओ कोना सामना कयलीह।

भुत- बंगला (बीहनि कथा)

सब भुत- बंगलाकऽ स्वर्णिम इतिहास रहइ छइ। कहियो ओकरो चला-चली छलइ। आइ कियो देखऽ बाला नञि। जेकरा जे मोन करय छइ, से बंगलासऽ उठा कलऽ जाइ छइ- ठसकबाजी संग। एना किअएभऽ गलइ। कियो सांझो देबऽ बाला रहितइ त भुतबंगले नञि कहइतइ।

अइ बंगलाकऽ मालिक बिहार सरकार मे मध्यम स्तरकऽ अधिकारी छलाह। हुनक बाबूजी सेहो असगर, आ ओ सेहो असगर भाइ छलाह। बाकि बड़की टा दिअयदी। सरकारी अधिकारी बनला पर किनको खास मोजर नञि देलाह। अपनाकऽ अंग्रेज सरकारकऽ अधिकारी जकां बुझइत, मुदा दिअयद सब इनका किछु बुझइत नञि। अधिकारी छलाह त कियो विरोध खुइलकऽ नञि करयन, साथो नञि दइन। ओझा खातिर गामबला बताह, आ गामक लेल ओझा वाला स्थिति।

सबसं हइटकऽ बंगला, पोखरा-पाटन सब बनेला।गामो मे अंग्रेज वाला टोप आ भरूआ सिगरेट पीबइ छलाह। मौका बेमौका सिगार सेहो दइ छलखिन। अतेक शानसऽ रहनाई, कतेको लोककऽ परेशान करय छलइन।एक टा बेटा आ बेटी छलइन। बच्चे मे तीर-धनुष खेल मे इनकर बेटाकऽ तीर बहिनकऽ आंखि मे लाइग गेलइन। बेटीकऽ एक टा आंखि पाथरकऽ लगाबल गेलइन। बेटा तखने शपथ खेला कि ओ डाक्टर बइनक बहिनकऽ आंखि बनेताह।काल क्रमेण बेटा डाक्टरभऽ क अमेरिका चइल जाइ

छइन। पुतोहु बिहारक एकटा स्टेटक बेटी छलइन।न ऊधो को लेना, न माधो को देना। बेटी प्रोफेसरभऽ गेलइन, मुदा अविवाहित।अप्पन सम्पतिकऽ बेटा-बेटी मे बराबर बटलाह आ बेटीकऽ बारिस बनेलाह। ततेक प्रगतिशील छलाह जे कियो इनकर कन्यादान मे मध्यस्थता केबे नञि केलकइन। बहुत बाद मे बेटी अपने बिबाह केली, मुदा बिबाह नञि चइल पेलइन।संबंध समझौता छइ, ई कियो बुझबे नञि केलकइ।अइ बिबाहसऽ एक टा बेटा भेलइन। ई बच्चा नाना लग रहइ छलाय। एतऽ तक सब ठीक।

कयेक बरख बाद बेटाकऽ मातृभूमि प्रेम जगलइन आ ओ गाम अयलाह। बाबुजी- बहिनकऽ आग्रह पर नजदीकी शहर मे नर्सिंग होम खोलनाईकऽ निर्णय कयलाह।विधाताकऽ किछु आर मंजुर। गाम आयल छलाह, किछु जमीनक विवाद सेहोभऽ गेल छलइन, हृदयाघातसऽ परलोक चइल गेलाह। पुतोहु पुरा पोस्टमार्टमकऽ वीडियोग्राफी (जे अमेरिका मे मेडिकल क्लेमक लेल जरूरी छइ) करेलीह आ जे अमेरिका गेलीह, घुइड़कऽ नञि अयलीह। उत्तराधिकारी बेटियेकऽ सब बुझइन।आब बाकी दिअयद सब ऊछन्नर मचेनाई शुरू केलकइन। असगर सबहक सामना करय छलाह। बेटाक मरलाक बाद बरखक भीतरे अपनो स्वर्ग सिधाइड़ गेलाह। बेटी प्रोफेसरीकऽ नौकरी करयथ या नैहरक झंझट सब देखइत। बेटा सेहो लायक नञि भेलइन। समस्या से जुझइत संघर्षशील बेटी बाद मे चिड़चिड़ा आ अवसादक चपेट मे आइब गेल छलीह। अही स्थिति मे जाहि कालेजकऽ क्वार्टर मे रहइ छलीह, ओतइ एकराइत सुतले रही गेलीह। ओतुके समाज दाह-संस्कार करेलकइन।गाम मे कतेक दिनक बाद लोक बुझलकइन जे हिनक मृत्युभऽ गेलइन। बेटा निपत्ता।

आब भेल गामक खेल। कतेक केयरटेकरभऽ गेलाह।जे कहियो ओही बंगला मे गेलो नञि छलाह,आब ओइ पर खुट्टा गाइड़ देलाह। सब दिअयदी दावेदार सब पहिने अन्हार मे, बाद मे दिनदहाड़े समान सबलऽ जाय लगलाह। अंत मे चौखट केवार तक सबलऽ गेलइ। आब ओ बंगलासऽ भुत बंगलाभऽ गेल छइ। बच्चा सब ओइ परिसर मे खेलऽ जाइत छइ त माय कहइ छइ जे ओइ मे नञि खेलाऊ, ओतऽ भुत रहइ छइ। आब ई भुत बंगला कहाइत अछि।

मध्यस्थ (बीहनि कथा)

रामलाल गाम मे धाही बाला लोक छल। बाबू भैया बाला गाम मे चलती ओकरे। किनको पाइ चाही, रामलाल। जमीन बेचबाक हो, रामलाल।रोपनी- दौनीकऽ लेल जन चाही, रामलाल।जमीन भरना रखबाक काल, रामलाल।दुध-दहीकऽ काज जग परोजन मे, रामलाल। बरियाती मे खबास मे खास दरबार मे, रामलाल। जमीन बंटाई देबकाल, रामलाल। गाछी बेचऽ काल, रामलाल।घरहट लेल, रामलाल। मालिक कहइ लेल कयेक लोक, मुदा मनेजर सबहक रामलाल।

कपड़ा लत्ता ओकर साफ आ चकचक, कियो मालिकसऽ कम नञि, बेसिये कहू। कखनो ओकर चेहरा मलिन नञि।सबहक समस्याकऽ समाधान ओकरा लग। कतेकोकऽ बेटीक बियाहक लेल पाइकऽ व्यव्स्था ओ कयने छल गाम मे।ओ गामक धुरी छल। सामाजिक समरसता मे ओकर बड़ड योगदान। ओना ओकर समाज, पीठ पाछु खिन्नान्श करय, मुदा प्रभाव मे कवनो कमी नञि।ओ मनाकऽ दइ त कियो जमीन बटाई लेल तैयार नञि। पंचइती मे अहम स्थान। चुनाव कहियो नञि लड़ल,लेकिन मुखियासऽ बेशी दम। पार्टी-पॉलिटिक्स मे बेशी दिलचस्पी नञि, लेकिन हंसुआ गेहूंकऽ भीतरिया समर्थक। अप्पन बेटाकऽ ओ पढ़ा लिखाकऽ मनुक्ख बनबऽ चाहइ छलाय। ओकरा अनुसार ओकर समाज गरीबी, अशिक्षा आ नशाक कारण मनुक्ख नञि अछि। ओ बेटाकऽ बाबू भैया संग रहइ लेल कहइ छल।

जाबइत ओ लोककऽ जरूरत छल, महत्व छलइ। बाद मे बाबू सब अपने नौकरी खातिर गाम छोड़ि, महानगर ओगरऽ लगलाह।खेती अपने केनाई या त लोक छोड़ि देलक या हुंडा परदऽ देलकइ।खाली बइसल गाम मे सब प्रोपर्टी डीलरभऽ गेल।ओकरो समाज मे सब बाहर निकइल गेल। कियो ककरो बात मानञि लेल राज़ी नञि। सब कहइ जे रामलालकऽ सब डील मे हिस्सा भेटई छइ तखने नील- टिनोपाल वाला धोती कुर्ता मेनटेन करइत अछि।

रामलाल देहसऽ कहियो काज केलक नञि। बी पी एल, ए पी ल, लाल कार्ड, मनरेगा तहिया छलइ नञि। एक्के बेर मनेजरसऽ ओ मजदूरभऽ गेल। घरामीकऽ काज मे श्रम कम छइ।बयस बढला स, देह से हो खइस गेल छलइ।सैह काजकऽ क पेट पोसई छल। बेटा सेहो जेकरा बड़का सब स्वीकार नञि केलकइ आ ओकर समाज मोनसऽ अपनेलकइ नञि, नशा करऽ लागल।ठीक जखइन रहय त राज मिस्त्रीकऽ काज करय। संग्रहकऽ स्वभाव ओकर समाज मे छलइ नञि, एहन स्थिति ओकरभऽ जेतइ से कियो सोचबो नञि केने छल। बाद मे लोक ओकर पुरान दिन यादकऽ क कियो भलमानुष किछु काजदऽ दइ। रामलाल ततेक स्वाभिमानी छल जे कहियो किनकोसऽ किछु मंगलक नञि। गुमनामी मे अहिना चइल गेल दुनिया सं। मध्यस्थक भुमिका समाज मे खत्म भेलाक पहिले शिकार रामलालभऽ गेल।

गामक माइट नसीब नञि (बीहनि कथा)

किछु लोक हर हालात मे खुश रहइत अइछ चाहे कतबो परीक्षा भगवान लेइथ। ओही मेसऽ एक छलाह रामबाबू। जखइन होश सम्हारलाह त सात टा दुध दइत महीस छलइन, मुदा घर मे चाऊर नञि। बग्घी सजल दलान पर, लेकिन घोड़ा बुढ़ायल। जमीन पर असामी सबहक कब्जा, किछु उपजादऽ दइ-ओकर मरजी। कहक लेल बावन बीघा मे पुदिना, असलिइत किछु आर। माय-बाप दुर्दिनक सामना करबाक लेल अफीमक सेवन करऽ लागल छलखिन। कहक लेल सब कियो अप्पन, लेकिन अपनापन किनको मे नञि।

ई अपनापन भेटलइन मौजे पर जे चमाइन खबासिन छलइन, ओकर बेटी सं। अपन गामसऽ बेशी, मौजे पर रहअ लगलाह। एक कान, दु कान, धीरे धीरे लोक बुझि गेलइ। रामबाबू एक बेर बिन बियाह घुरायल सेहो गेलाह अही चमाइनक अपनापनक हल्ला कारणे। फेर दोसर गाम मे बियाह भेलइन। सच्चाईसऽ दुनु संबंध निभेलाह। कतबो संबंधी सब कहलखिन गाम छोड़ि शहर आऊ, नञि गेलाह। जीना यहां मरना यहां- कहतिन

किछु समय बदललइ त नाम गामक लेल मौजे परक सब जमीन बेचकऽ बस किनलाह।बससऽ नाम त भेलइन, लेकिन घाटाक सौदा भेलइन। एक टा फायदा भेलइन जे बस मालिककऽ कौनो बस मे टिकसकऽ पाइ नञि लागइ छइ, जाबइत जीलाह, फ्री मे घुमलाह आ बइसऽ कऽ सीट सेहो भेटलइन।

उनकर बोली बानी एहन मीठ, जे लोकसऽ हमेशा घिरल रहलाह। कतबो भाग्य बाम भेलइन, संयम नञि छोरलाह। कहियो किनकोसऽ खिसियाकऽ नञि बजलाह। पाइकऽ काज त पाइये करतइ। आमदनीकऽ जरिया छलइन पुश्तैनी जायदादकऽ उलटफेर।दोसरोकऽ जमीन गोलकऽ दइ छलखिन।भोजभातक फिरीस्तक एक्सपर्ट छलाह। धन घटइत गेलइन, मान मे कनियो कमी नञि।ई सब भेल उनकर बोली बानीक कारणे।कियो चाणक्य कहि देन त तिरपितभऽ जाइ छलाह। बेटा सब पढ़ी लिखीकऽ बाहर चइल गेलइन। रामबाबूकऽ कतबो कहलकइन, नञि गेलाह। गामसऽ एहन लगाव। अपन श्राद्धक पाइ आ पुरहितक दक्षिणा सेहो अलगकऽ देने छलाह। संस्कारक लेल जमीन अलगसऽ रखने छलाह जे बेटा सारा पर मंदिर बनौताह।

समयक चक्र देखियउ। मृत्युसऽ किछु दिन पूर्व बेटा ईलाजकऽ नाम पर अपना लगलऽ गेलइन। ओतइ दाह-संस्कार आ क्रिया कर्म केलकइन। गाम मे जे रामबाबू जमीन अपन चिताग्नि खातिर रखने छलाह, बेटा बेच लेलखिन्ह।अकरे कहइ छइ माईटो नसीब नञि। जे गामक संबंधकऽ भइड़ जीबन निभेलाह उनकर अंत एहन।

मुड़नक केश (लघुकथा)

रामबाबू भारत सरकार मे पैघ पदसऽ सेवानिवृत भेलाक बाद दिल्ली मे रही रहल छलाह। किछु दिन पूर्व दिल्ली मे उनकासऽ भेंट करऽ गेलौं। बड खुश भेलाह। हुनक धीया- पुताकऽ हाल चाल पुछला पर ओ त मौन छलाह मूदा हंसिते हुनक श्रीमती जी जे कहलीह से अहुं सब सुइन लियअ।

खिस्सा आगु बढ़ाबऽ सँपहिने हिनक घर परिवारकऽ बारे मे कनी बुइझ लियअ। रामबाबूकऽ तीन टा बेटा छलइन। जेठ बेटा कनिक बेशी प्रगतिशील छलखिन। ओ पहिने लिव इन, बाद मे अपनासऽ संतान नञि करबाक वादा देलाक बाद विवाहित जीवन अलग रहीकऽ बितबइ छथि। दोसर बेटा विदेश मे रहइ छलइन आ ओतइ सड़क दुघर्टना मे अकाल मृत्युभऽ गेलइन। तेसर बेटा जे डाक्टर छलइन,के जल्दिये नीक कुल-शील देखकऽ मैथिल परिवार मे विवाह करा देलखिन।

तेसर बेटा - पुतोहु संगही रहइ छलइन।एक टा पोता सेहो भेलइन। सब दुख बिसइड़कऽ रामबाबू पोता संग खुशीसऽ समय बितबइ छलाह। की भेलइ, से ककरो नञि बुझल, एक दिन छोटका बेटा कैरियर आ नीक मौका बताकऽ बम्बइ सपरिवार जायकऽ अनुमति मंगलाह।घर मे मातम जेकां हाल भऽ गेल छलइन। हारि कऽ

रामबाबू परिस्थितिसऽ समझौताकऽ क अनुमतिदऽ देलखिन। फोन पर पोतासऽ भोर सांझ गप्प सप्प होअइत छलइन।

एक दिन पुतोहुकऽ फोन सासकऽ एलइन जे मुड़नकऽ नीक दिन तका दइ लेल। रामबाबूकऽ कनिया तुरंत पण्डित जीकऽ बजा क, तीन टा दिन तकाकऽ पुतोहुकऽ बता देलखिन। आब रामबाबू सब तैयारी मे लाइग गेलाह कि फलां फलॉकऽ बजेबइ, एना भोज करब...। मोने मोने लिस्ट बजट सब बना नेने रहइत।

रोज दुनु बेगत मे घमर्थन होइन जे ओकरा बजेबइ। ओकरा नञि। फलांकऽ मूंहछुआन कहीं देबइन।ओहो तऽ जनऊ मे अहीना कहने रहइत। रोज दुटा नाम जुड़इन आ एक टा कटइन। किछु अपन लोककऽ ओहिना नोतोदऽ देने छलखिन।अपन सोइच सोइच कऽ राम बाबू दुनु बेगत रमन चमन करइत छलाह। कनिया जखइन तखइन कहइ छलखिन जे आहां बेशी मधुर नञि खाय लागब। हम त पाहुन मे व्यस्त रहब आ आहां अपन मौका सुतारऽ लगइ छी। चीनी आहांकऽ बहुत बढ़ल अइछ। राम बाबू कहलखिन जे पहिल पोताकऽ मुड़न होइत आ हम मधुर नञि खाई, से नञि भऽ सकइत छइ।

कनिया बजलखिन- बेशी नञि खायब।

अंत मे दुनु गोटे मे समझौता भेलइन जे एकटा भोर आ एकटा सांझ मधुर खेताह।

रामबाबूकऽ कनियाकऽ तऽ चीनीकऽ बीमारी नञि छलइन। ओ कहलखिन जे हमरा मधुर खाइत देख कऽ आहां डेकसी नञि करऽ लागब।

अहिना गप सरक्का दुनु मे होइत रहइ छलइन। जे बाजा भुक्की बन्न भऽ गेल छलइन, से कतऽ दन बिला गेलइन।

जखइन मोन नञि लगइन, मुड़नकऽ चर्चा शुरू कऽ लइ जाइ छलाह।

अही बीच बम्बइसँपुतोहुकऽ फोन सासकऽ एक दिन अयलइन जे मुड़न वाला केशकऽ केना भसबल जाइ छइ ?

सुनीकऽ दुनु गोटे स्तब्धभऽ गेलाह। सास, पुतोहुकऽ विधि बता देलखिन।मोनक मनोरथ मोने रही गेलइन। पोताकऽ मुड़नकऽ मनोरथ।

ई सब कहऽ मे कनिको रामबाबूकऽ कनियाकऽ चेहरा मलिन नञि भेलइन। हंसिते कहलिह- ईएह हाल छइन। आब की गामबाली आ की भदेश। सब एक्के। कहिकऽ ठहक्का मारलिह।

कन्यादान (लघुकथा)

आइ फेर मुरली मिसरक घर मे मातम बला हाल छइन। सब चुप। शांत बैसल।एना बुझाई जे कियो मइड़ गेल छइ। मरला पर तऽ बिलाप होइ छइ, आ बिलाप चुप्पीकऽ कटने घुड़इ छइ। अतुका चुप्पीकऽ कोनो थाहे नञि लगइ छलइन रामजी बाबु के। आन बेर घर मे घुसिते देरी सब धीया-पुता गोर लगइ छलइन आ घेर कऽ बइस रहइ छलइन। अइ बेर कियो गोरो लागऽ नञि एलइन, बइसऽ कऽ बात त दुर। मोन भेलइन जे एखने घुइड़ जाय के।फेर बिन कारण जनने घुरनाई उचित नञि बुझा परलइन।ओसारा परसँएकटा आराम कुर्सी अपने घींचला आ बइस रहलाह।

रामजी बाबु संबंध मे मुरली मिसरक ससुर लगइ छलखिन। दुनु गोटे एक्के शहर मे काज करय छलाह, तैं अपेक्षा बेशी रहइन। गाम सेहो दुनुकऽ लग पास छलइन तैं अबरजात बेशी। कनी काल मे मुरली मिसरकऽ कनिया सरिता, जे रामजी बाबुकऽ भतीजी भेलखिन, भीतरसँएलीह आ पैर छुईब कं गोर लगलखिन। खुब सौभाग्यवती होऊ-के आशीर्वाद रामजी बाबु देलखिन। भतीजीकऽ नोरसँडबडबायल आंईख देख कऽ बुझा गेल छलइन जे ओ ह्रदय मजगुत कऽ कऽ एलीह अइछ। कनी काल मे बच्चा लोटा मे पाइन अनलकइन। धीरे धीरे माहौल हल्लुक भऽ रहल छलइ। रामजी बाबु खेहल मेहल लोक छलाह तैं अपने बजबासँबेशी सुनबा पर जोर देने छलाह।एहन स्थिति मे मोनक भरास निकलऽ कऽ

जगह देने छलाह।

दु घंटाक करीब बीत गेल छलइ। रुआबजाक ललका शरबत पी चुकल छलाह। आब चाह बइन रहल छलइन।सब बात खुइल कऽ सोंझा आइब चुकल छलइन। मुरली मिसर अपन बेटीक कथा स्थिर कऽ चुकल छलाह। टकाकऽ गिनतीकऽ दसे दिन बांचल छलइन। जमीन बेचऽ गाम गेल छलाह। ओतऽ औने पौने दाम पर लोक जमीन लेबऽ चाहइ छलइन। सब खगता बुझ्झ गेल छलइन।अही जमीनक भरोसे ओ होबऽ बाला कुटुम्बकऽ पाइ गछने छलखिन। आब त सब गड़बड़ा गेलइन। प्रोविडेंट फंडसँसब पाइ गाम मे जनऊकऽ मे खर्च कऽ चुकल छलाह। ततेक ने लंफलंफा गऊंआ सब कऽ देने रहइन जे अखनो हथपईंच बचले छलइन। बाकी जे रहल सहल छलइन से बच्चा सबहक पढ़ाइ आ बेटीकऽ कथाकऽ दौरहट मे गंवा चुकल छलाह।

मोन मिजाजसँमुरली मिसर अपनाकऽ छोट नञि बुझ्झई छलाह।किरानीकऽ नौकरी रहितो, धीया पुताकऽ अंगरेजिया स्कुल मे पढ़ेलाह। कहियासँसुनञि छलखिन जे जमाना बदलऽ बाला छइ। नीक पढ़ल लिखल बुच्चीकऽ बियाह मे आब गनऽ नञि पड़तइ।ओ बेटा-बेटीकऽ कहियो दु रंग नञि केलाह। उनका कनिया काकी कहबो करय छलखिन जे बेटीकऽ पढ़ाइ पर अतेक पाइ किअए फेंकइ छह। सरकारी स्कूल मे नाम लिखा दहक आ ओइ पाइकऽ जमा करह। गीनती काल काज एतह। मुरली

मिसरकऽ तहिया ई बात बुढ़ियाकऽ फुंसि लगइ छलइन।कहथिन- "काकी सब अपन अपन भाग लऽ कऽ अबइ छइ। जमाना बदइल रहल छइ। पहिने बरागत, कन्यागतकऽ पाइ दइ छलखिन। फेर दिन बदललइ आ कन्यागत, बरागतकऽ पाइ गिनऽ लगलखिन। आब फेर दिन घुरतइ, बरागतकऽ गिनती करऽ पड़तइन।"

ई त छलइये जे कियो गिनय, गिनती हेबे करतइ। मुरली मिसरकऽ पुरा भरोसा छलइन जे अपन बुच्चीकऽ ओ नीकसँपढ़ेला लिखेला अइछ, ऊपरसँघरो नामी छइन, कुल-शीलकऽ त कहबो नञि करी, सब बड़का घर मे कुटमैती, तैं कथा मे दिक्कत नञि हेतइन

सब गलतफहमी धीरे धीरे दूर भऽ रहल छलइन। सब जगह बोली लगइ छलइ। कोनो ने कोनो कारणसँई हुईस जाइ छलाह। कतउ ससुर अफसर नञि होबाक कारण, त कतउ पाइ कम गनबाकऽ कारण, कतउ दुर होबाक कारण त कतउ लग होबाक कारण, कतउ शहर मे पढ़बाक कारण त कतउ महानगर मे नञि पढ़बाक कारण, कतउ बेशी पढ़ल होबाक कारण त कतउ कम पढ़ल होबाक कारण, कतउ रिक्शासँजेबाक कारण त कतउ मोटर मे जयबाक कारण।

अइ स्थित मे एक जगह मोन मना कऽ कथा स्थिर केने छलाह। पाइ कौड़ीकऽ बेबसथा लेल गाम गेल छलाह- ओतऽ सब

अटकऽ पट भऽ गेलइन। दु चाइर संबंधी लग हाथो पसारलाह, ओतउसँखाली हाथ भेंटलइन। आब बचल छलइन ई शहरक "घर"। बड़ड शान आ शौकसँमुरली मिसरक बाबु ई जमीन कीन कऽ घर बनेने छलखिन। पुरना घर त कच्चा माइट आ भीतक बनल छलइन, जकरा कालक्रमेण पक्का ईंटा मे मुरली मिसर अपन कमाइसँबदलबेने छलाह।

घर पर पढ़ल लिखल गुणल बुच्चीकऽ देखइ छथि। ककरो संग हाथ तऽ नञि पकड़ा देथिन। मुरली मिसरकऽ घर मे घुसिते आंगनसँपुछलखिन जे भऽ गेल होइत पाइक बेबसथा।

ई सुनिते सऊंसे देह मे आइग लाइग गेलइन- "गाम मे सब मौकेकऽ ताक मे अइछ। माइटक मोल सब मांइग रहल अइछ। उपरसँबंटवारा वाला कागज मे सेहो किछु कमी छइ। जेकरा दु टकाकऽ औकात नञि, ओहो तिरिंग भिरिंग देखा रहल अइछ। सब गामक घर घरारी बेच लेब तखनो गिनतीकऽ पाइ नञि पुइड़ रहल अइछ। "

फेर चीकरइत बजलाह-" की करियई। बुच्चीकऽ माइड़ दिअय। जहर माहुर खुआ दिअय।"

बुच्ची दोसर घर मे बिछान पर जा कऽ कनञित पइड़ रहलीह।

सरिता एक बेर घरवालाकऽ देखऽ जाइत छइथ,फेर दोसर

घर मे बेटीकऽ सम्हारऽ जाइत छथि।

चारू तरफ अन्हार देखा रहल छलइन। कतउसँकोनो बोल भरोस सेहो नञि। नैहरे सासुर सब लेल बेटीकऽ माय भेने " अछोप" भऽ गेल छलीह। सब एनाई गेनाई छोड़ि देने रहइन। लोककऽ डर होइ कि कहीं बियाह मे पाइ ने मांइग लइस वा कतउ जायकऽ तऽ नञि पइड़ जाय।

एहन समय भऽ जेतइ से सरिता सपनों मे नञि सोचने छलीह। तीन भाइकऽ एतऽ राईख कऽ पढ़ने छलीह। चाइर टा देवर अतइ पईढ़ लीख कऽ आइ पाइ बला बनल छइथ। ई सत्त छइ जे घर साबिकक छइ, मूदा बाकी सब खर्च त उएह करय छलीह।

आइ देखू कियो झांखियो पारऽ नञि अबइत अइछ। बुझाइत छइ जे बेटीकऽ जन्म देने दोषी भऽ गेलीह। आइ रामजी ककाकऽ देख कऽ सरिताकऽ कोढ़ फाइट गेलइन। कहलखिन - "सबहक बेटीकऽ बियाह होइत छइ,हमर बेटी की कुमाईरे रहत। आहां हमर भाइ सबकऽ कहि देबइन जे उनका सब लेल हम मइड़ गेल छियइन।"

रामजी बाबु कहलखिन- "आइ तक की एहनो भेलइ अइछ। बियाह, जन्म, मरण सब उपरसँलिखा कऽ अबइ छइ। घबराऊ नञि, कन्यादान हेबे करतइ।" बोल भरोस दऽ कऽ ओ विदा भेलाह। फेर अपन गाम मे सरिताकऽ भाइ सबकऽ जिम्मेदारीकऽ अहसास दियेलखिन।

अइ बीच मे समय पर पाइक गिनती नञि होबाक कारण स्थिर भेल कथा गड़बड़ा गेलइन। सरिता बड़ड दुखी भेलीह।

सरिताकऽ भाइ सबकऽ बहिनक घरक वस्तुस्थितिकऽ ज्ञान नञि छलइन।उनका सबकऽ ईएह बुझल छलइन जे ईएह सब मीन मेख निकाइल कऽ कथा निश्चित नञि करय छइथ। आब सब अइ विषय पर अपन जिम्मेदारीकऽ संग फुसिये सही, गंभीर भेल।

अही बीच मे बगलेकऽ गाम मे एकटा सेनाकऽ अधिकारी लड़काकऽ कतउ बियाह निश्चित भेल छलइ। लड़का छुट्टी लऽ कऽ गाम आइब गेल छल।कोनो कारणसँलड़की बाला ई कथासँमुकइड़ गेलइ।आब सेना अधिकारीकऽ घरवाला सब नीक कथा ताकऽ लागल। कोनो तेहन कथा नञि भेटलइ। छुट्टी खत्म होबऽ बाला छलइ। हाइरे कऽ मुरली मिसर कतऽ कथा पठेलकइन.........दस दिनक भीतर बियाह दान भेलइ आ बर-कनिया नब जिनगी शुरू करबाक लेल अतऽ सँविदा भेल।

सरिताकऽ आब कहबी पर पुरा बिसवास भऽ गेलइन- बियाह, जन्म आ मरण उपरेसँलिखा कऽ अबइ छइ।

अइ कन्यादानसँउनका सर समाजक असली चेहरा देखबाक अनुभव भेलइन। जाबइत काज नञि पड़इ छइ, सब नीके रहइ छइ।

आइ फेर रामजी बाबु आयल छथि। ललका शरबत पी चुकलाह। मुरली मिसर,सरिता आ बचल पाहुन परख सब उनका घेर कऽ बइसल छइन। चाह जलखइ सब आइब रहल छइन। हंसी ठहक्काकऽ फुलझड़ी सब छुइट रहल छइ। रामजी बाबुकऽ याद पड़ई छइन जे एकटा ओ मातम बाला दिन छलइ आ एकटा ई दिन छइ। बजलाह- " सब दिन एक ना होत हो रामा।" जीतल काज बिन पाइये भेलइन।

कनिया काकीकऽ मुरली मिसरक गप्प आइयो मोन छलइन- सब बच्चा अप्पन अप्पन भाग लऽ कऽ अबइ छइ। एहन नीक कथा मुरली मिसरकऽ हेतइन, से सब अचंभित अइछ। ईएह छइ "कन्यादान"।कहक लेल दान, ई त अइछ जीवनक असली ज्ञान।

पछतावा (लघुकथा)

आइ पुरा डीह टोल मे चहल पहल छइ। नरेन मिसरक पोता महेंद्र विदेशसँआइब रहल छइन। ओ गाम मे कुलदेवीकऽ पातइड़ सेहो देतइ। सब इंतजाम बात भऽ गेल छइ।ओ पहिनेहेसँकनिया काकीकऽ बेटाकऽ बैंक एकाउंट मे पाइ पठा देने छइ। आब देरी छइ त बस ओकरा पहुंचबाक।भइड़ डब्बुक तसमई बनल छइ। पुरी छना रहल छइ। रसगुल्ला पहिनेहे बजारसँआइब गेल छइ। कयेक बेर लोककककऽ गिनती भेल छइ। सब मुड़ी पाछु दु टा कऽ रसगुल्ला आयल छइ। जड़दा आम सेहो कटा कऽ राखल छइ। थोड़े काल पहिने फोन आयल छलइ जे ओ पहुंचऽ बाला अइछ।पुरा हुइल माल मचल छइ। कियो ओकरा देखनेहो नञि छइ। फेसबुक पर किछु लोक देखलकइ आ वाट्सएप पर गप्प सड़क्का भेल छइ। मऊगी महाल मे बेशी बेगरता छइ।

कोइलख वाली कहलकिन -उनकर कनिया सेहो संग छइन।

ओइ पर धमौरा बाली टिपलकिन- ओ तऽ आन जाइत छइ।

रानीपुर वाली कहलकिन- आहांकऽ त सब बुझल अइछ। कहियो भेंटो भेल अइछ? बजेबो केने छल?

धमौरा वाली - हमरा किअए बजैत। हम तीन मे की तेरह मे। जिनकासँअपेक्षा रहइन, ओ ने जेताह। हम त जे सुनल से कहल। हमरा तीन पांच नञि रहइत अइछ। किनको नीक लागय त लागय, अधलाह लागय त सेहो हमरा नञि परवाह। दु कौड़ अपना घर मे ओ बेशी खेतीह।

जबदौल वाली बजलीह- छोड़ु ई जाइत आ अनजाइत बाला गप्प। गाम मे त आब अनजाइत कनिया सब आइब गेल छइ। ओ सब तं सद्य विदेश मे रहइ छथि। सबदिना बाहरे बाहर पढ़ई आ रहइ गेलाह। आब की कोनो घर बांचल अइछ। रामजी आ सीताजीकऽ की एक जाइत छलइन?

बस शुरू भऽ   गेलइ। सब गामक अही तरहक विवाह आ नबकी कनिया सबहक चर्चा।कियो आटा साइन रहल अइ, कियो परथन दऽ रहल छइ, कियो मैन मे कंजूसी नञि करबाक लेल कहि रहल छइ, कियो पुरी बेल रहल अइ, कियो गिट्टी बना रहल अइ, कियो पुरी छाइन रहल अइ। सऊंसे टोलक स्त्रीगण अपने लागल अइछ। आखिर ईएह खानदानक लोक आइब रहल छइ।कनिया काकी सबकऽ थम्हने छथि।

ताबिते मोटरकऽ   हार्न बजलइ। सब माथ पर नुआ लइत दलान

दिश लपकल।

देखते अंदाज लाइग गेलइ जे महेंद्र, उनकर कनिया आ कोरा मे बच्चा छइ। महेंद्रक चेहरा अनमन रबिन्द्रक जेकां छलइन।" देह पर भुलकी रोईयां"- ई डीह टोलक चिन्हासी छइ। महेन्द्रकऽ देखते बुझा गेलइ जे ओ अइ परिवारक हिस्सा अइ।

महेन्द्र आ उनकर कनिया सबके गोर लागऽ झुकलइ, तखने झट दं सुगांव वाली कहलखिन- पहिने भगवती घर चलु। उनका गोर लगियउन, फेर सबके लगइत रहब। कियो भागल नञि जाइ छइथ। सुगांव वाली मौका देख कऽ अपन बुधियारीकऽ दावा जता दइ छथिन।

जतऽ भगवान भगवतीकऽ बात बीच मे आइब जाइ छइ, ओतऽ मऊगी मेहर विरोध नञि करत। सब हां मे हां मिलेलक आ विदा भेल भगवती घर।

पुरना घर सबहक चौखट बेशी जगह नीचे रहइ छइ। कनिको ध्यान इमहर ओमहर भेल की माथ मे चोट लागल। आब खान-पान पर बेशी ध्यान लोक बच्चेसँदेबऽ लगलइ या। नञि तं पहिने ई छह फीट्टा लोक कहां होइ छलइ। घरक चौखट गिरहथक लंबाईसँचाइर

आंगुर बेशी रहइ छलइ।अतउ भगवती घरक चौखट कम्म ऊंच छलइ।पुरना गिरहथ छोटे ऊंचाईकऽ हेताह। ईहो भऽ सकइ छइ जे भगवान भगवती लग माथ झुका कऽ जाइ, तैं जाइने बुइझकऽ दरवज्जा छोटे रहइत होइ। जे भी सच होइ, नब लोककऽ माथा मे चोट लइगते टा छइन।

पहिनेहे महेन्द्रकऽ चेता देल गेलइन जे माथ झुका कऽ जायब। तखने पाछुसँसरयां बाली बजलीह- अतेक काल थम्हलऊं त कनी आरो थम्ह जाऊ। पातइड़ चढ़अ दियउ, तकर बादयभगवतीकऽ गोर लागु।

ईहो प्रस्ताव एकमतसँपारित भऽ गेल। आइ कियो ककरो विरोध नञि कऽ रहल छइ। कहीं कोनो विचार दी आ ओ नञि मानल जाय। तखइन तऽ बेजती भऽ जाइत। महेन्द्रकऽ कनिया की बुइझ लेत?सब अपन अपन वेल्यु बढ़बऽ मे लागल अइ।

आब पातइड़क ओरियान शुरू भेल । इमहर खुसुर फुसुर चइल रहल छल। जे सब महेंद्रकऽ कनियासँकने दुर मे छलीह ओ सब आंईखे आंईख मे सब गप्प कऽ रहल छलीह।आंईख सऽ ओकर एक्सरे लिया रहल छलइ।

आरो टोलकऽ बच्चा आ पुरूख पातर सब बहरी मे जमा छल। पातइड़ भेल। परसादी बंटायल।

रमेश मिसर बजलाह- ई बंगलिया कतऽ कऽ रसगुल्ला छइ।

महेश ज़बाब देलखिन- हं। हमरा कतऽ त ओकरेसँअबइत अइछ।

रमेश मिसर- आब बंगलियोकऽ ओ बात नञि रहलइ अइछ। ओकर बाप जे बनबइ छल- "अद्भुत"।

तखने जीवेन्द्र बजलाह- कका रहअ दियउ। हम सब त अकरे मिठाई खाइत बढ़लऊं अइछ। जखइन ओकर बापकऽ बनायल खेनहे नञि छी, तऽ चर्चा कऽ कऽ की फायदा।

रमेश मिसर- कमाल करय छं तों सब। तु नञि खेलह त ओइ मे हम की करियह। हम खेने छी, तैं बजलऊं। तोहर बाप तऽ रोज सांझ मे बंगलिया कतऽ जाइते छलखुन।

जीवेन्द्र- देखू बाप पर नञि जाऊ। हम आहांकऽ देखइ छी, आइ

काइल बात बात पर आहां बापकऽ बीच मे घुसा दइत छी। कका छी तैं। नञि तं हम देखा दइतऊं।

रमेश मिसर- तुं की देखेबह। हम तोरासँपुईछ कऽ बाजब! एलाह आय बड़का। तोहर बापकऽ त मुंह हमर सामने खुजिते नञि छलइन। ई दु टा पाइ ठीकेदारी मे कमा लेलाह अइछ त हमरे सीखबइ छइथ जे की बाजु आ की नञि बाजु।

जीवेन्द्र- देखू कका हम अंतिम बेर आहांकऽ कहि रहल छी।आब अततः भऽ रहल अइछ। हमर संयमकऽ परीक्षा नञि लियह।

ईएह गर्मा गर्मी भऽ रहल छलइ। बेचारे महेंद्र अपसियांत भऽ सब देख सुइन रहल छलाह। जोरसँबहस सुइन आंगनसँकनिया काकी दौड़लीह। फेर थोड़थाम लागल। सब परसादी खेलक। किछु लोक विदा भेल आ किछु बइसले रहल।

महेन्द्रकऽ ई महानगरक " रोडरेज" जकां लगलइन। क्षण मे क्षणाक भऽ जाइ छइ। अखने लड़ाई होइत होइत बचलइ।

महेन्द्र ताबइत देखइत छइथ जे रमेश मिसर आ जीवेन्द्र कोनो गप्प

पर कोना मे ठार भऽ कऽ ठहक्का माइड़ रहल छइथ। महेन्द्र त बहसक शब्द सुअइन कऽ घबरा गेल छलाह। बाकी लोक खातिर धन सन। सब सामान्य भऽ गेल छलइ।देख कऽ बुझेबे नञि करीतय जे अखने मारा पीटीकऽ नौबत एतऽ भेल छलइ।

महेन्द्र अतुका लोकक आबेश देख कऽ अभिभुत भऽ गेल छलाह। ओ अपनाकऽ अइ भीड़क हिस्सा बुझअ लागल छलाह। कनियें काल मे ओ ओतऽ घुइल मिल गेल छलाह। बुझेबे नञि करय जे पहिले बेर ओ अयलाह अइछ।ओ कतऽ सँअबितैथ। उनकर पिता हरेन्द्र मिसर, अंतिम बेर बाबा नरेन्द्र मिसरक श्राद्ध मे आयल छलाह। ओइ समय महेंद्रकऽ जन्मो नञि भेल छलइन।

आखिर कोन एहन टीस छलइ जे हरेन्द्र मिसरकऽ अपन पितृ भूमिसँविरक्ति भऽ गेल छलइन।

बात तहियाकऽ छइ, जहिया असली मे जमींदारी चइल गेल छलइ मूदा खूनक जमींदारी नञि गेल छलइ। ई खुनक जमींदारीसँकिनको हत्याक बात नञि छलइ, अकर अर्थ छलइ - " फुसियाही शान "। ई नरेन बाबुकऽ सब किछु लऽ कऽ डुबा देलकइन।

नरेन बाबुकऽ बियाह अपनासँपैघ जमींदारक बेटीसँभेल छलइन। नरेन बाबु दु भाइ छलाह। छोटे मे टुगर भऽ गेल छलाह। जेठ भाइ चमन बाबु इनकर पालन पोषण केलखिन। नरेन बाबु अपन भाइ भौजाइकऽ परम भक्त भऽ गेल छलाह।ई भक्तिकऽ किछु लोक आने रंगदऽ देने छलइन। नरेन मिसर आ उनकर भौजीकऽ संबंध पर कयेक टा खिस्सा पिहानी उनकर सासुरो मे घुमइत लुटन बाबुकऽ कान तक पहुंच चुकल छलइन। नरेन बाबुकऽ कनिया के, अतेक भाइ भौजाइकऽ आगांपाछु घुमनाई नीक नञि लगइ छलइन। उनका अनुसार आहांक भाइ त घरक धनसँआहांकऽ पलला पोसला। अहुंकऽ त आधा हिस्सा भेल। अइ मे उपकार की?सत्त की छलइ, ई तऽ उनकर सबहक संग दुनियासँविदा भऽ गेल छइ।

अहिना छोट छीन गप्प पर टेना मेनी होइत छलइन। एकबेर नरेन बाबुकऽ कनिया अपन तीन टा छोट छोट संतान संग नैहर गेल छलखिन। विदागरी लेल खबास गेलइन। नरेन बाबुकऽ ससुर लुटन बाबु विदागरीसँमना कऽ देलखिन। फेर की छलइ। नरेन बाबुकऽ चट्टसँउनकर भाइ दोसर बियाह करा देलखिन।अइसँलुटन बाबुकऽ अपन शान मे गुस्ताख़ी लगलइन। ओ अपन बेटीकऽ ओतइ बसा लेलाह। चाइर बेटा आ एक बेटी छलइन। ओ अपन बेटीकऽ बेटा बुइझ पाचम हिस्सादऽ देलकिन।पाचम हिस्सा बक्तम छलइ, लिखतम नञि।

नरेन बाबु क्षणिक शान मे आइब कऽ दोसर बियाह कऽ तऽ लेलाह लेकिन अपन पहिल कनिया आ बच्चा सबकऽ बिसइड़ नञि सकलाह।

जमींदारी त पहिनेहे खत्म भऽ गेल छलइन। ऊपरसँअइ तरहक परिवारकऽ छिन्न भिन्न होइत देख कऽ नरेन बाबु अर्द्धविक्षिप्त जकां भऽ गेल छलाह। सब

संपइत सब विलाय लागल छलइन। ऊमहर नैहर मे संपइतक बल पर हरेंद्र आ आर बच्चा सब नीक पढ़लकइन लिखलकइन। बापक जगह त आर कियो नञि लऽ सकइत छलइ।ई कमी ओकरा सब दिन लगले रहलइ। उपरसँ" भगिनमानक" तगमा।लुटन बाबु जाबइत जीलाह ताबइत त पाचम हिस्सा भेंटलइन। बाद मे माम सब दिअयद बइझ परेशान करऽ लागल छलखिन। हरेंद्र बाद मे विदेश मे नौकरी करऽ लगलाह।उनकर आर भाइ सब सेहो जतऽ जतऽ नौकरी केलाह, लालाभाइ जकां ओतइ बइस गेलाह। आपसी कोनो हेमक्षेम भेबे नञि केलइन।

हरेंद्र अइ सब दुखक कारण अपन पिता नरेन बाबु आर कका चमन बाबुकऽ बुझई छलाह। किछु बरख बीतला बाद नरेन बाबु त अपन सासुर एनाई गेनाई शुरू कऽ देने छलाह लेकिन उनकर कनिया फेर कहियो सासुर नञि गेलीह। सऊतीन तर बसनाई उनका मंजुर नञि छलइन। तहिया दु तीन बियाह सामान्य गप छलइ। लेकिन ओ बड़ड स्वाभिमानी छलीह। ओ नरेन बाबुकऽ जीबइत सासुर नञिये एलीह। जखइन नरेन बाबु मरलाह त ओ उनकर श्राद्ध

मे एलीह। हरेंद्रकऽ जेठ बेटा होबाक कारण बापक मुखाग्निकऽ अधिकार भेंटलइन। माछ मासक परात जे हरेंद्र, उनकर भाइ सब आ माय नैहर घुरलीह, से फेर कहियो सासुर नञि गेलीह।

हरेंद्रकऽ ततेक ने कुंठा घेरने रहइन जे ओ मातृक मे सेहो मायकऽ मरलाकऽ बाद माम सबसँसंबंध नञि निभा सकलाह। सब भाइ सब मिल कऽ जमीन जथा बेच लेलाह।ओइसँओतुका समाज सेहो इनका सबकऽ निड़इस देलकइन। पैतृकक आर्थिक स्थिति नरेन बाबुकऽ मरलाहकऽ बाद जर्जर भऽ गेल छलइ। अइ पचड़ासँबचऽ लेल ओ सब अपनाकऽ अलग थलग कऽ लेने छलाह।बाकी भाइकऽ त नञि लेकिन हरेंद्रकऽ कनियाकऽ बड़ड मोन करयन सासुरक गाम जयबाक, लेकिन हरेंद्र कहियो अनुमति नञि देलखिन। हरेंद्रकऽ कनिया मरऽ काल अपन बेटा सबकऽ कहलखिन जे आहां सब अपन कुलदेवीकऽ दर्शन जरूर कऽ लेब, भऽ सकाय तऽ ओतऽ पातइड़ देब।

जीवन उतार चढ़ाव संग चइल रहल छलइन। आपसी सामंजस्यकऽ अभाव परिवार मे देखाइत छलइन। कीयो मध्यस्थ करऽ बाला नञि छलइन। मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना बाला हाल छलइन। हरेंद्र आ उनकर भाइ सबकऽ कियो सीखेबे नञि केलकइ जे कका काकी , गाम घर आ सखा संबंधी भी किछु होइ छइ। ओ सब संबंधी बुझबे नञि केलकइ। माय आ भाइसँसबहक कुचेष्टे सुनलकइ। ईएह

सब मोन मे भरलइ आ ककरो प्रति ममत्वक भाव नञि पनपलइ।

समयक अपन बहाव होइ छइ। उनकर पैतृक परिवार बहुतही आगु बइढ़ गेल छलइन। हरेंद्रकऽ घर मे पद आ पैसा भेलाक बावजुदो भाबंश नञि बुझा रहल छलइन।

महेन्द्रकऽ उएह मायक गप्प सुतला मे झकझोड़इत रहइ छलइन। आब गाम जायसँरोकऽ बाला पिता हरेंद्र सेहो नञि जीबइ छथिन। गाम आइब अपनाकऽ बीच पाइब महेंद्र सब पहिलुका गला शिकवा बिसइड़ गेल छइथ। अफसोस होइ छइन जे मायक जीबिते किअए नञि एलाह।

आइ नञि एला गेलाक कारण बहुत रास संबंध मे गांठ पइड़ गेल छलइ। आब सब गांठ खुइल गेल छइ। आब अफसोस ईएह होइ छइन जे कियैक ने एकटा ठांव उनको अपन पैतृक गाम मे छइन। जखने अकर चर्चा होइ छइ,नरेन मिसरक अइ घरक पुतोहु , जे आब कनिया काकी भऽ गेल छथि, तिनकर कान ठार भऽ जाइ छइन जे कहीं ई दिअयद बइन संपइत ने बंटा लियाय।ई सोचिते सब आबेश फुर्र भऽ जाइ छइन।होइ छइन जे कहीं ई रहअ लेल तऽ नञि आयल अइछ। जायकऽ चर्चा नञि कऽ रहल अइछ।दिअयद बाद त चढ़ेबे करतइ। हमर संपइत बंटबाईये कऽ मानत। ईएह सब सोचिते छलीह की तखने मोटर फेर

आइब गेलइ।

महेन्द्र मोटर मे सपरिवार बइसल अपन डीह टोलकऽ देखइत जा रहल छलाह।ओकरा अपन पिताक निर्णय पर पछतावा भऽ रहल छइ। एकटा बिदागरी सनक छोट बातक कारण ओ अपन खानदानसँकइट गेल आ झुठक शानक बलि वेदी पर चईढ़ गेल।पछतावा तऽ नरेन मिसरकऽ सेहो भेल छलइन दोसर बियाहक बाद, लुटन बाबुकऽ सेहो भेल छलइन बेटीकऽ घर उजरलाकऽ बाद, हरेंद्रकऽ सेहो भेल छलइन सबसं कटलाकऽ बाद। आइ महेंद्रकऽ पछतावा भऽ रहल छइन, सबसं जुड़लाकऽ बाद।

पुरान कहबी छैक- "अब पछतावे होत क्या, जब चिड़िया चुग गइ खेत", एहने लेल कहल गेल छइ।एहन आबेश त अपनेसँभेंट सकइ छइ, विदेश मेकऽ केकरा चिन्हइ छइ। ओतऽ तऽ आबेशोकऽ मोल छइ। भारी मोनसँमहेंद्र घुइड़ रहल छलाह। अइ संग संग किछु निर्णय सेहो लेबाक भाव अबइत जाइत रही रहल छलइन।

उपराग (लघुकथा)

दमन बाबु आइ बीसो पच्चीस बरखक बाद बहिनक सासुर एलाह अइछ। कतऽ सऽ अबितैथ। बहिन अपने शहर मे डेरा पर रहइ छलीह। पहिने बहिनोई मिसरकऽ जतऽ जतऽ बदली होइन, ओतऽ रहइ छलीह। बाद मे जखइन बच्चा सब पैघ भेलइन त ओकर पढ़ाइ दुआरे रांचिये धअ कऽ रहलीह। बहनोई अपन असगरे बदली बला शहर मे रहइ छलाह। जखइन शहर लग रहइन, तऽ शइन ड़इब मे रांची आइब जाइ छलाह........मूदा बाद मे जखइन बदली दूर भऽ गेलइन.........तखइन दरमाहा लऽ कऽ महीने महीना रांची अबइत छलाह। कष्ट त होइन लेकिन धीया पुताकऽ पढ़ाइ आ भविष्यकऽ लेल माय बापकऽ त्याग तऽ करहे पड़तइ।अहिना दिन बितइत छलइन।

दमन बाबु सिन्दरीसँइंजीनियरिंग केलाक बाद बाहर निकइल गेल छलाह। कोनो भी जग परोजन मे शामिल नञि होइ छलाह। आइ जेकां सस्त हवाई यात्रा तहिया नञि रहइ। दमन बाबुकऽ सोच छलइन जे जतबा आबऽ जाय मे खर्चा होइत, ओतबा जे घरबइयाकऽ पठा देबइ त बेशी मदद हेतइ। शुरू मे तऽ संबंधियो सबकऽ डालर भेटइन त नीक लगइन। किनको दमन बाबुसँकोनो शिकाइत नञि छलइन। जहिया ओ दिल्ली अबइ छलाह......सब सगा संबंधी भेंट करऽ अबइन। सबकऽ जाइत काल किछु ने किछु दमन बाबु देबो करतिन। खुब जश छलइन। नब नब कुटुम्ब

सब सेहो डालरकऽ चक्कर मे भेंट करऽ अबिते छलइन।सब ठीक चइल रहल छलइ।

दमन बाबुकऽ बिदेश कहियोसँनञि सोहाइ छलइन। दु टा पाइ बेशी भेटलइन, तैं ओतऽ गेल छलाह। बाद मे धीया पुता आ आंगन सं, भारत घुरबाक तैयार नञि भेलकिन, तैं ओतइ रही गेलाह। जखने बच्चा सब व्यवस्थित भेलइन, भारत घुरबाक सोचऽ लगलाह।बहुत रास बदलावकऽ बारे मे पढ़इत सुनञित रहइ छलाह। अइ बीच मे बहिन सेहो एकदिन बड़ड उपरागसँभरल चिट्ठी पठेलखिन-

"तुं सब बड़का लोक भऽ गेल छअ। हमर कोनो काज/ करदेवता मे नञि उपस्थित भेलह।गाम मे घर बनेलऊं सेहो नञि देखबाक सेहंता भेलह। हमरा तोहर डालर नञि चाही। हम तऽ पहिनेहे तोहर पठाओल पाइकऽ घुरेबाक चाहइ छलऊं..... मूदा तोरा तकलीफ हेतह, तैं नञि वापस केलियह। बहिन लेल भाइकऽ काज मे सदेह ठार रहनाई , सबल बनबइ छइ। हम सब कोनो भिखारी छी जे पाइ पठा दइ छअ। कहियो तोरा छगुन्ता नञि भेलऽ जे भगिन जमायकऽ देखी.....बहिनक पुतोहु आ पोता पोतीसँभेंट करी। ओकरा आइब कऽ जे आशीर्वाद देबऽ , ओइसँबइढ़ कऽ किछु नञि छइ। मिसर तोहर दुखिताह रहइ छथुन, से तऽ बुझले छह। आब गाम मे ओतेक दवाई - दारु नञि भऽ रहल छइन। आइब कऽ भेंट कऽ जहुन। हमर बियाहक बाद तोहर जन्म

भेल छह। अपने बच्चा जेकां तोरा मानञि छलकुन...... से तों अबरजात बन्ने कऽ देलह। हमरा पाइ कौड़ी नञि चाही। मिसरकऽ पेंशन तऽ हम खर्चे नञि कऽ पबइ छी। पाइ बचिये जाइत अइछ। पहिने त बच्चा सबहक पढ़ाइ-लिखाईकऽ कारण हाथ शिकस्त भऽ गेल छल। तैं तोहर पढ़ाइकऽ खर्चा नञि उठा सकलियअ। मुजौना बाला तोहर ससुर ज्यों पढ़ाइयक खर्चा उठेलकुन तऽ बदला मे एहन सुन्नर हमर भाइ सन जमाय भेटलइन। बेशी सासुरकऽ लटर शटर मे नञि पड़अ। बस एक बेर आइब जाह।देखबाकऽ बड़ड मोन कऽ रहल अइ।"

ईएह चिट्ठी पढ़लाकऽ बाद दमन बाबु बहिनक सासुर आयल छलाह।बाहरो रहलाकऽ बाद दमन बाबु मे लंफलंफा नञि आयल छलइन।ओ अखनो गाम एलाह पर पैसेंजर ट्रेन मे चढ़ई छलाह। गामसँतऽ दुईये टीशन पर उनकर बहिनक सासुर छलइन।कतेक बेर ओ आयल गेल छथि। बड़ड भीड़ जखइन ट्रेनक बोगी मे भऽ जाइ छलइ त ओ पौदान पर लटईक कऽ जाइ छलाह। ज्यों एक ट्रेन छुइट जाइ त दोसर ट्रेन कखइन आइत, ओकर कोनो ठेकान नञि छलइ......ओहोसँबेशी जे ओइ मे अइ ट्रेनसँकम भीड़ हेतइ, तकर कोन गारंटी। किछु भऽ जाइ, दमन टीशन पर ट्रेन नञि कहियो छोड़लाह। एकबेर त ट्रेन छुइट गेला पर ओ चड्डुचन या एहने कोनो पाबइन मे सनेशक मोटरी कनहा पर उठा कऽ ट्रेनक पटरी धेने धेने बहिनक सासुर चइल गेल छलाह। बाद मे बुझला पर गाम मे सब बिगड़नेहो रहइन अइ लेल। तहिया एत्ते कहां सोचाई छलइ।जायकऽ अइ त जायकऽ अइ। जे सवारी भेटल,

पकड़ु आ पहुंच जाऊ। नञि किछु भेटल त " चरणदासक कार" छइये। अइ कारक ओ खुब उपयोग करय छलाह। ओ पैरे चललासँउनका " चीनी"कऽ बीमारी नञि भेलइन। अखनो उएह पहिलुका आत्मविश्वास पर कतउ आ कखनो विदा भऽ जाइ छथि।

बहिनक सासुर मे बितायल गप शप सब आइ मोन पइड़ रहल छइन।उनकर मिसरक माय (बहिनक सास) बड़ड कड़गर रहथिन। तहिया जे बुढ़ी कड़क होइ छलइ, उनका सब इंदिरा गांधी कहइ। एक बेर गाम मे कोनो गप चललइ त दमन बाबुकऽ भागिन कहलखिन - " हमर बाबी लग बंदुक छइ। आहां सबकऽ उनकर डर नञि होइया। हमर मां त बाबीसँखुब डराई छथिन।"

दमन बाबु भागिनकऽ बयसकऽ छलाह, मूदा छलाह त माम। ओ चटसँबजलाह- " हमरा लग तोप अइछ। जा कऽ कहि दियउन अपन बाबी के। हम सब नञि डराई छी।"

तहिया दमन बाबु तोप देखनेहो नञि छलाह। गाम मे सुनथिन जे तोप, बंदुकसँभइड़गर तऽ बाईज देलाह।

किछु महीनाकऽ बाद जखइन बहिनक सासुर गेलाह तं ओ बुढ़ी सास इंदिरा गांधी एलीह। कहलखिन-" ईएह तोपबाला पुरूख छथि। अइ बेर इनकर बिछान राइत मे हमरे घर मे कऽ देबैन कनियां।हम देखइ छियइन इनकर तोप"।

आब डरक मारे सकदम छलाह बच्चा दमन। बुझ्झ गेलाह जे भगिना, इमहरसँऊमहर बात केलाह अइछ। गामक सुनल फकरा याद आइब गेलइन- "धी, जमाय आ भगिना, ई तीनु नञि अपना"। ओ त जे छइ से छइ, अखइन ई बुढ़ीसँकोना निबटल जाय।आब राइत होबऽ मे बेशी देरी नञि छलइ। डरक मारे दमनक हाल पातर भऽ रहल छलइन। खने मिसर लग जाइथ, खने बहिन लग जाइथ, हम त मजाक मे कहलियइन। हमरा लग कोनो तोप नञि अइछ। लेकिन एतऽ पाहुनकऽ सुनञिया के। सब इनकर गप सुइन कऽ मुस्किया रहल छल।अगर बुढ़ी राइत मे बंदुक निकाइल लेतीह त दमन की करताह। ऊयाह चिंता बेगड़ता मे बिन खेनहे दलान पर सुइत रहलाह। बाद मे लोक उठा कऽ खुयेलकइन। बुढ़ीसँबाद मे दोस्ती भऽ गेल छलइन। ओ कहथिन जे आखिर उनकर बेटाक सासुर मे एकटा शेर जन्म लेलक जे ज़बाब देलक। बच्चा दमन अपनाकऽ शेर बुझ्झ गर्वान्वित होइत छलाह।

खटिया पर पड़ल दमन, कने ऊंघाइत छलाह।

ताबइत सुनञित छइथ जे बहिन बाईज रहल छलखिन- " कोन काज छलइ ट्रेनसँऐबा के। उपरसँअतेक दुर पैरे। हरही सुरही सब तं मोटररसऽ अबइत अइछ। हमर अफसर भाइ पैरे आइब गेल। आब तोहर देह पहिलुका थोड़े छह। बड़ड थाईक गेल छह।पड़ड़ रहअ।जखइन सांझु पहर उठबऽ त एक बेर मिन्नी दाईसँभेंट कऽ लियहुन। तोरा बड़ड मोन पाड़इ छथुन। मोन जुड़ा जाइ छइ जखइन नैहरक लोकक सासुर मे नीक लेल चर्चा होइ छइ।

मिन्नी दाईकऽ नाम लइते दमन बाबुकऽ अपन हुनका संग बितायल दिन याद आइब गेलइन। बहिन कहि रहल छथिन- मिन्नी दाई अपन जीबन इज्जतकऽ संग अइ गाम मे बिता लेलीह। कहियो सुख नञि भेंटलइन। दु दु टा बियाहो भेलइन। नञि जाइन ककर नजइड़ लगलइन वा कोन नक्षत्र मे जन्म भेलइन। ओतेक टा घर नञि हवेली कहऽ , ओइ मे असगर पड़ल रहइत छइथ। राइत बिराइत किछु भऽ जेतइन तकऽ देखतइन। याद हेतह, दुसधा हजरा, ओकरे बेटा राइत कऽ दलान पर सुतइ छइन।

मिन्नी दाई, बखारी चौधरीकऽ बेटी छलीह। बखारी चौधरीकऽ असली नाम दमनकऽ नञि बुझल छलइन। एतबा जनञि छलाह जे उनकर दलान पर कयेक टा बखारी छलइन। गाम की, पुरा परोपट्टा मे ओतेक बखारी किनको नञि छलइन। ओहीसँउनका सब " बखारी चौधरी" कहइन। अतेक बखारी रहइन, तैं बुइझ लियअ जे कतेक अन्न पाइन होइन।बखारी चौधरी बड़का कलामी लोक छलाह लेकिन दमनक मिसर आ उनका मे दुगोला छलइन। दुगोला मतलब खान पीन आपस मे बन्न। अबरजातो नञि। कर कुटुम्बकऽ एक दोसरा कतऽ एला पर पाबंदी नञि छलइ। बाकी सब पर लागू छलइ।

बखारी चौधरीकऽ दु टा बियाह छलइन। बड़की कनिया ओतेक नीक देखबा मे नञि छलखिन। तखइन अपने देख कऽ सुन्नर

दोसर कनिया केलाह। ओना तऽ नबकी कनिया बेशी दुलारु होइ छइ, लेकिन बखारी चौधरी कतऽ उल्टा छलइ। चलती बड़की कनियाकऽ बेशी छलइन। बखारी चौधरीकऽ दुनु कनियासँधीया पुता भेलइन। छोटकी कनियासँभेल धीया पुता सब चिक्कन चुनमुन आ बड़की कनिया सं भेल धीयापुता सब जमुनिया रंगक छलइन।

जखइन धीया सब बियाह जोगर भेलइन तं बखारी चौधरी बर तकनाई शुरू केलाह। मिन्नी दाई बड़की कनिया सं भेल छलीह।उनके समवयस्क छोटकी कनियासँचुन्नी दाई छलीह। चुन्नी दाईकऽ कथा सुन्दरता लऽ कऽ एक जगह स्थिर भेलइन। लड़का धन सम्पइत बला छलइ। बड़की कनियाकऽ जखइन पता लगलइन जे उनकर सऊतीनकऽ बेटीकऽ अतेक नीक कथा भऽ रहल छइन.......ओ अट्ठाबज्जर खसा देलकिन। उनकर बात बखारी चौधरी माइनतो बेशी रहथिन, फेर की छलइ। ओइ लड़कासँमिन्नी दाईकऽ बियाह भऽ गेलइन। सिन्दुरदानक बाद जखइन बरकऽ ई धोखा पता लगलइ त ओ कोनो बहाने चतुर्थीसँपहिनेहे परा कऽ अपन गाम चइल गेल। ओतऽ सबकऽ ई बात बतेलकइ। ओ सब अपने लंगा छल। कहलकइन जे आब सासुर जेबाक नञि काज, हम सब देख लेबइन।

इमहर बखारी चौधरी सब ई सोचइत -

" भेल बियाह मोर करता की।

धीया छोड़ि कऽ लेता की।"

कयेक बेर पर पंचयतीकऽ सेहो प्रयास भेलइ, लेकिन बर पक्ष टससँमस नञि भेलइ। ईएह सब तेला बेलासँमिन्नी दाईकऽ बर ततेक ने परेशान भेलइ जे एकदिन माहुर पी कऽ मइड़ गेलइ। उड़न्ती समाचार बखारी चौधरी तक सेहो पहुंचलइन। मिन्नी दाईकऽ सासुरसँनञि कोनो खबर एलइन। नैहरे मे चुड़ी तुड़ी फोरल गेलइन आ जे कनी मनी लोकाचार छइ, से सब भेलइन। ऊमहर चुन्नी दाईकऽ दोसर जगह कथा भऽ गेलइन। अइ बियाहलऽ कऽ दुनु सौतीन मे बड़ड ऊकटापैंची भेलइन। बखारी चौधरीकऽ कयेक बेर थोर थाम करऽ पड़लइन।

बखारी चौधरीकऽ देह आब उमर बढ़लासँखइस रहल छलइन। ओ चाहइत छलाह जे कहूना कोनो सुपातरक हाथे मिन्नी दाईकऽ बांईध दी। मौकाक तलाश मे सब बेर सभा गाछी जाइ छलाह। एक बेर कनीक बयसगर बर भेटलइन। बेशी ओकर खोज खबर नञि लेलकिन आ सोंझे सभागाछीसँऊठा कऽ लऽ अनलखिन। लड़काकऽ अतबे बतेलकिन जे बेटीकऽ बियाह राइत मे जमाय छोड़ि कऽ चइल गेलइ। नञि चतुर्थी भेलइ आ नञि मधुश्रावणी। शास्त्र आ लोकाचार दुनु लेखे ई बिबाह पूर्ण नञि मानल जेतइ आ ऊपरसँलड़का सेहो मइड़ गेलइ।ओ बयसगर बरकऽ फुसलां कऽ आ धनक लोभदऽ कऽ गाम परलऽ अयलाह। मिन्नी दाईसँपुछबाक काजो नञि। कपड़ाक गुड़िया जेकां मिन्नी दाईकऽ फेर बियाह

दान भेलइन। सब ठीक-ठाक बुझाई छलइ। दस दिन बाद बिदाई लऽ कऽ लड़का ओतऽ सँचलल। जखइन ओतऽ सँपहुंचनामा आ कोनो खोज पुछारी नञि एलइ त इमहर चिंता भेलइ। मिन्नी दाईकऽ मोन त पहिनेहेसँसशंकित छलइन।जखइन बखारी चौधरी लड़का बारे मे पता लगेला त भेद खुललइ। ओ बर पहिनेहेसँबियाहल नञि, चौदह बरखक बेटो छइ। कोनो काज नञि करय छइ आ सब अवगुणसँआगर छइ। बहु बेटा जे मना केलकइ त खींस मे दोसर बियाह कऽ लेलकइ। बाद मे जखइन घर गेल त सब भूत ऊतइड़ चुकल छलइ।कानुनन सेहो नबका बियाह मान्य नञि छलइ। मिन्नी दाईकऽ जीवन फेर ओहिना सुन्न भऽ गेल छलइन। बाद मे बखारी चौधरी थोड़ेक जमीन खोड़िसक रूप मे लिख देने छलखिन। बाकी भाइ सब बड़का बड़का हाकिम भऽ महानगर सब मे रहइत छइन। सबकऽ फड़ाक फड़ाक बड़का बड़का घर बनल छइन। मिन्नी दाई एक बेर कऽ सांझ बाती देखा अबइ छथिन।

ईएह गप्प सब बहिन , दमनकऽ सुना रहल छलखिन। तखने लाठीकऽ सहारे घिसियाइत मिन्नी दाई जोड़सँबजइत एलीह- "कऽ आयल छथि। पार्टनर की?"

दमन आ उनकर बहिन दुनु गोटे ठार भऽ गेलाह। उनकर लाठी हटा कऽ दमन हाथसँसहारा दऽ कऽ खटिया पर बइसलकिन। मिन्नी दाईकऽ ताशक गोंधिया हरदम दमने रहइ छलखिन। तैं ओ दमनकऽ आबेशसँ"पार्टनर " कहइ छलखिन। अतेक बरखकऽ बादो आवाज सुइन कऽ आइब गेलखिन।

दमन उनकर हाल पुछलखिन। मिन्नी दाई ज़बाब देलखिन- " हमर छोड़। हमर हाल त भइड़ दुनिया जनञित अइछ। तु अपन कह पार्टनर।

दमनकऽ किछु कहल नञि भेलइन।मिन्नी दाईकऽ बयससँबेशी देह खइस गेल छलइन। थोड़बाक काल बाद सांझबाती देबाक समय भऽ गेल छलइ। ओ चइल गेल छलीह।

दमन बाबु, बहिनसँपुछलखिन आबो दुगोला छऊ।

बहिन ज़बाब देलखिन- धुर्र छी। आब लोके कहां जे दुगोला। मरला पर कांध देबइ लेल मजुरी पर लोक बजावल जाइ छइ।हमरा जखइन समय भेटइत अइछ तं हम उनका कतऽ चइल जाइ छी। दु दिन नञि जेबइन त तेसर दिन टुघड़इत ई अपने पहुंच जेतीह।

दमन बाबुकऽ बहिनकऽ सब उपराग आब खत्म भऽ गेल छलइन। दमन बाबु सोइच रहल छलाह कि दुगोला रहलो पर मिन्नी दाई कहियो पाहुन बुइझ कऽ, कहियो खेलबासँआ ताशक गोंधिया बनबासँमना नञि केलखिन। कनीक रंग दब उनकर दुखक कारण त नहिये भऽ सकइ छइन, पिछले जन्मक किछु लेखा जोखा मे बचल छइन, उएह हिसाब भऽ रहल छइन।आब उपराग ककरा सं।

अएना (लघुकथा)

महिनाथ बाबु दीवानी मामलाकऽ जानल मानल वकील छलाह।ओना उनकर पिता रमानाथ बाबु भी कानुनकऽ कम ज्ञाता नञि छलाह। लेकिन रमानाथ बाबुकऽ वकालतक प्रैक्टिस ठीक नञि चललइन। ततेक ने उनकर टिटम्भा छलइन जे मोवक्किल सब धीरे धीरे दुर होइत गेलइन। मोवक्किल आहांकऽ पाइ दइया, ओ नखरा थोड़बे सहत। आहांकऽ ओकर ध्यान राखऽ पड़त, नञि तऽ ओ दोसरकऽ धअ लेत। ऊयाह भेलइन, रमानाथ बाबु ज्ञानी रहितो, मोवक्किल सबकऽ नञि सम्हाइड़ सकलाह। व्यवहारिक पक्ष कमजोर रहबाक कारण उनकर घरक गाड़ी जेना - तेना डुगड़इत रहलइन। उनकर कनियाकऽ सेहंता लगले रहलइन जे वकीलाइन जेकां बनल ठनल, खुब देब-लेब करइत जीवन बीतइन।उनका अपन घरबालाकऽ पोछल पाछल सुखल बेबहार बुझल छलइन। रमानाथ बाबुकऽ सामने आयल वकील सबहक ठाट-बाट ओ देखथिन........ चर्चा सेहो करथिन .... लेकिन अइ काठक मुरत रमानाथ बाबु के,कऽ बुझेतइन। रुस्सा फुल्ली, लड़ाई-झगड़ा, ऊकटा-पईंची, कन्ना-रोहट, नीक-बेजाय, सईज-धईज,अलार-मलार, शपता-शपती सब कऽ कऽ वकीलाइन थाईक गेल छलीह।आब ओ किछु कहनाई ओना ओ छोड़ि धेने छलखिन, लेकिन मौका भेटला पर अखनो छोड़ई नञि छलखिन।

अइ घरक भीतरका संघर्षसँमहिनाथ रोज दु चाइर होइ छलाह। ओ मायक उपरागकऽ बुझअ सुझअ लागल छलाह। ओ कहिया ई

निश्चय कऽ लेलाह जे उनका वकील बनबाक छइन, से अपनो नञि बुझेलइन।जखइन ओ वकालतक पढ़ाइ लेल कालेज मे नाम लिखा लेलाह, तखइन घरक लोक बुझलकइन। ओइ समय मे जे डाक्टरी, ईन्जीनियरी, आ सरकारी नौकरी मे नञि पास होइ छलाय, उएह वकालतक पढ़ाइ करय छलाह। लोक महिनाथक वकालती पढ़ाइकऽ फैसला जाइन कऽ अचम्भित भऽ गेल छल। सब ई बुझिये नञि सकल जे की निर्णयकऽ पाछु एकटा दृढ़ निश्चय छइ।

महिनाथ वकालतक पढ़ाइकऽ संग संग आरो काज सब मे सक्रिय छलाह। जहिया परीक्षा पास कऽ कऽ वकालत ज्वाइन केलाह, तहिया पुरा तड़क भड़क संग बड़का पार्टी देलाह।अपन पिताकऽ जुनियर नञि बइन कऽ शहरक नामी वकील बीरेंद्र बाबुकऽ जुनियर मे ज्वाइन केलाह। बीरेंद्र बाबुकऽ जज सबसँघुट्टा सोहार रहइ छलइन। ओहिना महिनाथ कम्मे समय मे ओकर सबहक बीच मे लोकप्रिय भऽ गेल छलाह। अधिकारी सबहक कोनो भी काज होइ, ओइ मे महिनाथ सबसं आगु। अपन जान जी लगा दइ छलाह-ओकर सबहक लेल। पहिने तऽ वीरेंद्र बाबुकऽ जुनियरकऽ रूप मे पहचान रहइन, मूदा थोड़बे दिनक बाद अपन पहचान होबऽ लगलइन। वीरेंद्र बाबु अपने सेहो अही रस्ते आगु बढ़ल छलाह, तैं ओ इनका पीठ पर हाथ ठोकइत रहलकिन।

महिनाथ जखने कनी सुभितगर भेलाह त ओ सबसं पहिने किछु पाइ इमहर ओमहर कऽ कऽ एकटा मोटर कीनलाह। तहिया मोटर वीरेंद्र बाबुकऽ सेहो नञि छलइन। ई मोटर आ ड्राईवर ओ जज सबहक तीमारदारी मे छोड़ि देलखिन। अखनो मंगनी मे मोटर ड्राईवरक संग ककरो भेटई त दस टा काज जरूरी भऽ जाइ छइ।अइ मोटरकऽ कारण इनका कोर्ट मे कयेक टा लोक सबसं नजदीकी भऽ गेल छलइन। अधिकारी सब हिनकर मोटरक भोग केलाक बाद हिनको कहूना ना कहूना उपकृत करऽ लगलइन।

महिनाथकऽ जन्मे कानुनक पोथीसँभरल घर मे भेल छलइन। ओ गलती आ मजबुरीसँबनल वकील नञि छलाह। ओ अपन ध्येय बना कऽ अइ प्रोफेशन मे आयल छलाह। ओ लगितो छलइ। जखने समय भेटइन कानुनक पोथी सब पढ़इत रहलाह। ताईद आ मोहर्रिरक लंबा सुची हिनका लग छलइन। सबकऽ बेशिये कमीशन दऽ कऽ पटियेने छलाह।अइ सबकऽ संग अपन उदार आ अभिजात्य चेहरा सेहो समाजक सामने रखने छलाह। पब्लिसिटीकऽ कोनो मौका हाथसँनञि जाय दइ छलाह। प्रैक्टिस चलऽ लागल छलइन।अपन घरक लोकक जन्मक तारीख याद होइन वा नञि होइन, सब साहब की, मेमोसाहबक जन्म तारीख आ बियाहक दिन याद रहइन। कतउ मधुर, कतउ गुलदस्ता, कतउ उपहार, कतउ सनेश त कतउ खाली शुभकामना....... अधिकारीकऽ स्वभावक अनुसार ई बेबहार करय छलाह।

ओ अपन घरे लग एकटा पुरना घर सेहो भाड़ा परलऽ लेने छलाह। अइ मे मोवक्किल सबकऽ रहबाक आ खेनाई पिनाईकऽ सेहो बेबसथा छलइ।दीवानी मुकदमा सबहक फैसला होबऽ मे बड़ड समय लगइ छइ।जकरा जमीन रहतइ, सैह ने मोकदमा लड़त। कयेक लोककऽ तऽ जमीनक संग भावनात्मक लगाव रहइ छलइ। अकरे सबकऽ महिनाथ भजबइ छलाह। आब बीरेंद्र बाबुसँअलग भऽ नीक प्रैक्टिस करऽ लागल छलाह। मोवक्किलक रहबाक बेबसथाकऽ कऽ नब शुरूआत भऽ गेल छलइ। रमानाथ बाबु बला भगलका मोवक्किल सब सेहो घुअइड़ कऽ इनका लग आइब रहल छलइन।

आब शहरक प्रतिष्ठित लोक मे महिनाथ बाबु आइब गेल छलाह। शहरक कलक्टर, पुलिस कप्तान, जिला जज, विधायक, नेता, व्यवसाई, पैघ गिरहथ सब संग ऊठई बइसई छलाह।बाहरी दुनियाकऽ लेल, दहेज लेल बियाह मे शामिल नञि होइ छलाह। लंबा लंबा सैद्धांतिक आ आध्यात्मिक गप सब देबऽ आइब गेल छलइन। उनका कतऽ सँफायदा होबाक अइछ, अकर पहचान मे पटुता छलइन। जतऽ जई तरहसँबिना "ना " कहने निबटारा होइत, ओइ तरहक तर्क दइ छलखिन। कखनो दु प्रतिष्ठित परिवारकऽ बीच कथा-वार्ता सेहो करा कऽ अपन पैठ बना लइ छलाह।

अहिना आगु बढ़इत जा रहल छलाह।महिनाथ अपन भातिजक बियाह एकटा अधिकारीकऽ बेटीसँकरवाबइल लेल जी जान लगेने छलाह।

हिनकर भाइ दोसर जगह बेटाक बियाह ठीक कऽ लेलकइन। ई अपन झेंप मिटबऽ खातिर " पाइ लेब, कि भाइ लेब "कऽ डायलॉग समाजक सामने रखलाह।अइ मे भाइकऽ किरकिरी भेलइन, लेकिन महिनाथ बाबुकऽ प्रसिद्धि भेटलइन।हर स्थितिकऽ भजबं मे माहिर छलाह।

अहिना महिनाथक गामक संगी एकबेर कोनो काज मे मददक इच्छा लऽ कऽ उनका लग एलखिन।महिनाथ अपनाकऽ सिद्धांतवादी दर्शबइत, सीधा कहबा मे लाचारी देखेलकिन।ओ कहलखिन- " ज्यों हमरा ओ पुछताह, त हम कहबइन।"महिनाथकऽ ई बात मोनो मे नञि एलइन जे अकरासँउनका कहियो कोनो काज पईरो सकइत अइछ। जेकरासँकाज परऽ बाला होइ छलइ, ओकरा लेल तऽ सर्वस्व समर्पण सिद्धांत छलइन।महिनाथकऽ ओइ संगीकऽ मोन मे एलइन जे काश हमरो एहन दिन होइता जे महिनाथ हमरा लग काज लेल अयताह। कहल जाइ छइ- कोनो चीज मोनसँचाहब तऽ , ओ पुरा हेबे करत।सब परिस्थिति चाहतक अनुकूल भऽ जाइ छइ।

समयक पहिया घुईम रहल छल। थोड़े बरखक बाद महिनाथकऽ काज ओइ गऊआं संगीसँपड़लइन। ओ अपन पुरना संगीक संबंध लऽ कऽ उनका कतऽ बड़का मोटर मे मधुरक डिब्बा आ भइड़ पथिया मालदह आम लऽ कऽ पहुंचलाह। अइ सनेशक बल पर ओ केहन केहन काज करा चुकल छलाह। ओ संगीकऽ सब

पिछला बात मोन छलइ। ओ कहलकइन-" हम त अहींसँनीक चीज सीखलऊं। ज्यों हमरा ओ पुछताह, त हम आहां बारे मे कहबइन "। महिनाथकऽ सब याद पइड़ गेलइन। अपन वाक्पटुता पर उनका बड्ड गुमान छलइन।आइ गामक अदना सन लोक उनका अएना देखा देलकइन।

पुरा गाम समाज मे ईएह चर्चा चइल रहल छइ जे सबकऽ अपन दिन होइ छइ। बड़का होइ वा छोटका होइ, ककरो उम्मेदकऽ नञि तोड़ी। समयक चक्र एहन ने घुमई छइ जे सब केलहा मुंह बेने सामने ठार भऽ चिढ़बऽ लगइ छइ।ओकर मारल मे आवाज नञि होइ छइ।

अइ घटनासँमहिनाथ पुरा तरहे बिफइड़ गेलाह। आब उनका सब गामक लोक अपन विरोधी बुझाय लागल छलइन। किनका कोना हानि पहुंचेबइन, अहीकऽ पाछु परल रहलाह। अही सब चक्रव्यूह मे फंसल ह्रदयाघातसँपरलोक चइल गेलाह। अएना उनका लेल भारी परलइन।

<u>हत्यारा (लघुकथा)</u>

नब कालोनी छलइ। चुन्नी महतोकऽ बेटा सेहो कालोनी मे घर बनेने छइ। बनिया सबहक नकलकऽ कऽ ओहो अइ कालोनी मे जमीन लेबा काल मेन रोड चुनलक। अकर पाछु एक्के टा कारण छलइ जे ओ दु टा दोकान बहरी दिस निकालत। सैह भेलइ। दोकान बनलाकऽ बाद एकटा तऽ किराया मे लगेलक आ दोसर मे चुन्नी महतो अपने दोकान खोलबाक फैसला केलक। ओना ओकरा अकर अनुभव सेहो छलइ। ई सत्त गप छइ जे ओकारा दोकानसँबरक्कत नञि भेलइ।

चुन्नी महतो ताहि जमानाकऽ मैट्रिक पास छल। ओकरा हिस्सा तीन बीघा जमीन पड़ल छलइ। अपन समाज मे ओकर धाक छलइ।जोड़ा बड़द संग टायर गाड़ी सेहो ओकरा रहइ। ओकर घर अपना समाज मे नीक गिरहथ मे अबइ छलइ। दोसरोकऽ जमीन ओ भरना लइत छल। ई सब रहलाकऽ बादो ओकरा खेती मे मोन नञि लगइ। ओना सरकारी नौकरीकऽ परीक्षा सब देनहो रहइ लेकिन नौकरी नञि भेलइ। इमहर बियाह दान छोटे मे भऽ गेल छलइ। चाइर टा ननकीरबाकऽ लाइन लगा देने छल। कोनो काज तऽ दोसर रहइ नञि........आइ जेकां टीवी, मोबाइल, फोन- फान, सनिमा किछु नाई। बरख मे एक बेर दसमी मे नाच अबइ छलइ। कोनो कोनो बेर बाबु भैय्या सबहक कतऽ जग सब मे सेहो शहरसँनचनिया अबइ। गामक बाहर गाछी मे नाच-गानक प्रोग्राम होइ छलइ।चुन्नी महतो अइ सब मे जी जानसँलागल रहइ छलाह। ओ सब समाजक नाचक भार लेने रहइ छलाय। नचनिया ठीक करऽ

सँलऽ कऽ ओकर सबहक खेनाई पीनाई सुतनाई- सब महतोकऽ जिम्मा। जाबइत नाच - पार्टी गाम मे रहइत छलइ, भुख पियास सब हरा जाइ छलइ चुन्नी महतो के। दु चाइर बरख पर जमीन बेचई छल आ ओइ पाइसँकिरानाकऽ दोकान खोलइ छल। साल दु साल दोकान चलबो करय.......फेर एक्के बेर दोकान बन्न भऽ जाइ। लोक सुनजि जे चुन्नी महतोकऽ घाटा भऽ गेलइ।

ओकरा खेतीसँबेशी दोकनदारी मे रस भेटई छलइ।तैं अपन खेत पथार ओ बटईया दऽ देने छल।

गाम मे ई चर्चा सब बेर अकर दोकान बन्न भेलाक बाद होइ- जे एना कियैक भेलइ। दोकान पर हरदम भीड़ रहिते छलइ, दामों अकर बेशी रहइ छलइ, मोल कम्मो नजि करय छलइ, उधारी देबहो मे करकर करइत छलइ, सोलकनक ईएह टा दुकानदार छल- तैं ओकर समाजक सब अतइसँकीनय। गाम मे ओना दु टा आर किरानाकऽ पुरान दोकान बाभन सबहक छइन। उनकर सबहक बोली बानी नजि नीक। तैं सोलकने नजि, बभनटोलियोकऽ लोक सब चुन्नी महतोकऽ दोकान पर अबइत छल। बाद मे कतउ कतउसँगप छुटलइ जे ई चुन्नी महतो ढेकाक कमजोर छल। ओ अइ चक्कर मे दोकान डुबेलकइ। भोर सांझ त दोकान मे भीड़ रहइ छलइ,तखइन मौका नजि लागइ, लेकिन दुपहरिया मे ओ गड़बड़ कऽ लइ छलाय।बजार जे ओ होलसेलसँसमान आनऽ जाय ओतउ ओ किछु किछु गड़बड़ कऽ लइ छलाय। गाम मे दबले ज़बान मे, लेकिन कहल जाइ छलइ।

ईएह कोटा रहलो पर ओकरा नौकरी नञि भेटलइ, मूदा कपार जोरगर छलइ, एकटा बेटाकऽ रेलवे मे नौकरी लाइग गेलइ। ओकरे कतऽ रही कऽ दोसरो बेटा सब पढ़लकइ। आब त चारू कतउ कतउ नौकरी धेने छइ। छोटका त फौज मे छइ। ओकरासँचुन्नी महतोकऽ बड़ड सुख। ओ बेटा जखइन अबइ छइ, अंगरेजिया बोतल सब ट्रंक भइड़ कऽ अनञि छइ। जे पीलक पियेलक, बचलका जायकाल मे अपन बापक हवाले कऽ दइ छइ। फेर तऽ चुन्नी महतो चानी काटअ लगइ छथि। बड़का बेटा रेलवे टीशन पर मालबाबु लागल छइ। सब समान चढ़ला उतरला पर कमीशन बान्हल छइ। ऊयाह शहर मे जमीन कीन कऽ घर बनेलकइ, ओही मे चुन्नी महतो दोकान निकाललाह अइछ।आब फेर कयेक बरख बाद दोकान खोललाह अइछ।अपने त दोकानक नाम पर शहर मे रहअ लागल छल लेकिन ओकर घरबाली गामे मे धान गहुम सम्हाड़इ लेल रही गेलइ।ओ नञि अपन कनियाकऽ परवाह करय आ नञि कनिया ओकरे करय।

पहिलुका गामक दोकान मे त असगरे ओ सब काज करय छलाह। आब तऽ चाइर टा कमासुत बेटाकऽ बाप छथि, अपने दोकान मे झाडु पोंछा आ बाकी काज कोना करताह।आब गल्ला पर अपने बइसई छथि आ एकटा टेल्हवाकऽ रखने छथि। कियो टेल्हवा दोकान मे टिकइ नञि छइन। ओना पाइ कम्मे दइ छथिन, तखनो सब भाइग जाइ छइन। किछु ने किछु तऽ झोल छइ।

आब शहर मे घर पर समान पहुंचबइकऽ फैशन भऽ गेल छइ। अइ कालोनी मे सेहो अकर लसाइड़ लागल छलइ। गामसँएकटा छौंड़ा देबनाकऽ पकइड़ कऽ चुन्नी महतो दोकान पर रखने छल। ओ छौंड़ा बड़ड पइनगर छल। ओ दऊड़ दऊड़ कऽ काज करय। भरीगर आ दुर बला घर पर समान पहुंचबइ लेल साईकिलसँजाय।कतउ घर बाला सबसँज्यों ओ गप करबाक कारण देरी भऽ जाइ त माइड़ माइड़ कऽ छुटय ओकरा पर चुन्नी महतो। सब शान अइ छौंड़ा पर झारय। चुन्नी महतोकऽ ई दोकान चइल गेल छलइन।

कालोनीकऽ बच्चा सबकऽ खेल खेलाइत देख कऽ देबनाकऽ सेहो खेलेबाक सेहन्ता होइ। चुन्नी महतो ओकरा खेल पर पड़िकऽ नञि देबऽ चाहइ छलइ। कतउ कतउ समान पहुंचेला पर घर बाला सब दु चाइर टका देबनाकऽ द दइ छलइ। देबना ओकरा जमा करय छल।ओ दोकानक सब तरी भिट्टी सीख रहल छलाय। ओकरो मोन रहइ जे कनी पाइ जमा कऽ कऽ शहर मे कतउ ओहो अपन ठीहा जमावत। अही धुन मे लागल रहइ छलाय। चुन्नी महतो अपन बेटाक देल अंगरेजिया बोतल मेसँकनी कनी रोज पीबइ छल। एक दिन देबनाकऽ सेहो पीयई लेल जोड़ केलकइ। देबना त ओकर नौकर छल,केना बात कइटतइ.........दु घुंट दऽ देलकइ। जहां तक ओकरा मोन पड़इ छइ, ओइ राइत चुन्नी महतो ओकरा संग किछु गलत बेबहार सुतली मे केलकइ। भोर मे जखइन देबना ऊठल त ओकरा सब बुझेलइ। ओ कनी काल बाद अपन झोड़ी ऊठेलक आ गाम पड़ा रहल।

इमहर चुन्नी महतोकऽ अइ खराब सोभाव लऽ कऽ आर कियो ओकर दोकान मे काज करय लेल नञि गछइ छलइ। दु तीन हफ्ता बीतला बाद चुन्नी महतो अपन कनियासँभेंट करऽ गाम गेल। थाह लेबऽ देबना कतऽ सेहो गेल। देबना कतउ बाध दिस गेल छलाय।ओकर मायसँचुन्नी महतो चिक्कन चुपड़ल गप केलक। ओकरा पता चइल गेलइ जे अतऽ सब ठीक छइ। थोड़ेक काल बाद जखइन देबना आयल त ओकर माय अपन गरीबीकऽ कननाई शुरू केलक।हारि कऽ देबना फेर चुन्नी महतोकऽ दोकान पर काज करबाक गछलक। चुन्नी महतो एडबांसे मे करकरऊआ टका देबनाकऽ मायकऽ हाथ पर राईख देलकइ।

महल्ला बाला चुन्नी महतोकऽ देबनाकऽ दोबारा अयलाकऽ बारे मे पुछइ त ओ कहइ - सब गर्मी आब ऊतइड़ गेलइ, त आइब गेल।गर्मीसँमतलब अतऽ जमा पैसा खत्म होबाकसँछलइ।

देबनाकऽ मिसराजीकऽ कनिया सऽ बड्ड गप होइ। मिसराजीकऽ पोता देबनेकऽ बयसकऽ छलइ। उनका कतऽ हर बेर समान लऽ कऽ गेला पर पाइ त भेटबे करय, उपरसँखाय पीयई लेल सेहो भेटई। ओ सदिखन मिसराजी कतऽ जाइ लेल तैयार रहइ छल। जखइन ओ जाय तऽ घुरऽ मे बिलमा जाइ छलइ। चुन्नी महतो ओकरा अइ देरीक लेल एक दशा नञि छोड़ई। देबनाकऽ अइ बिगड़ाईकऽ कोनो असर नञि छलइ।

मिसराजीकऽ घर सेहो कालोनी मे मेने रोड पर छलइन। चुन्नी महतोसँबेशिये रोखगर उनकर घर छलइन। मिसराजीकऽ घरक सब लोक ओकरा मानऽ लागल छलइ। मिसराजीकऽ कनिया

देबनाकऽ गाम लगक छलखिन। ओकरा गाम मे बाभनटोली मे उनकर संबंधी सब रहइ छलइन।ओ ओकरा गाम गेल आयल छथि। बड्ड लोककऽ चिनहतो हथिन ओ। देबना चुन्नी महतोकऽ चाइल चलनक शिकाइत इनका सब लग केलकइन।कनी मनी शक उनको सबकऽ बुझा रहल छलइन, लेकिन अतऽ महल्ला बाला बात छलइ। सबदिनाकऽ झमेला बेमतलबकऽ ,कऽ ऊठाइत। ओ सब ओकरा दोसर जगह काज तकबा लेल कहलखिन। अइ लेल मददकऽ भरोसा सेहो देलखिन।

देबना एकदिन उनकर घरक आगु तरकारीकऽ ठीहा लगबऽ कऽ बारे मे पुछलकइन। ओ सब तखने हं कहि देलखीन।उनका सबकऽ तऽ एकटा मंगनी मे विश्वासी चौकीदार भेंट जेतइन। अतबे नञि, बिन सुदक पाइ पईंच सेहो लइ लेल कहलखिन। देबना आब अपन गुमटी बनबऽ कऽ बारे मे सोचऽ लागल छलाय। सस्कृतक एकटा मास्टर साहब कालोनी मे रहइ छलखिन, उनकासँदोकान खोलबाक दिन तकइ लेल कहि देने छलइन। आब पुरा जोश जोश मे देबना रहअ लागल छलाय।चुन्नी महतोकऽ सेहो दोकान खोलबाक भनक लाइग गेल छलइ।

अहिना एक दिन राइत मे दोकान बन्न भेलाक बाद चुन्नी महतो, देबनाकऽ नब दोकान खोलबाक खुशी मे अंगरेजिया शराब पीयेलकइ। नशा मे अयलाकऽ बाद की भेलइ से अड़ोस-पड़ोसकऽ सेहो कियो नञि बुझलकइ। भोर मे दोकान नञि खूलला पर लोक घर मे तकलकइ त ओतऽ चुन्नी महतोकऽ निर्वस्त्र लाश भेंटलइ। छुरासँसऊंसे देह मे गंथने छलइ।शोणित पुरा घर मे फैलल। बाकी कोनो समानकऽ नञि अगरम्भार भेल छलइ। सब

घर मे सब समान ओहिना संइतल राखल। दोकानक गल्ला सेहो सुरक्षित।खाली देबनाकऽ कोनो पता नञि। पुलिसकऽ खबर भेलइ। लाशकऽ कब्जा मे लेल गेलइ। टीशन पर दिल्ली बाला ट्रेन मेसँदेबनाकऽ पकइड़ कऽ पुलिस अनलकइ। देबना अपन अपराध माइन लेने छल। चुन्नी महतोकऽ बेटा सब आइब गेल छलइ।ओकरा सबकऽ पुलिस बलासँलऽ दऽ कऽ सेटिंग भऽ गेल छलइ। दु दिन बाद अखबार मे निकललइ - "देबनाकऽ नब दोकान खोलइ लेल पाइकऽ जरुरत छलइ। ओइ लेल ओ अपन मालिककऽ जान लऽ लेलक। आबसँनौकर राखऽ सँपहिने जांच करा लेल करूं"।देबना कोनो नौकर थोड़े छल।ओ तऽ चुन्नी महतोकऽ गऊंआ आ समांग छलइन। ई बुझअकऽ फुर्सत ककरा छइ। महीना दिन अइ घटनाकऽ खोदबेद होइत रहलइ, फेर सब बिसइड़ गेल। जीवन कतउ रुकलइया। चुन्नी महतोकऽ बेटा सब दोकानक समान बेच कऽ पुलिस वालाकऽ रूपय्या उलीझ देलकइ। दोकानकऽ किराया पर उठा देलकइ। आब एस टी डी बुथ ओइ मे खुईज गेल छलइ।

देबनाकऽ पुलिस बला ओइ घर पर जांच करय लेल अनलकइ। मिसराजीकऽ परिवारक लोक बाहरे मे ठार छलइन। सब बाल बच्चेदार लोक, हत्यारासँकेना संबंध रखतइ। अकरा देखिते सब घरक भीतर जा कऽ सांकल चढ़ा लेलकइ।

देबनाक बात बाहर नञि आइब सकलइ।ओकर अपन दोकानक सपना जेहल तर दबा गेल छलइ।अइ सपना देखिते ओ कयेक राइत जगलाहे बितेने छल। क्षण मे क्षणाक भऽ गेल छलाई।केना ओ अपनासँबलिष्ठ चुन्नी महतोकऽ चक्कुसँगोंईध देलकइ, ओकरा अपन

ताकत पर आश्चर्य होइ छलइ। कतेक बेर चक्कु गंथलकइ, ओकरा किछु मोन नञि छइ। ओ चक्कु चलबइत रहलउ। जखइन खुनसँसऊंसे ओ नहा गेल, तखइन छोड़लकइ। एना लगइ जे ओ खुन नञि ललका रंग होइ आ ओइ ललका रंगसँओ अपन गामक नबकी भौजाइ संग होली खेलने हुआय।सऊंसे घर मे लाले लाल शोणित फैलल।

ओकरा सब हत्याराकऽ नाम दऽ देने छलइ। ओहन मोहक मुस्कान बाला छौंड़ा, आब हत्यारा भऽ गेल छलाय।

असल मे तऽ हत्या देबनाकऽ अरमानकऽ भेल छलइ। ओकरा अइ लेल विवशकऽ केलकइ, ओ जानऽ सुनऽ बाला अइ आन्हर बहीर संसार मे कियो नञि छइ। देबनाकऽ जीवन पहाड़ भऽ गेलइ। तारीख पर कहियो काल गामसँमाय अबइ छइ। तारीख पर तारीख लाइग रहल छइ। जखइन मिसराजीकऽ कतऽ कऽ लोककऽ गवाही लेल कहल गेलइन तऽ ओ सब देबनाकऽ चिन्हबासँइन्कार कऽ देलखिन।देबना आ मिसराजीकऽ बीच भेल गपक बात तऽ कोर्ट मे भईये नञि सकलइ। अंतिम उम्मेद ईएह सब रहथिन। सब खत्म भऽ गेल छलइ। सजा भेलाक बाद बाकी जीवन जेहल मे काइट रहल छल देबना।माय ओकरा जेहल मे भेट करऽ काल कहलकइ जे गाम समाज मे आब ओकर नबका नाम पइड़ गेल छइ " हत्यारा "। ओकरो लोक आब देबनाकऽ माय नञि कहइ छइ .... "हत्याराकऽ माय " नब नाम ओकरो भऽ गेल छइ। देबनाकऽ मायकऽ पहिने होइ जे एहन हत्यारा ओकर कोखसँकेना जनमलइ।जनञिमते किअए नञि ओ नुन चटा कऽ माइड़

देलकइ। मूदा जखइन ओकरा चुन्नी महतो बाला गप सब देबनाकऽ वकील साहब बतेलकइ, तखनसँतऽ ओकरा " हत्यारा" नाम नीक लाइग रहल छइ। आब ओ अपने कहइ छइ-" हमरे देबना ओइ मुंहझौसाकऽ मारने छइ। हम ओकरे माय छीयई। हत्याराकऽ माय।"

आब ओ आईख चोराअ कऽ नञि, आंईख उठा कऽ गाम जाय बला बस मे बइस चुकल अइछ।गर्वसँभरल आ अकरल ओकर देह भऽ गेल छलइ। आइ ऊपरसँईहो देखियउ, ओकरा बस मे सीटो एकटा मंशा दऽ देलकइ। ओ मंशा आर कियो नञि मिसराजीकऽ बेटा छलइन।देबनाकऽ कोर्ट मे ओ सब नञि चिन्हलखिन लेकिन बस मे ओकर माय लेल सीट छोड़ि देलखिन।

हुब्बा (लघुकथा)

दुर्गा स्थान मे सब साल जेकां जतराकऽ परात बैसार भेल छलाय। पचपट्टिया मंदिर कमिटी बाला सब जमा छल। धीया-पुता सब सटले परती पर खेला रहल छलाय।

कनीके काल पहिने टेंट बला समियाना, दरी, कनात आ आरो समान सब समेटने रहय। एक तोड़ बैलगाड़ी पर लदाकऽ थोड़े समान चइल गेल रहय। बाकी सब जमाकऽ क राखल गेल रहाय। समानक गिनतीभऽ गेल छल। अहु बेर दु टा जाजिम नञि भेठलइ।ई सब बेरक लीला छइ- किछु ने किछु हराईते छइ। मंदिर संकऽ चोरा कलऽ जेतइ। टेंट बाला सबकऽ अपन हिसाब बारी फाइनल करऽ काल मे दबाब बनबऽ कऽ तरीका छइ। ओ पुरना फटलाही जाजिम केकर काज के। ऊपरसँदस दिनसऽ ओइ पर ररधुम्मस भेल छइ। केहन हाल हेतइ से सोइच लियह। अहु बेर टेंट बाला बजई छल जे अगिला बेरसँओ नञि आइत। ओकर सब सामान छिया लेदरभऽ जाइ छइ। ओ एक्को पाइ फायदा नञि कमबइ अइछ अइ पूजा सं। ओ त पुरनका बेबहार छइ जे ओ आइब जाइया। नबका कमिटी बाला सब त ओकरा हटबऽ चाहिते अइछ- सब बेर पुरान आ फाटल चीटल समान एतऽ लगबइ अइ। ओकर बातकऽ पतियेतइ। तखनो पुरना लोक सब ओकरे भार दइ छथिन। ओकरा सब बुझल सुझल।कहिया आ कखइन, कथीक जरुरत छइ- कहबाक काज नञि, ओ अपने नेने अबइत

छइ। गामक समांगभऽ गेल अइछ ओ। सबके चिन्हइत अइछ। किनकासऽ कोना निबटल जाइ छइ-ओ पारंगत अइछ। कोन बच्चा कोन घरक अइछ- सेहो ओकरा बुझल। किनका बिगड़बाक काज, किनका आदर संग कहनाई आ किनका लाठी आ गाइड़ तरे भगेनाई- ओ जनञित अइछ। किछु बच्चा सब जमा कायल मसलंगकऽ पहाड़ बनाकऽ ओइ पर चढ़ई छलाह आ ओइ परसऽ कुईदकऽ उतड़इ छलाह। बेशी बच्चाकऽ बाप पित्ती सब बगले मे बैसार मे जमा छलाह, तैं टैंट बाला नञि किछु बजई छल। ओकरो हिसाब ओइ बैसार मे होइ छलइ। जे पाइ भेंट गेल से भेंट गेल, बकियौता त फेर परूक साल। तैं ओ अपन नम्बर आबऽ कऽ लेल साकांक्ष छल।टेंट बालाकऽ ई पचपट्टिया बाला सबकऽ डपोरशंखी गप्प पर हंसी अबइ छलइ। दस बरखसऽ बेशियेसऽ मंडिलक फिरीस्त बइन रहल छल। दमरी कियो निकालता नञि आ गप्प सुनु।ओकरो पाइ अखइन तक नञि बढ़ेलाह अइछ। सब बेर-अगिला बरख। आब त ओ कहितो नञि छइन। जेहने ढऊआ खरचता, तेहने ने सामान भेटतइन।

बैसार मेसऽ आबाज एलइ जे रामा मायकऽ हिस्सा छोड़ि दियऊं।ओ बेचारी कतऽ सऽ देतीह। झटसऽ दोसर लोक ओकर समर्थन केला। बैसार मे पासभऽ गेल जे रामा मायकऽ हिस्साकऽ चंदा देबऽ कऽ नञि काज।

"रामा " नाम सुनिते, ओतइ टेंट बाला जमा मसलंग पर कुदइत "

दीना "कऽ कान ठारभऽ गेलइ। ओ सब छोड़ि क, बैसारक गप्प पीबऽ लागल। ओकरा ई फैसला ठीक नञि लगलइ। ओ किनकोसऽ कम कियैक। ओ दौडल घर गेल आ दाईकऽ कहलकइ ई हिस्सा बाला बात। दाई ओतेक बुझलखिन नञि। कहलखिन जे हम पता करय छी जे की बात छइ।

- पता कि करबही। हमहु हिस्सा देबइ -मंडिल मे। ईएह गप्प छलइ।

-

ठीक छइ। दइयही। तु केकरासऽ कम। आबऽ दहुन पट्टी बाला सब के। हम कहबइन एना किअए केलाह। हमहु हिस्सा देबइ। ओना दुर्गा जीकऽ कहून की अतेक पाइ दथुन जै तौं असकरे मंडिल बना लें।

दीना ओतइसऽ मोनेमोन दुर्गा महारानीकऽ ई गप्प कहि देलकइन। दाई ओकर कल जोइड़कऽ दुर्गाजीकऽ कहलखिन जे दीनोकऽ सूनियउ हे महरानी।

रामाकऽ दाई कहि त देलखिन लेकिन कतऽ सऽ पाइयक बेबसथा हेतइ- से सोचऽ लगलीह। मोने मोन हंसियो लगलइन जे बाबा बला शान पोता मे आयल छइ। हम किनकासऽ कम।

रामाकऽ गाम त ओना बड़की टा छइ। सोलहो बरण ओइ गाम मे - एक्को दु घर भेटिये जाइत। दुर्गा पूजा पांच पट्टी मिलकऽ करय छइ। गाम मे इनका सबकऽ पचपट्टिया कहल जाइ छइन। पूजा ईएह सब शुरू केने छइथ, तैं पुरा बेबसथा इनके सबहक हाथ मे। गऊंआसऽ चंदा पूजा लेल नञि लेल जाइ छइ।

पचपट्टिया मे हर सालक पार चलइ छइ- दुर्गा पूजाकऽ लेल। पूजाकऽ अलावा नाच गाना आ मनोरंजनकऽ बेबसथा गऊंआकऽ कमिटी छइ, से करय छइ।पहिने त नटुआ अबिते टा छलइ लेकिन आब त मुजफ्फरपुरकऽ कब्बाली पार्टी वा बेतियाकऽ बाईजी अबइ छइ। अइ गामक नाटक नामी छल।कयेक गामक लोग देखऽ अबइ छल। अबइ त अखनो अइछ - बाईजीकऽ नाच वा दुअर्थी कबाली सुनऽ कि देखइ लेल।आबकऽ खेलत नाटक आ कतऽ सऽ आइत नटुआ। सब किछु अतेक जल्दी बदइल जेतइ- कियो सोचने नञि छल।

दुर्गा मंदिरकऽ भवन बड़ड पुरान छल। बरका बाईढ़ मे अकर थोड़े भाग खइस परलइ। ओकरे दोबारासँबनबऽ कऽ बारे मे सब साल जेकां अहु बेर सेहो बैसार मे चर्चा भेल छलइ। पचपट्टियाकऽ एकटा बिशेषता छइ- आपस मे खुब पट्टीदारी करत- सब एक दोसरकऽ लंगी मारऽ लेल तैयार बैसल, आपसी मोकदमाकऽ त पुछु नञि। लेकिन जों दोसरासऽ कोनो झमेल, त सब एकभऽ जाइत। गाम मे आब दोसर टोलकऽ कतेक पाइ बलाभऽ गेल छइ, जे

पचपटियाकऽ जेबी मेलऽ क घुमतइन। ई सब ओकर पंसगो मे नञि छइथ, मूदा दुर्गा पूजा, गंवारी नञि होबऽ देलखिन।

ओना हिंदू धर्म मे छइयो- आहां अप्पन गोसाउन घर वा पूजा घर वा मंदिर राईख सकइ छी, लेकिन मुसलमान जों मस्जिद बनेलक त ओ समाज कभऽ जाइ छइ। ककरो नमाज पढ़असऽ रोईक नञि सकइ छी। दुर्गा पूजा मे अपन चलती त पचपट्टिया देखइबते अइ- धर्मक पाछा छइजो जाइ छइ।

आब देखू पचपट्टियाकऽ आपसी दांव-पेंच। दीनाक बाबा, बालचंद्र ठाकुर उर्फ बाला बाबु पुरना कांग्रेसी छलाह। आजादीकऽ लड़ाई मे सेहो भाग लेने छलाह। जेहल नञि गेलाह तैं रामा मायकऽ पेंशन नञि भेटलइन। कोशिश पैरवी खुब भेल- लेकिन नञिभऽ सकलइन। पटना मे एसेम्बलीकऽ टिकट फाइनलभऽ क नाम हिनकर दिल्ली गेल छलइन। तखुनका अध्यक्ष कहलखिन जे -

"आहां अपन क्षेत्र मे जाऊ-परचार शुरु करु। टिकट बुझु की ने, आहांकऽ भेटिये गेल अइछ।" ओ क्षेत्र मे आइब गेलाह।मोटर कीनलाह।गामे गाम घुमनाई शुरू कयलाह।

बाला बाबुकऽ कंग्रेसिया सब गच्चादऽ देलकइन। उनकर टिकट कइट गेलइन। दोसरकऽ भेंट गेलइ। बाला बाबु पाछु हटअ बाला लोक नञि।दिअयद बाद आर चढ़ा देलकइन। ओना पहिनेहेसऽ

कहल जाइ छइ- किनकोसऽ बदला सुतारऽ कऽ हुवाय त, या बिधायकीकऽ इलेक्शन लड़ा दी वा पुरना मोटर गाड़ी खरीदा दी।

प्रतिष्ठा आ वोट दुनु दु चीज होइ छइ। पोलिंग बूथ पर इनकर पैर छुअ बाला लोकक लाइन, वोटक लाइनसऽ पैघ छलइ। ओइ समय कांग्रेसकऽ एहन लहर छलइ जे कुकुरो बिलाई ओकर चिन्ह पर जीत जाइ। बालाबाबु आ कांग्रेसकऽ उम्मेदवार दुनु चुनाव हारि गेलाह। तेसरे जीत गेल।

आब शुरू भेल बाला बाबुक दुर्दिन। पहिने मोटर बिकेलइन, फेर दोसर गामक जमीन,फेर गामक खरहोइड़, फेर नासी, फेर धनहर खेत, फेर पश्चिम भरक गाछी। कतेक कर्जा उठा लेने छलाह से अपनो अंदाज नञि। घर- घरारी आ थोरेक बहुत सझिया गाछी , पोखइड़, खेत बचलइन। बाद मे बिक्षिप्तभऽ गेलाह आकऽ एल सहगलकऽ गाना गूनगुनबइत मइड़ गेलाह। अपना जीबते मे जेठका बेटा "रामा ठाकुर " केन्सरसऽ मइड़ गेलइन- आठ महीनाकऽ दीनाकऽ छोड़ि क।

अइ गामकऽ बालाबाबुकऽ गामसऽ लोग जानय लागल छलइ। ई बात पचपट्टियाकऽ लोककऽ अखड़इ।बालाबाबु कांग्रेसी रहितो सामंती स्वभावक छलाह। पचपट्टियाकऽ कियो उनकर सामने ठाढ़

नञिभऽ सकइ छल।के नञि उनकर पटना बाला डेरा पर आयल छल। कियो आबय- भोजन भेटिते टा छलइ। हं ई सही छलइ जे पुछा-पुछी नञि छलइ। अपने जाऊ आ भनसियासऽ खेनाईलऽ लियह। तखइन त अतेक लोक अबइ।लोको मीन मेख नञि निकालइ। कोनो बाला बाबु किनको बजेने त नञि छेलखिन।अपन काजसऽ ककरो कतऽ जायब, त ओइ समय मे अइसऽ बेशी उमेदो लोक नञि करय छल।

ऊयाह बदला आब ओ सब उनकर परिवारकऽ दीन-हीनकऽ रूप मे बाईज कऽ केलक।

ई कमाल देखू- रामा मायकऽ त हिस्सा देबऽ सऽ बचा देलकइन । सहानुभूतिकऽ पात्र बनेलकइन, लेकिन अपनो कियो नञि देलक।देबऽ कऽ हूब्बा होइ छइ। ओ कतऽ सऽ होइतइन। सब बेर अहिना बैसार होइ। फिरीस्त बनञि-सीमेट, ईंटा, छड़ी, बालु, मजुरीकऽ हिसाब होइ आ साल बीत जाइ।बजट सुरसाकऽ मूंह जकां बढ़इत जाइ छलइ।

दीना ठाकुर ओतेक पढ़ल लिखल त नञि। दिल्ली मे एमहर ओमहर बऊवेलाकऽ बाद आब कयेक होटल सब ठेका मे लेने अइ आ चलबइत अइछ। चिक्कन पाइ कमा रहल अइछ। नब भवन दुर्गा मंदिरकऽ बनबौलक अइछ गाम मे। बाला बाबुकऽ पुरखाकऽ

बनाबल मंदिरकऽ पचपट्टिया ठीक तक नञि करा सकल। आइ संगमरमर पर लिखल पट्टी,दीनाकऽ दाईकऽ नामस, सेहो मंदिरक आगां मे लाइग गेल।

गऊंआ कहि रहल छइ - जे हुब्बा बालाबाबु मे छलइन उएह हुब्बा दीना देखेलक। दीनाकऽ अफसोस होइ छइ - जे दाई रहितै त ओकरा कतेक खुशी होइतइ।ओ त अपन बाबाकऽ नञि देखने छल। लोक मजा लइ लेल ओकर बाबाकऽ खिस्सा कहइत रहइ छल।

ई हुब्बा कखनोकऽ जानलेवा सेहोभऽ जाइ छइ। तैं बइचकऽ अइ हुब्बा सं। सोइच समइझकऽ काज करु। बाला बाबुकऽ त ईएह हुब्बा सब किछु "बिला" देलकइन आ दीनाकऽ हुब्बा समाज मे प्रतिष्ठा दियेलकइ।

इच्छा (लघुकथा)

सुतले रहइथ रमन, कि "बिपता"कऽ शोर पाड़इत सुनला- उठु ने, "घुरन बाबु" अपने आयल छथि- आहांसऽ भेट करबाक लेल।

राईते रमन अयलाह आ भोरे घुरन बाबु आइब गेलाह। कतेक मजगुत उनकर खुफिया तंत्र गाम मे छइन- से बुझु। बिना कतउ गेने- सब खबर रही छइन। किछु खास लोक उनकर सब टोल मे छइन।

पुरा घर मे दलमल मचल अइछ। लोक सब पर्दा हटाकऽ बहरी दलान दिश ताईक रहल अइछ। पाइन ओ पीब चुकला आ चाह उनकर सामने राखल छइन।

कतबो ओ कहलखिन जे हम चाह अखने पीकऽ आइब रहल छी, तैयो चाह उनका लेल बइने गेलइन।

जगक आंगन रहइ। कयेक लोक घुरन बाबुकऽ देखने नञि छइन-नाम त सब सुनने छइन। स्त्रीगण महाल मे त बेशीये फुस्सा फुस्सी।कियो कोनठा लग ठार त कियो खिड़की सं। पुरूख पाहुन सब सेहो नमस्कार नमस्कार करइत घुरन बाबु लग पहुंच गेल

छलाह।

अहु बयस मे अतेक भव्य लगइ छलाह। दुरेसऽ लगइ जे कियो बइसल छइथ। दरबज्जा भरल बुझाई। सब धनिकाहाकऽ अहिना चेहरा मोहराभऽ जाइ छलइ। चेहरा देखियेकऽ लाइग जईता, कि कते समपइत हिनका हेतइन। एकटा हैदराबादकऽ निजामे एहन छलाय, जेकरा देखला पर बुझईता जे कतेक दरिद्र अइ।

घुरनबाबु बड्ड कम बजई छथि- सुनञि आ मुस्कियाई बेशी छइथ। ई मुस्की बड्ड मारूक छइ, थाहे नञि लागय दइ छलखिन जे खुश भेलाह आ किछु आर। कम बजनाई, सेहो धनिकाहाक गुण छइ। आब ई गुण ससइड़कऽ आइब गेल छइ- अफसर सब मे। जतेक बड़का अफसर, ओ ओते कम बजताह। आहां बजबासऽ अंदाज लगा सकइ छी, जे कोन पद पर छइथ। एना चुप रहइ जेता, जेना बजलासँदु कट्ठा जमीन ककरो दिअय जेतइ।

घुरन बाबु चुप्पे मुंहे सबसं परिचय पातकऽ रहल छलाह। बिपता, बच्चेसँउनके घर धेने छल। आब उमहर गड़बड़ेलइ त इमहर धेने अइछ। आब त सीधा सादा फर्मुला छइ-

बाबू बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया।

जे बेशी पाइ देतइ, ओकरे काज करतइ। बिपताकऽ पुरना मालिक छलखिन त ओहो- लल्लो चप्पो मे लागल छल। तैं रमनकऽ उठबऽ आयल।

घुरन बाबुकऽ " हरि अनन्त हरि कथा अनंता" बाला खिस्सा सब छलइन।

आजुक समय मे सरकार दु टा बियाह करऽ मे , ने रोक लगेने छइ- राखऽ मे त नञि। ओ अही सिद्धांतकऽ छलाह। शहर मे एकटाकऽ रखलखिन आ ओकर पुरा भार ताउम्र उठेलखिन। गाम मे सेहो एकटा नर्सकऽ पहिने रहइ लेल कोठली देलखिन आ बाद मे घरे मे आइन लेलकिन। लोकक लेल ओ नर्स, मोन खराब मे सेवा करऽ लेल आयल छलइन, बाद मे त सबदिना उनके कतऽ रहअ लगलइन। ओहो नर्सनिया जब्बर छल- पुरूख कियो किछु कहथिन से त हिम्मते नञि, स्त्रीगण मेसँकियो किछु कहइ, त उनका तेहन ने ज़बाब दइन जे मुंहे बंदभऽ जाइन। ई नर्स त हाल तक छलइन।सबसं कमाल ई छलइ जे कहियो कियो शिकाइत नञि केलकइन। पीठ पाछु लोक मस्ती मे कहइ- घुरन बाबुकऽ बड़ड सूनर " डेबऽ " अबइ छइन। ईएह ’कला "कऽ कारण सबहक जिज्ञासाकऽ केंद्र बनल छलाह।

उठअ पड़लइन रमन के।

घुरन बाबु त कतउ जाय बला लोक नञि।ओ त अपन कोनो बहिनक सासुरो तक नञि गेल छइथ। अपन सासुर, बिबाहक बाद कतऽ सऽ जयताह।अही तरहक कयेक टा गुणक भंडार छलाह, तैं ने चुट्टी जेकां सऊंसे लोक उनकर लग ससइड़कऽ आइब गेल-बिन बजौने। ईएह त छइ "आकर्षण"।

रमन जा कऽ गोर लगलखिन। हाल चाल पुछलाकऽ बाद घुरन बाबु कहलखिन-

आहां हमर घर अबितऊं- त बड़ड खुशी होइताय।

- कियैक नञि। हम कनीके काल मे अबइ छी।

बस घुरन बाबु उठलाह। सबके नमस्कार केलाह आ चलइत बनलाह।

रमन बुझई छलाह जे ओ कियैक अयलाह अछि। आइ तक त कहियो घर पर बजेला नञि। उनकर घरो जादुगरक तिलिस्म छइ। कतेक तरहक खिस्सा। कियो कहइ जे सब देबालक बीच मे घर गरम करबाक बेबसथा छइ। जारइन ओइ मे दइत रहु आर माघो मास उघारे देह सूतु। ततेक गर्म, घरभऽ जाइ छइ। कियो कहइ जे उनकर घर मे जे बंदुक छइन ओकर मुठ "सोना"कऽ छइ। उनकर दिअयद त कहियो उनकर कतऽ जाइये नञि सकइ छथि-रमन त सद्य दोसर टोलक।

गामक लोक अंदाज लगा लेलक जे की बात छइ। कियो कियो

तुरूपा फेंकइ छलाह - जे अही लेल- त कियो दोसर लेल। अंदाज लगेनाई शुरूभऽ गेल छलइ।

उटक्कर पचे डेढ़ सै।

घुरन बाबु आ रमनक समीकरण सबहक बुझबासँदुर छलइ लेकिन मानतइ के।

घुरन बाबुकऽ बेटी किरण आ जमाय सुधीर बिदेश मे रहइ छलखिन।किरण ओतऽ दुखताईभऽ गेल छलखिन। आब उनका देश मे रहबाक शौक जागल छलइन। भेलइन जे पाइन बदलत तभऽ सकइत अइछ जे मोन ठीकभऽ जाय।

ओतऽ सँदिल्ली आयल छलाह आ अतइ घर कीनबाक उधेरबुन मे छलाह। कतउ कतउ घर देखतो छलाह। अतुका समाजसऽ सबदीना कटले रहलाह। दुखित त किरण पहिन्हेसऽ छलखिन, ऊपरसऽ दिल्ली मे अइ गर्मी मे मुहल्ले मुहल्ले छिछियेनाई। प्रोपर्टी एजेंट सब घुमबइत रहलइन। किरणकऽ लू लाइग गेलइन। अस्पताल मे भर्ती भेलीह , लेकिन बइच नञि सकलीह। सुधीरकऽ दिल्ली मे कियो नञि अपन। घुरन बाबुकऽ खबर भेल। ओ कयेक लोककऽ सुचना देलखीन- मदद लेल कोना कहथिन।कियो नञि टघरलइन। गऊंआ हिसाबे रमनोकऽ कहलखिन।

रमन अस्पताल गेलाह। ओतऽ सुधीरसऽ भेंट भेलइन। सुधीरक दुनू बेटा सेहो बिदेशसऽ आइब चुकल छलइन। दुखितेकऽ खबर ओकरा सबकऽ छलइ।ओही पर ओ सब आयल। अस्पताले मे

बापसऽ लड़अ लागल जे अहीं मारलऊं हमर माय के। कोन काज छल हुनका भारत अनबाक लेल। आहांकऽ अपन मोन भेल त आहां जाऊ। आहांकऽ छी अपन बिचार थोपअ बाला।व्यक्तिगत आजादीकऽ आहां सीमा लंघलऊं। अपराधी छी आहां ...... अहिना कतेक उपराग।........ हम सब पुलिसकऽ रिपोर्ट करबइ।.............. अहां योजना बनाकऽ मायकऽ मारलऊं।आरो आरो बात सब। सुधीर माथ पर हाथ देने गुम्म बैसल।

अस्पताल मे आरो मरीजक तीमारदार सब ई तमाशा देखइ छलाय।रमन त किनको चिन्हइतो नञि छलाह। भीड़ देखकऽ उम्हर गेलाह त सब बुझा गेलइन।

रमण सीधा सुधीर लग गेलाह आ घुरन बाबुकऽ समादकऽ बारे मे बतेलखिन।

सुधीर बजलाह-

-ईएह लीला छल हमर घर के। तैं पराअकऽ अतऽ अयलऊं। भाग्य हमर साथ नञि देलक। किरण संग छोड़ि देलीह। हमरा त दाह संस्कारकऽ कोनो ज्ञान नञि। आहां कहूना करबाअ दिय- कहि क-कलजोइड़कऽ ठारभऽ गेलखिन।

-हमर कोनो भी निर्णय पर कहियो सबाल नञि उठेली आ ऊपरसँसंग सेहो देलीह। देश घुरऽ कऽ हमरे इच्छा छल, जैकरा ओ अपन

कहलीह।हम ठीके दोषी छी। जे सजा दइ जैब से दीयह, मुदा पहिने उनकर दाह संस्कार अपना सबहक बिधिसऽ करबाऊ-दहोबहो कनञित सुधीर बाईज रहल छलाह।

रमन दिल्ली मे त तीस बरखसऽ रही रहल छलाह। बहुत रास संस्था सबसँसेहो जुड़ल छलाह। लोक सबकऽ खबर केलखिन। दस लोक करीब भऽ गेलाह। सुधीरक बेटो सब, मोनक बिकार निकललाकऽ बाद शांत भेल। सब कियो निगमबोध घाट जाइ गेलाह। ओतइ चिता पर लकड़ीकऽ बीच मे किरणक देहकऽ जखइन राखल गेल छलइन तखने सुधीर बजलाह-

-

आब हमराकऽ सहारा अइ। हमर अंतिम इच्छा अइ जे किरणक एकटा फोटो लइतियइन। ऊयाह हमर जीवनक संबल छलीह। हमरासऽ बयस मे छोट छलीह आ पहिने छोड़ि देलीह। धरफरी मे छलीह। हमर अंतिम इच्छा आहां कहूना पुराकऽ दी। ताहि जमाना मे कैमरा मैनकऽ बजेनाई आसान नञि छलइ। तखनो रमन, चांदनी चौकसँस्टुडीयो बालाकऽ बजबेलाह। ओ किरणक मृत्यु शैय्या परक फोटो खींचलक।फेर मुखाग्नि बेटा देलखीन।

सुधीर स्टुडियो बालाकऽ पाइ देबऽ चाहलखिन लेकिन ओ नञि लेलकइन।

सुधीर बाकी संस्कार हरिद्वार मे कयलाह। सब बेबसथा घुरनबाबु

करवा देने रहथिन।

हरिद्वारसऽ सुधीर सासुर गेल छलाह। ओतऽ अद्योपांत सब बात घुरन बाबुकऽ कहलखिन। अंतिम इच्छा सेहो पुरा भेलइन।

अकरे धन्यबाद दइ लेल घुरन बाबु गेल छलाह। पहिले पहिल रमन सेहो उनकर गर्म घर मे बइसलाह। ईएह त "डेबऽ " बाला कला छलइ , जईमे घुरन बाबु माहिर छलाह- रमन सेहो आइ बुझिये गेलाह।

मिशन एडमिशन (लघुकथा)

रमन मैट्रिककऽ इम्तिहान पासकऽ चुकला अइछ। नम्बर ठीक ठाक छइन। जेहने विद्यार्थी रहता, तेहने ने नमरों एतइन। आब शुरू भेल आगुक योजना।

रमनक पिता बुधन बाबुकऽ सेहो अपन पढ़बाक इतिहास छलइन। सात बेर मे ओ तहिया मैट्रिक पास कयने छलाह। उनकर पढ़ाइकऽ पाछु पुरा हरदिअय मौजे बिका गेल छलइन। सतमे मे जखइन छलाह तखनेसऽ उनका तासक नशा छलइन। जाबइत कोर्ट पीस मे "कोर्ट" आ ट्वेंटी एट मे "लालक सेट " नञि होइ, ओ सुतइ नञि छलाह। उनका मोन लगेबा लेल गामक चाइर गोटेकऽ सेहो उनकर कलकत्ता बाला घर मे रहबाक बेबसथा केल गेल छलइन। चाइर मे तीन गोटे त तासक गोधियें भेलाह आ बचला एक गोटे- से राजा दैव ज्यों अइ मेसऽ कियो नञि उपलब्ध छथि, तखन लेल। खेल त नञि रूकबाक चाही ने। ओहो गोधिया दुआरे। जे हाथ मे छलइन -से उनकर बाबुजी केलखिन।

ई चारू गोटे पईढ़ लिख कऽ आगु बइढ़ गेलाह आ बुधन बाबु वापस गाम घुइड़ गेलाह। एको किलास आगु पास नञिकऽ पौलाह। नौवां पास कहियउन वा दसमा फेल - ईएह भेलइन उनकर शहरक कमाइ।ओ त कहिते छलखिन जे पढ़ाइ छोअइड़कऽ कोनो काज

करा लियह। उनकर बाबुजी नञि सुनलखिन किछु। आब भुगतस।

आब रमनक बेर आयल छलइन। हरदिअय सनक धनहर मौजे बुधन बाबुकऽ पढ़बा मे बिकेलइन त रमनो मे किछु बनिते छइ। आब त मौजे नञि रहलइ-सब सरकारलऽ लेलकइ।जैह छइ, ऊयाह बिकेतइ। बेबसथा त अहिने होइ छइ ने- "ओ पढ़ाइ की, जई मे जमीन नञि बिकाय।"

कालेजक पढ़ाइकऽ खर्च कोनो हंसी ठट्ठा छइ। बुधन बाबुकऽ गाम आब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मे आइब गेल छलइन। अखनो बड़की टा खरहोइरे छलइन। अकर बगल तक बस्ती आइब गेल छलइ। किछु लोक दिन राइत बुधन बाबुकऽ आगु पाछुकऽ रहल छल। ललका झंडाकऽ उत्पात सेहो शुरूभऽ गेल छलइ। उएह सब बुधन बाबुकऽ मोन मे डर बइसाबऽ लगलइन जे बजार मे सुनलऊं कि ने अहांक खरुहोर पर ललका झंडा लगाकऽ कब्जा करऽ बाला अइछ। बुधन बाबु चट दं ज़बाब देथिन -ई त हमर खतिहानी जमीन अइछ। कोना कब्जाकऽ लेत।

-अरे आहां सुनलियई नञि जे बरगांव बालाकऽ कयेक बीघा पर झंडा लगा देलकइन। किछु नञिकऽ सकलाह। कयेक बेर हंसेरी सबकऽ जमा कयल गेल। लेकिन ओ टिड़डी दलकऽ की करतइ। ततेक ने लोक आइबकऽ बइस गेल जे नहिये उजाइर पेलाह।

दोसर गोटे बजलाह-

खुब थाना पुलिस भेल। पाइयो खुयेलखिन, लेकिन कब्जा नञिभऽ सकलइन।

- आब केस चलइ छइन।कतेक बरख चलतइन, सेकऽ जनञित अइछ। सिविलक मोकदमे एहने होइ छइ। पीढ़ी बदइल जाइ छइ मूदा फैसला नञिभऽ पबइ छइ।

-तेसर गोटे उपरसऽ टीपई छइथ -

बेहरी बालाकऽ त ओतऽ कचहरी रहइन-ओहो हाथसऽ चइल गेलइन।

अहिना सदिखन ओ शहर बाला सब बुधन बाबुकऽ डरबइत रहइ छइन। ओहो सोचऽ पर मजबुर छलाह जे बड़का बड़का कलामी घरबाला सबकऽ ई हाल, त उनकर की हेतइन। कोन भरोस, कहियो ललका झंडा उनके खेत पर नञि गाइड़ दइन।

इमहर गऊंओ सब उनका बड़ड अंईठल बुझाई लागल छलइन। अपने मे सब मगन। बुधन बाबुकऽ कोनो मोजरे नञि। उमहर देखू शहरबाला सब के, कतेक आगु पाछु करइत अइछ। ललका झंडाकऽ बारे मे उएह सब बतेलक। अपन गऊंआ त किछु कहिते नञि अइछ। ओ किछु ने-डाह होइत हेतइ अकरा सब के। भीतरिया दिअयदी त चइलते छइ ने

बुधन बाबुकऽ धीरे-धीरे पुरा गाम - समाज आन, आर शहर बाला सब अप्पन बुझाई लगलइन।

एक दिन ओ सब कहबो केलकइन- अइ गाम मे आहांसऽ बड़का के?

गामक नाम आहां पर होबाक चाही।

-आहां खरहोइड़ वाला जमीन हमरा सबकऽ लिख दियह। हम सब आहांक नामसँकालोनी बनायब।

ई गप्पक असइड़ आब बुधन बाबु पर पइड़ रहल छलइन। नामक नशा त सबसं बड़का नशा थीक।

इमहर रमन सेहो मैट्रिक पास केलखिन। अपना बेर मे हरदिअय मौजे त बेटाक बेर मे खरूहौरे बेचनाई त बनिते छइ।

बुधन बाबु चुपेचाप खरूहौरे, अपन नामक कालोनीक लोभे बेच देलाह। जखइन बिना मेहनतकऽ हाथ पर मोट पाइ अबइ छइ त ओ नञि रुकइ छइ। अपना संगे कतेक रास आदत आ शानकऽ सेहो अनञि छइ। जमीन कीनऽ बाला लोकक लाइन लाइग गेलइ। शुरू मे त सब बसऽ लेल हाथ जोईड़ कऽ अबइ छइ।

रजिस्ट्री होइते गिरगिटोसऽ बेशी जल्दी रंग बदइल लइत अइछ। सस्ते मे कतेक लोक जमीन लिखा लेलकइन।

आब सबाल उठलइ बुधन बाबुकऽ नाम पर कालोनी बनबऽ कऽ त ओकरा सबकऽ " बुधन" नाम ठीक नञि लगलइ। ओ बूधन बाबुकऽ बाबा "धनीलाल बाबु"कऽ नामसँ"लाल" लेलक आ कालोनीकऽ नाम "लाल बाग" रखलक। ई किछु नञि- फुसियाही गप्प बुधन बाबुकऽ नामक बारे मे कहि देलकइन। आब कयले की जा सकइत अइछ।कतउ "नामक" लिखा-पढ़ी त भेले नञि छलइ।

"अपन हारल बहुक मारल कतउ कियो बजलक" - मोन मसोईसेकऽ रही गेलाह बुधन बाबु।

आब शुरू भेल रमनक कालेजक पढ़ाइकऽ अध्याय।

रमनकऽ गाम मे सब कहऽ लगलइन

-" आहांक बाप त सब बेच देताह। घरो घरारी नञि बांचत"।ई बात उनका सुनबा मे अधलाह लगइन।

अइ घरक जे परम्परा छलइ ओइ मे नञि बुधन बाबु अपन पिताकऽ

किछु कहलखिन आ नञि रमने किछू बुधन बाबु के।अतबा मोन मे रमन निश्चयकऽ लेलाह जे अतऽ गाम मे ओ नञि रहताह आ नञि पढ़ताह।

कयेक संबंधी सब गाहे-बगाहे अतऽ अबइ छलाह आ बुधन बाबुकऽ उदारतासऽ उपकृत होइत रहलाह।

आब रमनक बेर छलइन।

पैघ शहर मे एकटा संबंधी रहइ छलखिन। ओतुका कालेज सेहो नामी छल। रमन गामसँओतऽ पहुंचला। पहिल बेर असगर बहरायल रहइत। माय हुनकर कयेक टा सनेशक मोटरी संगकऽ देने रहथिन।ओ घरबइया, रमनकऽ देखिते बड्ड खुश भेलाह। ऊपरसऽ अतेक तरहक सनेश। पुरा मान-दान भेलइन रमन के। रमनोकऽ बुझेलइन जे अतेक दिन ओ किअएह नञि आयल छलाह। आब हुनका अपन परिवार पर गर्व बुझाय लगलइन। अपन आगुकऽ कालेजक पढ़ाइकऽ बारे मे सविस्तार गप्प सप भेलइन। अगले दिन ओ संबंधी कालेजसँएडमिशनकऽ फार्मलऽ क अयलाह। अगिला रविकऽ फुरसत मे फार्म भरबाकऽ बारे मे सोचल गेल। एक हफ्ता बीत गेल छल। रविकऽ फार्म भरबा काल छात्रावासक कालम अयलइ। ओ संबंधी आ रमन एक दोसरा दिश ताकऽ लगलाह। रमन त एडमिशन लेल आयल छलाह। रहबाक विषय मे त सोचने नञि छलाह। तखनो बजलाह - होस्टल त छइ ने कालेज मे। ओतइ रहब।

संबंधी बजलाह-नञि नञि। अतइ रहब।

तखनो फार्म मे होस्टल भरेलइ।

सुतली राइत किछु कनफुसकीकऽ आवाजसँरमनक नींद टुटलइन-

- आहां किअए कहलियई जे अतइ रहब।

- ई केना ने कहितियई।

-अपनो धिया-पुता अइछ। सेह बुझल अइ ने। धीरे धीरे खर्चा बढ़त।

- अइ शहर मे रही कऽ होस्टल मे रमन रहताह त कतउ मुंह देखाबो जोगड़ रहब।

-सबदिना अतऽ राखब से ओकाइत अइ आहां के। हमर भाइकऽ कते मोन छलइ अतऽ पढ़बाक के। ओइ बेर मे त नाक पर माछी नञि बइसऽ देलियई। अइ बेर देखू ने।

- आहां बुझअकऽ कोशिश करु।

-ओहो। हम बुझिते नञि।सब त अहीं बुझई छियई।

-हम त कोदो खाकऽ पढ़ने छी ने।

-कोनो जरूरत नञि छइ। मेजनी करऽ के।

-आठ दिनसँबेशीभऽ गेलइन।कहिया जेताह।

-हम केना पुछबइ।

-कोनो काज नञि छइ अतऽ एडमिशन के।

अहिना बड़ी काल फुसफसी चलइत रहल। किछु रमनकऽ सुनेलइन आ किछु निष्कर्ष निकाललाह।

अगिला दिन रमनक फार्म कालेज मे जमाभऽ गेलइन।

एक हफ्ता बाद एडमिशनकऽ लिस्ट निकललइ। रमनक नाम ओइ मे नञि छलइन।

ओ संबंधी बड़ड अफसोस जाहिरकऽ रहल छलाह। आब रमनक सोझां गाम घुरबाक दोसर कोनो रस्ता नञि छलइन।

तहिया त शहरक पहिले दुनिया देखने छलाह। आब होइ छइन जे कहीं उनकर एडमिशनकऽ फार्म जमे त नञि भेलइन। जमा नञि भेलइन त लिस्ट मे नाम कतऽ सँअऊतइन।उनका कालेज नञि जायल देल गेलइन- ई की स्नेह छल वा साजिश। ई पहेली उनका भइड़ जीवन खिहाड़इत रहलइन। ज़बाब नञिये भेटलइन।

गाम मे सब उम्मेद लगौने जे ओइ शहर मे त कयेक टा नीक कालेज छइ। कोनो ने कोनो मे एडमिशन भईये जेतइन।ऊपरसँजे "फलां" ओतऽ छथिये- कोन बातक चिंता बेगरता।" फलां"कऽ अनुभवलऽ क रमन गाम मे छथि। लालबागकऽ बोर्ड लाइग गेल छइ। रमनकऽ ओ बोर्ड कटहा कुकुर जेकां लगइन। उमहर गेनाई ओ छोड़ि देने छलाह।रमनकऽ घुरल देखकऽ , घर मे सब दुखी

छल। मातम जेकां परिस्थितिभऽ गेल छलइ घर मे। उम्मेद टुइट गेलइ जेना।

अगिला दिन भोरे भोर दोसर टोलकऽ बीरू ठाकुर रमनक घर पर आयल छलाह। अयबाक मकसद त जमीनक थाह लेल छलइन।देखार नञि भेलाह। बुधन बाबु लग बइसलाह। कालेजक पढ़ाइकऽ नाम पर जमीनो बिका गेलइन आ रमनक एडमिशने नञि भेलइन।

बीरू ठाकुर दोसर शहर मे रहइ छल। अपनाकऽ छात्र-नेता कहइत छल। जेना "बाल कवि"कऽ अपनो बालकभऽ जाइ छइन- तइयो उपमा " बाल कवि"कऽ नञि छोड़ताह। "युवा नेता "कऽ धीया पुता, चेतनभऽ जाइ छइन, तखनो युवा नेता कहबइते रहइ छथि। ओहिना ई "छात्र नेता " छथि। नञि जाइन कहिया तक ई छात्र नेता रहताह। दस बरखसऽ उपरभऽ गेलइन मैट्रिक केलाह।गाम मे त सब कहइ छइन जे मिसिर जीकऽ ई सब लठैत छइथ। जे भी होइथ। बीरू ठाकुर बजलाह-

चाइर टा कालेजकऽ प्रिंसिपल त हमर संगी अइछ आ कतेक रास प्रोफेसर सब त हमर जेबी मे अइछ। आहां रमनकऽ हमरा लग पठा दियऊं। ई त दु मिनटकऽ काज छइ। अहु लेल आहां चिंता मे छी। कहुं त। तखन हमरा सन भातिजकऽ रहने कोन काज।

-आब एडमिशनकऽ तारीख खत्मभऽ गेल छइ। अप्लाईयो नञि भेल छइन।

- आहां छोरु ने। ई सब, हमर कंगुरिया आंगुरकऽ बरोबइड़ काज छइ। आब आहां बुइझ लियह जे एडमिशनभऽ गेलइन। बस कनी हमरो सब पर ध्यान देने रहबइ। हमरा घरारी मे बड्ड कशमकश अइछ। ज्यों अपन छाया मे बसा लइतऊं त बड़का उपकार होइताह। आब आहां सब जेकां सोचऽ बाला लोक कहां। आहां अंतिम कड़ी छी।

रमन सब लल्लो चप्पो बाला गप्प सुनञि छलाह। सबहक जईड़ मे उएह जमीन। आब उनका बचबे कतेक केलइन। एकटाकऽ हश्र अहिना देखने छलाह।गामेकऽ छलाह। पटना मे पढ़ई छलाह।

पटना मे एडमिशन खातिर रमनसँपाइलऽ लेने छलइन। ओकर बादसऽ निपत्ता छल। बाद मे पता चललइन जे ओकर हर सालकऽ ईएह धंधे छइ। दु चाइरटाकऽ मुर्गा हर साल बनबइया।

आब रमनकऽ सब ठगहा बुझाई लगलइन।गामक लग बाला कालेजक प्रोफेसर, जे गऊंआ सेहो छलखिन, उनको लग गेल छलाह।

- हमर कालेज ई छइ। ओ छइ। सिस्टम छइ। विश्वविद्यालय मे छठम स्थान छइ। आहां अइ बेर छोड़ि दियउ। अगिला बरख आऊ। हम एडमिशन करा देब। अखइन हमरा मीटिंग मे जयबाक अइछ। चलइ छी।

आर किछु नञि। असल मे टरकेलकिन। ओहो चपचपायल छलाह एक समय मे जमीन लेबाक लेल। नञि देल गेलइन- तकरे बिष छइन।

एक साल बेकार बइसल रहस रमन, कतेक आसानीसऽ ओ कहि देलखिन। रमनक आंईख नोरा गेलइन। सबहक एडमिशनभऽ गेल छलइ आ ओ दुआरे दुआर बउआ रहल छलाह। आब अफसोस होइन जे कियैक शहरक चक्कर मे परलाह। उनका त बहुत नम्मर आयल छइन। अइ कालेज सब मे सोंझे एडमिशनभऽ जंइतइन।

ईएह होइ छइ-

बिनाश काले, बिपरीत बुद्धि।

होनी हाथ धराकऽ करा दइ छइ। आब अपन बाहर पढ़बाक फैसला पर खीस बरइन। घरो मे कियो सलाह नञि देलकइन या नञि मंगलखिन। जे भी हो। कठिन समय बीत रहल छलइन। जीवनक पाठ पईढ़ रहल छलाह।

अही समय मे बीरु ठाकुरकऽ गप्प मे किछु उमेद बुझेलइन।

अगिला सोमकऽ भोरका चरबजिया ट्रेन पकइड़कऽ रमन शहर गेलाह। स्टेशनसऽ ओना बीरू ठाकुरकऽ डेरा दुर छलइन, मूदा रमन भोर मे टहलइत बिदा भेलाह। रिक्शा बाला बच्चा बुइझकऽ भारा बेशी बतेलकइन, तैं नञि लेलाह।आब आर ठगाय नञि चाहइ छलाह। सात बजेकऽ करीब ओकर लौज पर पहुंचलाह। ओ सुतले छल। इनका देखते जोश मे आयल। ओकरा गाम मे रमनक पट्टीसँकियो मोजर नञि दइ छलइ।आइ काजलऽ क कियो आयल छइ।अपन लंबा लंबा गप्प देनाई शुरू केलक। रमन त काजसँआयल

छलाह। चुप चाप सुनञि छलाह।

थोरेक काल बाद कहलकइन - कागज सब अनने छी ने।

-हं -हं।देख लियह।

- देखबाक कोन काज। रखने रहु।

-आहां बइसु अतइ। हम कनी काल मे अबइ छी।

रमन ओतइ बइसल छलाह। दु घंटाकऽ बाद ओ बुलेट मोटरसाइकिल पर एकगोटेक संग बइसल, हरहराकऽ पहुंचल। फेर तीनु गोटा लौजक सामने बाला भरभुजाक दोकान मे गेलाह आ चुड़ा-दही जलखइ कयलाह।

फेर तीनु गोटे बुलेटसँबिदा भेलाह। ओ बुलेटकऽ पहिल वा दोसर गेयर मे चलबइ छल, जईसँआबाज फटफटकऽ बेशी होइ। बीरू ठाकुर बुलेट पर सीना तनने चलबइ छल। रमनकऽ बुझाई जे कोनो रणक मैदान मे जा रहल छलाह। पांचे मिनट मे एकटा कालेज मे पहुंचलाह। अइसऽ दसगुणा दुरी त रमन स्टेशनसँपैदल चइलकऽ आयल छलाह।

बीरू हाथ मे बुलेटक चाभीकऽ छल्ला घुमबइत कालेजक कार्यालय मे गेलाह। किरानी बाबु ओकर जान पहचानकऽ छलखिन। कालेज मे एडमिशनकऽ सीट खालिये छलइ। बीरूसऽ उनका पहिने

किछु गप्प भरिसंभव भेल छलइन। कागज सबलऽ लेलकिन। एडमिशन फीस बतेलखिन। रमन त पाइ लइयेकऽ आयल छलाह। तुरंते देलखिन।भऽ गेलइन एडमिशन। किरानी बाबु कहलखिन जे काइलसँकालेज आइब जाऊ। कोनो दिक्कत हुआय त हम छीहे।

रमनक खुशीकऽ ठेकाने नञि। घर मे नञि पढ़ल लिखल रहलाहकऽ कारण कहू या बाहर नञि निकललाकऽ कारण- "फोंसरी बुझु की भोकन्नरभऽ गेल।" एना एडमिशन हेतइ से ओ सोचनेहो नञि छलाह।

किरानी बाबुसँबीरूकऽ परनाम पाती भेलइन। फेर सब बुलेटसँबिदा भेलाह।

प्रिंसिपल ओना कालेज मे छलखिन। उनका लग बीरू नञि गेलाह। की जाने, जान पहचान छइन कि नञि। आब अइ सब पर प्रश्न चिन्ह लगेबाक स्थति मे रमन नञि छलाह। उनका त बुझाइन जे जीबते बैतरणी पारकऽ गेलाह। एडमिशनभऽ गेल छलइन।आब होइन जे गाम बाला प्रोफेसरकऽ जाकऽ कहियइ जे देखू हमर एडमिशनभऽ गेल। आब अगिला बरख हमरा आहांक खुशामद नञि अइछ। अपन परफेसरी अपने लग राखु। ओकर बातसऽ बड़ड दुखी तहिया रमन भेल छलाह। मोन होइ छलइन जे ओकर मुंह नोइच ली। गाम लग रहितइन त बीरूकऽ कहितथिन जे ओइ परफेसरकऽ दलान बाटे बुलेटसँ चलु -फटफट करइत।

आब रमन, बीरुकऽ ह्रदयसँबीरू भाइ कहऽ लगलाह। बीरू बुझइ छल जे ओकरा अपन धाही देखेबाक ईएह मौका छइ। ओ

रमनकऽ भइड़ दिन कतउ कतउ घुमबइत रहलइन। ओ जे तेसर लोक बुलेट पर बइसल छल, ओकरोसँरमनकऽ दोस्तीभऽ गेल छलइन। भरिसक बुलेट ओकरे छलइ। दिन मे होटल मे तीनु गोटे खेनाई खाई गेलाह। अखइन तक कतउ बीरूकऽ पाइ दइत नञि देखलखिन। ई सबसँरमनक सीना सेहो चौड़ा भेल जा रहल छइन।

सांझ होइत होइत रमनक चाइल मे अकड़ आइब गेल छलइन। ओहो अपनाकऽ बीरू बुझअ लागल छलाह। बुलेटसँस्टाइल मे उतड़इ आ चढ़ई छलाह। कखनो डांर आ गर्दनकऽ ढ़ील नञि छोड़इ छलाह।कनी मनी दादा टाइप अपनाकऽ बुझबा मे आइब रहल छलइन।पहिल अनुभव छलइन। आइये एडमिशन भेलइन आ आइये सऊंसे शहर घुईम लेलाह।

संझुका सतबजियासँगाम घुरबाक छलइन। बीरू सेहो कहलखिन जे गाम हमहु जायब। आइ विजयीभऽ क गाम घुरबाक छलइन। ईएह त मौका छलइन जे बुधन बाबुसँकिछु झीट ली।

पांच बजेकऽ करीब स्टेशन तीनु गोटे बुलेटसँपहुंचलाह। बुलेट चलेबाक उएह अंदाज छलइन जे कतेक बेशी आबाज निकइल सकाय। पहिलसँदोसर गियर, तेसर गियर त बिरले लागल होइत।सतबजिया ट्रेन लाइग गेल छल।ट्रेन अतइसऽ खुजई छलइ। रमन जाकऽ बैस रहलाह आ एक सीट बीरू लेल सेहो गमछा ध

कऽ घेर लेलाह।

अखइन त ट्रेन खुलबाक मे बड़ी काल बाकी छलइ तैं लेल बोगी खालिये जकां छलइ। ज्यों ज्यों ट्रेनकऽ खुलबाक टाईम लगीच अबइत गेलइ , लोक आबऽ लगलइ। बुलेटक आबाज सुइनकऽ किछु ओतुके छौंड़ा सब एलइ। ओकरे सबहक संग बीरू आ तेसर लोक कतउ चइल गेल छलाह। पहिने रमन अइ छौंड़ा सबकऽ लफुआ कहइ बुझई छलखिन। मूदा आइ त ओ सब स्टेशनक दादा लगइ छलइन। अपनाकऽ ओ ओकर सबहक समांग बुझई छलाह।

जेना गाम मे कहबी छइ- " कालेज मे जा कऽ नालेजभऽ जाइ छइ " आइ एडमिशन होइते रमन सब नीक बेजाय बुझअ लगलाह- अपना मोने मोन। किनको ओ गमछा राखल जगह पर बइसह नञि देलखिन। आबाज मे रूआब आइब गेल छलइन। एना बुझाइन जे ट्रेन उनके जमींदारिये मे छइन। ओ गमछा बाला जगह त जेना ओ कबालाकऽ लेने होइत।

ट्रेनक बोगी आब पुरा भइड़ गेल रहइ। बीरूकऽ कोनो पता नञि। ओकरा लेल जगह छेंकने छलाह रमन। खाली जगह देखकऽ कयेक लोग लुधकय, बइसय लेल। रमनक रौद्र रूप देखकऽ सीट सँहइट जाय। आब बोगी मे लोक ठार भेनाइ सेहो शुरूकऽ देने छल। रमन अकइड़कऽ बइसल, चारु कात तकइ छलाह। तखने

अनायास आंधी तूफान जेकां धरधराइत एकटा मऊगी आयल आ धड़ाकसँओइ खाली जगह पर बइस रहल। रमन अकड़इत बजलाह-

-देख नहीं रहे हैं जो सीट पर गमछा रखा है।

- तो।

-" तो क्या। खाली कीजिए। कोई बैठा है"। आबाजकऽ गंभीर करइत अकड़पन मे रमन बजलाह।

- "ठीक है। आऐंगे तो उठ जाएंगे"। बहुतही धीरेसऽ ओ मऊगी रमनक आंईख मे आंईख मिलाकऽ बाजल।

रमन आब ओकरा देखलाह। ओ तीसेक बरखक करीब छल। गोर त नञि लेकिन पीरसियामे मे सुन्नर धोआ काया छलइ। ओकरा मे ठहराब छलइ। रमनकऽ आंईख अपने दोसर दिश करऽ परलइन। बोगी मे जगह कम रहबाक कारणे ओइ मऊगीकऽ देहसऽ रमन सटल छलाह। बयस्क मऊगी संग सटल रहबाक पहिल अनुभव छलइन। सऊंसे देहक रोईंया ठारभऽ गेल छलइन। एना बुझाइन जे रोईयां नञि ई "साही "कऽ कांट अइछ। ततेक अकइड़ गेल छलइन जे अपनो गड़इ छलइन। ओ मउगी आर अपन देहकऽ इनका दिश खसा देने छल। आइ मे इहोभऽ सकइत छइ जे ओइ मऊगीकऽ दहिना कात जे अधबयसु पुरूख बइसल छल, ओ बेसी सटबाक प्रयास करइत होइ। ओकरासऽ नीक अइ मऊगीकऽ ई बच्चा रमन संग सटबाक मे लगइत होइ। तीनकऽ जगह मे पांच लोक बइसतइ त सटबाक त छइये। आब किमहर सटु, से ओइ मनुक्ख पर निर्भर।

ईहोभऽ सकइ छइ जे ओइ मऊगीकऽ रमन दिश स्वतः अपन इच्छासऽ भार देने अइछ आ ओइ कात त कियो धकिअए रहल छइ। जेतह बलात् वा जबरदस्ती वाली बात नञि रहइ छइ, सदौंसऽ उम्हरे झुकाव बनल रहइ छइ। रमन अइ परिस्थतिकऽ आनंद उठा रहल छलाह। संगहि साकांक्षो छलाह जे कियो उनका इ नञि बुझइन जे ओ जाइन बुइझकऽ ओइ मऊगी मे सटल छैथ। ओ धीरे धीरे अपन देहक भार रमन पर खसेने जा रहल छल। रमनक रोईंया त ओकरो गड़इत हेतइ, तैयो ओ बेपरवाह छल। पुरा बोगी मे मौन पसरल छल। अंदरसऽ हिलकोर रमनलऽ रहल छलाह। ओ मऊगी आ दहिना कात बाला पुरूख, कखनो काल हिलइ डुलइ छलाह- कियो बुझय नञि। रमन त बुझअ लागल छलाह -अतबे काल मे।

आब उनका बीरूकऽ कोनो चिंता नञि होइ छलइन। मोन मे होइन जे कहूना ओ नञिये आबस। सुनने आ देखनेहो छलाह जे कयेक बेर ट्रेन लेटभऽ जाइ छइ। आइ होइन जे कहूना ट्रेन लेटभऽ जाइ। उनकर देह हिलला डुललाकऽ बाद ओइ मऊगीकऽ देहसऽ कयेक जगहसऽ संइट गेल छल। ओ मऊगी कियैक नञि हटई छल, से रमनक समझसऽ बाहर।

ओ मऊगी माथ पर साड़ी रखने संच मंचसँबइसल, छल आ शुन्य मे तकइ छल। चाइर पांचटा पहिलुका दादा आब लफुआ सब प्लेटफार्म पर अइ बोगीसऽ ओइ बोगी चहलकदमी करय छल।

ककरो तकइ छल। कखनोकऽ आबाज रमन सुनबो करयथ-" अहु मे नञि छऊ। ओहु मे नञि छऊ। परा गेलइ की। -------"।

बेचैनी ओइ लफुआ सबहक चेहरा पर देखाअ रहल छल। तखने एक टा लफुआ रमनक बोगी मे चढ़ल आ जोरसऽ हाक देलकइ-" हइया छऊ"।

फेर की। आब चाइर पांच टा लफुआ सब बोगी मे आइब गेलइ आ हइया छऊ, हइया छऊ, फुसफुसाय लागल।

रमनकऽ भेलइन जे कहीं बीरू ठाकुरकऽ दुश्मन सब त नञि अइछ। आइ त भइड़ दिन उनके संगे बुलेट पर सौंसे शहर घुमलाह अइछ। लोक सब तकिते छलइन। स्टेशन अबिते केना दु तीन टा बदमशवा सब पहुंच गेल छल। ओकरे सबहक संग बीरू गेल छलाह। सुआइत ने लोक कहइ छइ- " लंगाकऽ दोस्ती नीक नञि"। कोन काज छलइ ई बीरू संग अयबाक के। एडमिशन अइ साल नञि होइतइ त परूकाभऽ जइतइ। कोनो नौकरी छलइ। कोन चक्कर मे पइड़ गेलऊं। ई बदमशवा सब हमरे लेल आयल अइ। हमहु त अकइड़कऽ चलइ छलऊं। अकरा सबकऽ भ गेल हेतइ जे ओकर एरिया मे दोसर दादा के।

जे रमनक अकरल देह छलइन, से शिथिल हुवअ लगलइन। ठोर पर फिफरी परऽ लगलइन। कंठ सुखाय लगलइन। पाइनो नञि छलइन लग मे जे पीताह। आब ट्रेनसँउतरताह, से ई बदमशवा सब

जाय देतइन तखन ने। ई कतऽ बीरु ठाकुर मइड़ गेलाह। हम त कहि देबइ जे हम नञि चिन्हइ छियइन।

फेर रमनकऽ भेलइन जे बुलेट पर संगे बइसल छलऊं, से जे कहत त कहि देबइ जे हम त पहिले बेर शहर आयल छलऊं एडमिशनकऽ लेल। हइया देखू कालेजक रशीद। देखला जे झोड़ा सामने अइछ-ओही मे त सब कागज-पत्तर सब छइन। हम टीशन अबइ छलऊं, रस्ता मे गाड़ी रोकलाह आ चढ़ा लेलाह। ओ दोसर टोलकऽ छथ।हम सब सौजनिया सेहो नञि छी। हमरा छोड़ि दियह। ईएह सब सोइच रहल छलाह। बोगी बला लोक की कहत। ककरो हम बइसऽ नञि देलियई आ आब बेजती होइत।बड़ड दादा बुझअ लागल छलऊं आब लियह।

एक तरफ ओइ मऊगीकऽ स्पर्शसऽ गर्माहट त दोसर दिस सामने पांच पांच टा लफंडर बदमशवाकऽ देखक शोणितक सर्द भेनाइ। ओ मऊगी अखनो चुप्पी लगेने छल।

कनी काल मे ओ छौंड़ा सब बाजय लागल-" चल ने", "उतर ने", " ट्रेन खुलतइ आब"। पहिने धीरेसऽ बजलक ओ सब। जखइन बोगी मे कियो किछु नञि प्रत्युत्तर देलकइ त ओ सब जोरसँबाजय लागल।रमन ट्रेनसऽ बाहर जाइन बुझइकऽ तकइ छलाह, कान त बोगिये मे पाथल रहइन।

ओकर सबहक साहस बढ़अ लगलइ। आब ओ ओइ मऊगीकऽ छुकऽ कहलकइ-" चल उतर, बड़्ड दौरेने छें आइ, ट्रेन खुईज जेतउ त लइत रहियें, पहुंच जेबें कतऽ दुन"। आब रमनकऽ जान मे जान अयलइन। कहाबतो छइ-

" जान बची तो लाखों पाए"।

ओ सब त अइ मऊगी लेल आयल अइछ। आब रमन धीरेसऽ अपन देहकऽ ओकरासँअलगकऽ लेलाह। अखइन तक ओ नीक लगइ छलइन, आब ओ जानक जपाल बुझाइन। अपनाकऽ पुरा तरहें अइ अध्यायसऽ बाहरकऽ लेने छलाह। जेना कि ओ अतऽ छइथे नञि। " नञि हर्ष नञि विस्मयो" बाला स्थिति बना लेने छलाह।

आब बोगी मे चारु कात रमन तकलाह। देखइ छथि जे खायल पीयल धाकड़ देह बला पुरुष सब सेहो बैसल छथि। सब मौन धारण केने छथि। एक टा तऽ मुष्टंडा सेहो छलाह। कतेक रौबदार चेहरा छलइन। एक बेर घुड़इक दइतथिन त अइ लफुआ सबहक हिम्मत होइतइ-अतऽ ठार होबाक के। पेंट गीलभऽ जइतइ,अइ सिकटी पिल्ली सबहक। किनको कोनो मतलब नञि। आपसो मे नञि कियो गप्प करय छलाय, आ नञि ट्रेनसऽ नीचा -उपर, चढ़ई-उतड़इ छल।

ओ मऊगी, बोगी मे चारू कात एकबेर गर्दन उठाकऽ देखलक।

फेर ओकरा की नञि की फुरेलइ, सामान त किछु छलइये नञि, देहे टा छलइ, एक्के बेर उठल आ सरसराकऽ बोगीसऽ बाहर चइल गेल। जहिना धरधराकऽ सीट पर बइसल छल, ओहिना हरहराकऽ परा गेल। ओकर पाछु पाछु ओ लफंडरो सब भागल। तखने इंजन सीटी देलकइ। बीरु ठाकुर सेहो दौरल ट्रेन मे चढ़लाह। एक टा बदमशवा उनका कहइ छलइन-" जेकरा हम सब सऊंसे ट्रेन आ टीशन पर ताईककऽ हारि गेलऊं ओ त ईएह बोगी मे बैसल छल"। बीरू बजलाह-

-" ओह। अजुका जतरे गड़बड़ छल।"

फेर रमनकऽ कहलखिन जे आहां किअए नञि कहलऊं जे ओ अतऽ बैसल अइछ।

रमन की बजताह। गमछा हटा लेलाह आ कहलखिन -"लियह । बैसु।"

तखने फेर ओइ बदमशवा ग्रुपकऽ एकटा छौंड़ा एलइ आ बाहरेसँबीरूकऽ कहलकइन-" फेर ओ मऊगी गायबभऽ गेल। आइ दिनेसँओ चोरवा - नुक्की हमरा सब संगे खेला रहल अइछ। आब जे सिपाहीकऽ ड्युटी टीशन पर छइ, ओ बड कड़ा छइ। सबहक गत्तर गत्तर चिन्हइ छइ। अजुका जतरे खराब हमर सब के। आब अहुंके ट्रेन खुईज रहल अइछ। हमहु सब जा रहल छी। सोचने रही जे आहांकऽ किछु मजा दी, लेकिन नञिभऽ सकल"।ट्रेन चइल परल छल।

रमन मोन मे सोचई छलाह जे मजा ओ लेलाह कि सजा मे समय बितेलाह। आइ पहिले बेर मे बहुते रास अनुभव लेलाह। बीरूकऽ नीक कहताह कि अधलाह। ठीके कालेज मे जाइते नालेजभऽ गेल छलइन। ई मिशन एडमिशन, पन्द्रह बरखक बच्चाकऽ जीबनक पाठ पढ़ा देलकइन।

अपन लोक (लघुकथा)

भवेशकऽ अनायास फेसबुक पर मैसेज एलइन। "आहां बंगाली टोला बला भवेश छी ने"

भवेश सोच मे पइड़ गेलाह कि ईकऽ छथि। मैसेज पठबऽ बालाकऽ प्रोफाइल देखलखिन त ओ एकटा सुन्नरि ललना छलीह। उनकर संगी सबहक सुची मे तकलाह- कियो इनकर जानऽ बला नञि।

अतबा त निश्चित छल जे कियो मैथिलानी थिकीह। बंगाली टोला मे त आइसँचालीस बरख पहिने रहल छलाह। ओतऽ त कियो लड़कीसऽ उनका कोनो जान पहचान नञि छलइन। मूदा रहल त छइते बंगाली टोला मे। ईहो सत्ते थीक। तरह तरहकऽ बिचार सब दिमाग मे उमर घुमर करय छलइन। नञि छोरले बनञिन आ नञि किछु कैले बनञि। हरदम उएह मैसेज माथा पर नचइत छलइन।

जखने मौका लगइन ......ओइ ललनाकऽ प्रोफाइलकऽ उलटबइत पलटबइत ...... किछु निष्कर्ष नञि निकलइन। मोन करयन जे ओ अइ मैसेजकऽ ज़बाब दकऽ पुईछ ली। फेर बिबेक एना करऽ

सऽ मना करयन। ई मोन आ बिबेकक बीच कशमकश कसियाकऽ चइल रहल छलइन। अइ मे लटपटायल भवेश। जतेबे अइसँबहराय चाहइ छलाह, ओतबे ओझरा जाइ छलाह। ई त कांटक झाइड़-झंखारभऽ गेल छल.....ओइ मे एक बेर फंसलाकऽ बाद जेतेक हाथ पैर मारब, ओतबे बेशी कांट मे फंसब आ कांट गरबों करत।

अखइन तक सुनञि छलखिन जे फेसबुक मे अहीना मैसेज अबइ छइ। संगी बनेबाक सेहो नोत अबइ छइ। संगीकऽ नोतकऽ गछिते आहांक सबटा समाद ओकरा लग चइल जाइ छइ। ओ तेहन ने एक टा अपन समांगकऽ कम्प्युटर मे बइसा दइ छइ........ समदिअय जेकां ओ सबटा समाचार पठबइत रहइ छइ। अइ ".बिन बजायल पाहुनक " डरक मारे भवेश आगु नञि बइढ़ पाइब रहल छलाह।

दोसर गप्प इहो रहइन जे ज्यों ई मैसेज पठबऽ बाला पुरुख रहितइथ त ओ ज़बाब दकऽ पुईछ लइतथिन। उम्रक ओही पड़ाव पर ठार छथि जे अगर इमहर ओमहरकऽ कियो होइ आ ई बात पसइड़ जाइ त सेहो जुलूम। मैथिल समाज मे बात चिथारऽ सँबेशी दोसर कोनो काज मे मोनो नञि लगइ छइ। मुर्दा घर मे त एके बेर लहाशकऽ चीर-फाड़ कैल जाइ छइ .... इनकर समाज मे त जाबइत चिथड़ा चिथड़ा नञिभऽ जाइ छइ, गप्पक पोस्टमार्टम चलिते रहइ छइ।

फलां फसलाह।

कोनो मउगीकऽ चक्कर मे पड़ल छलाह।

पहिनेहोसँहेतइन।

अइ बेर भंडा फुटलइन।

लोककऽ बुझनाई अतेक आसान नञि। केकर भीतर कोन खिचड़ी पकइ छइ जेकऽ कहत। ओ त अइ बेर बात बढ़लइ त लोक बुझलक....... ई सब तेला बेलासऽ रेहल खेहल छलाह भवेश। नञि साहस जुटा सकलाह-जबाब देबइ लेल।

किछु दिन बाद फेर मैसेज एलइ -" बुइझ पड़ईया जे आहां नञि चिह्न पेलऊं। हम धनहा गामक ललन बाबुकऽ बेटी छी। आब उमेद अइछ.....चिन्ह गेल होयब। "

मैसेज पढ़िते सब किछु सनसनाकऽ याद आइब गेलइन। पुरा देह झनझना गेलइन।अपना पर अफसोस होइन भवेशकऽ जे कोना नञि चिन्हलकिन। फोटोसँसेहो नञि अंदाज लगलइन।ओ की बुझने हेतीह। चटसँअपन वाट्सएप नम्मर देलखिन.... ई लियह.....अइ पर गप्प करु या अपन नम्मर बताऊ।

चालीस बरख पहिलका सब घटना आंखिक सोझा आइब गेलइन। सनीमाक रील जकां सब नाचऽ लगलइन। ओ चौदह - पन्द्रह बरखसँबेसीकऽ नञि छलाह। वार्षिक परीक्षादऽ देने छलाह। रिजल्ट नञि आयल छलइन। उनकर सब संगी सब कतउ कतउ घुमअ गेल छल। ओ सब त की शहर मे डेरा पर रहइत छल , तैं अपन गाम या कोनो दोसर शहर मे संबंधी सब कतऽ गेल छल। भबेशकऽ गाम-शहर सब ईएह छलइन। हुनकर कोनो संबंधी दोसर शहर मे नञि रहइ छलखिन। बच्चेसँपरीक्षाकऽ बाद घरे मे रहनाई भवेशकऽ नीक नञि लगइन। मूदा जेताह त कतऽ जेताह। उनकर बाबुजीकऽ अपन गामसँविरक्ति छलइन। बदली बाला नौकरी सेहो नञि छइन। मोन मसोईसकऽ रही जाइ छलाह भबेश। ई कोन नौकरी, जई मे बदली नञि। ओ त एहन नौकरी करताह, जईमे खुब घुमअ फिरऽ कऽ रहतइ।सब साल जकां, परीक्षाकऽ बादकऽ समय उनका पहाड़ जेकां लगइन......अहु बेर सैह छलइन। मूंह लटकाअ कऽ घर मे पड़ल छलाह।

ओही समय हुनकर बाबुजीकऽ संगी ललनजी बम्बइसँआयल छलाह। ओना ओ उम्र मे भवेशक बाबुजीसँपैघ रहथिन, लेकिन दुनु मे दोस्ती रहइन। दोस्तीक कारण छलइन जे दुनु गोटे पहिने अतइ एक्के जगह नौकरी करय छलाह। ललनजी सीनियर छलखिन। बाद मे ओ कोनो दोसर परीक्षा पास कं बम्बइ चइल गेलाह। ओ जहिया कहियो गाम दिश अबइ छथि त अइ डेरा अयबे करताह। ओ सब बेर इनका सबकऽ बम्बइ अबइ लेल कहइ छथिन। बम्बइ जायकऽ भवेशोकऽ बड़ड मोन करयन लेकिन कियो जेब्बे नञि करय।

ललनजी कहबो केलखिन जे हम आब रिटायरोकऽ जायब, आहां सब कहिया आयब। बड्ड नोन अतुका खेने छी, एक बेर हमरो कतऽ आऊ।

अइ बेर ललनजी अप्पन छोटकी बेटी सीमाकऽ बियाह करक लेल अपन गाम आयल छलाह। उनका तीन बेटी आ दु बेटा छलइन। सबहक बियाह दानभऽ गेल छलइन। ई अंतिम काज छलइन.......तैं अयबाक आग्रह बेशी छलइन।

भवेशक मां बुझई छलखिन जे एतऽ सऽ तऽ कियो जाय बला छइ नञि, आ भवेशकऽ परीक्षाक बाद घुमबाक मोनकऽ रहल छइन.....ओ कहलखिन- "ल जईयउन भवेश के। आब त ईएह सब ने संबंधकऽ आगु बढ़ौता। बाकी कियो त जाय बला अइछ नञि। आहांसऽ की छुपल अइछ। सब बुझिते छी।" फेर की छलइ। भवेशक कपड़ा लत्ता सब एकटा झोड़ी मे रखेलइन आ ओ ललनजी संग बिदा भेलाह। ई बिना मां बाबु जीकऽ असगर जयबाक पहिले अवसर छलइन भवेश के। पुरा उत्साह मे छलाह।

पहिने ट्रेन, फेर टायरगाड़ीसँओ धनहा गाम पहुंचलाह। ओ त टायरगाड़ी पर हारिकऽ सुतियो गेल छलाह। पहिले बेर एहन गाड़ी पर चढ़ल छलाह।काजक आंगन छल। सब लोक भवेशकऽ देख कऽ बड्ड खुश भेल। ललनजीकऽ पुरा परिवार भवेशकऽ

हाथो हाथ रखलकइन। आखिर छलाह त बच्चे ने भवेश। थोड़बाक काल त दलान पर संचमंच भऽ बैसल रहलाह। ललनजी सेहो कतउ ऊईठकऽ गेलाह। उनकर घरक आर बच्चा सब भवेशकऽ इशाराकऽ क बजेलकइन....... ओ उईठ बिदा भेलाह.....फेर शुरू भेल- खेलक दौड़। चोरवा नुक्की, बुढ़िया कबड्डी, ताश, लुडो,लाली, पिट्टो आर कोन कोन खेल.... बीच मे पकइड़कऽ लोक जलखइ करेलकइन। अइ बच्चा सब मे ललनजीकऽ बेटी सीमा सेहो छलीह। ओ अइ सबसँअनजान जे दसे दिनक बाद उनकर विवाह छइन आ ओकर सातम दिन दुरागमन। भोरेसँखेल शुरूभऽ जाइ आ राइत तक चलइ। ईजोरियाकऽ समय छलइ तैं कोनो ईजोतोकऽ बेशी काज नञि। खेल मे एक दिन त ओतुका बच्चा सब भवेशकऽ बात माइन लेलकइन....... दोसर दिनसँलड़ाई होबऽ लगलइ। कयेक खेल मे अतुका नियम अलग अलग छलइ। कियो झुकइ लेल तैयार नञि। भवेशोकऽ धमका देलकइन- "पाहुन बुझई छी अपनाकऽ त ओतऽ दलान पर बैसु गऽ , अतऽ अतुक्के नियम चलतइ। खेलऽ कऽ अइ त हमरा सबहक नियमसँखेलू।" भवेशकऽ समझौताकऽ अलावा दोसर चाऱा नञि छलइन। ओतुक्के नियमसऽ खेलाय लगलाह। गामक बच्चा सब बइमानियो करय........ई भवेशकऽ बर्दाश्त नञि। झगड़ाभऽ जाइ, फेर कनी काल मे मेल। अइ झगड़ा मे सीमा हरदम उनके तरफसँरहइन, बाकी सब अलग ।

सीमा बम्बइसँआयल छलीह। पांच भाइ बहिन मे सबसं छोट, ओइसँदुलारूओ बड़ड छलीह।दोसर उनके बियाह छलइन, तैं मोजर

बेशी। एक दिन खेल मे सबके अप्पन अप्पन शहरक नाम लेबाक रहइ। भवेश बंगाली टोला बजलाह.....बसंत मुसरी घरारी बजलाह.....सीमा बंबइ बजलीह आ आर बच्चा आन आन जगह। सीमाकऽ "बंगाली टोला" सुनबा मे नीक लगलइन। फेर की छलइ ओ भवेश के" टोला" कहऽ लगलखिन आ बसंतकऽ "मुसरी"। ओ टोला आ मुसरी बाजस आ ठठाकऽ हंईस दइथ।भवेशो सीमाकऽ बंबइ कहला पर कहलखिन जे ई त "सबुजा आम"कऽ कहल जाइ छइ। ओ सब सीमाकऽ सबुजा आ सीमा इनका सबकऽ टोला आ मुसरी कहथिन। अहिना हंसइथ खेलाइथ दिन बीत रहल छलइ। बिना मां-बापकऽ भवेश आयल छलाह, तैं ललनजी आ घरक आन लोक, बेशी ध्यान दइन। सब बच्चा एक्के जगह सुतय,उठय, खाई पीयई छल। खाली नहाय मे बच्चा आ बुच्ची अलग अलग जगह, समय एक्के छल।

सीमाकऽ लोक बिध बाध लेल बजा लइ छलइन। उनकर मां कहथिन -खेलऽ कुदऽ दियउ। फेर त अइ घर गिरहस्थीकऽ पचड़ा मे फंसहेकऽ छइ।

जेतबा बुझबा मे अयलइन भवेश के, ओइ अनुसार ललनजीकऽ अही साल रिटायरमेट छलइन। ओइसऽ पहीने ओ सीमाक बिबाहकऽ कऽ जिम्मेदारीसँमुक्त होबाक चाहइ छलाह। ओना सीमाक मां अइ कथाक विरोध मे छलखिन। तहिया स्त्रीगणक बाते कथा वार्ता मे कतेक मानल जाइ छलइ। नञि कियो कान बात उनकर बातकऽ देलकइन। मोन माइड़कऽ अंत मे लाइग गेलीह बिबाहक तैयारी मे। लड़का एम टेककऽ कऽ वैज्ञानिकक नौकरीकऽ रहल

छल। बड़क गुण देखी आ कनियाक रुप-ईएह सीमाक मां सबके कहइ छलखिन। ई सेहो उनका बुझल रहइन जे बरक बयस बेशी छइ........ ललनजीक रिटायरमेट वाला बातलऽ कऽ ओ चुप्पी लगा लेने छलीह। सीमाकऽ तं गाम अयलाहकऽ बाद बिबाहक बात बतायल गेल छलइन- ई सब गप सीमा कहने छलखिन भवेश के, तैं फुईस होबाक कोनों मतलब नञि।

अहीना बिबाहक दिन आइब गेलइ। सीमा आइ नञि खेलेली। ओ मऊगी सबहक भीड़ मे घेरायल छलीह। सांझ मे बर बरियाती आयल। भवेश अपन नबका कपड़ा जे मां देने छलखिन, से पहिरलाह। जे काज लोक अढ़ा दइन, से काज कइयों दइ छलखिन।

भवेशकऽ सीमाक बर देखबा मे नीक नञि लगलइन। ओ बेशी बयसक छल। ककरोसँकिछु बजितो नञि छल। भवेश दोसर दिन कत्ती काल ओकरा लग ठाढ़ छलाह, टोकबो नञि केलकइन। सीमाकऽ आब बाहर निकलनाई एकदम्मे बन्नभऽ गेल छलइन। सारा दिन लोक सबहक एनाई गेनाई लगले रहइ छलइ। आब भवेशकऽ खेलनाई सेहो बन्ने जकां छलइन। उनका मोन उचइट गेल छलइन। सीमाकऽ आब भवेशक लेल समय नञि छलइन। सीमा चुप्पी लगा लेने छलीह। हरदम जोर जोर से चिकरऽ वाली, गुम्मीभऽ गेल छलीह। दुरागमनसँएक दिन पहिने " टोला" सोर कऽ क भवेशकऽ बजेलखिन-" हम काइल सासुर चइल जायब। आहांक बुझल अइछ"।

- हं। हमरा बुझल अइछ।

- हमरा नोर नञि खसईया। की करु।

- बीट्ठु जोरसऽ काइट लियह।

-नञि नञि।

-दोसर उपाय बताऊ।सब कहि रहल अइछ कि दुरगमनिया कनिया कनञि छइ। हम बड़ कोशिश केलऊं। नोर खसबे नञि कैल। मुसरी कतऽ छथि.......

कहिकऽ हंस लगलीह।

-हमर "बर" केहन लगलाह।

-ठीक

-ठीक की। एक नम्मर, दु नम्मर से कहू।

- दु नम्‌मर।

फेर कियो सीमाकऽ बजा लेलकइन।

भवेश सेहो परेशान छलाह जे दुरागमान काल मे ज्यों सीमा नञि कनतीह त लोक की कहतइ।

अगला प्राते सीमाक कननाईकऽ आवाजसँभवेशक निन्न टुटलइन।उनका दहोबहो नोर खइस रहल छलइन। कखनो ओ अपन मांकऽ गर लाइगकऽ त कखनो बहिन के, त कखनो काकी के, त कखनो पीसी के,कखनो भऊजाइ के, आरो लोक सब के,

फेर ललनजी के। दुरगमनिया बरियाती सबहक आंईख सेहो नोरा गेल छलइन। कात मे ठार भवेश सेहो काइन रहल छलाह।सीमा ततेक कनलीह ......

सब बजई जे अतेक त कियो नञि कानल सासुर जाय काल। सबहक कोढ़ फाइट गेल छलइ। भइड़ गऊंआ जमा छल ललनजीकऽ दरबज्जा पर। नञि कनञि छल त ओ सीमाक बर छलाह। थोरबा काल बाद सीमा गाड़ी पर बैस गेल छलीह। लोटा मे पाइन आइनकऽ उनकर मां उनका दु घुंट पीयेलखिन। फेर गाड़ीकऽ तीन बेर आगु पाछु केल गेल आ ओ गाड़ी मे बइस कऽ चइल गेलीह। भवेश सेहो एकटा दोसर पाहुन संग अपन घर घुइड़ गेलाह। किछु दिन घर पर मोन नञि लगइन। सीमाक कनञित चेहरा उनका परेशानकऽ रहल छलइन। धीरे धीरे अपन दुनिया मे भवेश लौंट चुकल छलाह। कोनो हालचाल नञि पता लगलइन। सब बिसइड़ गेलाह।आइ चालीस बरखक बाद ई मैसेज उनका सब यादकऽ तरोताजाकऽ देलकइन।

आब दुनु गोटेकऽ वार्ताक क्रम शुरू भेल। सीमाकऽ मां बाबु जी दुनु स्वर्गवासीभऽ गेल छलखिन। भाइ- भाऊज आ बहिन- बहिनोई सब अपन दुनिया मे व्यस्त छथि। सीमा लेल उनका सबके समय नञि छइन। कहियो कोनो फोनो नञि........आबऽ जायकऽ त दुरक गप। सीमा एकतरफा शुरू मे घरक लोककऽ फोन करय छलखिन........ बाद मे फोन केनाई छोड़ि देलखिन। अहिना एकदिसाह

संबंध कहियो चललइ अइछ। लड़ाई नञि छइन लेकिन अबरजात बंदयजेकां।

सीमाकऽ एकटा बेटा बेटी छइन। बेटी फैशन डिजाइनिंगकऽ कऽ विदेश मे रही रहल छइन। जमाय ओ अपने चुनलक।सीमा दोबारा गलती नञि करऽ चाहइ छलीह। अइ बियाहलऽ कऽ सीमाक बर प्रसन्न नञि छथि। ओ अखइन तक अइ संबंधकऽ स्वीकार नञि केलाह अइछ। ओकर डेरा पर बिदेश कहियो नञि गेलाह। सीमा अपन साल दु साल पर विदेश बेटी कतऽ जाइत अबइत रहइत छइथ। सीमाक घरबाला रिटायरकऽ गेल छइथ। कंसल्टेंटकऽ काज बंबइ मे शुरू कयलाह अइछ।बेटा बैंक मे नौकरीकऽ रहल छइन। ओकरा लेल लड़की ताईक रहल छइथ।

अकरा बाद भवेशक बारी छलइन। बंगाली टोला बाला मकान बिका गेलइन। ओइ पाइसँभवेशक दुनु भाइ दोसर शहर मे घर कीनलाह अइछ। भवेशक मां बाबूजी जे भइड़ जीवन कहियो गाम नञि गेलाह, से बुढ़ारी मे दुनु गोटे गाम मे रही रहल छइथ। भवेश एक नौकरीसँदोसर नौकरी करइत, बिदेश मे पड़ल छइथ। गामकऽ छोड़ि कतउ घर दुआर नञि बनौने छइथ। छोट छोट धीया पुता छइन, से सब अतइ पढ़ई छइन। बदली बाला नौकरीकऽ शौक रहइन, से आब जानक जपालभऽ गेल छइन।पहिने शहरे शहर आब देशे देश छिछिया रहल छइथ।

फेर मुसरीकऽ हाल पुछलखिन सीमा। एक बेर त सकपका गेलाह भवेश। बड़का सांस छोड़इत बजलाह- "नञि कोनो संपर्क। ठीके हेताह"।

सच्चाई त ई छलइ जे सीमाक बियाहक तीन चाइर बरखक बाद बसंतकऽ ह्रदय मे कोनो बीमारीभऽ गेल छलइन। पटनासँडाक्टर वेल्लोर रेफर केने रहइन। घर मे अर्थक अभाव कारणे गामे लगक बैद्यक इलाज शुरू कयल गेलइन। छ महीना बितइत बितइत बसंत इलाजकऽ अभाव मे अपन गामे मे मइड़ गेल छलाह।

सीमा गपशपकऽ बाद बड्ड खुश छलीह। कहलखिन जे बुझाइत अइछ नैहर मे छी जेना।

भवेश कहलखिन-हं हं आहां नैहरेसँगप्पकऽ रहल छी। ललन ककाजी चइल गेलाह त ओइसऽ की। हम आहांक भाइ छी। नैहर आहांकऽ सबदिना हमरा घर मे बनल रहत।

भवेशक स्नेह देखकऽ सीमाक आंईखसऽ नोर खंसऽ लगलइन। कहलखिन- कोनो चीजक नञि कमी अइ आ नञि चाही। बस ईएह आबेशक लेल मोन घुरियाइत रहय आ आहांकऽ तकइत रही।

सीमाकऽ अपन लोक आइ भेट गेलखिन। आइयो दहोबहो नोर बहइ छइन.........ई नोर खुशीक छइन-जे बड्ड दिनसँजमा छलइन।

बख्शीश (लघुकथा)

आइ काइल त बेशी कालेजिया बच्चा सब चरफर की, चलता पुर्जा होइत अइछ। कतउ आबऽ जाय आ गप करऽ मे अशौकर्य नञि लगइ छइ। फरहर सब अइछ। दिक्कत एक्के टा छइ जे ई बच्चा सब अपन आन बड्ड बुझई छइ। अपन घरक काज होइ त चट संकऽ लेत, दोसर घरक काज होइ तखइन ने देखू तिरिंग भिरिंग। एना नञि त ओना नञि। अपना बेर मे पैसेंजर ट्रेनसऽ बिना टिकसकऽ जाइत आ दोसर बेर मे त चइड़पहिया चाहियई....... नञि किछु त मोटरसाइकिलकऽ पेट्रोलकऽ नाम पर अवस्से। ट्रैन, बससँज्यों जाइत त केतबो पाइ दियउ, घुराकऽ नञि देत। कथी मे खर्च करय छइ से नञि जाइन।

दमन अइ सबसं अलग छइथ। चलतो पूर्जा खुब छइथ। अप्पन आन ओ नञि बुझताह। सबहक काज अपने बुझ्झकऽ करताह। कथु लेल पाइ दियउन त जे बंइच जेतइन से घुरा सेहो देताह। आब त मुश्किलसऽ एहन लोक होइया जे दोसरकऽ काज अपन बुझ्झकऽ करइत अइछ। खाली निठल्ला बइसल रहत, कोनो काज कहि दियउ त कलक्टरोसँबेशी व्यस्तता देखा देत। दमनकऽ अहीसऽ बड्ड जश छइन अपन गाम समाज मे।ओ बुझितो छथि जे लोक दु टा बड़ाईकऽ कऽ , अपन उल्लु सीधा करयया.......तखनो लोककऽ हरसट्टे ना नञि कहइ छथिन।

परोपकारी लोकक ईएह हाल होइ छइ-दोसरक काज मे लागल रहइत अइछ आ अपन सब काज ओझरायल रहइ छइ। दमनक से हाल नञि। उनकर छोट भाइ सोहन घरक काज सब सम्हारने छलाह।दमन घरसँनिश्चिंत छलाह।

किछु मास पहिने दुखित काकीक ल का दिल्ली आयल छलाह। पुरा ठीकभ गेलखिन, तखइन गाम घुरलाह। दु महीनासँऊपर लाइग गेल छलइन।बड्ड सेवा केलखिन। काकीक मुंह दमनक बड़ाई करइत थकइ नञि छइन। काकीक अपन बेटा पुतोहु त दसे दिन लेल गुजरातसँदिल्ली अयलइन-फेर नौकरी मे छुट्टी आ बच्चाक पढ़ाइक बहाना बना चइल गेलइन। काकीक जमाय आ दमन दु गोटे दिल्ली मे काकीक ईलाजक लेल टीकल रहलाह। कथी लेल लोक बेटा - बेटा करइत अइछ, से नञि जाइन। बेटा काज नञि अयलइन, तखनो काकीक मुंहे बेटेक बड़ाई। दमन ओहो पर काकीक किछु नञि कहइ छथिन। काकीक लेखे उनकर बेटाक नौकरी मे छुट्टी नञि आ दमनक त नौकरी नञि, तैं छथि।सैह देखू -काज केलो पाछु ईएह सुन क भेटई छइ- " खालिये बैसल छलाह, तैं जाइ लेल कहलियइन।"

काज कर बालाक त काज खिहाड़इत घुड़इ छइ। आब मामी दुखिताहभ गेल छथिन। ओना बड़का लोकक किछु ने किछु होइते रहइ छइ। नञि किछु त "धरधरी"........ ओकर बाद

"डिप्रेशन"। लोको आब ओतेक गंभीरतासऽ ई बीमारी सबकऽ नञि लइ छइ।अइ मे त आपरेशन होबाक छइ। दोसराइत लेल एक गोटेकऽ आर रहनाई जरूरी छइ। उएह संग जाय, जे चरफरिया हुआय। डाक्टर सबसँगपकऽ सकय...... रस्ता पेरा मे सकांक्ष रहय......चोर उचक्कासऽ बइचकऽ रहय........अपन बेशी टिटंभा नञि होइ.......पोन टिकल रहय बाला होइ आ अंतिम जे घरभइयाकऽ पाइकऽ अपव्यय नञि करय।काज पर चाइर लाइन अंग्रेजी बाईज लियैय त सोना मे सुगंध वाली बात।

दमन अइ सब गुणकऽ बासन छलाह। मामा जे कहियो हुलकी नञि पाड़इ छेलखिन, तिनकर समाद पर समाद। दमन त सब लेल तैयार रहइ छलाह..... ई त अपने मामीकऽ गप छलइन। झटसँ"हंअ " कहि देलखिन। मामा अपना संग एसी बोगी मे टिकस कटा लेलाह। आइ तक कहियो एसी बोगी मे दमन नञि चढ़ल छलाह। खुशीकऽ मारे फुइलकऽ कुप्पा भेल छलाह। सबकऽ कहिते फिड़इ छलाह जे फलां दिन एसी मे दिल्ली जयबाक टिकस अइ।सब गोटे निइत दिन पर पटनासँबिदा भेलाह।

एसी मे जायकऽ पहिल अनुभव छलइन। राइत मे जाड़ लागह लगलइन, मामा कम्बल देखा देने रहथिन पहिनेहे....अपन ओइढ़कऽ सुइत रहलाह। खेनाई पीनाईकऽ त पुछु ने। बुझाइन जे बरियाती मे आयल छी। अपने मोने खायक सामग्री सबदऽ रहल छलइन। अंत मे आइसक्रीम सेहो देलकइन। मामा कहलखिन जे राजधानी

एक्सप्रेस छैक ई। सबटा पाइ पहिनेहेलऽ लइ छइ। एक्को गोटे फाजिल नञि छल बोगी मे। ओना दिल्ली बला ट्रेन मे त

" ईधर घुसकिये,

ऊधर घुसकिये,

कहां घुसकें,

माथा पर बैठियेगा-

ओ बीमार है..... लेटा है

ट्रेन है कि एम्बुलेंस है......सब बीमारे है

ईएह सब ओ सुनञि छलाह। अइ बेर सब भिन्ने।

बढ़िया जतरा बुझेलइन दमन के।

दिल्ली मे स्टेशनसऽ सीधा टैक्सीलऽ क बत्रा अस्पताल जाइ गेलाह। डाक्टरसऽ समय पहिनेहेसऽ लेल छलइन। ई "प्लांड सर्जरी " छल। जहिया सुविधा हुअय.....करा लियह। अस्पताल मे मामीकऽ भर्तीकऽ लेलकइन। एकटा कोठरीदऽ देलकइन। नर्सक अलावा एकटा नर्सिंग औडर्ली, जेकरा दाई बुझु, सेहो मामी खातिर अलगसऽ रहइन। बेर बेर काकी बाला जे तरद्दुत भेल छलइन दमनकऽ इरविन मे,ओइसऽ मिलबऽ लागइथ। ओइ

मे चाइर बेर जाइ छलाह तखइन नर्सिनिया आ दाई अबइ छलइन। अतऽ   त पले पले हाल पुछाड़ी लेल अबइ छलइन।अस्पताले मे कैफेटेरिया छलइ। मामा जाकऽ रूम नम्मर लिखा देने रहथिन आ दमनकऽ कार्डदऽ देलखिन। उनका जे खेबाक होइन से खा लेताह-पैसा देबाक नञि काज।कार्ड मे चढ़ा देतइन। दिक्कत एक्के टा छलइ जे राइत मे एक्के गोटे कोठली मे रही सकइ छल। बाकी लोकक लेल सबजाना जगह बनल छल।

मामा दमनकऽ विचार पुछलखिन।दमनकऽ त दस टा गऊंआ ओतइ संगम विहार मे रहइ छइन।तीन टाकऽ त अपने घर छइन। बाकी सब किराया मे कोठली लेने छइथ। दिन भइड़ दमन अस्पताल मे रहइथ आ राइत मे कोनो ने कोनो गऊंआ कतऽ चइल जाइ छलाह। गऊंआ सब बड़ड आबेश करयन। गाम मे सब दमनसँउपकृत रहइ छल। पिछलो जतरा काकी बला मे, संबंधी सब कतऽ गेल छलाह। गऊआं सब छुटल छलइन। ओना ई सब काकीकऽ देखऽ अस्पताल मे दुर रहितो कयेक बेर आयल छल।अइ बेर सबहक घर सेहो गेलाह। राइत मे रुकइ छलाह अपन संगी मोहन कतऽ । ओ असगरे एक कोठरी मे रहइ छल। राइत मे तरह तरहकऽ नीक बेजाय गप होइ....... फेर मनमाफिक खेनाई बनञि। भोरे, मोहन अपन आफिस जाय आ दमन अस्पताल।

ओना दमनकऽ एतऽ अस्पताल मे अप्पन कोनो काज नञि बुझाइन। सब पाइयक खेला छलइ।पन्द्रह दिन मामी अस्पताल मे

रहलीह। आपरेशन सब ठीकभऽ गेल छलइन। आब दोसर वार्ड मे शिफ्ट करतइन आ अगिला दिन डिस्चार्ज करबाक छलइ। चौदह दिन एक्के कोठरी आ एक्के नर्स आ दाई छलइन। ओ देखइ छलाह जे मामीकऽ ओइ दाईसँबड्ड खुसुर फुसुर होइन। नर्सिनिया त ओतेक भाव नञि दइन लेकिन दाई लल्लो चप्पो मे लागल रहइ छल। खुब दोस्तीभऽ गेल छलइन दुनु गोटा के। कोठरी छोड़बाक काल मामी, दमनकऽ कहलखिन -

"अकरा चाइर टा धीया पुता छइ। अस्पताल मे ई एकटा एजेंसीकऽ माध्यमसँआयल अइछ। बड्ड कम पाइ दइ छइ। अपने दिसक छइ। पढ़ल लिखल सेहो छइ। घरबाला सेहो सिक्युरिटी गार्ड छइ। नुकाकऽ अकरा किछु पाइ बख्शीश मेदऽ दियउ। बड्ड सेवा केलक अइछ। नुकाकऽ देबइ। ककरो कहबइ नञि। ज्यों मनेजर अकर बुइझ जेतइ त सीधा नौकरीसऽ हटा देतइ।"

किछु पाइ निकाइलकऽ कुमोनसँदमन ओकरा देबह लगलखिन। मामी कहलखिन-

"हमरा देखाऊ।

....

....

आर दियउ। हम आहांकेदऽ देब।

मामा जेकां अहुं पुरूख छी ने-मऊगीकऽ कतेक जरूरत होइ छइ से कोना बुझबइ"।

दमनक हिसाबे मामी ओकरा बेशी पाइ देलखिन।दाईकऽ त ड़्युटी छइ। कथीकऽ पाइ। उपरसँअत्ते डर। तखइन लइते किअए छैं।

दमनकऽ भेलइन जे ई मामीकऽ पोटियाकऽ ठइग लेलकइन।राइत मे मोहन कतऽ घुरलाह। ओ केक आ मिठाई देलकइन खाई लेल। कहलकइन-

हमर पड़ोसीकऽ बेटाकऽ आइ जन्मदिन छलइ। ऊयाह पठौलक अइ।

बगल बाला घरसँआवाज अबइ छलइ -" अखनो दुनिया मे नीक लोक छइ जे गरीबोकऽ सुनञि छइ।"

बख्शीशक पाइसऽ ओ बेटाक कपड़ा आ केक कीनलक अइछ।अपन पाइ त पहिनेहेसँजन्मदिनकऽ लेल महावीर जीकऽ लड़्डू भोग लगबऽ लेल रखने छलाह। ई बेटाकऽ जन्मदिन त भगवाने अतेक नीकसँमनबा देलखिन।

दमनकऽ केक आ मिठाई खेलाकऽ बाद ओइ बच्चासँभेंट करबाक मोन केलकइन। किछु आशीर्वादी ओहो देबऽ चाहइ छलाह।केक खेबाक उपरांत अतबा बनञि छलइ। ओकर बगल बाला कोठरी मे

मोहन संग जखइन ओ जाइ छइथ त देखइ छथि जे उएह मामीकऽ अस्पताल बाली "दाई" सीधा पल्ला साड़ी मे माथ झंपने बेटा संग खेला रहल अइछ। दुनु गोटे स्तब्धभऽ गेलाह। दमन किछु पाइ बच्चाकऽ हाथ मे दऽ घुइड़ गेलाह।

ओकर रतुका ड्युटी होइ। ओ राइत मे अस्पताल आ दमन ओकर पड़ोस मे मोहन कतऽ । अखइन तक देखा-देखी भेले नञि रहइन।

आब अपन सोच पर अफसोस होइन। आरो "बख्शीश" मे मामी किअएह नञि देलखिन।दमने लग सब पाइ रहइन......जे चाहितइथ,दऽ सकइ छलाह......ऊपरसँमामियो कहिये देने छलखिन।

ठीके पुरूख किछु नञि बुझई छइ। आब उनका बड़का लोकक उदारता नीक लागऽ लगलइन। मोने मोन सोइच लेने छलाह जे आब कहियो " बख्शीश" पर संदेह नञि करताह।

टीस (लघुकथा)

ककरो ककरो जीवन मे अतेक जल्दी जल्दी बदलावक बयार बहअ लगइ छइ जे ओ सोचऽ पर मजबुरभऽ जाइया कि कोनो कथाकऽ पटकथा त नञि तैयारभऽ रहल छइ।अहुना की कोनो जीवन छइ-क्षण मे अट आ क्षण मे पट। अखइन देवनाथ, नबका डेरा भेटअकऽ खुशीकऽ एको मिसिया आनंद लेबो नञि केलाह ....डेरा छुटियो गेलइन। आहां एना बुझ्ु जे छोड़अ परलइन। ओ नञि छइ-"जायब नेपाल त कपार संगे जाइत।"

गामसऽ नबे नब देवनाथ दिल्ली आयल छलाह। अतऽ ओ अपन संबंधी विद्यार्थी कतऽ ठहरल छलाह। आब एलाह उपरांत उनका लेल डेरा तकनाई शुरू भेल। तहिया दिल्ली मे लोक एक सांझ खुआ दइ छलइ, लेकिन रहअकऽ नञि कहइ छलइ। ओना अखनो ईएह हाल छइ। सब महानगर मे ईएह हवा बहल छइ। "मुंह देख मुंगबा" छलइ। खुबऽ लऽ दऽ कऽ अबइत छी, तखन त नञि कोनो दिक्कत। अन्यथा ज्यों कतउ धरना खसाअ देलियई त बाद मे सुनऽ पड़त- " खाता था और यहीं पड़ा रहता था। इतना हगा कि मेरा पाखाना का हौज भर गया।" ई सब खिस्सा ओ गामे मे सुनने छलाह।

दु तरहक समाज छलइ। विद्यार्थी आ मजदूर वर्ग त अपन नब

लोककऽ ह्रदयसँस्वागत करय छलइ लेकिन जे पांच- दस बरख पहिने दिल्ली आयल छलाह आ परिवार संग रही रहल छलाह- ओ त अपना घर पर किनको टपअ नञि दइ छलखिन। तखनो जे आइब गेलाह त उनका उच्छन्नर मचाकऽ ध दइ छलखिन। गलतीसँजे ओ घरबइया,अपन घर कीनने छलाह- तखइन त बुझ्झ लीयह, उनकासँबूधियार कियो नञि। सबसं बढ़िया उनके कलोनी आ सबसं बेहतर उनके मकानक नक्शा.....सबसं दामों बेशी उनके घरक।सुनञित रहु-प्रवचन.......। अपनाकऽ त कथी दुन बुझई छलाह घरबइया, मुदा आगंतुकभऽ गेलखिन " बिहारी।" उनकासँबेशी कर्मठ कियो नञि। बेचारा मोने मोन कान पकड़ई छल आ लगले बिदा होइत छल।ई असुरक्षाक भावना छलइ या किछु आओर-से नञि जाइन।

अही सब हाल मे देवनाथ आयल छलाह।अबिते लाइग गेलाह "डेरा" ताकऽ । डेराकऽ त कोनो कमी नञि छलइ- जेकर कमी छलइ, ओ छल "ढऊआ"।ओइ बजट मे नोयडा मे घर भेटइन- तखइन होइन जे नोयडा त उत्तर प्रदेशभऽ गेल.......तखइन पटने कियैक नञि। नोयडाकऽ नाम फर नाक भौं सिकुड़अ लगइन। दौड़ धुपक बाद प्रीत बिहार मे एकटा चारिम मंजिल पर बंद फ्लैट भेटलइन।

आब भेल- रुममेटकऽ तकनाई। ओतेक किराया असगर त संभव नञि छलइ। जिनका माध्यमसँडेरा भेटलइन-ओ सेहो संग रहबाक

प्रत्याशी छलाह..... लेकिन दावेदारी खुइलकऽ नञि केने छलाह। तेसर एक गोटे आर नब विद्यार्थी माधव आयल छलाह,ओ एक कुड़ी सेहो भेलाह..... किरायाकऽ लेल। ई देखू - अखइन देवनाथकऽ अयलाह एक महीना नञि पुरलइन- उनकर एकटा गंऊआ प्रभात परीक्षा दइ लाय, ऊपरसँसेहो आइब गेलखिन। देवनाथ अपने पाहुन.....आब पाहुनकऽ पाहुन....... युद्ध स्तर पर इनका लेल डेरा ताकल गेल। डेरा लेल बुझु की सतगामा हकार पठाओल गेल छलइ। एजेंट त सट देने घर दिअय दइतइ, लेकिन ओ तऽ पैसा लेतइ, तैं ओकरा अइ मे नञि कहल गेल छलइ।

"डेरा"कऽ चाभी भेंट गेल छलइन। देवनाथ आ माधव भोरे प्रीत विहार गेलाह। घर मे सऊंसे कबुतरक बीट छिड़ियाल......... महीनोंसँघर मे झाड़ू नञि पड़ल......गंदगीक अंबार लागल। एरिया बड़ड सुन्नर छल। कोठी चारु कात। ईहो कोठियेकऽ चारिम तल्ला छल।

सबसं पहिने दोकानसँझाड़ू,फिनायल, पोंछा, बाल्टी, मग सब कीन कऽ दुनु गोटे अनञि गेलाह। फेर शुरू भेल सफाई अभियान। दसो बाल्टी कुड़ा कबाड़ा सब घर मे छलइ। अपन डेरा आ नीक एरिया देख कऽ दुनु गोटे जोश मे छलाह। जवानी मे त अपने नशा होइ छइ।खुब चमचमा देलखिन घर के। अइ डेराकऽ बालकोनीकऽ सामने वाला घरक छत पर चाइर टा सुन्दर लड़की सेहो ठारभऽ कऽ इनकर सबहक सफाई देखइ छल- आपस

मे हंसी मजाक करय छल। किछु चुहलबाज़ीभऽ रहल छलइ ऊमहर। देवनाथकऽ नजइड़ जखइन ओमहर जाइन त ओ सब मुस्कियाईयो दइन। फेर की छलइ। भुख पियास सब दुनु गोटेकऽ हेरा गेलइन। आठ बजे भोरसँतीन बजे दिन तक ओ सब लागल रहलाह आ घरकऽ चमचमा देलाह। सामने बला छौंड़ी सब सेहो अधिक काल इनका सबके तकिते रहलइन।

आब त देवनाथकऽ भेलइन जे असली दिल्ली त ओ आब एलाह अइछ। अतऽ बढ़िया समय बीततइन। अकरा सबहक आंईख मे उनका अपना लेल दोस्ती देखा रहल छलइन। ओ तऽ आब उमंग मे आइब गेल छलाह। जे सुनने छलाह जे दिल्ली मे एना होइ छइ.....ओना होइ छइ......सब पुरा बुझाय लगलइन। किछु किछु ओहो सब इशारा केलकइन आ ईहो इशारा मे ज़बाब देलखिन। होइन की सामान लइयेकऽ कीया नञि एलऊं। जायकऽ मोन नञिकऽ रहल छलइन।

नब ताला, फ्लैट मे लगाकऽ दुनु गोटे घुरलाह।प्रभातकऽ सेहो अनबाक छलइन। ओ अतऽ सँअनभुआर छल। ओकर त देवनाथे ने अप्पन एतऽ ।

सात बजे सांझ मे देवनाथ, माधव आ प्रभात सब सामानलऽ क उमंगक संग प्रीत विहार अयलाह। फ्लैटकऽ बल्ब सब बदलला

आ सामान सब रखलाह। घर आब बेशिये नीक लाइग रहल छलइन। बिछान तिछान सेट केलाकऽ बाद घुमअ निकललाह। उम्हरेसँतीनु गोटे खाअ पीअकऽ घुरलाह।

नीचेसँदेखइ छइथ जे घरक लाइट जइड़ रहल अइछ। तीनु गोटेकऽ नीकसँयाद छलइन जे बत्ती मीझा कऽ आयल छलाह। सीढ़ीसँदौड़इत उपर चढ़लाह। देखइ छइथ जे उनकर सबहक सब सामान पैककऽ कऽ फ्लैटक दरवज्जा पर बहरी मे राखल। घरक अन्दर चाइर टा देवनाथसँकनी वयस मे बेशी लोक सब बैसल छल। सामने छत पर ऊयाह लड़की सब ओहिना ठार....हंसइत....अकरा सबसँबतियाइत।

इनका सबके ओ कहलकइन जे हम "डेरा" भारा पर नञि लगायब। आहां सबहक सामान बहरी मे अइछ। सामान उठाऊ आ चलइत बनु।

देवनाथ गामसँअखनेआयल छलाह। उनका अतुका ई रंग ढंग बुझा नञि रहल छलइन। ओ बहसा बहसी करऽ लगलाह। कहलखिन- हम त आहांसँचाभी नञि लेने छी। जे देने छइथ, उनकासँआहां सब गप्प करु।

ओ बाजल- उनका खबरकऽ देने छियइन। ओ अबिते हेताह।

-ताबइत हम सब नञि जायब। बरजोरी करब त ओ ठीक ककरो लेल नञि।

-बरजोरी हमरा सब लेल नब नञि, लेकिन आहां पढ़अ आयल छी ......घरकऽ बड्ड नीक साफ केलऊं अइछ, तैं हमरा सबकऽ बरजोरीकऽ विचार नञि। ओना आहां चाहब त कऽ देब।

ईएह सब गरमा गरमी चइल रहल छलइ ताबइत प्रभात, देवनाथकऽ धीरेसँकहइ छथिन - हमरा निन्नकऽ स्टीम बइन गेल अइछ। जल्दी करय जाऊ..... हमरा सुतबाकऽ अइ।

ई सुनिते देवनाथकऽ देह मे आइग लाइग गेलइन। ओ त सोइच रहल छलाह जे बदमशवाकऽ अइ चारिम तल्लाकऽ बालकोनीसँउठा कऽ नीच्चा फेंक दी। आ प्रभातकऽ देखू निन्न लाइग रहल छइन। एहनो मनुक्ख होइया।कतऽ मार पिटाईकऽ स्थिति छल, आ इनका निन्न लगइ छइन। देवनाथ त बुझई छलाह जे चाइर गोटे बदमशवा सब अइ, त तीन गोटे हमहु सब छी। एक गोटेकऽ ऊपरसँफेंकते ई दिल्ली बाला सनटिटही सब की टिकत। सबकऽ माइड़ कऽ भगा देबइ। जे हेतइ से देखल जेतइ। अइ छौंड़ी सबहक सामने बेज्जती कतउ बर्दाश्त होइ। माधव सेहो बहस मे देवनाथकऽ संग छलाह।

प्रभात आब समस्या बुझाय लगलखिन।उनका कोनो मतलब नञि अइ सब सं। देवनाथ उनका डेरे डेरालऽ कऽ घुईम रहल छइथ आ इनका देखू। ओ ओतइ एकटा कुर्सी पर बैसल ऊंघा रहल छलाह।

थोड़े काल बाद शैलेश जे चाभी दियेने छलखिन आ अपनो अतइ रहअ बाला छलाह- सेहो अयलाह। उनको बदमशवा सबसँअलगसँगप्प भेलइन। ओ अकरा सबकऽ देख कऽ डरा गेल छलाह।

फ्लैटक ताला त ओ सब तोइड़ चुकल छल। देवनाथकऽ सामान पैककऽ देने छलइन। सुतली राइत सामानक संग संबंधी विद्यार्थी कतऽ घुरलाह।

भइड़ दिन जे घर साफ करऽ मे जे मेहनत केने छलाह, से देह आब दुखाइत छलइन। कतेक खुशीसँसब काज केने छलाह......की की ख्याल मे आयल छलइन। एक्के बेर सब वज्रपातभऽ गेलइन। कानल कनिया .....घुरिये गेल........... बाला हाल भऽ गेल छलइन।

मोन मे ईएह घुरियाइन कि घर साफ करबाबइ लेल तं ई कोनो योजना चल........वा उनका संग धोखा भेलइन........ओ छौंड़ी सबकऽ ई हस्र होइत, से बुझल छलइ- तैं हंसई छल......पहिनेहो आरो ककरो संग एना भेल छइ?......

जे भी होइ, धोखा त भेले छइन आ ओहोसँबेशी ह्रदय पर डाका।ई "टीस" सबदिना रहबे करतइन।

विश्वासघात (लघुकथा)

पहिलुका समय मे रामबाबूकऽ समाज मे सब कतऽ , नञि किछु त पइनभरनी वा रार- रारिन होइते टा छलइ। अहनो लोक जिनका कतऽ दुनु सांझ चुल्हा जरऽ पर संदेह- उनको कियो नञि कियो खबासिन छलइन।भोज भातकऽ बाद जुठ उठबऽ खातिर ककरो कहऽ कऽ नञि पड़ई.......खतबे टोलीकऽ स्त्रीगण आ बच्चा सब जुठ पात पर टुइट पड़ई आ बदला मे सब साफ़कऽ दइ। ओकरो सब मे ककरो पाइन चलइ आ ककरो नञि। ई वर्गीकरण सब समाज मे रहइ।

रामबाबूकऽ परिवार मे त जेना जमीन-जथाकऽ बंटवारा होइ.......ओहिना नौकर-चाकरकऽ सेहो।ई नौकर सबहक घर, जिनकर जमीन पर छलइ, उएह ओकर मालिक भेलइ।ओइ नौकरक कनिया इनकर सबहक पइनभरनी आ जे तेज तर्रार नौकर, से खबासभऽ जाइ छल। कखनो आहां भोर मे सुइतकऽ उठू.....सब घइल पाइनसँभरले भेटत। ज्यों एक टा दुखित होइ त ओकरा दोसर संग गठबंधन रहइ..... ....ओ आइब कऽ भइड़ दइ छलइ। बिना नागाकऽ ई व्यवस्था चलइत छलइ। पाइनो की त, धार वा ईनारसँअबइ। खेनाई पिनाई ईनारक पाइनसँआ कपड़ा लत्ता, कनिया बहुरियाकऽ नहेनाई धोयेनाई, पाहुन परख-ई सब लेल पोखइड़ वा धारसँपाइन अबइ छल। ईएह ढर्रा पैघ छोट सब घर मे छल। पाहुन परख आ बेटीकऽ ऐला गेला मे एक दोसरसँमंगनचन होइ......अकरा

खराब नञि मानल जाइ। पाहुन आ बेटी त समाजक होइ छल।

जे रामबाबू, सर संबंधीकऽ टेल्हवा कहू वा नौकर, पठबइ छलखिन-से अपने आब बेलल्ल भेल छइथ।जहियासँसिकमी बटाई बाला केस हारलाह, सब नौकर चाकर ठेंगा देखा देलकइन। पछाइत एहन ने उजाही मचलइ- सब सोलकन गाम छोड़िकऽ चइल गेलइ। दु चाइरटा ओइ मे सऽ बम्बइ मे ततेक ने कमेलकइ जे ओकरे देखाऊंस सबके लाइग गेल छइ। आब त रामबाबूकऽ एकटा दिअयद ओकर बम्बइ बाला होटल मे खेनाई बनबइ छइथ। सब दुसधा सब नक्सलाइटभऽ गेल छइ। बाबु भैया सब डरे डरायल रहइ छइथ। मालिक कहि दइ छइन-ओतबेसँतिरपित।

रामबाबू सबदिना नौकर चाकर रखलाह। कतउ नोता पिहानी मे जाइथ, तखनो एकटा संगे जाइन। कनिया उनकर जयथुन वा नञि, लेकिन नौकरबा जेब्बे करय।मालिशकऽ करितइन पहुनाई मे! आब अइ विकट समय मे उनकर समईध एक टा टेल्हवा जोगियाकऽ पठा देलखिन। ।उनकर समधियाना मे जोगिया माय पइनभरनी छल। बिधवा छलाय त सोचलक जे दु पेटसँएक पेटभऽ जाइत। एक गोटेकऽ तऽ कोनो हवेली बाला खुआ देतइ। घर होइ बेशी भीते के, मूदा कहाइ "हवेली"।एक्के दु घर कोनो गाम मे कोठा होइ छलइ।

जोगिया बारह तेरह बरखक छल, जहिया रामबाबू कतऽ आयल। नीक नुकुत खेला उपर देह ओकर फुइट गेल छलइ। नौकर चाकर त गोर कम्मे होइ छलइ- लेकिन जोगियाकऽ रंग साफ छलइ। ओ देखबा मे रामबाबूकऽ घरक धीया पुतासँकनिको कम नञि लगइ छल। कतेक नब लोक त ओकरा उनकर बेटे बुझई छलइन। जोगियाकऽ रामबाबू माइनतो बड़ड छलखिन।ओ जोगियाकऽ ल कऽ अपनो धीया पुताकऽ बिगइड़ दइ छलखिन। रामबाबू जमाना देखने छलाह आ ओइ अनुसार अपनाकऽ बदइल लेने छलाह। उनकर कहबाक छलइन - " जोगिया दोसरकऽ बच्चा छइ....... ज्यों अपन बच्चा ओकरा नञि बुझबइ त एक दिन नञि टिकत। जे काज ओ कऽ दइया, से काज कियो अप्पन नञि करत। " अहिना जोगियो, रामबाबूकऽ ध्यान रखइन।

जोगियाकऽ मायकऽ समय समय पर रामबाबू पाइ पठा दइ छलखिन।ओकर कखनो समाद नञि अबइ जे जोगियाकऽ घर पठा दियउ........देखबाकऽ मोन करइत अइछ। बस पाइ भेट जाइ आ ओ खुशभऽ जाय। तखनो रामबाबू दु-तीन बरखकऽ बाद जोगियाकऽ ओकर गाम घुमा दइ छलखिन।

जोगिया सेहो अतऽ खुब खुश छल। ओहो कखनो मायकऽ मोन नञि पारय।

जखइन जोगिया अठारह उन्नैस बरखक भेल त ओकरा किछु चोरऊका समाद अपन घरसँएलइ।ओ रामबाबूकऽ कहलकइन जे एक बरख करीबभऽ गेल.......हम गाम जाय चाहइ छी। ओइ समय मे रामबाबूकऽ हाथ मे ओते पाइयो नञि रहइन.....ओ ई बात ओकरा कहलखिन। जोगिया बाजल-

की हेतइ। आहां बाद मे पठा देबइ। हम त लगले घुइड़ जायब। बुझु की...बेशीसँबेशी दस दिन मे अतइ छी।

रामबाबू एकगोटे संग ओकरा घर भेजबा देलाह।

दस दिन की बीस दिन बीत गेल। फेर महिना दु महिना ......तीनो महिना बीत गेलइ। जोगिया नञि आयल आ नञि अपन बकियौता पाइकऽ लेल कोनो तगेदा।

आप रामबाबू अपन समधियानासँपता केलाह। जोगियाकऽ समाज मे बच्चे मे बियाहभऽ जाइ छइ। गौना छंटगर भेलाकऽ बाद होइ छइ। ओ जे जोगियाकऽ चोरऊका समाद छेलइ से ओकर कनिया पठेने छलइ-जोगियाकऽ बियाह सेहोभऽ चुकल छलइ.....अतऽ ककरो नञि बुझल। जोगियाकऽ समान मेसँपुर्जी निकललइ......लिखल छलइ-" अगर तौं अइ फागुन मे गौना नञि करेबऽ त ओकर बाबु ओकरा दोसरा संग बियाईह देतइ। तोहर मायकऽ कयेक बेर समाद पठावल गेलइ-ओ कान बात नञि दइ

छइ। जल्दीसँदिन तका कऽ पठबियह..... ज्यों चाहइ छह। नञि तं लइत रहियअ घंटा"।

ओ सैह बात रहइ। जोगिया माय गौना कराअ क, फेर एक पेटसँदु पेट नञि करऽ चाहइ छल। तैं ज़बाब नञि देने छलइ। जोगिया गौना करेलक आ घरबालीकऽ अनलक। खर्चा बइढ़ गेलइ। जोगिया माय सेहो बुढ़ भऽ गेल छल। ओकरोसँकाज धंधा नञि होइ। जोगियाकऽ नीक नुकुत खायकऽ आदतभऽ गेल छलइ। कनी जीभलाह ओ शुरुयेसँछल। ओकर एकटा ससुरक भाइ दरभंगा मे हलुवाईकऽ काज करय छलइ। ओ अकरा कहलकइ-

"मेहमान! तौं दरभंगा आइब जाह। हम सब सीखा देबऽ । हुनर भऽ जेतऽ , त भइड़ जीवन बिना बोझा ढोने, नीक नुकुत खाइत पीयइत बीत जेतह।"

जोगिया देखलक जे गाम मे त ओ आब जन बाला मजुरी कऽ नञि सकइत अइछ। रामबाबू जे पाइ दइ छलखिन ओइ मे ई दुनु सास पुतोहुकऽ निभनाई असंभवे छइ।ओकर समाज, घरवालीकऽ बभनटोली मे काज करऽ नञि देतइ।अइ हालात मे, होटल बाला काज ओकरा ठीक बुझेलइ। सोचलक जे गप्पकऽ कऽ देखी पहिने।

दोसर दिन दरभंगा " सत्कार होटल" गेल। ओकर कुटुम्ब, होटल मालिकसँगप्प केने रहइ। चाइर दिन बादसँकाज पर अयबाक छलइ।

जोगिया सोचलक जे रामबाबूकऽ समाददऽ दिअयन जे ओ दोसर काज पकइड़ लेने अइछ। ओकरा साहसे नञि भेलइ। ओकराभऽ रहल छलइ जे ओ उनका संग विश्वासघातकऽ रहल अइछ।ओ गाम चइल गेल।

चाइर दिनकऽ बाद अपन कपड़ा लत्ता संग होटल पर आइब गेल। भोर सांझ ओ हलुवाईकऽ काज सीखय आ बाकी समय बैरा वाला काज करय।

एहन ने चिक्कन चिनमुन ओकर हंसइत चेहरा रहइ जे गहकी सब आकर्षित होइ। बोली-बानी ओ रामबाबूसँसीखिये लेने रहय।

होटल मालिक सब देखइ छल। ओ जोगियाकऽ काजसँखुश छल। जोगिया सेहो अइ नब परिवेश मे मजालऽ रहल छल। दिन भइड़ तरह - तरहकऽ लोक सब होटल मे अबइ जाइ छलइ।

अहिना एकदिन रामबाबूकऽ एकटा गऊंआ मोहन ओइ होटल मे

अयलाह। उनकासँआर्डर लइ लेल जोगिया आयल। दुनु एक दोसरासँपुरना गप्प शप्प कयलाह। जोगिया मालिकसँकहि कऽ किछु छुट सेहो दिअय देलकइन।

रामबाबूकऽ बेटा रमेश सेहो दरभंगे मे रही कऽ पढइ छलाह। मोहन, जोगिया बाला गप्प रमेशकऽ कहलखिन।रमेश तखने सत्कार होटल गेलाह।ओतऽ जोगिया भेटलइन। ओ कहलखिन - कहिया जेबें।

ओ बाजल- अतऽ सँनिवृत होइ छी, फेर जायब।

बहुतही ठंडा व्यवहार छलइ जोगिया के। चाहो ताह लेल नञि पुछलकइन। ओ तऽ अपने आपकऽ दोषी बुझई छल।

रमेश, होटलक मालिकसँगप्प केलाह। ओहो अनठियाले जेकां ज़बाब देलकइन। रमेश घुइड़ अयलाह अपन कमरा पर। आब जुगत भीरबऽ लगलाह जे केकरा कहलासँहोटल वाला बात मानत।

उनकर एकटा संबंधीकऽ संगी दरभंगाकऽ बड़का बापक बेटा छलाह। उनकर बड़का टा मकान होटलकऽ लगे छलइ। रमेश ओइ संबंधीकऽ ल कऽ ओ बड़का लोक कतऽ गेलाह। ओ पुरा आगत स्वागत केलखिन आ इनकर सबहक संग सत्कार होटल अयलाह। ओतऽ होटल बालाकऽ बिगड़बो केलखिन जे

आहां हमर संबंधीकऽ नौकरकऽ अपना कतऽ किअए रखने छी। होटल मालिक हफ्ता दिनकऽ समय लेलकइन, जे ओ जोगियाकऽ द देतइन।

सात की दस दिनकऽ बाद जखइन रमेश होटल गेलाह त जोगिया कहलकइन - ओ जे फलां बाबूकऽ बेटा आहां संग ओइ दिन आयल छलाह, से बाद मे फेर आयल छलाह। होटल मालिककऽ केबिन मे ओ हमरा कहलाह -" जतेक पाइ आहांकऽ रामबाबू दइ छइथ, ओकर दुन्ना हम देबऽ । तौं हमरा कतऽ रह।"

दु बरखसँउनको दरभंगा डेरा पर नौकर नञि छइन-परेशान छलाह।

जोगिया उनका त किछु नञि कहलकइन लेकिन होटल मालिककऽ कहलकइ- " हम रामबाबू मालिक कतऽ नञि रहब त दोसरो कतऽ नञि रहब। हम आब बम्बइये जाइ छी, गऊंआ सब लग"।

रमेशकऽ ततेक ने अइ बातक तकलीफ भेलइन जे देखू फलां परिवारकऽ भ कऽ ओ दरभंगा बाला केहन विश्वासघात केलाह। जोगियाकऽ कोनो गलती नञि, तखनो ओकरा अपन दोष बुझाई आ ई फलां बाबूकऽ बेटा भऽ कऽ पाछुसँगेम खेलाय लगलाह। ओ मोने मोन सोइच लेलाह जे आब बिना नौकरकऽ रहनाई सीखऽ कऽ अलावा कोनो चारा नञि। जे जतेक पैघ, उनकर दीन ईमान- ओतेक छोट। विश्वासघाती सबतर बैसल आ पैसल छइथ।

पापक फल (लघुकथा)

महेन्द्र मिश्र सुभ्यस्त लोक छलाह। बड़का बासडीह -अग्गहसऽ बिग्गह तक,पोखरा पाटन, मंदिर, कलम, खरहोइड़, बसबिट्टी, धनहर खेत आ छहइड़क कात कतउ सऽ कतउ जमीन उनका छलइन। जहिया जन्म भेलइन तहिया दु टा कोठरीकऽ दरबा जकां घर छलइन। अपने अर्जन कऽ कऽ सब ठार केलाह अइछ। अइसँई नञि बुइझ लेब जे खुब कमेला अइछ!कहक लेल वकालत करय छलाह। अपने केश लड़इत लड़इत वकीलभऽ गेलाह।

ई सब सम्पइत, उनकर परिवार मे छलइन। मूदा की? कोना? तहिया उनकर दादाक(पिताकऽ ओ दादा कहइ छलाह) संग बंटवारा मे भेलइन। दु टा कोठरी टा हिस्सा मे पड़लइन। बच्चा महेन्द्र एक बेर अपन दादा संग सुदन बाबु कतऽ गेल छलाह। सुदन बाबु जिलाक बड़का मोख्तार छलाह। ओ इनकर दादासँपुछलखिन जे इनका कतउ पढ़ाकऽ मास्टरी धरा दियउन।हिनकर दादाकऽ जवाब छलइन जे मास्टरी ई मना करय छइथ। तइ पर उनकर जवाब छलइन-" त की मोख्तार बनताह "। घमंड मे डुबल सूदन बाबुकऽ ओ बात महेन्द्रकऽ आगु बढ़बा लेल प्रेरित कऽ रहल छलइन ।

महेन्द्र बच्चेसँजमीन जालकऽ बंटवाराकऽ लेल संघर्ष करइत

छलाह। सुप्रीम कोर्ट तक गेलाह.....केश जीतलाह.......फेर धीरे धीरे सब किछु ठार केलाह। संघर्षकऽ संग संग वकालतोकऽ पढ़ाइ-लिखाई पुरा केलाह।मोख्तार त नञि, ओइसँएक डेग आगु वकील बइन गेलाह। आब त दादा नञि जीबइ छथिन। रहितथीन तं, बड्ड गर्व होइतइन। अपने ओ पढ़ल नञि छलाह, लेकिन पढ़बाक बड्ड सेहन्ता छलइन।

जखइन सम्पइत अबइ छइ त ओ अपना संग फुसियाही "शान" सेहो अनञि छइ।ओइ मे ज्यों आहां किछु केस मोकदमा जीत जाऊ त अपनाकऽ "अजातशत्रु" लोक बुझअ लगइत अइछ। महेन्द्र मिश्र संग सेहो सैहभऽ गेल छलइन। अपनाकऽ आब जमींदार बुझअ लागल छलाह। उनकोसँबेशी उनकर धीया पुता सब मे ई बीमारी आइब गेल छलइन।

एक दिन महेंद्र मिश्रकऽ पोखइड़ मे इनकर बेटा गजेन्द्र दतमइनकऽ कऽ कुरूरकऽ रहल छलाह। तखने एकटा मलाहिन खखार फेंक देलकइन पोखइड़ मे। पाइन मे दहाइत ओ खखार हिनकर सामने आइब गेलइन। गजेन्द्रकऽ खखार देखते पारा चईढ़ गेलइन। ओ ओइ मलाहिन पर बिगड़ला..... किछु अवाच कथा सेहो कहलखिन। ओहो मलाहिन उल्टा उरेब बाईज देलकइन। बस आब की छलइ। खीसे माहुर भेल गजेन्द्र ओकरा पर हाथ उठा देलकिन। एक त उनकर पोखइड़, दोसर खखार फेंकलक आ उपरसँमहेन्द्र मिश्रकऽ बेटा, कतउ बर्दाश्त होइ।

ओ मलहिनिया कनञित अपन घर गेल। मलाह टोल आ दुसधा टोली दुनु सटले छलइ। ओना दुनु टोल मे बात बात मे माइड़ पीट होइ। दुगोला छलइ ओकरा सब के। लेकिन अतऽ त बभनटोलीकऽ गप्प छइ।आइ मलाहिन संग भेलइ त काइल दुसधिन संग सेहो हेतइ। ई रोग काटनाई जरुरी छइ।

दुसध टोली आ मलाह टोलकऽ सब मऊगी -मर्द लाठी ,भाला, गड़ांस, जेकरा जे भेटलइ-लऽ कऽ महेंद्र मिश्रकऽ दरबज्जा पर आइब गेलइन। लोहा बाला बड़का गेटकऽ बंदकऽ कऽ अइ कातसँमहेन्द्र मिश्र लाईसेंसी बंदुककलऽ कऽ ठार आ उमहरसँओ भीड़। ओ सब कहइन जे आहांसँहमरा सबकऽ कोनो दुश्मनी नञि। हमरा सबकऽ गजेन्द्र चाही। ओकरा हिम्मत कोना भेलइ मलाहिन पर हाथ उठबऽ के। गजेन्द्रकऽ ताबइत घरसँपाछु मुंहे भगा देल गेल छलइन।

बड़ी काल ई खेल चलल। आरो गऊंआ सब आइब गेल। अतइ पंचैती भेल आ किछु आर्थिक दंड गजेन्द्र पर ठोईक कऽ मामलाकऽ रफा दफा कयल गेल।

महेन्द्र मिश्र जे आइ तक कहियो नञि हारल -अइ बेइज्जतीसँअपमानित

महसूसकऽ रहल छलाह। उनका आब ईहो पता लाइग गेल छलइन जे उनके दिअयदक लोक जिनकासँकेस मोकदमा चलल छलइन-उएह सब अकर पाछु छइथ।

आब शुरू भेल "आपरेशन बदला"।

महेन्द्र मिश्र अपन सब बेटा बेटीकऽ संबंध उएह घर मे करय छलाह जे लाठीसँमजगुत होइथ वा थाना पुलिस पर प्रभाव होइ। आब जे सब अगुआ छलइन उनकर घर पर चढ़ाइ करऽ मे ओकर सबहक सुची बनल। अलग अलग जिला कचहरी आ थाना सब मे मोकदमा दायर कैल गेल। आब ओतऽ कऽ पुलिसकऽ बजा कऽ ओकर सबकऽ गिरफ्तारी भेलइ। कोर्टकऽ नोटिस सब अबइ- अकरा सब पर। जेहल गेला पर जमानत करबहो मे बड्ड पाइ लाइग जाइ। ओ सब परेशानभऽ गेल छल।

फेर पंचायती भेल। गजेन्द्र मिश्र पर जे आर्थिक दंड लगायल गेल छल से हटावल गेल। ओकर बाद जतेक जगह पर जे केस दायर छल- ओइ सब मे समझौता फाइल कैल गेल। पोखइड़ मे थुक फेकनाई पर रोक लागल। एनाकऽ कऽ दबाव बना कऽ समझौता भेलइ। ई परेशान करक लेल, झुठा केस केनाई तहिया आम बात होइ। कहबी छलइ- " बिन भय न होबे प्रीत।"

महेन्द्र मिश्रकऽ एकटा जमाय रामा ठाकुर समस्तीपुर जिला मे सेहो छलखिन। ओतऽ महेंद्र मिश्र अपने गेल छलाह आ ओतुका कोर्ट मे केस फाइल भेल छलइ जे फलां मुखिया आ फलां मुखिया अतऽ समस्तीपुर डेरा पर आयल ....राइत मे ठहरल आ फलां सामान सब चोरा कऽ पराअ गेल। पुलिस जांच मे घटना सही पावल गेलइ। ओकरा सब पर वारंट निकललइ......सब गिरफ्तारभऽ कऽ समस्तीपुर जेहल भेजल गेल।

जखइन समझौता महेन्द्र मिश्रकऽ गाम मे भेलइन तखइन अतउ ओकरा सबकऽ जमानत भेटलइ। ओ सब अइ बेर रामा ठाकुर कतऽ आयल छल। ओ मल्लाह सब लड़ाई मे थाईक गेल छल । रामा ठाकुर सबकऽ गोर लाइग कऽ गेल छल। जाय काल मे कहने रहइन जे हम सब त अपनेकऽ गामक कुटुम्ब बुझइत रही। अपने एना करब, से नञि उम्मीद छल। छोड़ु ।आब माइट दियउ सब पर। ओ सब जेहल गेलासँदुखी छल। रामा ठाकुरकऽ सेहो अफसोसभऽ रहल छलइन। ओ मलहा सब बड़ड आदर दइन उनका। तरह तरहकऽ माछ-मखान सब सासुर गेला पर खुआबइन ओ सब।

आइ महेन्द्र मिश्र सेहो दुनियासँचइल गेल छइथ। समस्तीपुर मे एकटा हत्याक केस मे निर्दोष रामा ठाकुर गिरफ्तार भऽ जेहल गेलाह अइछ।रामा ठाकुर कतबो पुलिस वालाकऽ कहलखिन जे ओ निर्दोष छइथ। ओ कहलकइन -" जे कहबाक अइछ, कोर्ट मे जा कऽ

कहब। हमरा सबकऽ ऊपरसँआदेश अइ"।

रामा ठाकुर बुइझ गेलाह जे ई मलहाकऽ "आइह" अइछ। ओइ निर्दोषकऽ तहिया ई जेहल भेजबेलखिन, आइ ओ अपने जा रहल छइथ।

ई सब उनके " पापक फल" छइन। सब अतइ भुगतऽ कऽ पड़ई छइ। अखइन नञि भुगतता त अगिला जन्म तक पाप खिहाड़इत रहतइन।

हाथक लकीर (लघुकथा)

जहियासँकबीर विदेशसँघुइड़कऽ अयलाह अइछ, बेशी काल ऋषिकेश जाइत रहइ छइथ। अकर पाछु दु टा कारण छइ- एक तं दिल्लीकऽ प्रदुषणसँमुक्ति आ दोसर गंगा माईकऽ कोरा मे रहबाक सौभाग्य। विदेशो मे नदी सबकऽ माय जकां बुझल जाइ छइ। ओतुको सब नदी उनका गंगेजी बुझाई छलइन...... अतऽ त असली गंगा माई छथिन। ओ कोनो ने कोनो बहाने उनका लग जाइत अबइत छलाह। ऋषिकेशकऽ दिल्ली सदन इनकर अड़्डा भऽ गेल छलइन।

दिल्ली सदन एकदमसँगंगा कात मे छलइ। दुरसँदेखला पर बुझईता जे गंगेजी अपन अंचरा मे अकरा लेने छथिन। अतऽ निश्छल गंगाजी बहइत रहइ छइथ। ओ धारा बहअकऽ जे कलकल ध्वनि छइ- से कबीरकऽ सम्मोहित कयने छइन। ओ अतऽ आर किछु नञि करय छइथ.......बस दिल्ली सदनक जे गंगा कात मे बेंच लागल छइ.......ओइ पर असगरे बइसल ओ धुन सुनञित रहइ छइथ।उनका ई धुन सब समयक अनुसार अलग अलग सुनाइत छइन। जेना शास्त्रीय संगीत मे भोरूका,दुपहरिया, संझुका, रतुका सब मे अलग अलग राग गाबल जाइ छइ, ओहिना हिनका सब बेर मे अलग अलग राग सुनाइत रहइ छइन। नदी उएह, धारा उएह, गति उएह, वेग उएह,स्थान उएह, समय उएह आ व्यक्ति उएह........तखइन एना किअए पाइनक बहाव उनका राग मे डुबल

गीत लगइत छइन।

सबके एक्के आवाज हहअ.....हहअ....हहअ लगइ छइ, इनके किअए राग लगइ छइन। जे भी अकर पाछुकऽ कारण विधान होइ......कबीरकऽ अपना नीक लगइ छइन आ ओ अबइत रहइ छइथ।एक्को राइत अतऽ बिता लइत छइथ त अपनाकऽ उर्जावान बुझाय लगइ छलइन।आब त दिल्ली सदनकऽ लोकसब इनका चिन्हो गेल छलइन। कयेक बेर नञि कमरा खाली रहला पर ओ सब अलगोसँइनका लेल व्यवस्था कऽ दइ छलइन। अतऽ जलखइ, चाह आ दुनु समय भोजन, सबहक इंतजाम छलइ। कहियो कऽ बाहरोकऽ दीन- दुखियाकऽ अतऽ खेनाई खुआवल जाइ छलइ।

बेशी लोक त घुमअ वा किछु काजे ऋषिकेश अबइ छल.......कबीर एहन छलाह जे लोकक अनुसार ओहिना दिल्ली सदन अबइ छलाह।भइड़ भइड़ दिन गंगा कात मे बेंच पर बइसल बिता दइ छलाह। नञि कतउ जाइ छलाह आ नञि कियो भेंट करऽ अबइ छलइन।अतुको लोकक लेल पहेली बनल जा रहल छलाह।

एक दुपहरिया मे बैसल देख रहल छइथ जे किछु भगवाधारी साधू संत सब दौरल खेनाई खाय लेल आइब रहल छइथ।एना ओ पहिनेहो अतऽ देखने छलाह जे दीन दुखिया सब लेल कहियो काल

भण्डारा लगइ छलइ।अइ बेर ओइ भीड़ मे एक गोटे पर उनकर नजर टीक गेलइन। ओना भगवा वस्त्र मे उनका पहिने नञि देखने छलखिन....... लेकिन मूंह कान कतउ बदलइ छइ! कबीर उनका चिन्ह गेला।अखइन जे उनका टोईक दइतथिन तभऽ सकइत छलइ जे ताबइत खेनाई खत्मभऽ जाइ। पहिने आऊ आ पहिने पाऊ बाला हाल छलइ। दोसर भरल पेट मे पुछपाछ केनाई ठीक रहइ छइ। आब ओ इंतजार करऽ लगलाह.....उनकर घुरबाक।

घंटा भइड़कऽ बाद ओ साधू जाय लगलाह त कबीर उनका बजेलखिन।

- आहां गढ़ी माईकऽ पंडीजी थिकौंह?

- हं । छी नञि, छलौंह। आहांकऽ छी?

हमरा केना चिन्हइ छी? हम की आहांक बगल मे बइस सकइ छी?

- हं हं पंडीजी एकदम बैसु। आहांसँहम आशीर्वादी लेने छी।चिन्हु हमरा! कतेक बेर भेंट भेल अइछ।

कतबो जोर ओ साधू लगेला मूदा नञि चिन्ह सकलाह।

- आहां कोनो धरफरी मे त नञि छी? अइ साधू सबहक संग त नञि कतउ जयबाक अइछ?

-नञि नञि? ई सब त भोजनक संगी छइथ। अइ शहर मे भण्डारा लगइत रहइ छइ। जकरा पता लाइग जाइ छइ ओ दोसराकऽ सुचितकऽ दइ छइ। कियो ककरो संगी नञि छइ। पापी पेटक सवाल छइ, ततबे तक साथ छइ। देखबइ ने- दस मिनट मे खालीभऽ जाइत। सब अपन अपन अड्डा पर पहुंच जाइत।

- चलु हमर कमरा मे। ओतऽ आरामसँगप्प करब।

- हं हं। चलु।

दुन गोटे कमरा मे अयलाह। आब कबीर अपन परिचय देलखिन.......छक दं ओ साधू चिन्ह गेलखिन।

- आहां पंडीजीसँसाधू कहिया भेलऊं?

- नञि हम पंडिये जी छलऊं आ नञि साधुये छी। सब कर्मक फल

छइ।ओ जेना रखने छइथ.....जीब रहल छी। जहिया अरूदा पुरा भऽ जाइत, अपना लग बजा लेताह।

- हम त अइ सदन मे अबइत रहइ छी। आहांकऽ कहियो नञि देखलऊं।

- हमरे गल्ती। हम आहांक सोझा नञि अयलऊं।

- नञि नञि। से नञि कहइ छी। हम त हुजुम मे अबइ छलऊं। कयेक बेर बेशी लोकभऽ जाइ छलइ तऽ बिना खेने घुराअ दइ छलाय। आब आहां छी त एना नञि भगाइत।

- आब आहांक कहियो नञि भगाइत। निश्चिंत रहु।

कबीरकऽ हिनकर छायावादकऽ बात आर अतीत जनबा लेल उत्साहित कऽ रहल छलइन।

ई गढ़ी माई, नेपालक पंडीजी छलाह। कबीरक शहर मे लोक इनका अही रुपे चिन्हइन।कयेक टा हिनकर खिस्सा रहइन।

एक बेर एकटा अधिकारीकऽ प्रोमोशन बड्ड दिनसँबाधित छलइ। ई पंडीजी, जहियाकऽ तारीख कहलखिन, तहियो उनकर प्रोमोशन भेलइन। ओ अधिकारी इनकर चेलाभऽ गेल छलाह। पंडीजीकऽ रात्रि विश्राम उनके कतऽ होइन।ओ चाइर लाइन इनकर प्रशंसा मे लिखबो केने छलखिन। पडीजी ओकरा शीशाकऽ फ्रेम मे लगा कऽ अपन झोड़ी मे रखइ छलाह- कहला पर निकाइल कऽ देखबइ छलाह।

एकटा प्रतिष्ठित ब्यापारीकऽ धीयापुता नञि होइ छलइ त पंडीजीकऽ ओ अपना कतऽ बजेने छलाह।जे तारीख कहलखिन- ओही दिन बेटा भेलइ। ओ व्यवसाई अपन हाथक घड़ी खोइल कऽ पडीजीकऽ ईनाम मे देलकइन। पंडीजीकऽ हाथ मे उएह घड़ी बान्हल छइन।

अहिना कतेक इनकर भविष्यवाणीकऽ सत्य होबाक बात फैलल छलइ।

कबीरकऽ अपनो याद पड़ई छलइन जे एक बेर पंडीजी उनको कतऽ आयल छलाह। कबीर अपन पांच टा संगी संग बैठकखाना मे बइसल छलाह। मस्तीकऽ लेल पुछलखिन -" हमरा बारे मे किछु बताऊ।"

पंडीजी किछु काल मौन रहला उपरांत बजलाह- " आहांकऽ बिदेशक योग अइछ।"

-" बिदेशकऽ योग की! हम त जाइते रहइ छी- बीरगंज। नेपाल बिदेशे भेल नञि।" कहि कऽ कबीर अपन सब संगी संग हंसऽ लगलाह।

पंडीजी गंभीर होइत बजलाह-" से जे बिदेश होइ। इनका प्रबल योग छइन। आ आहां चारु लोककऽ नञि अइ। लिखा कऽ लऽ लियह"।

कबीरकऽ ओहिना मोन छइन जे उनकर संगी सबकऽ मोन हुस्सभऽ गेल छलइ- ई सुइन कऽ । कबीरक मां खुशीसँखुब अन्न पाइन पंडीजीकऽ देने छलखिन। तहिया बिदेश जयबाक अवसर कम्मे लोककऽ भेटई छलइ। आजुक जेकां नञि जे सब हरही सुरही मूंह ऊठौने बिदेश जा रहल अइछ।

पूजा पाठ, ज्योतिष,भविष्यवक्ता, हस्तरेखा पढ़अ बाला- ई सब कयेक प्रकार छलइ- कहाइ छलइ सब...." पंडिते।"

जेना सत्यनारायण भगवान, अनन्त आ सरस्वती पूजाकऽ लेल एक पंडित! मुड़न, जनऊ आ दुर्गा पूजाकऽ लेल दोसर पंडित! बियाह, गरूड़ पुराण आ श्राद्धक लेल तेसर पंडित !आ टिपइन, ग्रह महादशा आ एकादशी यज्ञ लेल अलग पंडित होइत छल। कियो लोकाचारकऽ ज्ञाता होइत छलाह त कियो ज्योतिषकऽ त कियो हाथक लकीरक त कियो ललाट पढ़अ बाला त कियो संस्कृतक विद्वान।

ई पंडीजी अइ सब मेसँकिछु नञि छलाह- मूदा जे कहइ छलखिन से सत्तभऽ जाइ छलइ। ईहो कहल जाइ पहिने जे एक निश्चित संख्या मे जे गायत्री मंत्रकऽ जाप कऽ लइया, ओकरा मे अतेक प्रभावभऽ जाइत छलइ जे ओ कहइ छइ- से भऽ जाइ छइ।ई गायत्री मंत्र पढ़ई छलाह वा नञि- संदेहे।

कबीरकऽ अपना बारे मे कहल गप्प सत्य भेलइन, तैं ओ आइ अतेक खोदबेद कऽ रहल छलाह।

पंडीजी कहलखिन जे लोक उनका पकइड़ पकइड़ कऽ अपन घरलऽ जाइन आ कहऽ लेल दबाव बनाबइन। ओहो जजमानक खुशीकऽ देखइथ, कहि दइ छलखिन। जखइन ओकरा अनुसार फल नञि होइ त इनका अनाप शनाप कहऽ लगलइन।

ई पंडीजी नञि ककरोसँकिछु मंगिते छलखिन आ नञि देला पर घुड़इबते छलखिन। बाद मे इनकर स्थिति खराब होबऽ लगलइन। जे बजेला पर जाइ छलाह पहिने , से बिन बजौने घरे घर जाय लगलाह। भीखमंगा जेकां लोक व्यवहार करऽ लगलइन।

" जे नगर राज करी, से नगर भीख नञि मांगी"- ईएह सोइच कऽ

ओ अउआइत बऊवाइत ऋषिकेश पहुंचल छइथ। अतऽ एकटा बनियाकऽ छोट छीन मंदिर छइ। ओइ मे ठाकुरजीकऽ दुनु सांझ पूजा करय छइथ। मंदिरकऽ संग चाइर टा दोकान सेहो छइ।ओकर किरायाकऽ किछु भाग पंडीजीकऽ सेहो भेटई छइन। ओही मे दुनु सांझ पूजा पाठ,प्रसाद, सांझ अगरबत्ती सब छइ। ज्यों भंडारा मे भोजनभऽ जाइ छइन तं ओइ पाइसँबढ़ियासँठाकुरजीकऽ भोग लगा लइ छइथ। ततेक ने पंडित ऋषिकेश मेभऽ गेल छइ जे "एक बुलाये, दस आये" बाला हाल छइ। ज्यों बनियाकऽ कम पाइ बाला बात कहथिन तऽ ओ तखने हटा देतइन। ओकरा त एहन पंडित चाही जे अइ स्थानक बदला किछू ओकरे दइ। भगवा वस्त्रकऽ अइ शहर मे चलती छइ आ "औल रुट पास " सेहो भलइ। कतउ जाय आबऽ मे टिकस नञि लेबऽ पड़ई छइन, तैं ई चोला ग्रहण केने छइथ। उजरा धोती मे तऽ धांई सने धअ लेतइन।पंडीजी समयक संग ढ़इड़ गेल छलाह।

सब बात बतबइत पंडीजी निर्मगनभऽ गेल छलाह। पहिले बेर कियो उनकर हाल पुछलकइन। जे हाथक लकीर मे खींचल रहइ छइ- से होइते टा छइ। जन्म आ मरण- ईएह सत्य थीक। पंडीजी भावुकभऽ गेल छलाह। मंदिर मे सांझ देबाक समयभऽ गेल छलइन।जाइत काल बजलाह- "आहां बहुत ऊंचाई पर जायब- हम आहांक प्रशस्त ललाट देख रहल छी। हम अइसँनञि कहलऊं जे आहां हमरा अहु हाल मे चिन्हलऊं, हम जे देख रहल छी- से कहि रहल छी।"

कबीर, पंडीजीकऽ भोजन लेल दिल्ली सदन वालाकऽ कहि देलखिन।जहिया आहांकऽ मोन करत आहां आइब कऽ भोजन कऽ लेब।

आइ राइत मे जखइन गंगा कात मे कबीर बइसलाह त उनका कोनो" राग " नञि सुनाई छलइन। खाली हहअ.....हहअ......हहअकऽ आवाज अबइ छलइन।पंडीजीसँभेंट होबा खातिर ई सब सृष्टि ड़इच रहल छलीह।

बुझेलइन जे आब ऋषिकेशकऽ अध्याय खत्मे जेकां छइन। अपन मोनकऽ कहलखिन- " हे कतउ आर चलु।" उईठ बिदा भऽ गेलाह- कोनो आर ठेकानाकऽ तलाश मे।

छक्का-पुराण (लघुकथा)

हारि कऽ जदु ठाकुर फैमिली कोर्ट मे केस फाइलकऽ देलाह। एतऽ सऽ ओतऽ , दौड़इत दौड़इत थाईक गेल छलाह। सोचने रहइत जे रिटायरमेन्टक बाद आराम करब, उल्टेभऽ गेलइन। आब त कतउ गेनाईयो उनका लेल अबग्रह। जेहो नञि चिन्हइ जनञि छलइन, ओहो साईकिल रोईककऽ " ओकर" की भेल, से पुछइत रहइ छइन। कतेक दिन नुकाकऽ रखितैथ। जाबइत संभव छलइन, नुकेबे केलाह। कानों-कान नञि बुझअ देलखिन।

"दोषी " त उयैह छथि। कोन मति मारलकइन, जे ओ "हां" कहि देलखिन। ओइसऽ बेसिये पाइ रमपुरा बाला दइ छलइन। ओ सेबो सत्कार नीक करितइन।ओकर बेटियो सुन्नञिर छलइ। लाल काकी कहइ छलीह, ई कथाकऽ लियह......जीतल रहब। नञि कयलाह। आब बुझु। अपनेसऽ अपन बेटाकऽ गर्दन पर तरुआइड़ चला लेलह। आब प्रायश्चित मे केस केलाह अइछ आ तारीख पर दौर लगा रहला अइछ।

जदु ठाकुर सरकारी अमीन छलाह। हाले मे रिटायर केलाह अइछ। पुरा परोपट्टा मे किनका कतेक जथा- जमीन छइन.........कतेक ओइ मे ओझराहा आ कतेक सोझराहा...........सबटा उनका बुझल छइन।

कयेक जमीनक मालिक सबकऽ सेहो नञि बुझल जे कोन जमीन कतऽ अइ। बेचऽ कऽ होइ वा दाखिल-खारिज करबाक होइ, बांट-बखरा होइ वा बदलेन होइ........ लोक जदु ठाकुरकऽ पकइड़ते छलाह। थोड़ बहुत मेहनताना सेहो उपरसँभेट जाइ छलइन। अही चक्कर मे त ओ फंसी गेलाह। बगलेकऽ गामक जोहन पाठककऽ दिअयदी बंटवारा मे ओ गेल छलाह। चालीस बीघासऽ उपर उनका जमीन छल। सब खतिहानी मरौसी जमीन छलइन। कोनो झंझट, कतउ नञि। असगर जोहन पाठक, आ उनकर बापो असगरूए। बाकी दिअयद सबकऽ त बीघा कि, आब कट्ठा मे बचल छइन। जखने जोहनक कतऽ सऽ कथा एलइन, जदु ठाकुर लुसफुसा गेलाह। भेलइन जे ई कुटमैतीभऽ जाइत त सब संपैत हमरे। ई नञि देखलाह जे जोहनकऽ चाइर टा बेटो छइन। किछु पतो ततो नञि केलाह। जानल घर छलइ। मोट पाइ देलकइन। सटसऽ "हं "कऽ लेलाह। पाइकऽ खुब छहर -महर भेल।

जदु ठाकुरकऽ बेटा मोहन आइ टी आइकऽ कऽ टाटा मे फीटर अइछ। डेरा डंडा सब भेटल छइ। पाइन -बिजली सब मुफ्तउआ। बिजली सदिखन रहिते छइ। ओतेक टा डेरा त उनकर बीडिओ साहेबकऽ सेहो नञि छइन।आब की छइ।जदु ठाकुरकऽ जमीन नञि, लेकिन अपनो नौकरी आ बेटोकऽ नौकरी। जोहनकऽ जमीन छइन , लेकिन नञि अपने नौकरी, आ नञि बेटे सब के। बेटा सब अबंड जकां भरिदिन मोटर साइकिल पर इमहरसऽ उमहर उधियाइत रहइ छइन। अखनो उनकर समाज मे सरकारी नौकरीकऽ बड़ड मोजर।ओइ मे टाटाक नौकरी, ई त पुछबे नञि करू। सरकारी

फेल ओकर सामने। बेटाकऽ ओतऽ सब "फीटर बाबु" कहइ छइन।

बियाह दान सब संपन्न भेलाक बाद, जदु ठाकुरकऽ पुतोहु छह महीने सासुरे मे रहल।हर चारिमे दिन जोहनक एक ने एक बेटा अबिते रहलइन। हर जतरा मे खुब सर - सनेश सब सेहो अबइ। जदु ठाकुर खुब चपचप सनेश सब खाई छलाह। आब जोहन पाठकक समईधभऽ गेलाकऽ कारण अमीनी लेल बऊयेनाई सेहो छोड़ि देलाह। घर मे रहलाक कारण चिकनाअ गेल छलाह । कनी कनी धोईध फुइटनाई शुरूभऽ गेल छलइन।

छह महीनाक बाद मोहन कनियाकऽ टाटालऽ गेलाह। कनिया डेरा पर जाइ लेल तैयार नञि छलइन। जदु ठाकुरकऽ खुशी भेलइन जे कतेक नीक पुतोहु जे गाम मे रहअ चाहइत अइछ ।मोहनकऽ त पहिनेहो किछु गड़बड़ बुझाई छलइन। ओतऽ अपन दोस-महीम आ अस्पतालक डाक्टर सबसँकिछु शंका समाधान केलाह। कनियाकऽ डाक्टर अनबाक लेल कहने छलैन।

डाक्टर जरूरी जांच सब केलकइन। मोहनकऽ कहलकइन जे ई पुर्ण स्त्री नञि छथि।

मोहन माथ पकइड़कऽ   बइस रहलाह। आब करताह की। कनियो कानह लगलइन। कहलकइ जे ओ अपन मायकऽ   कहने छलइ। ओकर कियो नञि सुनलकइ। बियाह करा देलकइ।

दोसरो डाक्टरसऽ   मोहन, कनियाकऽ   देखेलाह। ओहो ईएह बतेलकइन। कनिया मे पुरूखक बेशी लक्षण छलइन। लक्षण की छलीहे पुरूख।

मोहनक सार सब एहन अबंड्ड आ बदमाश सब छलइन जे ओकरा सबसँजबरदस्ती किछु करा नञि सकताह।

किछु महीनाक बाद कनियाकऽ   अपन छोट भाइ संग नैहर पठा देलाह। जदु ठाकुरकऽ   धीरे-धीरे सब सच्चाई पता चललइन।

मोहन दुखसँआधाभऽ   गेल छलाह। जदु ठाकुरकऽ   धोईध कतऽ सटईक गेलइन, ओकर पते नञि। दुखित रहअ लगलाह। डाक्टरसऽ देखेलाह। जांच सब भेलइन। बीपी, चीनी आर कथी कथी निकललइन। रोज भूखले पेटे गोटी सब खाई छथि, तखइन नित्य क्रिया कर्म करय छथि।

जोहन पाठक सबकऽ त सच्चाई बुझले रहइन।ओ सब गुमकी लगा लेने छलाह। जदु ठाकुरकऽ सेहो मोहनक सार आइबकऽ कहि गेल रहइन, जे चुप रहबाक छइ। ज्यों बाजब तं घरक भीत भीत नोइच लेब। बुझ्झ लियह।

ईएह गुमकी जदु ठाकुरकऽ तरे तरे जौंडिस जकां सुखा रहल छलइन। दवाईक डोज बढ़िते जा रहल छलइन।

साल भइड़ त गुमकी सब लागल रहल- अइ विषय मे। फेर जदु ठाकुरकऽ नञि रहल गेलइन। ओ जोहन पाठक कतऽ प्रस्तावलऽ कऽ अपने गेल छलाह -

जे बिबाह मे जोहन पाठक गिनती आ खर्च कयलाह अइछ , से वापसलऽ लैथ। अलगा-अलगी मोहनकऽ भ जाइन।

जोहन त अपने चुप्पे रहलाह। उनकर छोटका बेटा मारऽ मारऽ उठलइन जदु ठाकुर के। ओ तऽ आर लोक सब पहुंच गेलइ जे जदु ठाकुरकऽ जान बंचलइन।

सऊंसे गप्प पसइड़ गेल छलइ।दु बेर पंचइती सेहो भेलइ।बेशी लोक अइ पंचैतीसऽ अलगे रहल। जदु ठाकुर सब डाक्टरी जांचकऽ

रिपोर्ट, पंच सबहक सामने रखलाह। नतीजा किछु नञि निकललइ। जोहन पाठक सबहक कहब छइन जे इनके बेटा मे कमी छइन। आर दहेज चाहियइन-ओकरे लेल ई तेल बेल केने छथि। हमर परिवारकऽ जे बेजती भेल अइछ ओकर बदला हम सबलऽ क रहबइन।के, ककरा आ कोना जंचतइ कि की सच थीक!

शुरू मे त जदु ठाकुर डराइत छलाह। आब सऊंसे घरे घर आ गामे गाम लोक बुझिये गेलइ त आब कथीकऽ अढ़क काज। जे छइ से छइ- " छक्का बाला लीला", ईएह ने!

मोहन अलग होयबाक लेल मोकदमा केने छथि। तारीख पर तारीख पइड़ रहल छइन।

देखू ...... की फैसला......आ कहिया अबइ छइ।

ई अजगुत कथा त आइ तक एना सुनबा मे नञि आयल छलइ। तरघुसिया भेलो होइ लेकिन एना हो- हल्ला नञि भेल छलइ।सब अकरा " छक्का" बला पंचैती कहइ छइ। समाज आ कोर्ट, दुनु जगह जदु ठाकुरकऽ दौड़इत दौड़इत चट्टी घिसा रहल छइन।

दाई- माई सब सेहो कहइत रहइ छथिन- " धुर! एहनो कतउ भेलइ अइछ। जीबी त कीऽ कीऽ नञि सुनी।"

अकरे संग जखइन दु बुढ़ीकऽ नजर मिलइ छइन....... ओ किछु आरे ईशारा करय छइ । ई कोनो पहिले घटना नञि भेल छइ। सदौंसऽ होइत रहलइ........ पहिने अकरा घरक छरदवालीकऽ भीतरे दबा देल जाइत छलइ।आब जुग आ जमाना बदइल गेल छइ........नुका छिप्पीकऽ समय चइल गेलइ ....जे सच छइ-से सोंझा छी।

जदु ठाकुर सबके अपन दुखड़ा सुनबइत चइल जाइत रहइत छथि। लोककऽ त चर्चा मे मजा अबइ छइ, मूदा गुड़क माइड़ त धोकरबे बुझई छइ।

लोक जदु ठाकुरसँपुछइ छइन- आहां कोना बुझलियई?

अच्छा---

....

ई भेलइ----

....

ओहो------

अहिना कतेक गप।

ई सब जाइन बुइझकऽ ओझरेने छइन, नञि त कहिया ने अलगा-अलगी भऽ जइतइ।

छक्का पुराण पर सब नजर गरौने अइ। देखू अंतिम अध्याय कहिया बहराई छइ।

<u>सरप्राइज (लघुकथा)</u>

(गाम मे रहइत मां आ विदेश मे रहइत बेटाकऽ बीच भेल फोनवार्ता पर आधारित- चिट्ठी पत्रीकऽ जमाना चइल गेल।)

कोना छें!- बेटा बजलाह।

ठीक छी!- मां बजलीह।

- आर कोनो विशेष।

- नञि सब ठीक-ठाक।काइल नञि फोन केलह।

- हम त कहनेहे छियउ जे शइन- ड़इबकऽ फोन करबऊ।

- दु बेरसँशइन कऽ फोन अबइ छलइ, तैं भेल जे अहु बेर शइनकऽ आइत।

- ओ त जहिया समय भेंट जाइया, तहिया कऽ दइ छियउ। अइ बेर शइन कऽ समय नञि भेटल तैं ड़इब कऽ केलियउ।

दोसर जे समय मे पांच घंटाकऽ अंतर छइ- दुनु जगह मे। तकरो देखऽ पड़ई छइ।

- हम त सब बुझिते छी जे बऊआकऽ आफिस मे शइन कऽ काज बेशी भऽ गेल हेतइन- तैं फोन नञि केलाह अइछ।

जनञि नञि छउन बाबु जी के! काइलसँचाइर बेर पुईछ लेलाह- बऊआकऽ फोन नञि आयल.......बऊआकऽ फोन नञि आयल। मोन घोर भऽ गेल सुनञित.......सुनञित। कहलियइन जे खाली फोन केनाई काज थोड़े छइन। आफिस मे नञि फुरसत भेल हेतइन। देखइत नञि छेलियेन...... दिल्ली मे कत्ती राइत कऽ हारल थाकल अबइ छलाह।

हमर बऊआ त विदेशोंसँफोन कऽ दइ छइथ। रामजी बाबुकऽ देखियउन- पटने मे बेटा पुतोहु छइन। कहियो फोन नञि। कनिया उनकर हक्कल नोरसँकनञित रहइ छइथ।एहन ने नबकी कनिया सब आयल छइ......काबिले आन्हर। हमर त पुतोहूओकऽ फोन अबइत अइछ।

- सब गप तुहें बजई छें। सब बुझिते छें, तखइन परेशान नञि होबाक चाही।

-नञि नञि। हम कियैक परेशान होयब। एहन बेटा भगवान सबके

देथिन। आइ काइलकऽ माय बापकऽ अतेक खोज पुछारी करइत अइछ। अतइ देखऽ ने- सब बुढ़ा-बुढ़ी सब असगरे छइथ। जखइन कागज पर अंगुठा लगबऽ कऽ रहइ छइन, तखने गाम आ माय बाप याद अबइ छइन।

-आर कहऽ । मोन ठीक रहइ छऊ। दबाई समय पर खाई छैं ने!

-हं हं। हम सब दवाई समय पर खाई छी। ओइसँपहिने एक गिलास दूध सेहो पीबइ छी।

याद हेतऽ " मड़र"। ओकरे पोता, खटाल खोलने अइछ। उएह आब बड़का दूधक कारोबारीभऽ गेल अइछ। एतऽ ओ अपने दूधदऽ जाइत अइछ। कहलकइ जे ई हमर सबहक पुरान दरबार अइछ। बाकी टोल मे ओकर आदमी दूध लऽ कऽ अबइ छइ। ओहो अतेक इज्जत दइत अइछ तं हमहु जखइन ओकरा नब गाय खरीदऽ कऽ रहइ छइ- जे कहइत अइछ..... पाइदऽ दइ छियई। दूध मे ओ मिनहा कऽ दइत अइछ।

ओ अइ दुआरे नञि अपने अबइत अइछ जे पुरान दरबार छइ- ओ अइ दुआरे अबइ छऊ जे तुं एडवांस मे पाइ दइ छही!

-भऽ सकइ छइ। बोली बानी ओकर बड्ड बढ़िया छइ।हमरा त कहियो दूध नागा नञि केलक।

- बाबूजीकऽ मोन ठीक छइन?

ओना तऽ ठीके छइथ लेकिन कफ्फक शिकाइत रहिते टा छइन।

- ततेक ने एंटी बायोटिक खेने छथिन, जे दवाई असर नञि करय छइन।

- दिल्ली बाला जे डाक्टर ओइ बेर दवाई देने रहइन, ऊयाह पर्ची देखा कऽ बीना फार्मेसीसँदवाई मंगा देलियइन। ओइसँकिछु आराम छइन।

" दही" दुनु सांझ खेनाई छोड़ई नञि छेथिन।कऽ बुझेतइन।

गरम दूध मे हड़इद मिला कऽ पीला पर आराम होइ छइ- लेकिन उनकाकऽ कहतइन। मोन होइ छइन त पीताह। नञि त ओहिना छोड़ि देताह।

हमहुं तऽ बुढ़ेलऊं! अतेक हुच्ची हमरा सऽ आब नञि होइया। तुहें कखनो बुझईयउन जे दही छोड़ि दैस आ गरम दूध पीबइथ।

अखइन नञि कहियउन- नञि त हमरे बिगड़ता जे बऊआकऽ हमही कहलियइन।

- अच्छा बाद मे कहि देबइन।

- एकटा खुशखबरी कहनाई त बिसईरे गेल। तुं जे कटहर रोपने छलह, से अइ बेर फइड़ गेलह। दु बरखसँमोंछी होइ छलइ- लेकिन कटहर नञि होइ। अइ बेर फरलइ। हमहु ओकर जइड़ मे माछक खोंईचा सब गड़बाअ देने छलियई।

अइ बेर कम फरलइ। अगिला बरखसँबेशी फरतऽ । हम अइ बेर बुइझ गेलियई।कटहर, गिरह पर फड़ई छइ। पहिनेहे नीचा बला डाईढ़ सब पंगबा देबइ।

- तु तं एकदम गिरहथभऽ गेल छंय। नारियल सबहक की हाल?

- ठीक छअ। बीच मे गड़बड़ा गेल छलइ। बतिये मे नारियल सब ढनढना कऽ खसऽ लागल छलह। चुट्टी लाइग गेल छलइ। दवाई स्प्रे भेलइ। आब जे बइच गेलह, से ठीक छह।

- दु चाईरो टा बचलइ की नञि?

- दु चाइर टा किअए? घुंघरू जेकां अखनो लुधकल छअ। ई बुजलहक जे स्प्रे केना दिबेलियई?

तुं जे दिल्लीसँस्प्रे वाला मशीन अनने छलह, से राखल राखल खराब भऽ गेल छलह। दु सै टाका लागल ओकरा ठीक कराबऽ मे।

- आम सब?

- ओ तोहर बाबूजीकऽ जिम्मा छइन। जोगिया अपन पाइन ताइन दइत रहइ छअ।सब ठीक छअ।

ई कहऽ ने कहिया " ऐबऽ "?

- देख! निश्चित नञि अइछ।

- अइ बेर बड्ड धान गहुम भेल छअ। बटाईदार नीक पकड़ा गेल अइछ। बाकी त सबहक खेत परती परल छइन। उनकर सबहक बोली एहन खराब जे कियो बटाई लेबइ लेल तैयार नञि। हमरा

कतऽ सब बटाईदार तैयार।

लेबानो जोगर धान तोहर कनिया काकीकऽ नञि भेलइन। हमही पठा देलियइन। बड्ड आशीर्वादी दइ छलखुन। बेटा सब एहन कुपात्र सब भऽ गेल छइन से बेचारो की करतीह?

- की कुपात्र?

- नञि बुझल छअ! निशा करय छइन। माय बापकऽ एक दशा नञि छोड़ई छइन। जेहन तोहर गाड़ी छलह दिल्ली मे, सैह गाड़ी खरीदने छइन। आमदनी एक पाइकऽ नञि, आ शौक सब साहबी!

- कतऽ सँपाइ एलइन?

- कतऽ सं! तोहर गाम मेकऽ ककरासँकम। जमीन बिका रहल छइ आ फुटानी बइढ़ रहल छइ। दिल्ली बम्बइ जेकां लोकक स्टेन्डर भऽ गेल छइ।

लोक त मूंहे पर कहि दइ छइन........हमर बऊआ कमा कऽ कीनलक गाड़ी.....आ ई सब गंवा कऽ । कतउ छजई छइन दलान पर गाड़ी। हमरा सबकऽ ओना शहर बजार जाय मे सहुलिइत भऽ गेल अइछ। सब घर मे गाड़ीभऽ गेल छइ......आ

सब एक समाद मे गाड़ी पठा दइ अइछ। बड्ड मानञि अइछ हमरा। कनिको नञि बुझाइत अइछ जे अपन गाड़ी नञि।

आब जे तुं स्टेशन एबह त रिक्शा पर नञि आबह पड़तह।

- वाह। बहुत विकास भेलइ। पहिने त रिक्शो बालाकऽ खुशामद करऽ पड़इ छइ।

- देखऽ ने। एकटा आर गप सब बेरसँबिसरा जाइत अइछ। ओ जे दुमहला पर तोहर बाबूजी पोता- पोती लेल घर आ बिदेशी बाथरूम अलगसँबनबौने छलखुन....... ओ बंदयछलह......तौं सब एबे नञि केलह। ओइ घरकऽ साफ सफाई करेलखुन आ बाबूजी अपने ओइ बाथरूम मे जाइ छथुन। ओइ बाथरूम मे गीजर छइ......बाबूजी गरमे पाइनसँनहाइ छथुन आ थोड़े काल बच्चा बाला घर मे आरामो करय छथुन।

ओना त ठेहुन धेने रहइ छइन- लेकिन कोठा पर चईढ़ जाइ छइथ।

हमरा त नञि जाअ होइया। तुं सब एबऽ त भऽ सकइत अइछ जे तखने चढ़ी।

- आइ तऽ बड्ड गप्प भेलइ।

- अखइन आरो कतेक गप सब अइछ। तुं एबऽ तखइन कहबऽ। एकटा राज मिस्त्री आ दु टा जाना पिछला तीन महीनासऽ काज कऽ रहल अइछ। बहुत काज भेल अइछ.......आ बहुत बाकी अइछ।

अखइन शुद्धक समय छी......एहन ने भारी लगन छइ जे जन सब नागा बड्ड करइत अइछ।

- आनंद लेल काज करबिंहे। तनाव लऽ कऽ नञि!

- नञि नञि। कोनो चिंता नञि।

- पाइकऽ काज होऊ त कहिहें!

- पाइकऽ कोनो काज नञि अइ। बस तुं सब जल्दिये आइब जईहअ......." सरप्राइज" रखने छियह।

- ठीक छइ। जल्दिये एबऊ।

बऊआकऽ पता लाइग गेल छलइन जे उनकर मां पुरना घरकऽ नबका डिजाइन मे बदलबा देलखिन अइछ। जे उनकर मांकऽ होइन जे जन मजुर सब उनकर बाबूजीकऽ हां मे हां मिला कऽ ठकइ छइन..........आब बाबूजीकऽ भऽ रहल छइन जे जन सब इनकर मांकऽ हां मे हां मिला कऽ ठकइ छइन। असल मे कियो ककरो नञि ठकइ छइ..........सब अपन बऊआकऽ स्वागत अपना ढंगे कऽ रहल अइछ।

बऊआकऽ " सरप्राइज" देखबऽ कऽ इंतजार भऽ रहल छइन।

अफेयर (लघुकथा)

दासजी अइ शहरक कालेज मे लेक्चरर छइथ। लोक उनका परफेसर साहब कहइ छइन। सफाई दइत दइत परेशानभऽ गेलाह....लोक परफेसर साहब कहनाई नञि छोड़लकइन। ओ कहइ छलखिन जे हम लेक्चरर टा छी अखइन...... प्रोफेसर बड़का पद होइ छइ.........पुरा विश्वविद्यालय मे आंगुर पर गिना जाइत जे केऽ सब छैथ प्रोफेसर.... हम नञि छी। मूदा लोक तऽ उनका परफेसर साहब कहनाई नञि छोड़लकइन। आब ओहो अपनाकऽ माइन लेलाह। कतबो दलील देलखिन जे दरोगा आ पुलिस कप्तान जेना अलग अलग होइ छइ.........ओहिना लेक्चरर आ प्रोफेसर........ कोनो काज नञि अयलइन।

अइ शहरकऽ ई मिजाज छलइ- सिपाहीकऽ हवलदार, किरानीकऽ बड़ा बाबु, दरोगाकऽ इंस्पेक्टर, वकीलकऽ पी पी साहेब, मास्टरकऽ हेडमास्टर साहब, बैंकक बाबुकऽ मनेजर साहब, रेलवेकऽ पैटमैनकऽ स्टेशन मास्टर, छुटभैया नेता सबकऽ विधायकजी, दोकानदार सबकऽ सेठजी, बदमशवा सबकऽ भैयाजी आ बाकी सब शक्तिशालीकऽ चौधरी साहब कहल जाइ छलइ। पहिल लोक दासजी नञि हेताह - जिनका पदकऽ बढ़ा कऽ कहला पर अनकट्ठल लागल हेतइन, लेकिन जे रेवाज छइ से छइ। ई रेवाज नञि एक दिन मे बनञि छइ आ नञि एक दिन मे टुटई छइ। दासजी अकरा अवधाइड़ लेलाह।

आब दोसर परेशानी उनकर सामने मुंह बवने ठार छलइन। "दास" टाईटिल देख कऽ पहिने देवानजी सबकऽ भेलइन जे ई उनके समाजकऽ छइथ। पछाइत गप्प सबसँपता चललइन जे ई त " बंगाली" छियइथ। दासजीकऽ ज्यों कियो " बंगाली" कहइ छलइन तं तिलमिला जाइ छलाह। ई सत्य थिक जे उनकर प्रपितामह पोस्टमास्टरक नौकरी करइत बदली भऽ कऽ कलकत्तासँदरभंगा आयल छलाह। फेर ईएह शहरकऽ अपन घर बना लेलाह।अतऽ रहइत चारिम पीढ़ी दासजी छइथ। ओ त घरो मे मैथिलिये बजई छइथ। बंगला बुइझ जाइ छइथ, लेकिन बाईज नञि पबइ छइथ।ई बाहरे- बाहर रहलाक कारण बुझाईया भेल छइन। इनकर कहब छइन जे या तऽ "मैथिल " कहू या "बिहारी " कहू.... बंगाली त कोनो हाल मे नञि चलत। दासजी , बंगाली कहला पर खिसियाई छलाह, तैं कयेक गोटे बिखाहे " बंगाली" कहऽ लगलइन।

पढ़ल लिखल लोककऽ त सब समाज अपना मे मिलेबाक प्रयास करय छइ। ओइ मे ई भ्रमित करऽ बाला नामक आगु " दास" टाईटिल- नब नब नेवता दिअयबइत रहइ छइन। अइ शहर मे किछु घर " केवट" जाइतक लोककऽ रहइ। ओकर सबहक टाईटिल सेहो " दास" छलइ- ओ सब दासजीकऽ अपन समाजक मानञिन। बड़ड अधिकारसँइनका ओ सब अपन पर्व त्योहार मे बजा कऽ लऽ जाइन।

किछु आर दास परिवार ओइ शहर मे रहइ। ई सब अलग तरहक चंदनक टीका माथा पर करय। अलगे चिन्हासी ओकर सबकऽ रहइ। माछ माउस ओ सब नञि खाई। कने धार्मिक बेशिये ओइ सब घरक सब सदस्य होइ। नबो लोककऽ दीक्षा करा कऽ अपन समाज मे जोइड़ लइ छल। अतऽ त नामही मे दास लागल छलइ। ईहो सब " दासजी" पर बोर फेंकलकइन।

दासजी, महानगरसँपढ़ल - लिखल- गुणल छलाह।ओ सबसँसमभाव मे मेलजोल रखइ छलाह।जाइत पाइत- धर्म, ऊंच- नीच, धनी-गरीब सब मे ओतेक विश्वास नञि करय छलाह। छोट शहर मे रहबाक उनकर पहिले अनुभव छलइन। उनकर नियुक्ति सरकारकऽ कमीशन द्वारा भेल छलइन।जतऽ पठा देलकइन, ओतऽ खुशी खुशी आइब गेलाह।जई विषयक, जतऽ जगह ख़ाली रहतइ, ओतइ ने उनका पठेतइन- सब बुझई छलाह।

ओइ समय मे बेशी प्रोफेसर सब त उएह होइ छलाह जे मैनेजिंग कमेटीकऽ सदस्यकऽ परिवारक होइत वा लगुआ भगुआ वा ककरो अनुमोदन वा पाइ दऽ कऽ ।जे बेशी पढ़ल से प्रोफेसर, कम पढ़ल से किरानी आ बिना पढ़ल सब चपरासी मे रजिस्टर मे नाम चईढ़ जाइ। नब नब कालेज खुजई छलइ.....सब लोककऽ बहाली होइ........फेर सरकारी कराबइ लेल प्रयास शुरू। अइ मे सब खुश -खुश रहइ छल। बिधायक, कलक्टर, मंत्री, शिक्षा विभाग, ठेकेदार, व्यवसाई, पाइ बला सबहक वार्ड रहइ- तैं ककरो

कोनो शिकाइत नञि। शिकाइत ककरा रहइ छल- ओ छलाह विद्यार्थी! उनकाकऽ पुछइया।

दासजी अपनाकऽ अइसँअलग बुझई छलाह। ओ लोककऽ फरीछा कऽ कहइ छलखिन-" हम कमीशन बाला छी"।

लोक तहिया की अखनो "कमीशनक" मतलब "देबलेब" बुझई छइ।ओकर आंईखक चमकी देख कऽ दासजी बुइझ जाइ छलाह जे ई गलते बुझलक। जेतबा ओ बुझेबाक प्रयास करय छलाह- ओतबे ओकरा" देबलेबसँभेल नौकरी" पक्का बुझनाई लागऽ लगइ छलइ। अंत मे हारि कऽ दासजी फरिछेनाई छोड़ि देलाह। जे बुझबाक होइ से बुझय, हम जे छी, से छीहे।

दासजी विज्ञान विषयक प्रोफेसर छलाह। तहिया ट्युशनक बड़ड चलती छलइ। प्रोफेसर सब कालेज मे अइ दुआरे नञि पढ़बइ, जे पईढ़ जाइत तऽ ट्युशन कोना चलऽ त।दासजी कालेज मे बुझा कऽ पढ़बतिन आ ऊपरसँजेकरा नञि बुझाई, ओकरा अपन घरो पर बिना पाइ लेने पढ़बतिन। पहिने त सबकऽ भेलइ जे विद्यार्थी फसबंकऽ त ई कोनो चाइल त नञि छइ- लेकिन साल बितलो पर जखन पाइ नञि लेलखिन, तखइन सब विरोधीकऽ मुंह मे ताला लाइग गेलइन।

एकतऽ मुफ्तउआ पढ़ाइ, उपरसँनीक सेहो- विद्यार्थीकऽ जमघट

होबऽ लगलइन।

कय विषय पर तऽ दासजी "व्यवस्था"कऽ खिलाफ खुइल कऽ कालेज मे बजितो छलाह। हरदमसँसत्ताकऽ ललकारऽ बाला लोक, छात्र सबकऽ बीच मे लोकप्रिय रहल अइछ। दासजी बेश चलती बाला प्रोफेसर भऽ रहल छलाह।अहुसँपैघ जे गुण रहइन - ओ छलइन " उत्सव/ सभा/गोष्ठी आयोजित करऽ के"। छात्रक फौज इनका संग छल- वक्ता नीक छलाह- आयोजन कर्ता नीक छलाह- मुफ्त मे घर पर पढ़बइ छलाह- आर आर गुण सब।

इनकर प्रसिद्धि अइ शहरक स्थापित प्रोफेसर सबकऽ विस्थापित करऽ लगलइन। ओना मैनेजिंग कमेटीकऽ कृपा पात्र सबकऽ पढ़बऽ कऽ जगह "प्रबंधन" सदौंसँप्राथमिकता मे रहलइन। कोनो भी विश्वविद्यालयकऽ सुची उठाअकऽ ताकु- सब अहने लोक प्रशासनिक पद पर भेटताह। ई सब हक एकटा वर्ग होइ छइ। सब एकदोसराकऽ "वेलफेयर" करय छइ। ज्यों कियो वेलफेयर नञि करऽ बला आइब गेल त सब मिल कऽ ओकर " फेयरवेल" कऽ दइ छइ। अतऽ ईएह भेल जा रहल छल। दासजीकऽ प्रसिद्धिकऽ ल कऽ इनकर सबहक दोकनदारी बन्न होबाक कगार पर पहुंच गेल छलइन। दासजीकऽ खिलाफ कय गोटे एकजुटभऽ गेल छलाह। मौकाकऽ तलाश मे छलाह। आखिर भेटिये गेलइन।

दासजीकऽ घर पर पढ़अ बला विद्यार्थी मे बसंत दास सेहो छल। ई बसंत ओतुके केवट टोलीकऽ छल। ओना त केवट टोली मे कियो सुभ्यस्त नञि, लेकिन बसंतकऽ परिवार त सबसं गरीब। बसंत पढ़अ मे तेज छल, तैं दासजीकऽ नजर मे आयल। ओ

पढ़बऽ कऽ अलावा किछु आर्थिक मदद सेहो बसंतकऽ कऽ दइ छलखिन। अकर बदला मे बसंत अपने मोने हिनकर घरक टहलुआ बाला काज जेना- तर तरकारी अननाई, बच्चाकऽ खेलेनाई, मेला ठेला घुमेनाई, बजार हाटक काज ईएह सब हल्लुक फल्लुक कऽ दइ छलइन। बसंतक माय बापक लेल त दासजी आ हुनक परिवार देवता तुल्य छलइन। हालांकि कयेक बेर दासजी, अपन कनियाकऽ मनो करय छलखिन- बसंतकऽ काज अढ़बऽ सं, लेकिन बसंत नञि मानञि छलइन। अपने आगु बइढ़कऽ काज कऽ दइन। ओना बड़ड काज त छेबो नञि करय- कोनो कुटिया पीसियाकऽ सवाले नञि त काजे कोन। ईएह- इमहर ओमहर वाला।

दासजीक कनिया अणिमा सेहो प्रोफेसराइनकऽ पदवी भेटलासँखुश रहइ छलीह। दु टा छोट छोट बेटा छलइन- पांच बरखक अखिल आ दु बरखक निखिल। अखिल स्कुल गेनाई शुरू केने छल। दुनु बच्चा बसंतक संग खुब रितीया गेल छलइन। ओ सब बसंतक संग ओकर घर सेहो चइल जाय। बसंतक माय सेहो दुनु बच्चाकऽ जानसँबेशी मानञि छलीह।अणिमा अपुर्व सुन्दरी त नञि छलीह लेकिन भरल भरल देह छलइन, आंईख बड़ड तेज, केश बरकी टा आ चेहरा रमणगर रहइन। ओहोसँबेशी जे हंसमुख स्वभावकऽ छलीह। विद्यार्थी सबसँसेहो हंसी ठठ्ठाकऽ लइ छलीह। विद्यार्थी सब सेहो बड़ड आदर करयन। दासजी जहिना गंभीर ओहिना मजाकिअए अणिमाजी। सब कहइ जे दासजीकऽ हिस्साकऽ हंसी कनिया मे आयल छइन। हंसी खुशी दिन ससड़इ छलइ।

अखिल बीमारभऽ गेल छलइन। डाक्टरकऽ ईलाज चइल रहल छलइ। देह मे किछु दाना जेकां निकलल छलइ। अणिमाजी त पहिले बेर एना दुखित बच्चाकऽ देखने छलीह। बसंतक माय सेहो एलखिन जिगेसा मे। ओ अखिलकऽ देखते कहलखिन -ई त " कोदबा" छइ।

अणिमाकऽ अकर अनुभव नञि छलइन। ओ कहलखिन-

ई तऽ आब कम भेलइया। डाक्टर कहला जे तीन चाइर दिन मे पुरा ठीक भऽ जेताह।

बसंतक माय बजलीह- डाक्टर जे बाजय, अइ मे नीमक पात छुआबऽ पड़त।

- अच्छा हम डाक्टर साहबसँपुईछ लेबइन।

- "हं । अपन पुईछ लेबइन।" बसंतक माय बजलीह।

फेर भेलइन जे नब जमानाकऽ लोकबेद छइथ। अपन जे नीक बुझेतइन से करतीह। इनका जे फुरेलइन, अपन कहि देलखिन।

अइ गपशपकऽ समय बसंत ओतइ ठार छल। ओकरो एकबेर "कोदबा" भेल छलइ- ओइ मे नीमक पात ओकर देह पर राखल गेल छलइ। तखइन ओ ठीक भेल छल।

अखिल दुखित भेलासँकमजोरभऽ गेल छलइ। बसंत , अखिलकऽ

मानबो बड़ड करय छलइ। साईकिल पर सऊंसे शहरकऽ कैक चक्कर ओ अकरा घुमेने अइ। बसंतकऽ भेलइ जे नीमक पातसँअखिलकऽ छुआवल जाय त ई ठीकभऽ जेतइ। ई मोन मे अबिते ओ ओतऽ सँसाईकिललऽ कऽ बिदा भेल।

ओकरा ई अंदाजे नञि छलइ जे ओकर शहर मे अतेक बदलावभऽ गेल छइ। पहिने कतेक ने नीमक गाछ चारू कात छलइ। आइ ताकऽ निकलल, त कतउ देखेबे नञि करय। कतऽ बिलाअ गेलइ नीम सब। तकइत आगु बढ़ल। दु ठाम नीम गाछ भेटबो केलइ- तं ओइ गाछक मालिक पात तोड़असँमना कऽ देलकइ। एकाध टा आर ठुठ नीमक गाछ भेटलइ- जेकर सब डाईढ़ पात लोग दतमइन आ खरिका मे सुड़डाहकऽ देने छलइ। आगु बढ़ल जा रहल छलाय बसंत। आइ ओकरा बुझेलइ जे अपनो शहरसँओ दुरभऽ गेल अइछ। नीम सन छोट छीन गाछ तककऽ ओकरा ठेकान नञि।कतऽ ओकर ध्यान रहइ छलइ- ओकरा अपने पर हंसी आबइ।

अहिंना ओ पहुंचल स्टेशन गुमटीक बाद , बंद चीनी मिलक गोदाम लग। ओ खंडहर जकांभऽ गेल छलइ। पहिने ओतऽ ट्रकक लाइन लागल रहइ छलइ। ओतऽ पहुंचला पर एक फंका चीनी ओहिना ड्राईवर खलासी सबदऽ दइ। भीड़ लागल रहइ छलइ ओतऽ । ओतऽ चाहक दोकान सेहो छलइ- जे मंगनी वाला चीनीसँबनञि। सब ट्रक वाला दु चाइर किलो ओहिना ओ चाहक

ठेहावालाकऽ द दइ। सब खत्म। बियाबान जंगल जेकां लगइ छइ। आइ ओ देखलक जे गोदामक देवार मे पीपरक गाछ सब भऽ गेल छइ।

अपन दिमाग पर जोर दइया बसंत- देखू हम आयल छलऊं नीमक पात लेल......पीपरक पात देख रहल छी। गोदामक पछुआइत मे एकटा नीमक गाछ पहिने छलइ। ओ सब ओकर खसलका फर नीमरी खाई छलाय आ तखइन उपरसँजं चीनी भेंट जाइ त" तींता मीता" स्वाद ओकरा सबकऽ कहइ। बड़का नीमक गाछ छलइये। नीचा बाला ठाइड़ नञि छलइ लेकिन ऊपर पात छलइ।

साईकिल गोदामक आगु मे बसंत लगेलक आ पाछु चइल गेल -जिमहर नीमक गाछ छलइ।

दासजी कतऽ सँजे बसंत निकलल, ओकर बाद ओ अपन घर नञि पहुंचल।ओ कतऽ गेल? ओकर घरक लोक दासजी कतऽ आयल- एतऽ सँत ओ तखने चइल गेल छलाय। सब जगह ताकल गेलइ। कतउ नञि भेटलइ। एक दु गोटे कहलकइ जे नीमक पात लेल आयल छल- लेकिन मना केला पर चइल गेल।ओकर साईकिल गोदामक बाहर भेटलइ। ओकर बाद कोनो खबर नञि।

अंत मे हारि कऽ थाना मे रिपोर्ट लिखावल गेलइ। पुलिस घरक

लोक, दोस महीम, विद्यार्थी आ दासजी सबसँपुछताछ केलकइ। आब ई त सत्त बाहर आइब गेल छलइ जे दासजी कतऽ सँबसंतकऽ बड़ड हेमक्षेम

छलइ।

आब दासजीक जे विरोधी लोक सब छल- से अइ घटना मे हवा देबऽ लगलइ। ओ सब हल्ला उड़ा देलकइ जे अणिमाजी आ बसंत मे नाजायज रिश्ताभऽ गेल छलइ तैं प्रोफेसर दासजी, बसंतकऽ मरवा देलखिन। ई बात पुलिसकऽ सेहो पता लगलइ। ओ दासजीसँपुछताछ करऽ लगलइन। दुनु गोटेकऽ थाना मे राखल गेल। अलग अलग पुछाई भऽ रहल छलइन। बीमार अखिल , पड़ोसी कतऽ छलाह। निखिलकऽ पुलिस थाना आनऽ सँमनाकऽ देलकइन। आब निखिल दोसर पड़ोसी कतऽ । दुनु बच्चा दु जगह आ अतऽ थाना मे दुनु प्राणी दु जगह परीक्षादऽ रहल छलाह। संक्रमणक दौर चइल रहल छलइन।

उमहर जे बसंतक माय खातिर दासजी सब देवता छेलाह, से आब इनकर सबहक गिरफ्तारीकऽ मांगकऽ रहल छलीह। शहर मे केवट टोलीकऽ लोककऽ संग किछु आर संगठन सब दासजी आ अणिमाजीकऽ गिरफ्तारी खातिर दबाव बना रहल छल। अखबार आ टीवी मे समाचार इनकर सब पर आइब रहल छलइन। बिना गिरफ्तारीकऽ समाचारकऽ आधार पर दासजीकऽ विश्वविद्यालय प्रशासन निलम्बितकऽ देने छलइन।

पुलिस टीम जांच करइत फेर ओइ गोदाम पर गेल। जखइन ओ नीमक गाछकऽ तकइत ऊपर चढ़ल त देखइत अइछ जे गाछक ऊपर जे खजखोहइड़ छल ओइ मे बसंतक लाश पड़ल छल। पुलिसकऽ अनुसार नीमक पात तोड़इत काल ओ ग्यारह हजार वोल्टक बिजलीकऽ करेंटक चपेट मे आइबकऽ ऊपरे टंगा गेल छलाह। पोर्स्टमार्टम मे सेहो बिजलीकऽ करेंटसऽ मौत अयलइ। तखइन जा कऽ दासजी आ अणिमाजीकऽ पुलिस छोड़लकइन।

अइ सब पुछताछसँदासजी आ अणिमाजी अतेक टुइट गेल छलाह जे आब उनका ई शहर काटई छलइन। लोककऽ नजर मे ओ पुलिसकऽ पाइ खुआ कऽ निर्दोषक तमगा लेने छलाह। इमहर विश्वविद्यालय प्रशासन इनकर निलम्बनकऽ आदेश रद्दकऽ देने छल।

दासजी तखनो कुलपतिकऽ अपने जाकऽ हाथ पैर जोईड़कऽ निवेदन केलखिन जे ओ कोनो आन शहरकऽ कालेज मे बदलीकऽ दइ लेल। जे दासजी ककरोसऽ कहियो किछु नञि याचना केलाह, सेअ अइ प्रताड़नाकऽ दौड़ मे हाथ जोड़नाई सीखा देलकइन। कुलपतिकऽ सेहो सच्चाई पता लाइग गेल छलइ। माहौल समान्य करबाकलऽ सेहो दासजीकऽ ओतऽ सँहटेनाई जरुरी छलइ। प्रशासनिक अनिवार्यताकऽ नाम पर बदलीकऽ आदेश निकइल गेलइन।

विरोधी लोक सब एहन ने बदला लेलकइन , जे दासजी अपने बदली करा कऽ चइल गेलाह। आब उनका ई शहर मोन नञि पड़ई छइन.......मोन पड़ई छइन त बसंतक त्याग आ आदर। ओ इनका सबहक लेल अपन जीवनकऽ ईहलीला खत्मकऽ लेलक आ ओ एहन छइथ जे लोकक कुचेष्टाक डरे, ओकरा याद मे किछु चाहियो कऽ नञि कऽ पाइब रहल छइथ।

पहिलूका दासजी रहितइथ त ओ जमानाकऽ परवाह नञि करितइथ। आब दु टा पैघ होइत बच्चाकऽ बाप छइथ, तैं मौन भऽ कालेज जाइ छइथ आ कालेजसँसीधा घर घुड़इ छइथ- नैराश्यसँपीड़ित अणिमाजीकऽ सेवा खातिर।सोझां सोझीं जीवनभऽ गेलइन। आब नञि "बंगाली " कहला पर खराब लगइन आ नञि परफेसर कहला पर। अपनाकऽ कमीशन वाला लेक्चरर कहनाई त बिसरिये गेलाह।

ईएह कहाइ छइ- बदला मे बदलीभऽ गेलइन।लोक घर मे बइसल...... ई निष्कर्ष निकाइल लेलक जे बिन आइगक धुआं नञि निकलइ छइ। किछु तऽ चक्कर छइहे। किनको प्रतिष्ठा मटियामेट करबाक हुआय त " अफेयर " सबसं औचक हथियार सदैयसँरहल अइछ........ओकरे उपयोग दासजीकऽ विरोधी सब कयलाह आ एक आगु बढ़इत व्यक्तित्वकऽ समाज "अफेयर्स " कऽ नाम पर धराशाई कऽ देलक।

केतकीकऽ व्यथा- की कहू कथा (लघुकथा)

ओइ समय मे सब गाम मे विद्यालय नञि होइ छलइ। प्राथमिक विद्यालय कतउ कतउ भेटियो जइतइ, मुदा उच्च विद्यालय त गूलरक फूल। जई गाम मे उच्च विद्यालय,ओकर अंईठने अलग। अइ गाम मे बच्चिया सब सेहो पढ़ल लिखल होइत छल। केतकी अइ मे भागमंत छलीह। उनकर गाम मे उच्च विद्यालय छलइन। अगल बगल कयेक गामक विद्यार्थी सब ओइ गाम मे पढ़बाक लेल कियो संबंधी त कियो जोरूआ संबंधी त कियो अनुबंधी कतऽ रही कऽ पढ़ई छल। अही मेसऽ किछु विद्यार्थी ब्राह्मण भोजनक लेल टिपैल रहइ छल।

केतकी नऊआं किलास मे पढ़ई छलीह। सबसं तेज त नञि, मुदा भुसकौलो नञि छलीह। केतकी जेहने सुन्नर फूल, ओहिना सुन्नर देखबाह मे। ओहिना बात विचार व्यवहार। से कियैक नञि होइन- संस्कारी परिवारक छलीह। ओइ समय मे नउआं मे पढ़इत केतकीकऽ विवाह घरकथासँपंचकोसिये मे सुभ्यस्त परिवार मेभऽ गेलइन। चौदह बरखक केतकीकऽ घरवाला चौबीस बरखक कमऊआ मनोहर बाबू छलाह। कमऊआ बर मे कवनो अवगुण नञि- तहिया ईएह मानल जाइ छलइ। वयसक अन्तर तहिया कथा बारता मे नञि देखल जाइत छलइ। सब ठीक छलइ। केतकी घरबाला संग दिल्ली मे रहअ आइब गेली।

घरबाला पाइ जमाकऽ क रखने रहइत। दिल्ली मे एकटा मकान सेहो किनलाह। मनोहर बाबूकऽ कवनो गंभीर बीमारी छलइन।ईलाज चलइ छलइन। ई सब गप्प जाबइत केतकी बुझतीह, ताबइत एकराइत मनोहर बाबू सुतले केतकीकऽ छोड़िकऽ दूनियासऽ विदालऽ लेलाह।दु बरख विवाहकऽ भेल रहइन।

सोलह बरखक नऊआं पास केतकी आब की करतीह। सासुर-नैहरकऽ सब लोक जमा भेल। ईएह घमरथन। केतकीकऽ की हेतइन। किनको विचार जे आगु पढ़ावल जाय,कियो नैहर मे रहबाक, कियो बरक आफिस मे पैघ भेलाह पर छोट नौकरी, कियो दोसरो बियाह। तरह तरहकऽ गप्प। केतकी मौनीभऽ जीवन ढ़ो रहल छलीह। उनकर सुन्दरता विवाहित भेलासँआरो निखइड़ गेल रहइन। सासुर बाला सब कुमार देबरसँविवाहकऽ इच्छा जतेलकइन। केतकी त जेना बऊकभऽ गेल छलीह।ओ नञि हं कहलखिन आ नञि । उनकर चुप्पीकऽ सासुर बाला नञि बुझलकइन आ लगलइन दुख देनाई।

एही सबहक साक्षी छलाह दीपक। ओ केतकीकऽ दिल्ली वाला मकान मे किरायेदार छलाह। पढ़ाइकऽ संग नौकरीकऽ तैयारी करय छलाह। मनोहर बाबूकऽ संबंधी छलाह आ केतकीकऽ गाम मे रहीकऽ पढ़ाइ केने छलाह। बच्चा बाली केतकी, स्कुल वाली, विवाहित आ विधवा केतकी, अपन स्त्रीत्व बचबइ खातिर संघर्षरत केतकी- साक्षी छलाह दीपक।

एक दिन केना की भेलइ, केतकी दीपक संग बाकी जीवन बितबइ लेल तैयारभऽ गेलीह। ओ दीपकक ढीम फलासी मे फंईस गेलीह। असली गप्प छल जे केतकीक सौन्दर्य आ दिल्लीकऽ संपत्तिकऽ लालसा मे दीपक ई चाइल चलने छल। दूनु गोटे चोरा कऽ कोर्ट मे विवाहकऽ लेलइन। किछु दिन बाद भेद खुललइ। पर पंचइती भेल। सासुर वाला अपने मूक्ति चाहइ छलाह विधवाकऽ जिम्मेदारी सं। कनीक हल्ला गुल्लाभऽ सब शांतभऽ गेल। दिल्ली वाला मकान, व्यवसाय शुरू करबाक नाम पर दीपक, केतकीसँबेचबा देलकइन। केतकीकऽ एहन दीपकक नशा छलइन जे बुझबइन किछु, ऊयाह दुश्मन बुझाइन। लोक सब सेहो छोअइड़ देलकइन। जाबइत मकानक पाइ छलइन, खुब छहर- महर करय गेलाह। किछु बरखक बाद जखइन पाइ खतम भेलइन, तखइन दीपककऽ असली रूप सामने अयलइन। अही बीच केतकी एक टा बेटाकऽ मायभऽ गेल छलीह। उचित-अनुचित बुझ लागल छलीह। बात बात पर दीपकक ताना आ किछु बजलाह पर माइड़ पिटाई सेहो सहअ पड़इ छलइन।

केतकीकऽ आगु जीवन मे अन्हार बुझाय लगलइन। कयेक बेर जहर माहुर खयबाक मोन करयन। फेर ननकिरबाकऽ देखकऽ विचार बदइल लइथ। समय बितेबा लेल किछु पेंटिंग करय छलीह। एक दिन एक टा पाहुन घर अयलखिन । ओ कलाप्रेमी छलाह। केतकीकऽ पेंटिंग देखकऽ कहलखिन जे ई त विशुद्ध मिथिला पेंटिंग अइछ। केतकीकऽ घरक हालात ककरोसऽ नुकायल नञि छलइ। नैहरवाला सब सेहो दोसर बियाहकऽ बाद संबंध तोअइड़ लेने रहइन। सासुर मे सेहो कियो व्यवस्थित नञि। पेंटिंगकऽ बदला मे किछु टकाकऽ प्रस्ताव अयलइन। आन्हरकऽ की

चाही, दु टा आंखि। केतकी मोन लगाकऽ पेंटिंग बनबऽ लगलीह। अहीसँदु टा टका अबइन, जईसँघरक चुल्हा जरइन। कहूना दिन बितबइ छलीह जे ननकीरबा पईघ होइत त दिन घुरत। दीपकक हाल आरो खराब। नशाकऽ क परल रहनाई आ चिल्लेनाई आ स्त्री पर हाथ उठेनाई-ईएह रही गेल छलइन।

केतकी बेटाकऽ पढ़बकऽ पाछु पागल भेल छलीह। बेटाक संगत ठीक नञि भेलइन। दसवीं मे पढ़इत छलइन, तखने नशाकऽ क घर घुरलइन। ओही दिन पहिल बेर केतकी बेटाकऽ ई रूप देखलीह। पढ़ाइ मे सेहो साढ़े बाइस छलइन। आब कोन उम्मेद आ केकरा पर। पहिने सांयकऽ लातजुता तर आब उपरसँबेटो तेहने। जीवन ढो रहल छथि आइयो। कवनो पूर्व जन्मकऽ पापक फल छइन, आर की। केतकी कथा-व्यथे-व्यथा।

उठऊआ बियाह (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद शोभनसऽ भेंट भेल। ओ अप्पन बेटीकऽ दिल्ली विश्वविद्यालय मे नाम लिखबऽ आयल छलाह। हमरा बारे मे पता सब किछु छलइन। ताहि लेल सोचलाह जे बेटीकऽ परिचय सेहो करा देताह आ भेंट गांठ से होभऽ जाइत। राजा देब कखनो कोनों जरूरत पड़तइ त लग मे अपन लोक कतऽ चईलो जाइत। परिवार वाला सरकारी डेरा छल हमर। लोगक अबरजात छल।पहुंचनाई सेहो आसान छल। पहिने फोनकऽ क छुट्टीकऽ दिन आयल छलाह। बहुत तरहक गप्प शप्प भेल। पुरान पुरान लोकक चर्च भेल। अतबा बुझबा मे आइब गेल जे बेटी विदुषी छलइन। ओतबे सुन्नर आ ठांय पर ठांय वाली हाजिरजबाब। मजाक मे शोभनकऽ सेहो नञि छोड़इन ओ। अपने कहलक हम उठऊआ प्रोडक्ट छी। भइड़ दिन कोना बीत गेलइ, से पते नञि चलल। किछुये घंटा मे ओ अपन उपस्थिति जता देलक। ठहक्का पर ठहक्का। सांझ मे ओ दुनु गोटे अपन होटल घुरी गेलाह।

तीस बरखक पुरान सब गप मोन पड़ी गेल।शोभन हमर संबंधी कतऽ रहइकऽ कालेजक पढ़ाइ करय छलाह। बदला मे घरबइयाकऽ धीया पुताकऽ पढ़बइ छलाह। माने बच्चा सबहक सरजी। बीएससी ओतइसऽ केलाह। ओना एमएससी मे युनिवर्सिटी मे होस्टल भेंट गेल रहइन, मुदा घरबइयाकऽ आग्रह पर ओतइ रही गेलाह। परिवारकऽ समांगभऽ गेल छलाह। हमर संगतुरिया छलाह।

समय उनके संग बितय। भलमानुष परिवारकऽ छलाह। गिरहथक बेटा छलाह। पाइक कशमकश घर मे देखने छलाह। ई सरजी वाला मौका जखने भेटलइन, बिना सोचने हामी भरी लेने छलाह।

एक दिन शुद्धकऽ समय मे बेरु पहर जखइन युनिवर्सिटीसऽ घुड़इ छलाह। किछु लोक जबरदस्ती मोटरसाइकिल पर बइसा कलऽ गेलइन। ओ लंगा गाम छल। दिन मे कतउ आर रखलकइन। राइत भेलाह पर जबरदस्ती बियाह कराअ देलखइन। हामी भरऽ मे किछु ना नुकुर केलाह त मारबो केने रहइन। थोड़ेक काल मे हल्ला भेल। बिना मोबाइलोकऽ खबर चारु कात पसइड़ गेल। गाम मे माय पेटकुनिया लाईध देलकिन। किछु गामक नवतुरिया सब जमा भेल आ शोभनकऽ सासुर गाम गेल। ओतऽ आंगन मे लाल धोती पहिरने आ हड़इद ठोप लागल गुम्म शोभन भेटलखिन। शोभनकऽ फेर मोटरसाइकिल पर बइसावल गेलइन आ उनकर गाम घुराकऽ ल जायल गेल।सबकऽ उम्मेद छलइन जे माइड़ पीट किछुओभऽ सकइत छइ। लेकिन कोनो विरोध नञि। शोभन अपन गाम मे आइब गेल छलाह। आब लंगा गामक अगिला डेग पर सबहक नजर छल। शोभनकऽ नुकाकऽ कतउ कतउ राखल जाइन

युनिवर्सिटीकऽ पढ़ाइ से हो छुटी रहल छलइन। किछु लोक थाना पुलिसक लग सेहो गेल। कतउ समाधान नञि। जिनका कतऽ रहइ छलाह, ओहो लंगा गामक दुआरें तटस्थभऽ गेल छलाह।

करीब महीना बीतऽ लगलइ। आब शुरू भेल समझौताकऽ

वार्ता। अहि बीच दुनु पक्ष कोर्ट मे नालिश केलक। लड़की सुन्नर छलइन, विधवाकऽ बेटी छल। नैहर सासुर कियो कथा लेल ध्यान नञि देलकइ। तखइन अइ उठऊआकऽ शरण मे गेल। पाइ कऊरी सेहो छलइ। बाद मे शोभनकऽ पुरा दान दहेज सेहो देल गेल। समझौता भेल। लड़कीकऽ भाग देखियउ। ओही साल शोभनकऽ बैंक मे नौकरी सेहोभऽ गेलइन। किछु दिन बाद सब सामान्यभऽ गेल। उठऊआ बियाहकऽ अहन सुखांत होइत, कियो सोचबो नञि कयने छलाह। शोभनक कनिया सेहो व्यवहारसऽ सब सासुर वालाकऽ मोन जीत लेलक। सबहक मुंह मे एक्के बात- अइ मे लड़कीकऽ कोन दोख।

अहिनो होअइत छलइ। कियो बिसवास करत अजुका नबका पीढ़ी।

बड़का घरक बहुरिया (लघुकथा)

आइ फेर रामबाबूकऽ तुलसी पीड़ा लगसऽ उठाकऽ घर मे घुराकऽ राखल गेलइन्हि।भइड़ गामक लोक उनका जा कऽ देख अयलइन। कियो गोर लाइग अयलइन त कियो थोड़ेक काल ओतऽ बइसकऽ आइब गेल। देखनिहार सभकऽ चाह- पान सेहो उनका कतऽ भेंट जाइ छइन। ताहिक लोभे सेहो किछु लोक नियमित चइल जाइत अइछ।ओना रामबाबू आ उनकर घरक लोकक बेबहार एहन छलइन जे भइड़ गाम मे लोक याद करइत छइन। बिना कवनो लोभ लालच के, जे भी याद केलकइन, कम-बेशी मदद केलखिन। ओही परतापे, सब धीया पुता सुख मे छलइन। लोक कहइन जे फलमां आयल छथि- आहांकऽ देखइ लेल। बड़ड दुर सं। रामबाबू उनका दिस ताईक लेथिन। किनको देखकऽ मुस्कियाईयो दइ छलखिन। ओ अपनाकऽ भागमंत बुझइत जे हमरा देखकऽ मुस्कियेलाह।फेर चर्चा होइ जे फलां फलांकऽ देखकऽ खुशी भेलइन। बजई किछु नञि छलखिन। मुदा बुझाई जे किनको ताईक रहल छइन उनकर आंईख। आइ फेर तुलसी पीड़ा लगसँजखइन घुरावल गेलइन त सब कहऽ लगलइ जे किनको देखइ लेल हिनकर प्राण अटकल छइन। आइ त गऊदान सेहो करा देल गेलऽ इन हांई हांई मे।

रामबाबूकऽ कनिया सब बुझई छलीह जे रामबाबू किनका जानसँबेशी चाहइ छथिन।उनकर आंईख किनका ताईक रहल छइन। ओ आर कियो नञि उनकर बड़की बेटी चान दाई छथि। दस बरख रामबाबूकऽ बिबाहक बाद चानदाई पहिल संतान जन्म लेलखिन। रामबाबूकऽ माय कतबो कहथिन जे दोसर बियाहकऽ लइ लेल मुदा रामबाबू

मनाकऽ देलखिन। चान दाईकऽ बाद पांच टा आर संतान भेलइन मुदा अंखिदेखउआ दुलारु चान दाई रहलीह। सोलह बरखक जखइन चानदाई भेलीह त तखुनका बड़का घर मे कथालऽ क रामबाबू अपन बहनोई संग गेलाह। ओत वरागत जे सब कहलखिन, रामबाबू सब शर्त एक्के बेर मे माइन लेलखिन्ह। घुरती मे बहनोई कहबो केलखिन्ह जे आहां सब कियैक गइछ लेलियई। रामबाबूकऽ ज़बाब छलइन जे आइ काल्हि बाजारवाद छइ।जखइन बाजार जाइ आ कवनो सामान नीक लाइग जाय त ओकर मोल भाव नञि करीह। घुइड़कऽ ननदोईस सब बात सरहोइजकऽ कहलखिन। आब उपाय की। रामबाबू जमीन बेचकऽ बिबाह केलाह।सब कहइन जे अतेक कियो नञि देने छल बेटी के।

बिबाहक बाद चानदाईकऽ बिदागरी मे सब बेर संशय। पहिल बेर रामबाबू अपने गेल छलाह बिदागरी लेल। बिदागरी त नञिये भेलइन, बेटीसऽ भेंट सेहो नञि भेलइन। गाम घुरीकऽ झुट्ठे चानदाईकऽ मायकऽ कहलकिन जे सासकऽ मोन खराब छलइन ताय नहीं अयलीह।फेर कहियो रामबाबू चान दाईकऽ सासुर नञि गेलाह। बाकि पांच धीयापुताकऽ बियाह दान मे सेहो चानदाई कनीक काल लेल अयलीह। बड़का घर बड़का व्यवहार।नैहरबालासँसीधा भेटगांठक परम्परा नञि। चान दाई कहियो सासुरकऽ कवनो शिकाइत नञि केलीह।ओही दुनिया मे ओझरायल छलीह। नैहर आबस त बाकि भाइ बहिनकऽ सासुर बालाकऽ बेबहार देखकऽ सेहन्ता होअइन कि उनको सासुरक लोक अहने आबेशी होअइतइन। उनकर बिदागरी लेल कियो नैहरसऽ आबइ लेल तैयार नञि। बिन बिदागरीकऽ पठबऽ कऽ परम्परा नञि। अइ बीच मे झुलइत चान दाई। एक बेर मोन हल्लुक करक लेल मायकऽ कहबो केलखिन जे

बराबरी वाला कथा नीक। धन सम्पत्ति सब किछु नञि। माय बुझि गेलखिन। आब उपाय की। जखन चान दाई रामबाबूकऽ सोंझा जाइ छलीह। दु चाइर टा नोर दुनु गोटाकऽ आंखिसऽ टपईके जाइन। निःशब्द सब। गाम समाज मे एकतरफ लोक कहइ जे बेटीकऽ बिबाहक मे रामबाबूसऽ बेशी कियो खर्च नञि कयलक। दोसर हुनकर मोन कहइन जे बड़का मे संबंधकऽ क नीक नय केलाह। सब बेर सोचइत जे चानदाईसऽ माफी मांगब। मुदा सामने अबइन त ज़बान मौनभऽ जाइन।चान दाई पढ़अ चाहइ छलीह तहिया। सोलहम बरख तहिया बड बुझाय। आइ छब्बीसम सेहो कम। अकर बाद कवनो बेटीकऽ ओ बड़का घरक बहुरिया नञि बनऽ देलखिन। बहुरिया आ मलकाइन मे अंतर सबके बुझबतिन। बहुरिया मे सास ससुरकऽ राजबाला...बर- घर आ मलकाइन मे लायक घरबाला।

सब धीया- पुता, भाइ, बहिन, भातिज भतीजी, सखा - संबंधी नौकर चाकर, गंउआ सब आइबकऽ देख गेलइन मुदा चानदाई अखनो नञि अयलीह। माय चोरऊका संवाद कयेक बेर पठा देलखिन कि आइबकऽ देख लियउन। चान दाई कतसऽ खबास फलक मोटरीलऽ क आइब गेल, ओ नञि अयलीह। कहलकइ जे बहुरिया पठेलीह अइछ। आब मायकऽ से हो बुझाय लगलइन जे रामबाबूकऽ प्राण बिना बहुरियाकऽ देखने छुइट जेतइन।ऊयाह भेलइ राइत मे बहुरियाकऽ इंतजार मे रामबाबू गोकुल धाम चइल गेलाह।

दरबार (लघुकथा)

दरबार सुनिते राजा-महाराजा, बड़का जमींदार, मंत्री, अफसर ईएह सब ध्यान अबइ छइ। दरबारी ओहदा होइ छलइ। नवरत्न सब ओइ सब मे होइ छलाह। महाराजाक दरबारी छोटका राजा सब, राजा सबहक जमींदार, जमींदार सबहक गिरहथ- मजुर। अहीना बड़का लाला- व्यपारी सबहक फुटकर दोकानदार,दोकानदारक मुनीम अहिना क्रम चलइत छइ। दरबारीसऽ दरबारक मान होइ छलइ।कतउ कतउ रानी महरानी सबहक सेहो अप्पन अप्पन दरबारी छलइन। कोनो कोनो खबास सेहो चहटगर चर्चक नायक रहइ छल।बेशीतर अइ तरहक दरबार वाला सबहक आंगन मे परपुरूखकऽ गेनाई मे रोके जकां छलइ।जे घुसऽ मे सफल उनका बड़का दरबारीकऽ तमगा। जतेक मुंह ततेक गप्प आहांकऽ सुनऽ कऽ भेटत।मोटा मोटी धन जरूरी दरबारक लेल। आइ काल्हि लोक व्यंग्य मे दरबार वाला कहइ छइ। दरबारी कहबाव लेल त कियो तइयार नञि। ओना हां मे हां मिलबऽ बाला लोकक कमी नञि।दरबार मतलब त सीधा भगवान भगवतीकऽ दरबार, मनूक्खक कतउसऽ नञि। आब जई दरबारक बात हमकऽ रहल छी से सबसं भिन्ने अइछ। रामबाबू पहिने अंग्रेज सरकार बाद मे बिहार सरकार मे छोट-छिन्न मुलाजिम छलाह। समयक अंदाजा लाइग गेल होइत। कनियाकऽ मृत्युभऽ गेल छलइन।असगरे रहइ छलाह। ओना ओइ समय मे अंग्रेज अधिकारीकऽ छोड़िकऽ कम्मे सरकारी लोक परिवार संग रखइ छल। ड़इब दिनकऽ रामबाबूकऽ दरबार लगइ छलइन। बेरू पहर होइत होइत दरी जाजिम सब बिछ जाइ।लोक अयनाई शुरूभऽ जाइ। रामबाबूकऽ अप्पन अलग आसन रहइन । रत्नआ दरबारी सबहक अलग। दरबारक बिना लिखल पढ़ल अपन संविधान

रहइ। मोटका रजिस्टर रहइ।ओइ मे नाम लिखाई। किछु पाइ दकऽ आहां दरबारकऽ सदस्य बइन सकइ छी। गैर सदस्य सबकऽ बइसऽ कऽ अलग बेबसथा- कात मे। सदस्यसँरत्न बनऽ लेल पारदर्शी प्रक्रिया छल। रत्नकऽ बइसबाक अलग बेबसथा। जे नियमित अऊताह वा ढोल-संगीतक जानकार वा निश्चित सहयोग राशि, से सब रत्न दरबारी। लोक गर्वसँदरबारी कहाबइ छल। सब सदस्यकऽ गोलिया, फल आ लड्डू प्रसादी मे देल जाइ छलइ। महिला सदस्य सब सेहो होइ छलीह। आखिर ओइ दरबार मे की छलइ जे लोक अबइ छल। ओइ मे ढोल मृदंगकऽ संग निर्गुण आ विदेशिया गायल जाइत छल।रामबाबूकऽ एहन प्रभावी आवाज छलइन जे जखइन ओ विदेशिया गबइ छलाह त लोक तकिते सुनिते रही जाइ । भांग-गांजाक बेबसथा सेहो रहइ छल। ओतबा काल सब दोसरे दुनिया मे रहइ छल। अंग्रेज अधिकारी सब सेहो उत्सुकता वश अबइ छल। रामबाबू जई शहर मे बदलीभऽ क जाइत छलाह- ई दरबार अनवरत चलइत छल। ओ दरबारीकऽ अलावा किनको कतऽ अन्न जल ग्रहण नञि करय छलाह। हुनक संबंधी आ अधिकारी सब सेहो हुनक भावनाकऽ सम्मान करइत दरबारक सदस्य पहिने बनञि छल तखन आबऽ कऽ आग्रह करयन। रामबाबू सेहो अप्पन दरबारी सबकऽ पुरा ख्याल रखइ छलाह। भाइ भतीजासँबेशी दरबारी सबहक मान दइ छलखिन।आब नञि ओ दरबार आ नञि ओ दरबारी।एक सामान्य लोक अतेक सिद्धांतकऽ संग जिनगी जी लेलक। कियो कहलकइ जे एहन दरबार चलबऽ बाला लोक जन्म लइ छइ, बइन नञि सकइ छी। की अहुं सब अइ तरहक कवनो दरबारकऽ बारे मे सुनने छी? जिज्ञासा। सामाजिक व्यवस्था मे कतेक बदलावभऽ गेल।

<u>समयक चक्र (लघुकथा)</u>

आइ फेर बड़का बखेरा भेल रहइ। भइड़ गामक लोक रामबाबू कतऽ जमा भेल रहइन। बेशी त मजा लेबऽ खातिर आयल छल।कऽ कहइ छइ जे गाम खालीभऽ गेल छइ। कतऽ सऽ अतेक लोक आइब गेल। ब्राहमण भोजन मे लोक नोत बिजोह देलो पर नञि आबइत अइछ।मुदा अखइन देखू। सब बिन बजेने आइब गेलाह।कऽ मऊगीकऽ पुरूख। मुरी गिनञित रहु। उत्तर वारी टोलसऽ सबसं बेशी लोक आयल।कियैक नञि आइत। ओतइ सटले रामबाबूकऽ बड़का आमक गाछी छलइन।जई मे पहिने लोक निवृत होइ लेल ओइ टोलक लोक जाइत छल।सटले ईनार सेहो रहइन।ओतुके लोक ओकर उपयोग करय छलाह।कहबी ईहो छल जे अइ ईनारक पाइन मे दाइल नीक सींझई छइ। बस आब की दोसरो टोलक लोक पाइनलऽ जाय। पहिने हत्था आर बाद मे लोहाकऽ कांटसऽ पुरा घेरा देल गेलइ।रखबार सेहो रखा गेलइ। भारी आफत उमहरका लोक के। धन कहि सरकारकऽ जे आब सब घर मे ई सब बेबसथा छइ।

रामबाबूकऽ बाप फूलबाबूकऽ सबसं बेशी जमीन अइ परोपाटा मे छलइन।संगही कांग्रेसी नेता सेहो छलाह। अजुका नेता जेकां नञि। अप्पन घरक आंटा गिल्लाकऽ क राजनीति करय छलाह। कहियो नञि टिकट मंगलकिन, नञि पार्टी अपने देलकईंन, आ नञि चुनाव लड़लाह। धन भेलासँअनेरो चेहरो रौबदार लागऽ लगइ छइ। फूलबाबूकऽ जिनगी शान मे बितइ छलइन। रामबाबू विद्यार्थी नीक नञियो रहलाकऽ बादो बापक बदौलत रिजल्ट मे बढ़िया रहलाह।

शहरक कालेज मे प्रोफेसरी सेहो भेंट गलइन, कियैक त फूलबाबू कालेजक कमिटी मे छलाह। अतेक तक त सब ठीक।

इमहर रामबाबूकऽ शहर मे नौकरी लगलइन आ उमहर हुनक माय मामुली जर बोखार मे परलोक चइल गेलखिन। ओइ समय फूलबाबू पार्टीकऽ अधिवेशन मे छलाह। खबर भेलइन। तखन अयलाह।फेर क्रियाकर्म भेलइन।ताबइत बर्फक सिल्ली मे देहकऽ राखल गेल रहइन। पहिल बेर लोक एना मृत देहकऽ सिल्ली मे राखल देखने छल। श्राद्ध मे चौगामा आ पचमेर भेलइ।

आब फूलबाबू असगरभऽ गेलाह।ओतेक संपइत।ओइ समय मे दुटा तीन टा बियाह लोक करइत छल। फुल बाबू पहिने त बियाहकऽ लेल तैयार नञि होइ छलाह मुदा बाद मे स्वस्तिदऽ देलखिन। नीक कुल शीलकऽ कथा देख कऽ भलमानुष कहि वा गरीब कहि, दोसर बियाह भेलइन। अइ बियाह मे कन्या पक्षक बाकी जिम्मेदारी फूलबाबू गछलखिन आ ता जीवन निभेलकिन। रामबाबू भीतरिया बापक दोसर बियाहक खिलाफ छलाह।होबाके चाही मुदा किछु बजलाह नञि। बेशी अप्पन शहरे वाला घर मे रहइथ।इनको बियाह दान भेल आ परिवार संगे रखलाह।

फूलबाबूकऽ दोसर बियाहसऽ तीन टा बेटा भेलइन। जखइन बच्चा सब छोटे रहइन त बीमारी आ उम्रदराज फूलबाबू स्वर्गवासीभऽ

गेलाह। अखइन तक जे रामबाबू शांत आ शहर मे रहइ छलाह, द्वादशाकऽ पराते बापक पाइ कौरीकऽ हिसाब सत्मायसऽ मांगह लगलाह। गामक लोक कतबो कहलकइन जे माछ माऊस बांकिये छइ। थम्ही जाऊ। लेकिन उनकर माथ पर त अतेक दिनक हिसाब हावी छलइन। सबसं पहिने मोटरक चाभी लेलाह। फेर भरार घरक। ओकर बाद जतेक लगुआ भगुआ संबंधी सब रहथिन, सबके जयबाक आदेश। मालिक बनिते एहन आन्हरभऽ गेल छलाह जे सत्मायक मायकऽ सेहो जायक लेल कहि देलखिन। मनेजर, मास्टर,, मुहर्रिर सबके हटा देलखिन।उतरवारी टोल वाला गाछी मे लोहाक जाली आ ईनार पर मनाही अखने भेल। पुरा हवेली फूलबाबूकऽ जाइते सुन्न सपाटभऽ गेल। बड़का घरक बात छल। सब चुप्पे रहल तहिया।कऽ इनकासऽ बिगार लेत।

समयक चक्र देखू। रामबाबूकऽ कनिया सेहो ईएह अवस्था मे मइड़ गेलखिन। दु टा बेटी छलइन। दुनु सासुर बसई छलइन। समय अजुका बदइल गेल छलइ। कतबो बेटी- जमाय सब मना केलकइन। रामबाबू दोसर बियाहकऽ लेलाह। समझौता ई भेलइन जे पाइ आ पेंशन नबकी कनिया आ समपइत बेटी सबकऽ द देल जेतइ। अहिना सब चइल रहल छलइ। आइ चाइर दिन मुइला नञि भेलइन रामबाबू के, सतमाय आ बेटी सब मे पहिने बाता- बाती, फेर गारा - गरौवल, फेर झोंटा- झोंटऊल भेल। ज़बान धनिक बिधवाकऽ बड्ड शुभचिंतकभऽ जाइत छइ। दुनु पक्ष एक पर एकाले। बाद मे थाना-पुलिसकऽ कियो फोनकऽ देलकइ। महिला पुलिस सेहो आयल छलइ। ओकरो सामने मे मारा - पीटी

भेल। सबके पकइड़कऽ पुलिसलऽ गेलइन। आब कोना क्रिया कर्म हेतइन रामबाबू के। उएह बइमातर भाइकऽ बेटा कर्म करतइन- ईएह पंचइती मे निर्णय भेल। तहिया रामबाबूकऽ सत्माय सब ज्यों सब्र नहीं रखने रहितइत त अहिना गिंजन होइतइन।सब जगह अकरे चर्चा। समयक चक्र छइ। ऊपरवाला सबटाह हिसाब बरोबर करय छइ।

बदलल बेबहार (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद रामबाबू दरभंगा एकटा बियाह मे आयल छलाह। संजोगसँकन्यागत आ वरागत दुनु हुनक अपेक्षित छलखिन। सोचलाह अइ बहाने कनिक मोनो बदलत आ लोक जे कहइत अइछ जे काज मे नञि अबइ छी से दोषो मिटा जाइत। दरभंगा आइबकऽ सीधा कन्यागत कतऽ गेलाह। कन्यागत एकटा बड़का घर आ सटले विवाह भवन बुक केने छलाह। रामबाबूकऽ देखते घरबइयाकऽ बड़ड खुशी भेलइन। आदरक संग अप्पन पाहुन परख सबसँपरिचय पांति करेलखिन। कनीक काल रामबाबूकऽ प्रभावी व्यक्तित्व कलऽ क गंभीरता रहल। फेर निधोख बहस चलऽ लागल। ओइ मे किछु लोक राज स्कुलकऽ बिदयारथी सेहो रहल छलाह। फेर की संस्कृतक शिक्षक पंडीजी सलऽ क हेडमास्टरकऽ रौब रूतबा, खेलक मैदानकऽ सफाई आ फस्ट डिवीजन वालाकऽ लोहा वाला जालीकऽ अंदर बोर्ड मे नाम लिखायलकऽ चर्चा। खुब भरी छांक पुरनका गप्प सब भेल।

बिबाह दान संपन्न भेल। खुब उत्साहक संग दुनु पक्ष जिम्मेदारी निभेलाह। पहिल बेर रामबाबूकऽ अफसोस भेलइन कि कियैक ओ दुनु बेटीकऽ दिल्लीसँबियाह केलाह। शौक मनोरथ, बिध बाध देखकऽ अपनसऽ तुलना करऽ लगलाह। सब बेबसथा आ सुविधा अतऽ छइ। बेटाक बियाह अतइसऽ करब से मोने मोन निर्णय केलाह। बियाहकऽ पराते घुरबाक टिकट छलइन।

होइ छलइन जे किछु दिन आर रही। दिल्ली घुरबाक लेल भारी मोनसऽ बिदा भेलाह। घरबइया अपने स्टेशन आयल छलाह छोड़ई लेल।

फस्ट क्लास मे टिकट छलइन। समयसऽ आइबकऽ सीट पर बइस गेलाह।दोसर सीट एकटा बच्चियाकऽ छलइ। ओकर माय बाप ओकरा विदा करऽ आयल छल। ओकर सबहक गपसँई पता चइल गेलइन जे ई सुन्दर युवती सर्वजातीय छइन आ इन्जीनियरिंगकऽ क आइ टी कम्पनी मे काजकऽ रहल अइछ। असगरे दिल्ली जा रहल अइछ। ओ लड़की आधुनिकता आ पारंपरिकता दुनुक अद्भुत मेल बुझेलइन। अतेक ओ परिवारकऽ लोक सबहक लेल सोचई छइथ, सुइनकऽ रामबाबू भीतरे भीतरे उत्साहितभऽ रहल छलाह। उनका अपन जतरा सफल बुझायल लगलइन। ओ ओइ लड़कीकऽ अपन पुतोहु बनेबाक लेल सोचऽ लगलाह। ट्रेन से हो रिशिडुलभऽ गेल छलइ। लड़कीकऽ पिता रामबाबूकऽ परिचित कतऽ कथालऽ क गेल छलाह। रामबाबूकऽ परिचय जाइनकऽ ओइ लड़कीकऽ पिता फोनक देब लेब से हो कयलाह। रामबाबू ई सबकऽ संयोग बुझई छलाह।

ट्रेन कनीक काल मे खुजल। ओइ लड़कीकऽ आंईख मे नोर भरल। माय बाप से हो कनञि छलाह। रामबाबू सेहो देखकऽ द्रवितभऽ गेल छलाह। जखने ट्रेन प्लेटफार्मसऽ बाहर भेल, ओ लड़की चटसऽ नोर पोछलक। आइब्रो ठीक केलक। फोन

उठेलक। वार्तालाप सुनु।

अरे कइसे फोन उठाती। मां पापा यहीं थे।

ट्रेन तो कब का खुल चुका।

ट्रेन रिशुडल हो गया था।

मैसेज कर देती।

नञि मौका मिला।

मैंने चालीस कौल किअए।

साइलेंट पर था।

अब सबका फाइन देना पड़ेगा।

आ ही रही हुं। ले लेना।

सुद सहित लुंगा।

हां-हां ठीक है।

कोई और बैठा है।

कोई नहीं।

....

भइड़ राइत गपक प्रवाह चलिते रहल। शब्दक मर्यादाकऽ सीमा त कखने लंघा गेल छल। फस्ट क्लासक कुप छल। दुईये गोटे ओइ

मे। रामबाबू कंबल ओइढ़कऽ सुतऽ कऽ ढोंग केने रहइत। पहिल बेर अपन असेसमेट उल्टा लगलइन। अपनाकऽ कबिलतीकऽ बड़ड दाबा छलइन। जे लड़कीकऽ ओ आदर्श बुइझकऽ पुतहु बनबऽ कऽ सोचई छलाह ओकर असलिइत सामने छलइन। पुरा जतरा आब बोझ बुझाय लगलइन।बरका धोखा खायसँओ बचलाह। ओकर मायबाप जे कथालऽ क घुईम रहल छइथ ओ कतेक धोखा मे छइथ।बेबहार कतेक बदइल गेल। लाज अइछ त कंबलसऽ मुंह झाइप लियअ।

अनघोल (लघुकथा)

आइ फेर भोरेसऽ गाम मे फुसफुसी चइल रहल अइछ।कियो ककरो सीधा किछु नञि कहि रहल छइ। पुछला पर कहत की नञि कोनो बात। मुदा सब व्यस्त। दिनसँसांझभऽ गेल।स्त्रीगण सब कानों फलां बाबूकऽ घरक दुमुंहा लग त कखनों महावीर मंदिर मे सांझ देबाक काल एकदोसरासऽ पुछइ छथिन। सब निरूत्तर। सबहक कान ठार। ऐना बुझाई छलइ जेना चुनावकऽ गिनतीभऽ रहल छइ।कऽ जितत आकऽ हारल। किनकर सरकार बनत-तेहने जिज्ञासा। जेना चुनाव मे पोलिंग एजेंट आ किछु पाइ पर काज करऽ बाला लोककऽ छोड़िकऽ कियो नञि कहत कि किनका तरफसऽ आहां छी, ओहिना आइ कियो अपन बिचार नञिदऽ रहल छल कि ओ कोन दिस।सबाले एहन छलइ। पहिल बेर एहन गप्प सामने आयल छलइ। गाम त गाम छी। अपना घर मे किछु हुआय मुदा दोसरक घर पर सबहक नजर। सब उचितवक्ते आ सब ज्ञानिये। कियो कहइ कि हमर नैहर मे ऐना भेल रहइ त कियो अपन सासुर त कियो अप्पन मातृक त कियो कोनो आर गामक। अइ गामक त पहिल घटना। अनघोल मचल छल। की हेतइ। आखिर एहन कोन गप्प छअइ जे सब हक ध्यान अही पर।

रामबाबू अइ गामक सबसं कलामी लोक छलाह। हुनका जीबइत किनको हिम्मत नञि भेलइन जे हुनका घरक बिशेषकऽ स्त्रीगणक कियो चर्चा करय। समय बदइल गेल छइ। आब कियो ककरो मुंह

पर जाबी लगा सकइ छइ। सब स्वतंत्र। आइ रामबाबू रहितइथ तखनो गप्प नोन तेल लगाकऽ होइबे करतइ। नीक भेलइन,चइल गेलाह।बाजु हुनकर पुतहुकऽ लोक मुद्दा बना देने छइन। जहिया अइ गाम आयल छलीह ओ कतेक मान- दान भेल छलइन। सुन्नञिर त ओहिना छलीह, पढ़लो लिखल सेहो। सब गामक लोक चाहइ छलाय कि कहियो ओ उनको कतऽ आबस। कम्मे दिनक लेल गाम अबय छलीह।अप्पन मोटर मे। तहिया गाम मे ककरो मोटर नञि छल। कियो कियो नबका धनिक भाडा परलऽ क अबइ छलाह।कहबाक जे अलगे उनकर अंदाज छलइन।

रामबाबूकऽ बेटा राजा बाबू असम मे चाहक गार्डन मे मैनेजर छलाह। ओतइ ओ रहइ छलीह। ओतेक सुन्नर रहलाक बादो घरवाला उनका पर विशेष ध्यान नञि दइ छेलखिन। ई बात रामबाबूकऽ बुझल छलइन। ताहि लेल देखकऽ पुतोहू चुनलाह कि बाद मे सब ठीकभऽ जेतइ। लेकिन से नञि भेलइ। तखनो संग रहलाहसँएक टा बेटी भेलइन।ओकरा राजा बाबू बड मानञि छलाह। घरक माहौल अनुकूल नञि रहबाक कारणे बेटीकऽ हिमाचल मे बोर्डिंग स्कूल मे पढबइ छलाह। झांपल तोपल सब चइल रहल छलइन। इमहर रामबाबूकऽ परलोक सिधारभऽ गेला पर मायकऽ सेवाकऽ नाम पर कनियाकऽ पठा देलखिन। कनिया जहिना देश तहिने परदेश, अपन हालत बुझिते छलीह। गामे आइबकऽ रहअ लगलीह। इमहर राजा बाबूकऽ आजादी भेंट गेलइन। जे किछु चोरा छुपाकऽ करय छलाह, आब खुल्ला करऽ लगलाह। बातकऽ पसरह मे कतउ समय लगइ छइ। कंपनीकऽ मालिक नोटिस थमा देलकइन।

नौकरी छुइट गेलइन। गाम घुइड़ अयलाह। किछु दिनकऽ बाद मोन उचटअ लगलइन। बहिनोई गुजरात मे अधिकारी छलखिन। ओत गेलाह। सब ठीक छलइन। नब नौकरीकऽ सेहो जोगारभऽ गेल छलइन। एक दिन राइत मे शराब पीकऽ आयल छलाह। बहिनोईकऽ ई ठीक नञि लगइ छलइन। ओ इनकर बहिनकऽ किछु नैहर पर कटाक्ष केलखिन। बहिन ई सब खीस राजाबाबू पर उताइड़ देलखिन। राजा बाबू बहुत दुखी भेलाह। राइत मे सबकऽ सुतले छोअइड़कऽ चइल गेलाह। भोर भेलाह पर सब बुझलकइ। बहुत खोजबीन भेल। पुलिस मे सेहो रिपोर्ट भेल। अखबार, टीबी मे सेहो फोटो छपवावल गेल। मूदा सब फेल। उम्मेद सबकऽ छलइ जे राजाबाबू बेटीकऽ जन्मदिन पर फोन करथिन, ओहो बीत गेल। कतउसऽ कोनो समाचार नञि।

आइ बारह बरखभऽ गेल राजाबाबूकऽ निपत्ता भेलाह। आब जे कानाफूसीभऽ रहल छइ से उनके श्राद्धकऽ बारे मे। लोककऽ उनकर कनियाकऽ पहिरल ओढल आ सधवा वाला खान पियन पइच नञि रहल छइ। राजा बाबूकऽ कनिया त असगर जीवनक पहिनेहेसऽ आदी छइथ, से त सबके नञि बुझअ देलखिन। आब अनघोल मचल छइ गाम मे जे की हेतइ। की भइड़ जीवन राजाबाबूकऽ कनिया सधवा रहतिह या विधवा।अकरे कहइ छइ फुसियेकऽ घमर्थन। मुदा अनघोल त मचले छइ।

देहक नेह (लघुकथा)

बीरछाकऽ बेटी एकटा मनसाकऽ घर मे बइसा देलकइ।

ओकरा त बियाह भेल छइ।

त घरवाला कतऽ छइ।

छोड़ि देलकइ।

के छोरलकइ।

आर के। बीरछाकऽ बेटी ।

लोक सब किछु कहलकइ नञि।

किअए ने कहलकइ। सब कहलकइ।

मुदा ओकर माये कहलकइ जे ई देहक नेह छइ। आइ मे कियो किछु नञिकऽ सकइ छइ। ओकरा जेना मोन करऽ दियउ। खुश रहअ दियउ।

आब ककरा फुरसत छइ। लोक जमा त भेल छल मुदा ओकर मायक गप्प सुनबाकऽ बाद सब चइल गेल। तरका मुस्की सब माड़इ छलाय। नेनाभुटका सबकऽ त बरका मनोरंजनभऽ गेल छइ। सब ओते मंडराई रहल छइ।

बीरछा अप्पन समाज मे मानल लोक छल। आन सब जेकां ओ दस दुआरी नञि छल। ओ एक्के घर पकरने रहल। ओ कयेक तरहक काजकऽ लइ छल। मजुर आ खबास दुनु बाला काजकऽ लइ छलाय। मालिकक भांग आ मलकिनीकऽ मशाला दुनु पीसई छलाय। घरामी, राजमिस्त्री, भानस भात, होलीकऽ लुकारी, भोज मे पुआरक बिट्ठी सलऽ क टहल टिकोरा तक मे मांजल छल। आमक समय मे रखबारी आ जमीनक खरीद बिक्रीसऽ सेहो किछु नगदी भेंट जाइ छलइ। किछु समय त एहनो एलइ जखइन ओ मालिककऽ कहलकइन जे आहां कतऽ जे मोटका भात बनञित अइछ से हमरा नञि खायल होइत अइछ। हम सब पतरका चाऊरक भात खाई छी। आब हमरा छोड़ि दियह। मालिक कहलखिन हमहु त उएह भात खाई छी। तोहुं हमरा छोड़ि देबें। जे बिचार। बीरछा विचारवान छल। मालिककऽ नञि छोरलकइन। भइड़ जीवन निभेलकइन। कतउ आर कमाय नञि गेल।अतऽ तक की ओर ट्रेनो पर नञि चढ़ल।

बीरछाकऽ एक्के टा बेटी छलइ। ओ भइड़ गाम मे सबसं सुन्नञिर छल। बयस होइते बगलेकऽ गामसऽ समाद अयलइ। आ ओ बेटीकऽ बियाहकऽ देलक। जमाय ओकर गुजरात मे काज करय छल। बेटी गुजराते रहअ लगलइ। जं कोनो समाद किछु दिन नञि आबइ त बीरछा परेशानभऽ जाइ छलाय। कोनो कोनो फोन नम्बर पर बुथसऽ फोन करय। गप्प त नहिये होइ,पाइ सेहो लाइग जाइ। इंतजार मे बीरछा मईरो गेल। कोनो खबर नञि। कतेक बरखक बाद बेटी अयलइ। ओकरा संगे एकटा मनसा सेहो। पहिने

त ओ मनसाकऽ अपन दिअयद कतऽ ठहरेलक। सुतबा लेल। लेकिन राइत बिराइत अबरजाइत देखकऽ ओ अपना कतऽ राखऽ सऽ मनाकऽ देलकइ। बीरछाकऽ कनिया त बऊकभऽ गेल छल ई सब खेला देख क। इमहर जमाय सेहो एलइ बेटीकऽ ल जाइ लेल। बेटी साफ मनाकऽ देलकइ। पर पंचायतीकऽ नौबत आइब गेल छलइ। तखने बीरछाकऽ कनिया एलइ आ कहलकइ जे ई देहक नेह छइ। जेना रहइ छइ से रहअ दियउ। सब ओकर इशारा बुझि गेल। जमाय वापस असगरे गुजरात चइल गेल आ ओ मनसाकऽ बीरछाकऽ बेटी घर मे आइन लेलक रहबाक लेल।

लछमी बहुरिया (लघुकथा)

आइ गाम बला सब लछमी बहुरियाकऽ याद मे किछु करबाक खातिर बैसार केने अइछ। कियो कहइ की मूर्ति बनावल जाय, त कियो छोट छीन स्वास्थ्य केन्द्र, त कियो पढबाक लेल वजीफा, त कियो बेटीकऽ बिबाहक लेल बिन सुदक कर्ज, त कियो स्कुल, कियो धर्मशाला आदि आदि। सब कियो अप्पन विचारकऽ पक्ष मे तर्क दइ छलाह। फैसला नञिभऽ सकल। मूदा ई निश्चित भेल जे किछु ने किछु होयबे करत।

आइ गाम समाज मे लछमी बहुरियाकऽ याद मे किछु करबाक किअए जरूरत बुझेलइ। नबका लोककऽ त किछु बुझले नञि।कऽ छलीह ओ। उनको किछु नाम हेतइन जे माय बाप रखने हेतइन। किनको नञि बुझल। लछमी बहुरिया त सासुरक नाम छइन। वोटरलिस्ट मे सेहो ईएह नाम छइन। खेत खलिहानकऽ दस्तावेज मे सेहो ईएह नाम। सुनञि छियई की कोनो नबकी चुहुलबाज पुतोहु पुछलकइन की आहांकऽ किछु त नाम होइत। माय बाप हेताह तखने धरती पर अयलहुं ने। हमरे टा कान मे कहीं दियह। हम ककरो नञि कहबइ। लछमी बहुरिया कनी काल सोचली, फेर कहलकिन जे ठीके नञि मोन अइछ। ईएह नाम अइछ।कहींकऽ मुसका देलखिन। कियो सासुर मे अहनो ड़इच बइस जाइ छइ जे नामों बिसइड़ जाइ। बिसवास ककरो नञि लेकिन भेल छइ। ओ छलीह लछमी बहुरिया।आइ दुनियासऽ एतेक बरख गेलाकऽ बादो

लोक नञि बिसरलइन अइ।आब त ओहन लोक बननाईये भगवान बंदकऽ देने छथिन।

अतेक त बुझाईये गेल होइत जे लछमी बहुरिया अइ गाम मे पुतोह बइनकऽ आयल रहइत। ई नाम उनकर ससुर देने रहथिन। उनका अयलाकऽ बाद ओइ बरख बड़ड धान भेल रहइ। लोककऽ राखइ लेल कयेक टा कोठी बनबऽ परल छलइ। ओइ साल बाईढ मे एहन माइट आयल छलइ जे अन्न पाइनक संग आमो बड़ड फरल रहइ। जे भी भेल हो नाम परलइन लक्ष्मी, खुशहालीकऽ ल क। बाद मे लक्ष्मीसँलछमी बहुरियाभऽ गेलीह।कहल जाइ छइ जे कालाजारसँउनकर घरबालाक मृत्यु कम्मे बयस मेभऽ गेल छलइन। तहिया अइ बीमारीकऽ इलाज नञि छलइ।

लछमी बहुरिया निसंतान छलीह लेकिन भइड़ गामकऽ माय जेना आबेश करय छलीह। उनकर भंसा घरक आइग मिझाई नञि छलइ। तहिया सलाईकऽ प्रचलन नञि छल। लोक एक दोसर कतऽ सऽ आइगलऽ जाइ छलाय। लछमी बहुरिया कतऽ सऽ लोक सब आइग टुटल खपरा मे सम्हाइड़ कलऽ जाइ छल। ओइ संगे किछु दुख सुख सेहो सांझा करय छल। उनका अपना मे त कते खर्चा, लोक सबके कोठी मेसऽ धान निकाइलकऽ दइ छलखिन। दइ त छलखिन पईंचे, मुदा तगेदा कइयों नञि। खेनाई कमसँकम पांच लोकक बनबइ छलखिन। जे रहइ छलइ खाय काल, सबके आबेश ककऽ खुआबइ छलखिन। बियाह दान मे सब बिध

उनकेसऽ पुईछकऽ सब करय। पंडित पुरहितसऽ बिबाद भेला पर लछमी बहुरियाकऽ कहल मानल जाय। पुरहित सब सेहो हिनकर ज्ञानकऽ आदर करइत छलाह। कियो बीमार पइड़ जाय त घर सलऽ क डागदर आ अस्पताल तक संग दइ छलखिन। किनको कतऽ कोनो करदेवता हुअय, ओ असगर दु सय तीन सय लोककऽ खेनाई बना दइ छलखिन।

कतउ किनको घरसँसैंय बहुकऽ बेशी लड़ाई पर ओतऽ पहुंचकऽ धमकाअ दइ छलखिन। अपने कहियो तीर्थाटन पर नञि गेलीह, लेकिन जौं पता लगइ छलइन जे फलां जा रहल अइछ त उनका रूपया कौड़ी दइ छलखिन आ कहइ छलखिन जे हमरो लेल किछु मांइग लेब। कियो पढअ बाला बच्चाकऽ कापी किताब, नाम लिखाबऽ मे दिक्कत होअइ त ओकरा मदद करय छलखिन। परसौतीकऽ खातिर त ओ डागदरसऽ कम नञि छलखिन। कतेक बच्चा उनके देख रेख मे दुनिया मे आयल। ओ डागदर, दाई आ पंडित तीनु भुमिका मे रहइ छलीह। बेटी सबहक खातिर त ओ बरका आश्रय छलीह। बच्चा सबहक लड़ाई मे ओ हरदम नाइत-नातिन, भागिन- भगिनीकऽ पक्ष मे रहइ छलीह। उनकर घर , घर नञि सराय छल। भोर सलऽ क राइत धइड़ लोकसऽ भरल रहइ छलीह।के बरका,कऽ छोटका,कऽ धनिक,कऽ निर्धन,कऽ पढ़ल,कऽ बिनपढ़ल,कऽ शहरी,कऽ गाम बला,कऽ काबिल,कऽ चपाट सबके लेल उनकर दरबज्जा खुजल रहइ छल। कयेक लोक त लोकाचार बिध बेबहार खातिर आन शहरों मेलऽ गेलइन। ओ सबहक सुख-दुख मे शामिल भेलीह। ओ बाप जे बेटीकऽ बिबाहक लेल प्रयास नञि करय छलाह, उनका ओ एक दशा नञि छोड़इ छेलखिन। उनकर बिगराईकऽ कियो खराब मनबो नञि करय।

जे उनकर सबसं बरका गुण छलइन जे ओ उपकारकऽ ककरो नञि कहइ छलखिन आ नञि किनको उपरागे देलखिन। कतेक लोक पईढ़ लिखकऽ बनल अइछ ओइ मे उनकर योगदान सेहो छइन। ओ सब आब उनका याद मे किछु करबाक लेल लागल अइछ। एक्के लोक मे अतेक गुण कीभऽ सकइ छइ। सबसं कमाल देखू। किनकोसऽ कोनो सेवा नञि करेलीह। चइलतेफिरते दुनियासऽ चइल गेलीह। चहुंओर उनकर चर्चाभऽ रहल अइछ। आजुक कलयुग मे अहनो लोक भेल। अप्पन सब बिसइड़कऽ समाजकऽ उपकार करऽ बाली लछमी बहुरियाकऽ हमर प्रणाम।

अजादी (लघुकथा)

ई कोन अजादी छी।

बुझबाकऽ अइछ त पुईछ लियउन रमन सं। किछु कहता त संयम राखब।

रमन आब एतऽ कहां छथि।

कतऽ गेला।

लोकेसँबचऽ दुआरे गेला अछि त बताकऽ थोरे जेताअ।

बाजु रमनक कनिया परा गेलइन। एहनो कतउ भेलइ अछि।

रमन एक टा कम्पनी मे सुपरवाइजर छलाह। कनिया आ एक टा बेटी संग पटना मे रहइ छलाह। सोचलाह की सब दिल्ली मे रहइ छइ, ओहो दौड़-धूप कऽ कऽ बदली दिल्ली करा लेलाह। कनियेकऽ बेशी जोड़ छलइन। कतेक नीक पटना मे छलाह। दिल्लीकऽ एहन उजाही मचल छइ जेकऽ बचत। बाहरी दिल्ली मे एक टा नब कालोनी मे किरायाकऽ घर लेलाह। ओतइ लग मे अंग्रेजी स्कुल मे कनी भाग दौड़ कऽ कऽ बेटीकऽ नाम सेहो लिखा गेलइन। बीच सेशन मे ज्यों बच्चाकऽ दिल्ली मे एडमिशनभऽ जाय त बुझु बैतरणी पारकऽ गेलऊं।सब काज सुढ़िया रहल छलइन। जिमहर घर लेने छलाह, उमहर अपनों दिसक लोक सब

रहइ छलइन। इनकर नौकरी टुर बाला छलइन,तैं सोचलाह जे अप्पन लोकक बीच परिवार रहतइन।राजा देव कोनो जरूरत परलाह पर दिक्कत नञि हेतइन। ओना अप्पन आफिस ओतऽ सऽ बड्ड दुर छलइन। लेकिन सोचलाह जे उनके टाकऽ ने परेशानी।बाकिकऽ सहुलिइत त छइ।फोन सेहो घर मे लगा लेलाह। मोबाइलक जमाना नञि आयल छलइ।

अहिना सब ठीक चइल रहल छलइन रमनक हिसाबे। धीरे धीरे फोनक बिल बड्ड आबय लगलइन। टेलिफोन विभाग मे पता लगबइ लेल समय नञि छलइन। तखनो जखइन बिल बढ़िते रहलइन त काल रिकॉर्ड निकलबेला। सब फोन इनके घरसँभेल छलइन। समय छलइ जखइन ई टुर मे बाहर छलाह। कनियाकऽ जखइन ई सच्चाई रखलकिन त ओ गलती मानलखिन आ दुबारा नञि फोन करबाक भरोसा देलखिन। अइ घटना मे आपसी बहुत द्वंद्व भेल रहइन। किछु समय बाद एक दिन कनिया गायबभऽ गेलखिन। दुनु बाप बेटी सब जगह पता लगेलाह, किछु थाह नञि लगलइन। हारि थाईककऽ पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज करौलाह। सासुर बलाकऽ कहलखिन त ओ सब इनके दोषी कहऽ लगलइन। कहलकइन जे घर सम्हारऽ नञि अबइ छइन। छोट-छीन गप्प फोन बालाकऽ हल्ला मचा देनाअइ उचित नञि, आरो कतेक दोष। कोनो मदद रमनकऽ सासुरसऽ नञि भेटलइन। उल्टा बदनामीकऽ तोहमा लगबऽ कऽ बारे मे उपरागो देलखइन। निराशभऽ क दिल्ली घुरलाह।

जतऽ जतऽ रमन मदद खातिर जाइथ, उनकासऽ पहिने उनकर खिस्सा पहुंच जाइन। सब हमदर्दी जतबइन मुंहछुआन, आ मजा लइन अंखिदेखार।हारिकऽ पुलिस बालाकऽ फोन बाला गप्प कहलखिन। ओकर आंईख चमकऽ लगलइ। ओइ नम्बर बाला लोक सबसँसख्तीसँपुछताछ केलकइ। त पता चललइ जे रमनकऽ कनिया एकटा सोलकन संग तेजपुर, आसाम मे पराकऽ रही रहल छथि। दिल्लीसऽ पुलिसकऽ संग तेजपुर गेलाह त ओतऽ घर मे ताला लटकल छल। कियो पुलिसकऽ अयबाक खबरदऽ देने रहइ। रमनकऽ शक अप्पन गऊंआ सब पर बुझेलइन। एकतरहक झुग्गी बस्ती छल। वापस दिल्ली घुरी गेलाह। तलाकक केस सेहो लगेलाह।

आब सवाल पैघ होअइत बेटीकऽ भविष्यकऽ छलइन। नौकरी छोअइड़ नञि सकइ छलाह। गामसऽ बुढ़ मायकऽ बजेलाह।सब धीरे धीरे सामान्य दिश भेल जाइ छलइन कि एक दिन बेटी सेहो लापताभऽ गेलइन। कोनो उपाय नञि देखकऽ फेर पुलिस लग गेलाह। पता लगलइन जे बेटी सेहो माय लग तेजपुर पहुंच गेल छइन। रमन आब पुरा निराश छइथ जे बेटी ओतऽ ओअइ समाज मे कोनाकऽ रहथ। ओकर भविष्य की हेतइ। आब पता लगलइन जे पुलिसकऽ पहिले बेर तेजपुर जायबाला फोन बेटिये केने छलइन। ओ निरंतर फोनसँमायसँजुड़ल रहल आ बाद मे निर्णय केलक जे उएह जीवन नीक।

रमनक अड़ोसी-पड़ोसी आब कहइ छइन जे उनकर कनिया पुरखाह छेलखिन। जेना पुरुख मऊगियाह होइत अइछ ओहिना मऊगी सेहो

पुरखाह। उनका सबके पहिलेसऽ आशंका छलइन। जे भी सत्त हो, रमनकऽ दिल्ली मे रहनाई आ ओ नौकरी केनाई दुनुं पहाड़ बुझाय लगलइन। कनियासऽ ओतेक दुख नञि जतेक बेटीकऽ छोड़नाईसऽ दुख भेलइन। तलाककऽ केसकऽ तारीख पर तारीख चइल रहल अइछ। रमन सब छोड़िकऽ दिल्लीसँचइल गेलाह। किनको लग नञि उनकर नम्बर आफ नञि पता-ठिकाना।

ई कोन अजादी छइ जे घर परिवारकऽ ढाहि दइ। बेटीकऽ बापसऽ अलगा दइ। कियो कहइ जे एहन अजादीकऽ आइग लगा दी तो कियो अप्पन अप्पन पसंदक पक्ष मे। किछु दोष रमनोकऽ हेतइन। सबाल ई बेशी घुमई छलइ जे भगलखिन त भगलखिन, सोलकन संग किअए भगलखिन।बाह रे समाज। परेनाईयो मे वर्ग विभेद। की उचित की अनुचित।

गोलकी फ्रेमकऽ चश्मा (लघुकथा)

आशाकऽ जमानत हाइकोर्टसऽ भेटलइन। अखइन बरी नञि भेलीह अइछ। एकदम झोखइड़ गेल छइथ। बुढ़िया जकां चलइ छइथ। चिन्हाईते नञि छइथ। सब किछु बदइल गेलइन। नञि बदललइन त ओ गोलकी फ्रेम बाला चश्मा। हम त ओहीसऽ चिन्हलइन। केहनभऽ गेल छइथ। कतेक गंभीरभऽ गेल छइथ। किछु बजिते नञि छइथ। बड्ड खोंचारियोन त हुं हां। चेहरा पर कोनो भाव नञि। जेकर बुट्टी बुट्टी चमकइ छलइ, ओ एहनभऽ जाइत से पइच नञि रहल अइछ। लेकिन जे सामने देख रहल छी ओइ पर बिसवास त करहेकऽ परत। आब बेशी दिन नञि जीतीह। हाइकोर्ट मे जहिया आब इनकर केशक नम्बर अइतइन, ताबइत तक ई नञि जी पेतीह।आशा जेहल जेतीह, सजोभऽ जेतइन एहन अपराध करतीह से सोचो मे किनको नञि आयल हेतइन। ईएह त छइ जीवन। पता नञि की की लिखाकऽ आयल छइथ।

आशा बच्चेसऽ खुब हंसमुख आ पढुआ छलीह। तहिया बेशी बेटीकऽ कालेज मे नामे टा लिखावल जाइ छलइ, रोज जयबाक प्रचलन नञिये। ओइ मे जे गाम मे रहइ छलीह, उनकर त सोचबो नञि करू। आशा जिद्दकऽ क कालेज मे नाम लिखेलिह। ट्रेनसऽ रोज जाइ छलीह। पास बना नेने रहइत, तांय बेशी पाइ नञि लगइ छलइन। डेरा भारालऽ क रहतइथ आ पढ़ाइ करतइथ, से घरक स्थित नञि रहइन। किछु आर समाजक लड़की बच्चा सब सेहो

ट्रेनसऽ जाइ। आशाक दुश्मन उनकर सुन्दरता आ गोलकी फ्रेमकऽ चश्मा रहइन। किछु लफुआ सब उनका ट्रेन मे पीछा करयन। आशाकऽ बुझल छलइन जे ज्यों घर मे कहलखिन त कालेज गेनाई बंदभऽ जेतइन।ओहीलऽ क अपने जेना तेना सामना करय छलीह। बात कियो छुपलइ अइछ। एकदिन उनकर गऊंआ सब मिलकऽ ओइ बदमशवाकऽ पकड़लक आ जईमकऽ थकुचलक। ओ बदमशवा बड्ड हाथ पैर जोड़लक त ओकरा रेलवे पुलिसकऽ नञि सौंपल गेलइ। किछु महिना त ओकर बाद शांतिसऽ गुजरलइ। मुदा जखइन ओ बदमशवाकऽ घाव सब भरा गेलइ त ओ एकदिन फेर ओ रस्ताकऽ स्टेशन पर आशासऽ बदला लइ लेल किछु लोक लड़कऽ आइब गेल छल। अइ बातक खबर आशाकऽ दोसर लड़की सबसऽ पता लाइग गेलइन। आब केल की जाय। फोन फानकऽ कोनो जमाने नञि। पुलिसकऽ ट्रेन मे रहबाक सेहो कोनो बेबसथा नञि। ओइ ट्रेन मे किछु कुजरनी सब सेहो जाइ छल। ओ सब मिलकऽ एक टा मुसलमानक परिवार जाइ छलइ, ओकरासऽ नेहोराकऽ क ओकर बुर्का आशाकऽ पहिरावल गेल। गोलकी चश्मा उताइड़कऽ कोरा मे एकटा बच्चाकऽ बइसावल गेल। कियो आब चिन्ह नञि सकइ छल आशा के। उएह भेलइ। अगिला स्टेशन पर ट्रेनकऽ भेकम्पकऽ क बदमशवा सब रोकलकइ। आ सऊंसे ट्रेन मे तकलकइ चश्मावाली के। मुदा नञि ताईक पेलक। बड़का अनहोनी होबऽ सऽ बइच गेलइ। आब आशाक कालेज गेनाई बंदभऽ गेलइन। अगिला शुद्ध मे बिबाहकऽ देल गेलइन। पढ़ाइ छुइट गेलइन।

आशाकऽ घरबाला सरकारी नौकरी मे छलाह। एक टा बेटा सेहो भेलइन। आशा सब बिसइड़कऽ बच्चाकऽ पढ़बऽ मे लागल छलीह। विधाताकऽ ई मंजुर नञि। एक दिन उनकर बेटाकऽ एकटा बच्चासऽ लड़ाईभऽ गेल छलइन। सांझ मे ओ बच्चाकऽ बाप किछु बदमाशकऽ लकऽ इनकर घर पर आइबकऽ बेटाकऽ मारऽ लगलइन। तखने आशाकऽ घरवाला आफिससऽ अयलखिन। लाइट गुलभऽ गेल छलइ। मारा पिटी दुनु तरफसऽ भेल। लाइट आयल त देखल गेल जे ओइ बच्चाकऽ बापक माथसऽ शोणित बहइ छल। अस्पतालऽ जायल गेलइ। दु दिनक बाद ओ मइड़ गेलइ। आब पुलिस आइबक आशाकऽ बर आ उनकर बेटाकऽ पकइड़ कलऽ जाय लगलइन। तखने आशा सामने अयलीह आ कहलखिन जे हम ओकरा मारने रहियइ लाठी सं। लाठीकऽ जरा देलियई आ राईखकऽ नाली मे बहा देलियई। बर आ बेटाकऽ आंईखसँनोर बहअ लगलइन- ई गप्प सुइन क। पुलिस आशाकऽ पकइड़ कलऽ गेल। कोर्ट मे आशा ईएह बयान देलखिन।केश चलल। लोअर कोर्टसऽ सजा सेहोभऽ गेलइन। ऐना किअए केलीह आशा। सच्चाई छल जे घरवालाकऽ नौकरी छुइट जंइतइन आ बेटाक जीवन बर्बादभऽ जंइतइन। उनकर सबहक दोष अपना परलऽ क अप्पन जीवन अन्हारकऽ लेलीह। जे कहियो जोरसऽ नञि बजलीह ओ किनको जान मारतीन। कतउभऽ सकइ छइ। ऐना जेहल मे अपनाकऽ दकऽ घर परिवार लय अतेक त्याग की संभव छइ। आशाकऽ आंखि कियो गोलकी चश्मा हटाकऽ देखतइन तखइन ने बुझतइ जे कतेक दर्द ओ समेटने छइथ।

अंत (लघुकथा)

धनेश बच्चेसऽ चलता-पुर्जा छलाह। ओना उनकर गामोकऽ पाइनक असर छइ। लोक कहइ छइ जे ओइ गामक बच्चा, दोसर गामक चेतनकऽ जेबी मेलऽ क घुमई छइ। कतउ ककरो बेच देत ओ सब। धनेश ओहो मेसऽ चांगला छलाह। ओना उनकर बाप कम्मे बयस मे मइड़ गेल छलखिन। बाबा सब खर्च बर्च दइ छलखिन। पाइकऽ कोनो दिक्कत नहि छलइन। जखइन धनेश स्कुल मे पढ़ई छलाह तखनेसऽ धुरफंदी मे लागल रहइ छलाह। बाबासँस्कुलक फीस लइ छलाह। बिन बापक बच्चा टुअर कहाइ छइ।ओ अइ टुअरकऽ आर मे पुअर ब्याज फंडसऽ फीसकऽ पैसा लइ छलाह। फेर बाबाक देल फीसक पाइसँमहाराजा होटल मे जाकऽ सिंघारा खाई छलाह।एहन मुंह बनाकऽ मास्साहेब लग ठारभऽ जाइ छलाह जे ओ एप्लीकेशन देखते फीस माफकऽ दइ छलखिन।

जखइन स्कुलक बाद कालेज मे पढ़ई लेल गेलाह त ओतउ उएह खेला। पढ़ाइ छोड़ि सब काज मे उनका मोन लागइन। बाबा अन्न पाइन आ हिसाबेसऽ पाइ सेहो दइ छलखिन। धनेशकऽ कालेज मे आइबकऽ पांईख निकइल गेल छलइन। दोसर शहर छलइ। नजि कियो चिन्ह बाला। खुइलकऽ मटरगश्ती करय छलाह। युनिवर्सिटीकऽ चुनाव मे सेहो ठार भेलाह। एकटा कागज मे झुटफुसकऽ सब जाइतक अलग अलग नम्बर लिखने छलाह आ अपनाकऽ अपन जाइतक वोटक ठेकेदार बइन गेल छलाह। किछु लोक झांसा मे आइब गेलइन। वोटसऽ एक दिन पहिने मोटकश

पाइलऽ क बइस गेलाह। ईएह त उनकर योजना छलइन। बाबा जखइन ईएह हाल देखलखिन त उनकर बिबाह पुरा दान दहेजलऽ क करा देलखिन। जतेक पाइ देने रहथिन अखइन तक ओ दहेजकऽ रूपया मेसऽ काइटकऽ धनेशक मायकऽ पठा देलखिन।

आब धनेशक सब फुटानी हवा होबऽ लगलइन। युनिवर्सिटी वाला इलेक्शन मे एकटा कैनिडेटक बाप बिहार सरकारकऽ बोर्डक चेयरमैन छलइ। ओकरा पकइड़ धकइड़कऽ पटना मे किरानीकऽ नौकरीलऽ लेलाह। पहिने अस्थायी छलइन नौकरी बाद मे परमानेंटभऽ गेलइन। दरमाहा कम छलइन। कनिया गामे रहइ छलखिन। एक टा बेटा आ बेटी सेहो भेलइन।

पटना मे पहिने एकटा गऊंआ कतऽ रहलाह छह माह धइड़।फेर एमहर उमहर किराया मे। राजेन्द्र नगर मे एकटा बिधवा मउगी किछु कमरा सब किराया पर लगबइ छलाय। इनको पता लगलइन। ओ ओकर बरसाती मे किराया पर शेयर मे घर लेलाह। कनिया गाम मे हल्ला करतिन पटना जाय लेल।उनका अलग घर नञि होबाक बहाना बना कऽ रोईक देथिन। धनेश सब काज सोइच बुअइझकऽ करय छलाह। धीरे धीरे ओ बरसातीसऽ अलग कमरा मे अयलाह। फेर ओइ बिधवाकऽ बहरी कमरा मे रहअ लगलाह।

ओइ बिधवाकऽ दु टा बेटिये छलइ। धनेश ओकरा सबकऽ पढ़बऽ

लगलाह। पाइ नञि लइ छलखिन। ऐनाकऽ क अपन विश्वास जमेला।ओहो मऊगी पढ़बऽ कऽ बदला मे इनका खेनाई देबऽ लगलइन। आबऽ धनेश बहरी घरसँभीतरका घर मे रहअ लगलाह। ओकर बेटी सब स्कुलसऽ कालेज मे आइब गेल छलइ। ओकरा सबकऽ सबटा बाहरबाला काज धनेश करऽ लगलाह। इमहर नौकरी मे उपरी आमदनी सेहो पुराभऽ रहल छलइन। सब ओकरा सब पर खर्च करय छलाह।बाकी किरायेदार सब किछु किछु कामेट करयन।

आब बिधवाकऽ मकानसऽ सब किरायेदारकऽ हटा देलाह। बीच मे कनिया एलखिन पटना त एहन ने परेशानीकऽ नाटक केलाह कि ओ घुरिये गेलीह। कनिया बच्चा सब गामे मे रहअ लगलइन।इमहर अइ मौगीकऽ दुनु बेटी पारा पारी बिहार मेडिकल परीक्षा पासकऽ गेलइ।एकटा पटना आ दोसर रांची मेडिकल कालेज मे पढअ लगलइ। धनेशक मुंह मे अपन बच्चाकऽ नामक जगह पर सदिखन बबिताजी आ सबिताजी नचइत रहइ छलइन।

बात धीरे धीरे पसरऽ लगलइ। सब कहइ जे ओ मऊगी धनेशकऽ पटाअकऽ अपन ऊल्लु सीधाकऽ रहल अइछ।ओकर संबंधी कहइ जे ई धनेश ओकरा मीठ मीठ बात मे फंसेने अइछ आ अतेकटा घरक मालिक बइनकऽ बइसल अइछ। धनेशक माथ पर त उएह सब नचैत छलइन। गाम किछु पाइ हर महीने पठा दइ छलखिन। गाम लोकक व्यंग्यवाणक डरे गेनाई लगभग छोड़िये देने छलाह।

बेटी समर्थभऽ गेल छलखिन। कका सब मिल कऽ लड़का तकलक। खर्च बर्च जे भेलइ से धनेश देलखिन। अलगे अलग गामो मे रहलाह। बेटासऽ नहिंये जेकां गप भेलइन। बेटीकऽ बिबाहक बाद घुअइड़कऽ पटना अयलाह।गाम मे बाप माय मइड़ गेल छलखिन। बांट बखराभऽ गेल रहइन। किछु किछु बात पर भाइ सबसऽ सेहो झंझटभऽ गेलइन।

इमहर बबीताजी आ सबिताजी दुनु डाक्टरभऽ गेल। ओकरो सबकऽ आब धनेशकऽ घर मे रहनाई नीक नञि लगइ।धनेश त अपन सब टा कमाइ ओकरे सबकऽ पढ़ाइ लिखाई, घुमाई फिराई मे गंवा चुकल छलाह। बबीताजी एकटा डाक्टरसऽ बियाहकऽ क रांची मे सेट्लभऽ गेल छल। सबीताजी सरकारी अस्पताल बिहटा मे पोस्टेड छल। धनेश कतेक लोककऽ मुफ्त मे इलाज करा दइ छलखिन। एक दिन धनेशकऽ पता चललइन जे राजेन्द्र नगर वाला मकान ओ सब बेच देलक। धनेशकऽ मकान छोड़अ परलइन। रिटायर केला पर किछु पाइ भेटलइन। बाकि सब पाइ त ओ पहिनेहे निकाइल चुकल छलाह। आब यक्ष प्रश्न सामने छलइन- धनेश कतऽ जैताह।

धनेश घुरीकऽ गाम अयलाह। बंटवारा मे उनकर हिस्सा मे घर नञि घरारी भेटल छलइन। जे किछु पाइ छलइन ओइसँएकटा छोट घर बनेलाह। उनकर नौकरी मे पेंशन नञि छलइन। कहिनाकऽ

घींच तीरकऽ घर चलइ छलइन। बेटा सेहो बेरोजगार बइसल रहइ छलइन। दुनू बाप बेटा म मे खटबहस होइत रहइ छलइन। अहिना समय बितइ छलइन।

धनेश सुविधा भोगीभऽ गेल छलाह। ई जीवन जीबाक ओ आदी नञि छलाह। बड्ड जोरसँदुखित पड़लाह। इलाजक कमीसँमर्ज बढ़इत गेलइन। बाद मे देखेला पर पटना रेफरकऽ देलकइन। लाईद पाइदकऽ पटना भर्ती भेलाह। संयोगसँबबीताजीकऽ बदली पटनाभऽ गेल छलइ। ओ तुरंत प्राईवेट वार्ड मे शिफ्ट केलकइन। मायकऽ खबर केलकइ। ओ हो सब रांचीसऽ अयलइन। दस दिनकऽ करीब अस्पताल मे रहलाह। ओतइ मृत्यु भेलइन आ ओकर सबहक देखरेख मे काजो ओतइ बेटा केलखिन। जेकर पाइ तकरे जुइत ने।

दु दु टाकऽ डाक्टर बनेलाह आ ईलाजक अभाव मे धनेश मइड़ गेलाह।अपन योजना बनेलासऽ किछु नञि होअइ छइ। ऊपरवाला जे अंत जिनका लेल लिखने अइ, ऊयाह होइत।

फैसला (लघुकथा)

बेरु पहर काल बेल बाजल छलइ। ईकऽ भऽ सकइत अइछ। डाक्टर रागिनीकऽ अखने तऽ निन्न लागल रहइन। क्लीनिकसँएलाक बाद , नञि चाहितो थाकल थेहियाल रहइत छथि। दाईयो नञि छलइन। अनमने भावसँगेट खोलइत छथि।

ईकऽ विकट पाहुन भऽ सकइत छथि। जहियासँपी एन जी भऽ गेल छइ, ई गैस बालाकऽ झंझट खत्म। नञि तऽ ओ, जखने सुतब, तखने आइत। बेटाकऽ स्कुलसँआबऽ मे अखइन समय छइ। अगल बगलसँबेशी अबरजात रखनेहे नञि छथि। ओना डाक्टर सबहक संग ई दिक्कत छइ, जखने लोककऽ बुझा जेतइ जे ई डाक्टर छथि- सबकऽ किछु ने किछु मंगनिया सलाह दइत रहु। सब लोके रोगी भऽ गेल छइ। मऊगी महाल मे तऽ आर हाल बेहाल छइ। मिस्टर कुमारकऽ बेशी लोकसँहेम क्षेम पसन्द नञि छइन। ओइसँरागिनी ककरोसँहाय हेल्लोसँबेशी संबंध नञि रखने छथि। भेलइन जे बेसिनक नाली जामक कम्पलेन मिस्टर कुमार केने छलखिन, भऽ सकइत छइ, जे उएह होइ?

महानगर मे ई बड़का लीला छइ, आब तऽ रागिनीकऽ सेहो आदत भऽ गेल छइन.........मेन गेट खोलऽ सऽ पहिने मैजिक आइसँहुलकी दियउ। अइ मे किछु देखाई छइ?

केकर भीतर की चइल रहल छइ सेकऽ जनञिया?

ई चेहरा तऽ किछु चिन्हल जानल लगइत अइछ।

गेट खोलिते देखइ छथि जे राजन ठार छथि।

आऊ आऊ राजन बाबु। कोना आयल? आइ कोन दिशसँसुरूज ऊगला अइछ?

राजन घर मे घुसला। सोफा पर धंईस कऽ बैसलाऽ ।

चाहइ तऽ कहियासँछलऊं। मूदा गरे नञि धड़इ छलाय। आइ मौका लागल तऽ आइब गेलऊं।

अच्छा! मौकाकऽ तलाश मे छलऊं!

हं हं। आहांकऽ कोना बिसरब।

से कियैक? हमरा मे एहन की लागल अइछ जे आहां नञि बिसरब?- मुस्कियाइत रागिनी बजलीह।

जे आहां मे अइछ, से हमहीं जनञि छी।

अच्छा! अखनो बिसरायल नञि।

रागिनीकऽ मुस्कीसँराजनकऽ बुझा गेलइन जे आइ फेर गोटी लाल अइ।कतेक सोइच विचाइर कऽ तऽ आइ बेरू पहर एलाह अइछ।गप्प सबसँपता चइल गेल छलइन जे मिस्टर कुमार अखइन बंगलोरसँबाहर सेमिनार मे गेल छथि। बच्चा स्कुल गेल छलइ, घुरऽ मे तीन घंटा बाकी छलइ। राजन अइ लब्धक लब्ध, समयक सदुपयोग करऽ चाहइ छलाह। रागिनीकऽ सब ज़बाब उनका हरियर झंडी लाइग रहल छलइन।

रागिनी जल्दी जल्दी चाह बना कऽ देलखिन।

राजन उनका आर किछु बनबऽ सँमना कऽ देलखिन।

आहां अतइ बइसु ने। अहींसँभेंट करऽ एलऊं अइछ। आब खेनाई पिनाई के,कऽ पुछइया ?

की भेल? भूख पियास सब हेरा गेल?

आहां सामने रहब तऽ , हरेबे करतऽ ने।

हम तऽ सामनेसँजाइते छलऊं , भंसाघर मे जलखइ बनबइ लेल, अहीं तऽ रोईक देलऊं।आब सामने छी त कहइ छी एना ओना भऽ गेल।

कहि कऽ चट दऽ उईठ कऽ रागिनी भंसाघर दिश जाय लगलीह।

राजन तखने सही मौका देख उनका आगुसँरोईक लेलखिन।

अच्छा बइसु। नञि किछु कहब!

रागिनी अपन भाव भंगिमा सऽ राजनकऽ ऊकसबइ छलखिन।

राजनकऽ भेलइन जे आरो देरी केनाई ठीक नञि। सब किछु उनकर साथ दऽ रहल छइन।असगर मे रागिनी दसो बरखक बाद भेटेलिह अइछ। कतेक कतेक राइत उनकर याद मे जगले बितेने छइथ।आइ सब बकियौता पुरा कऽ लीह।

" आहां की सोच विचार मे पड़ल छी"- रागिनी बजलीह।

रागिनीकऽ सवाल पर राजन सम्हड़इत बजलाह- नञि किछु।

थाकल बुझाई छी? आराम करब तऽ , ओइ घर मे पइड़ रहु।

परऽ कऽ तऽ मोन कऽ रहल अइछ, आहां संग दी तखइन ने?

अइ मे हम की संग देब? हऊआ पलंग अइछ। जा कऽ पइड़ रहु।

अहां पहुंचा दियह।

चलु।

राजन आब आगु बढऽ कऽ मोन बना लेने छलाह। ओ रागिनीकऽ ज़बाबकऽ आगु बढ़बाकऽ ईशारा बुझई छलाह।अइ बीच मे गप्पक दौरान रागिनीकऽ अस्तव्यस्त वस्त्रसँउनकर अंग प्रत्यंग सेहो कखनो काल झलकी दऽ दइ छलइन।राजनकऽ बुझबा मे एलइन जे रागिनी आ मिस्टर कुमार दुनु व्यस्त लोक छथि आ एक दोसरा लेल इनका सबकऽ समय नञि छइन। रागिनी अपन दाम्पत्य जीवनसँसुखी नञि छइथ, तैं कतेक...... लिफ्ट दऽ रहल छथिन।

जखने ओइ पलंगक लगऽ दुनु गोटे पहुंचलाह त राजन "मत चुको चौहान" जेकां रागिनीकऽ हाथ पकइड़ लेलखिन।

रागिनी झट दं हाथ झाड़लखिन। सख्तीसँकहलखिन- हम बुझइत रही

जे आहां कतऽ जा रहल छी। कथी लेल आहां एलऊं अइछ।

सन्नाटा छा गेल छलाह। राजन कथी दुन सोचने छलाह, आ भऽ गेलइन तेसरे।

आहां आब दु मिनटक अंदर एतऽ सँरस्ता नाइप लियह। नञि तऽ हमरा पुलिसकऽ बजबऽ मे समय नञि लागत- रागिनी बजलीह।

हमऽ आहांकऽ असली रूप देखऽ चाहइ छलऊं। अतेक बरखक बादो आहां मे बदलाव नञि भेल। जाऊ, अपन कनिया बच्चा संग समय बिताऊ।अतऽ आहांक सब कार्यकलाप कैमराक रिकॉर्डिंग मे आइब गेल हैत।

राजन स्तब्ध भऽ ठार छलाह। मौसम ठंडा रहला बादो पसीनासँतर-बतर भऽ गेल छलाह।

गरदन नीचा केने लजाइत धीरेसँबजलाह- "ओ जे पहिने भेल छलइ?ओइ मे अहुं शामिल रही।"

रागिनी उनकर बातकऽ बीचे मे कटइत बजलीह- हमरा होइत छलाय जे अखइन तक आहां ओकर चर्चा कियै नञि केलऊं।

बजइत हंफइत रागिनी सोफा पर आइब बइस रहइ छथि।

पाछु - पाछु राजन सेहो सोफा पर बइसऽ लगलाह, ताबिते फुंफकाड़इत रागिनी बजलीह-

खबरदार जे अतऽ कऽ कोनो चीज पर बइसऽ कऽ कोशिश करब। आहां पुरूख सब हमेशासँस्त्रीकऽ भोगक वस्तु बुझई छी। लल्लो चप्पो कऽ कऽ एक बेर फंसा लेलऊं, फेर जखइन

मोन ओकरासँहवसकऽ पुरा केलऊं। स्त्री कऽ एक गलतीकऽ भइड़ जीवन ओकर फल भोगबइत रहइ छियई।हम गलती केने छलऊं, ओ हम भोइग लेलऊं। हम मिस्टर कुमारकऽ सेहो सब बात पहिनेहे बता देने छियइन। तैं ओइ चक्कर मे नञि परब जे बातकऽ फईला कऽ हमर जीवन नर्क कऽ देब। आब हम फैसला कऽ लेने छी जे आहांक सजा दी। बाजु सजा चाही? या हमर जीवनसँदूर रहब?

राजन कल जोइड़ कऽ माफी मंगलाह। ....आइकऽ बाद हम कहियो नञि एहन गलती करब आ नञि आहांक जिनगी मे आयब।

राजन गेट खोइल कऽ जाय लगलाह आ जाइत काल रागिनीकऽ पैर सेहो छुअइत बजलाह- "ई बातकऽ अतइ कब्र मे दफ़न कऽ देल जाय। कैमरा रिकार्डिंग सेहो डिलीट कऽ देबइ? "

आहां निकलु? हमरा जे करबाकऽ होइत, से कऽ लेब।

राजनकऽ गेलाकऽ बाद रागिनीकऽ बुझेलइन जे बड़का भारी बोझ उनकर माथा परसँउतइड़ गेलइन। बच्चाकऽ स्कुलसँघुरबा मे अखइन समय छलइ। ओना रागिनी , मिसेज कुमार बनलाकऽ बाद आजाद ख्यालक बइन गेल छथि। जीवन जीबा मे कोनो बंधन नञि छइन। मिस्टर कुमार तरफसँपुरा आजादी छइन। व्हिस्की पीनाई उनका मिस्टर कुमारे सिखौने छथिन।"वाइन तऽ पाइन छइ"- पहिल बेर ई लाइन सुनऽ मे केना दन लागल छलइन। मेडिकल कालेज मे जे छौंड़ी सब वाइन पीबइ, ओकरा सबसं ई कै लग्घा दुरे रहइ छलीह। आब की ओहिना लोक इनकोसँदुर रहइ छइन?ओ छोट

शहर छलइ, ई महानगर छइ। देश- विदेशकऽ लोक छइ। नञि पीयऽ बाला बैकवर्ड कहाइ छइ।

ओ दिन मे ड्रिंक घर मे नञि करय छथि, तखनो उनका नञि रहल गेलइन। बार कैबिनेट मेसँअपन पसंदीदा ब्रांड निकाललीह आ बोतलक कार्क खोललीह। आइ बिन सोडा, बिन आइस आ बिन पाइनक, नीट पी रहल छलीह। कनिको कंठ मे आइ नञि लाइग रहल छलइन।

दसो बरखसँओ अइ दिनक इंतजार मे छलीह। राजन फेर एताह तऽ उनकासँकोना निबटब। कहीं हल्ला गुल्ला नञि भऽ जाइ। स्त्रीकऽ चरित्रे टा तऽ छइ, जई पर बिना किछु केने, कियो ढ़ेपा फेंक सकइ छइ। एतऽ तऽ उनकासँगलती भऽ गेल छलइन।बात मे फंईस कऽ ओ राजनकऽ देहसँखेलायकऽ आजादी दऽ देने छलखिन। बाद मे सब बुझेलइन। क्षणिक सुख, विवेक पर हावी भऽ गेल छलइन। ओना उनकर कयेक टा मेडिकलक संगी बिन्दास जीवन जी रहल अइछ। बियाह ओकरा सब लेल बेकारक " पचड़ा" छइ। शरीर की छइ? मांसक लोथड़े ने? अइ लेल कियैक अतेक प्रपंच? ईएह सब सोचइत, रागिनी पैग पर पैग खींच रहल छथि। सामने शीशा मे चेहरा देखा रहल छइन।

हम तऽ बढ़िया नाटक खेल सकइ छी।

राजन केहन डराऽ गेल छलाह।

सटक सीताराम भऽ गेल छलइन।

कहीं डरक मारे पेंट तऽ गील नञि भऽ गेल छलइन।

हा हा हा- नशा मे अपने हंसऽ लगलीह।

अपनेसँअपन पीठ ठोईक लेलीह।अपन सोचइत, हंसइत, मुस्कियाइत बिछान पर परऽ चइल गेलीह।माथ पर कोनो भार नञि छलइन, तैं बिछान पर जाइते निन्न भऽ गेलइन।

ओ गल्ती की छलइ? राजनक चक्कर मे रागिनी कोना एलीह? ओ इंजीनियर, ई डाक्टर, केना? की? भेलइ? बुझऽ लेल आहांकऽ पिछला इतिहाससँगुजरऽ पड़त ....

राजन आ रागिनी एक्के शहर मे शुरूआत मे रहइ छलीह। राजनक पिता किरानी छलखिन आ रागिनीकऽ पिता सरकारी पदाधिकारी। किरानीकऽ नौकरी बदली बला नञि, आ पदाधिकारी सबकऽ किछु किछु बरखक बाद बदली होइत छलइन। ओइ शहर मे पढ़बाक सुविधा नीक छलइ, मूदा अधिकारी आ किरानीकऽ बीच दूरी बेशी छलइ। आपसी आन- जान आ मेल- जोल नञिये बराबर।

दसमी तक लड़का-लड़कीकऽ अलग स्कुल छलइ, लेकिन ग्यारहवींसँकालेज मे संगे पढ़ाइ होइ।दुनु गोटे एक दोसरकऽ नीक विद्यार्थी रूप मे नामसँजनञि छलीह। गर्ल्स कालेज ओइ शहर मे नञि रहइ। राजनकऽ दसमी मे नीक नम्मर आयल छलइन। रागिनी तऽ अपन स्कुलक टापर छलीह। कालेज मे आइब कऽ

नीक दोस्ती भऽ गेल छलइन। ट्युशन सेहो सब संगे पढ़ई छलाह।दोस्ती कालेजे तक छलइन।

बारहवींकऽ बाद राजन इंजीनियरिंग आ रागिनी मेडिकलकऽ कोचिंग लेल पटना अलग अलग संस्थान मे जाइ गेलाह। गाहे-बगाहे भेंट सेहो भऽ जाइन। रागिनीकऽ तऽ पटना मेडिकल कॉलेज मे डाक्टरीकऽ पढ़ाइ मे ,आर राजनकऽ टाटा मे इंजीनियरिंग मे नाम लिखा गेलइन।

सब अपन दुनिया मे व्यस्त छल। राजनकऽ थर्ड ईयर मे खर्चाक लऽ कऽ धनिक बापक बेटीसँबियाह करा देल गेलइन। रागिनीकऽ परिवार ,ओ शहर छोड़ि कऽ कतउ आर चइल गेल छल।आब दुनु मे कोनो संवाद नञि छलइन।

इंजीनियरिंगकऽ पढ़ाइकऽ बाद राजन सरकारी नौकरीकऽ तैयारी गाम मे रही कऽ करऽ लगलाह।दु टा धीया पुता सेहो बेरोजगारी मे भऽ गेलइन। परीक्षा सब दइ छलाह , लेकिन सफलता नञि भेटलइन। इमहर पिता सेहो रिटायर कऽ गेल छलखिन। घरक जिम्मेदारी बइढ़ गेल छलइन। हारि कऽ बम्बइ जा कऽ प्राईवेट नौकरी करबाक फैसला केलाह।ईएह प्राईवेट नौकरी पहिने भेटई छलइन, तखइन नञि केलाह। आब कोनो नौकरी ताकऽ बहरेला।पछता रोटी खेने छलाह।

जखइन पटना मे, ट्रेन मे बम्बइ जाइ लेल सीट पर बइसला तऽ

देखइ छइथ जे सामने नव विवाहित रागिनी अपन घरबाला संग बइसल छलीह।गाम मे बेरोजगारीकऽ माइड़ झेललाकऽ कारण राजनक देह झोकइड़ गेल छलइन। ओ बयससँबहुत बेशी लगइ छलाह।

इमहर रागिनी एम बी बी एस, फेर एम डी कऽ कऽ नौकरी करइत रहलीह। एतेक गुणी लेल बर तकनाई आसान थोड़बे छलइ।देरीसँबियाह भेलइन। बियाहक बाद बरक संग बम्बइ मे रहइत छलीह।

राजन तऽ देखते रागिनीकऽ चिन्ह गेलखिन। रागिनी इनका दिश जाइन बुझ्झ कऽ या अन्जाने सं, तकबो नञि केलकीन। राजन इंतजारे करइत पहिल दिनक रस्ता बितेलाह।अगिला दिन भोर मे हल्का फुल्का रागिनीकऽ बरसँराजन गप्प शुरू कयलाह। तखइन संक्षेपे मे रागिनी बजलीह। राजनकऽ बेरोजगारीकऽ बात बुझ्झला पर, रागिनीकऽ घरबाला अपन कार्ड देलखिन आ नौकरी तकबा मे मददकऽ भरोसा देलखिन। रागिनीकऽ घरबाला अपने प्राइवेट कालेजक पढ़ल इंजीनियर छलाह, सरकारी कालेज मे उनका एडमिशन नञि भेल छलइन। राजन सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज मे पढ़लाक बादो नौकरी नञि भेटबाक कारण उनका सहानुभूति छलइन।

बाद मे रागिनी आ उनकर घरबालाकऽ सहयोगसँएकटा नौकरी राजनकऽ सेहो भेटलइन। रागिनी अपने डाक्टर छलीह आ ओतइ एकटा प्राइवेट अस्पताल मे नौकरी शुरू कऽ देने छलीह।

राजनकऽ अपन कियो बम्बइ मे नञि छलइन, तैं ओ पाबइन तेहार आ छुट्टी मे रागिनी कतऽ जाइत अबइत छलाह।

अहिना एक दिन बेरु पहर ओ रागिनी कतऽ गेल छलाह। ओतऽ गप्प सप्प, हंसी -मजाक करिते ओ कखइन आगु बइढ़ गेलाह........ रागिनी नञि बुझलीह........राजनकऽ तऽ सोचल छलइन...... रागिनी पर अपन शारीरिक बल शौष्ट देखबइत ओ मर्यादाकऽ सीमा रेखा तोइड़ लेलाह। ओना ओइ दिन कतउ असहमति नञि छलइ। विवाहित राजन, बहुत दिनसँस्त्रीकऽ संसर्गसँदुर छलाह, आइ मौका भेटला पर रागिनीकऽ संग सहवास कऽ लेने छलाह।

किछु दिनक बाद रागिनीकऽ बरक बदली भऽ गेलइन। ओ सब गोहाटी चइल गेल छलाह। राजनकऽ ओइ दिनक बाद रागिनीसँकहियो भेंट नञि भेल छलइन।एक दु बेर चाहबो केलाह-जाइ लेल, लेकिन नञि गेल भेलइन........कारण जे भी हो।

रागिनी अइ घटनासँबाद मे दुखी छलीह। ओ अइ लेल अपनोकऽ दोषी मानञि छलीह। उनका होइन जे मिस्टर कुमारकऽ विश्वासकऽ ओ तोइड़ देलखिन।ऊपरसँजे फेर राजन एताह, तऽ कोना कऽ सामना करबइन।

ओ बम्बइकऽ पाइन नञि सुट केलाक बहाना बना कऽ अपने दुखिताई होबाक नाटक केलीह। फेर हारि कऽ मिस्टर कुमार दोसर नौकरी गोहाटी मे तकलाह।ओतऽ ओ सब बिन बतौने चइल गेलीह।

राजन आब व्यवस्थित भऽ गेल छलाह। कनिया बच्चाक संग बम्बइ मे रहऽ लागल छलाह मूदा उनकर माथ पर रागिनी नचइत छलखिन।

राजनकऽ जखने मौका लगइन, ओ इनकर सबहक पता करइत छलाह। थोड़बे दिन पहिने पता लगलइन जे ई सब आब बंगलोर मे छइथ।

राजन बंगलोरकऽ आफिसियल काज अबिते, ओतऽ पहुंच गेलाह। किछु ढेकाहारी कऽ कऽ इनकर सबहक घरक पता निकाइल लेलाह।ओकर बाद ऊयाह बेरु पहर पहुंचल छलाह। उनका बुझले नञि छलइन जे रागिनी " फैसला" लऽ लेने छथि। अपन गलतीकऽ अपने सुधार रागिनी कऽ कऽ निचिन्त्र सुइत रहलीह।

आत्मग्लानि (लघुकथा)

रंजीत नारायण, गंगा अपार्टमेट आर डब्ल्यू एकऽ प्रेसीडेंट छथि। रिटायर भेलाक बाद अपन सब उर्जा अपार्टमेटकऽ भलाई मे निश्वार्थ लगा रहल छलाह। इनका अइ सोसायटी मे एलाक बाद सोसायटीकऽ खर्चा चौथाई भऽ गेल छइ, आर सुविधा दुगुना। सब अपार्टमेट मे रहनिहार इनका या तऽ प्रेसीडेंट साहब कहइ छइन या मिस्टर आर एन।ई दुनु संबोधन मे गदगद रहइ छथि। कुकुरमुत्ता जकां भइड़ दिल्ली मे छिरियायल ई हाऊसिंग सोसायटी आ अकर आफिस बियर्रर्स सब सगरे भेटा जेताह।सब प्रेसिडेंटे छथि। आइनसँभरल रहताह सब। घर मे कनिया बच्चा सब टेड़इत नञि रहइत छइन, अतऽ सोसायटीकऽ आफिस मे तीसमार खां अपनाकऽ बुझबइत रहताह।अनेरोकऽ कनहा उचका उचका कऽ चलइत रहताह। सोसायटीकऽ गेटसँबाहर जाइते सुटक पिल्ली भऽ जाइ छइथ। ई उनका बुझले नञि छइन जे इनकर सबहक काजबाली सब टा भेद खोइल देने छइन।अकरा कतऽ कऽ गप ओकरा करऽ मे ई दाई सब पारंगत अइछ।

मिस्टर आर एन , अइ सबसँअलग अपनाकऽ बुझई छथि।एक दिन सोसायटीकऽ आफिस मे केयरटेकर लग कोनो काजक सिलसिला मे गेल छलाह। ओतऽ पहिनेसँएकटा व्यक्ति किछु सोसायटीकऽ फार्म भड़इत छल।

केयरटेकर कहलकइन-

ई मिस्टर मिहिर राय छथि। २०१ मे एलाह अइछ।

२०१ तऽ मिस्टर कुंवरकऽ छइन?

हं। ई किराया मे एलाह अइछ।

मिस्टर आर एनकऽ तऽ मिस्टर मिहिरकऽ देखते जेना सांप सुंईघ गेलइन। एकदमसँसकपका गेलाह।

आन कोई रहितइ त केयरटेकरकऽ निर्देश दइतथिन की- ई फार्म भराऊ, एना मिस्टर कुंवरसँएफिडेविट लियउन, इनकासँअंडरटेकिंग लियह, एना आऊ, एना जाऊ, ओतऽ गाड़ी पार्क करु, समय पर मेटेनेंसकऽ पाइ दियउ......... फलां चिलां। केयरटेकर तऽ मजा लइ लेल इनका परिचय करेलक। अतऽ तऽ ओ भेलइ जकर ओकरा आशा नञि छलइ।

अइ सोसायटी की, सब हाऊसिंग सोसायटी मे किरायेदारकऽ दोयम

दर्जा देल जाइ छइ। आन मेम्बर तऽ अइ बुढ़ियाकऽ फुईस बाला प्रेसिडेंटकऽ मोजर दइ नञि छइन, ई नबका किरायेदार पर इनका सबकऽ छजई छइन। नब लोककऽ तऽ ई सब ई करु आ ई नञि करु, सुना कऽ पका दइ छथिन।

मिहिर किछु बजलाह नञि, लेकिन केयरटेकरकऽ थाह लाइग गेल छलइ जे किछु तऽ किछु झोल छइ।

मिस्टर आर एन चुपकेसँओतऽ सँनिकइल रहलाह। मिहिरकऽ सेहो भेलइन जे चलु अपनलोक अतऽ सोसायटी मे पहिले दिन भेंट गेलाह, ई नीक संयोग छइ।

मिस्टर आर एन सोसायटीकऽ आफिससँसीधा घर घुरलाह। आन दिन तऽ इमहर ओमहर राउंड मारलाकऽ बादयअबइ छलाह। इनका डर सतबइ लगलइन जे कहीं ई मिहिर सबकऽ सच्चाई ने बता दइ। अतुका सब इज्जत एक्के मिनट नञि लगतइ, छु जेकां उड़िया जाइत।

बेचैनी मे घर मे टहलऽ लगलाह। कनियाकऽ अइ परेशानीकऽ कारण पुछला पर शुरू मे तऽ नञि किछु बतेलखिन लेकिन बाद मे जोर देला पर मिहिरकऽ अइ सोसायटी मे रहअ बाला बात

कहिये देलखिन।

कनियो परेशान जे आब की हेतइ, सबकऽ असलिइत ई मिहिर बतेबे करतइ। ई जाइन बुइझ कऽ अइ सोसायटी मे आयल अइछ। ई तऽ किरायेदार अइछ, कतउ रही सकइ छलाय।ई बदला लेबाक इरादासँआयल अइछ।

आइकऽ बाद मिस्टर आर एन आ उनकर कनियाकऽ सोसायटी मे निकलनाई कम भऽ गेलइन।

महीना बितइत बितइत एक दिन सब देख रहल अइछ जे मिस्टर आर एनकऽ समान ट्रक पर लदा रहल छलइन।ओ किनको अपन पता नञि देलखिन आ ओतऽ सँकतउ आर शिफ्ट भऽ गेलाह।

बाद मे सोसायटी बालाकऽ पता चललइ जे मिस्टर आर एन अपन फ्लैट सेहो बेच लेलाह अइछ।सब लेल ई एकटा रहस्य छलइ, सिवाय केयरटेकर के।ओकर अनुभवी आईख, मिस्टर आर एनकऽ ओइ दिनक उतरल चेहरा बड्ड किछु कहि देने रहइ।

जिज्ञासा सबकऽ ई बुझबाकऽ लेल लागल छलइ जे एहन "

कारण " आखिर की छइ?

रंजीत एकटा सामान्य नौकरी करय छलाह। उनकर कनिया तीन बहिन आ एक भाइ छलखिन। ससुरकऽ मृत्यु भऽ गेल छलइन। रंजीतकऽ सार संजीव बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे पढइ छलाह।

एक बेर संजीव अपन गाम छुट्टी मे गेल छलाह। ओतऽ एकटा पुश्तैनी जमीनकऽ लऽ कऽ दोसर टोलक लोकसँविवाद भेलइ। ओइ लड़ाई मे दुनु पक्षक लोक जमा छल। ओइ पक्षक एक गोटे संजीव पर गोली चला देलकइन। मौके पर संजीवक मृत्यु भऽ गेलइन। संजीवकऽ पिता पहिनेहे स्वर्ग लोक जा चुकल छलखिन। ई जवान बच्चाकऽ लहाश देख कऽ संजीवक बाबाक बुढ़ भाइ दलपति रायकऽ नञि रहल गेलइन।

ओ अपन लायसेंसी बंदूक उठेलाह आ संजीव पर गोली चलबऽ बालाकऽ ओतइ ढेर कऽ देलाह।दु लोककऽ सरेआम हत्याकऽ खबर आइग जेकां चारु दिश फैल गेलइ। थाना पुलिस एलइ ।दलपति राय आ उनकर घरक सब पुरूख सदस्यकऽ पकइड़ कऽ लऽ गेलइ। ओइ पक्षक जे मारने रहइ, ओ तऽ मइड़ गेल छल।तैं उमहरसँआर कियो नञि जेहल गेलइ।

संजीव आ उनकर दुनु साढु सपरिवार अइ दुखक घड़ी मे ढ़ांढस देबइ लेल पहुंचल छलाह।ई लड़ाई संजीवकऽ लऽ कऽ भेल रहइ आ ओकर मृत्युकऽ बदला लइ लेल दलपति राय बुढ़ भेलाक बादो ई कदम उठेलाह। उनका लाख कहलाकऽ बावजुदो पुलिस घरक सब पुरूख सदस्यकऽ नाम केश मे दऽ देने

रहइ, कारण सीधा छलइ- दोसर पक्ष प्रभावशाली छलइ आ उपरसँपुलिसकऽ पाइ सेहो चढ़ा देने छलइ।

श्राद्ध कर्मकऽ बाद ई सवाल उठलइ जे केसक खर्चा आ दलपति रायकऽ आश्रितक देखरेख कोना होइ। संजीवक मां कहलखिन जे उनके बेटा लऽ कऽ सब फसाद भेल छइ आ बेटा परलोक चईले गेल अइछ।हम ई सब भार ओकर आत्माक शांति लेल उठायब।गामक स्कुलकऽ जमीन सेहो संजीवक माय देबऽ चाहइ छलखिन। उनकर बेटी सबकऽ आब संपइतक लोभ भऽ गेल छलइन।ओ सब अपन मायकऽ दिमाग मे बइसा देलखिन कि स्कुलकऽ जमीन देला पर ओतऽ अनेरूआ लोकक अड्डा भऽ जेतइ। आहां किछु आर सोचु, भाइकऽ नामसँसैह कऽ देल जतइन। अहिना स्कुलक जमीन देबाक प्रस्ताव टरका देल गेलइ।

ओकर बाद संजीवक खेतक फसल दलपति रायकऽ घरकऽ लोककऽ दऽ देल जाइ छलइन। सब सामान्य चइल रहल छलइ। सब जेहल गेल लोकक जमानत लेल बड़का वकील राखल गेल छलइ। लोअर कोर्टसँतऽ जमानत नञि भेटलइ, लेकिन हाइकोर्टसँदु बरखक बाद किछु लोककऽ जमानत भेलइ। अइ सब कोर्टक दौर बरहा आ दलपति रायकऽ आश्रित सबहक खर्च संजीवक माय अपन दऽ रहल छलखिन।

जवान बेटाकऽ मायकऽ रहिते गुजरलाकऽ शोकसँबड़का दुख किछु नञि होइ छइ। संजीवकऽ माय आब बेटी सबहक संग रहइ

छलीह।ओ इकलौता बेटाकऽ याद मे गाम मे किछु करऽ चाहइत छलीह। बहुत सोच विचार केलाक बाद महादेव मंडिल बनबऽ निश्चित केलीह। उनकर ई निर्णय सुइन कऽ तीनु बेटी एहन ने जाल बुनऽ लगलइन जे सब पाइ इमहर आमहर होबऽ लगलइन।दोसर गामक पुश्तैनी जमीन बेचऽ कऽ जहां ककरो कहतिन कि जमाय ओकरा भड़का देथिन।नहिये मंडिल बनबऽ देलकइन सब।किछु बेटाक याद मे करबाक विचार ओ सोचिते रही गेलीह।

दु बरख बितइत बितइत संजीवक माय चट दं एकदिन रंजीतक कतऽ रहलाक क्रम मे मइड़ गेलखिन।ओना गामक लोककऽ उनकर मृत्यु पर संदेह छइ।

तीनु बहिन अपन जमा भेलीह आ उनकर श्राद्ध हरिद्वार मे कऽ दइ गेलखिन। मूंहछुआन गाम मे खबर भऽ गेल छलइ। आधासँबेशी लोक तं जेहल मे छलइ, नञि कियो आइब सकलइन।

आब तीनु साढ़ुकऽ केस परक खर्च फालतू बुझा रहल छलइन। ओना ई पाइ उनका सबकऽ अपनासँदेबऽ नञि पड़इ छलइन। आब तऽ सासुरोकऽ संपइत उनका सबकऽ अपन बुझाय लागल छलइन।

सब साढु मे बुझनिहार रंजीत छलाह। ओ दलपति रायकऽ घरक लोकसँसेहो संबंध रखने छलाह। आन जान होइत रहइत छलइन।

अही सब मे एक गोटे इनका लग संजीवक हिस्साकऽ गामक घरारीसँलऽ कऽ सब संपइत लिखबइकऽ आफर देलकइन। जमीन खरीदऽ बाला आर कोई नञि छलाह, ई छलाह उएह लोक, जिनकर बेटा संजीवक हत्या केने छलइन।

ई बात दलपति रायकऽ घरकऽ लोककऽ सेहो पता लगलइ। ओ सब रंजीत आ उनकर कनियाकऽ ओकरा बेचऽ सँमना केलखिन। रंजीत बदला मे बहुत रास पाइ मंगलखिन। दलपति राय त अपने जेहल मे छलाह।ओतेक पाइ कतऽ सँदइतथिन।

पाइकऽ लोभ मे तीनु साढु आ उनकर कनिया सब मिल कऽ ओइ पक्षकऽ सब संपइत रजिस्टरी कऽ देलकइ।

रंजीत आ दलपति रायकऽ परिवारकऽ बीच खुब झगड़ा दन भेलइन।

आहांकऽ हाथ नञि कांपल ई हत्यारा सबकऽ रजिस्ट्री करऽ

मे?

हमर सम्पइत! जे मोन से करब!

अइ खानदानक संपइत छइ। आहांक बाप नञि अरजने छथि।

आहां सब बाप पर नञि जाऊ।हम आहां सबकऽ देखा देब।

हं हं । करु ने, जे मोन करय।

जेहलसँसबकऽ निकलऽ दियउ। आहांकऽ टपअ नञि देब।

....

अहिना रारिं बेटखऊंकी खुब भेलइन।

रंजीत आ दुनु साढु ओकरा सब के, सब लिख देलखिन।ओ दुनु साढु अइ मुफ्तउआ पाइकऽ उड़ा लेलक। आइ तक ककरो रहलइया? रंजीत बुधियार छलाह, ओ ई अपार्टमेंट कीनलाह आ सम्मानित लोक जेकां अतऽ रहअ लगलाह।आबऽ उनका काजे कोन जे, सासुर जेताह।

आब दलपति रायकऽ परिवारकऽ खाय पीयकऽ कष्ट होबऽ लगलइन। रंजीत ओइ पाइसँसोसायटी मे घर कीन लेलाह। सब संपर्क सासुरसँतोइड़ लेलाह। दलपति रायकऽ दुःखसँजेहल मे ही मृत्यु भऽ गेलइन। रंजीत आब मिस्टर आर एन भऽ गेल छथि।

ऊयाह दलपति रायकऽ पोता मिहिर राय छथि। ओ तऽ अंचोके अइ सोसायटी मे किराया मे घर लऽ लेलाह।

ऱजीत नारायण आ उनकर कनियाकऽ आत्मग्लानि भऽ रहल छइन। ओ सब अपने बुझई छथि जे कतेक निकृष्ट काज करय गेलाह अइछ। मरल भाइकऽ संपइत ओकरे दुश्मनकऽ हाथ बेचबे नञि केलाह, मायक देल बचनकऽ सेहो नञि निभेला। मिहिरक आंईख उनका सबकऽ खिहाड़इ छलइन। ओकरासँआंईख मिलबऽ मे एक टा गति नञि बाचइन।

कहल गेल छइ-

बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रूपैया।

रूपैया तऽ रंजीत नारायणकऽ भऽ गेलइन लेकिन मिहिरक आंईखक सोझा उनका ठार नञि भेल जाइ छइन। ओकर आंईख जेना पुछइ छइन-

संजीवकऽ मौतक बदला लेल आहां की केलियई?

दलपति रायकऽ मृत्युकऽ जिम्मेदारकऽ छइ?

सासक बचनकऽ की भेल?

ई आत्मग्लानिकऽ कारण रंजीत नारायणकऽ एक एक दिन गंगा अपार्टमेट मे भारी लागऽ लगलइन। सुतली राइत संजीवक आत्मा आबऽ लगलइन। ई सब मिहिरक अतऽ एलाकऽ बाद भेलइन। अइसँबचबाक एक्के टा उपाय बांचल छलइन- एहन जगह चइल जाइ, जतऽ मिहिरक सोंझा सोंझी नञि होबक परइन।

पहिने तऽ मिस्टर कुंवरसँप्रयास केलाह जे ओ किरायेदारकऽ हटा दइ। ओ तैयार नञि भेलइन।

आब कोनो उपाय नञि देख, रंजीत नारायण कतउ आर चोरा कऽ बाकी जीवन बीतबऽ चइल गेलाह।

इनका ई बुझले नञि छइन जे संजीवक भूत इनका सब जगह अहिना खिहाड़इत रहतइन।भाइकऽ जमीनक अतेक स्नेह छलइ जे ओ जाना दऽ देलक आ बहिनकऽ देखू ओ मलिकाइन होइते हत्याराकऽ हाथे कबाला कऽ देलक। कतऽ निचिन्त संजीवक आत्मा होबऽ देतइन।

ओमहर मिहिरकऽ जखइन रंजीत नारायणकऽ फ्लैट बेच कऽ चइल जेबाक पता लगलइन, तऽ उनका चिंता भेलइन। मिहिर तऽ नब जबानाकऽ लोक छथि, जिनका नञि ई सब अतेक बात बुझल छलइन। आ किछु उड़न्तु सुननेहो छलाह तऽ ओ पूर्वाग्रहसँअपनाकऽ अलग रखने छलाह।

मिहिर दु चाइर दिन रंजीत नारायण लेल चिंतित रहलाह, फेर समयक डेग मे बढ़इत,सब बिसइड़ कऽ आगु जिनगी बढ़ा लेलाह।

खेलौना (लघुकथा)

जई बेर गाम जाऊ, खेलौना टपकिये जाइत। हमरा आब ओ सोहाइ नञि अइछ। आइब कऽ बइस रहत, आ तखइन तक बइसल रहत.......जाबइत किछु देबइ नञि। ।कयेक बेर त दलान पर अखरे चौकी पर निधंग सुईतियो जाइत।देला परलो, जाय काल मे दु बेर पुछत, जे फलां ट्रेनसँजायब ने? हम कहबइ हं, तखने मुस्कियाइत धीरे धीरे टुघड़इत बिदा होइत।

कोन काज छलइ खेलौनाकऽ आबऽ के। चलल जाइ ने छइ, आंईखसँसुझाई नञि छइ, तखनो एब्बे करत। आंईख मे मोतियाबिन्न भेल छइ। एक आंईखक आपरेशन तऽ " धरान " मे जा कऽ करा आयल। दोसर आंईख मे तहिया मोतियाबिन्न पाकल नञि छलइ, तैं नञि केलकइ। ईहो अचरजक बात- दुनियाकऽ लोक तऽ भारत मे अबइत अइछ, ईलाजक लेल। आ अतऽ देखू गामक गाम " धरान " , नेपाल जा रहल अइछ। ओतुका बेबसथा कहादुन बड्ड बढ़िया छइ। भीड़ उमड़ल रहइत छइ।बेशी अपने देशक लोक रहइत छइ। ऊपरसँरहबाक, खेबा-पीबाक आ मंगनिये मे चश्मा सेहो दइ छइ। कतऽ सँई सब होइ छइ। अतऽ कहइ लेल अपन सरकार, आ इलाजक कोनो इंतजाम नञि।

खेलौनाकऽ जहिया देह मे हुब्बा छलइ, बड़का नेता बनञि छल। अपन समाज मे ओकर बात अंतिम होइ छलइ। किनको पर हाथ उठबो मे ओकरा सोचऽ कऽ नञि पड़इ।सब कहइ- अकर हाथ छुटल छइ।ई हाथ एकदिन मे नञि छुटलइ। अकर शुरुआत

रामजीवन सिंह कतऽ सँभेल छइ।

रामजीवन सिह कलामी लोक छलाह। गाम मे सबसं बेशी गाछी बिरछी छलइन। अही गाछी बाटे सब सोलकन दिशा- मैदान लेल सरेह मे जाइ छलाय। जे कनी तरी भिरी की केलकइन, ओकर बाध मे जेबाक रस्ता बन्न भऽ जाइ छलइ। गाम मे पहीने उनके धनरोपनी होइन, ओकर बाद किनको खेत मे हाथ लगइ। ओहिना कटनीकऽ समय मे सेहो होइ।उनकर खेत मे खेलौनाकऽ महीस किछु जजात जियान कऽ देने रहइन।अइ लऽ कऽ खेलौनासँरामजीवन सिंहकऽ बेटाकऽ बहस भेलइन। ओइ पर तमसा कऽ दु हाथ रामजीवन सिंहकऽ बेटा , खेलौना पर चला देलखिन। ओतइ खेलौनाकऽ संघतिया, ओकरे टोलक रमरतिया सेहो घास गढ़ई छल।रमरतिया दौरल एलइ खेलौनाकऽ बचबइ लेल। आब की छलइ, रमरतियाकऽ देखते, खेलौनाकऽ की जाने की भेलइ। पहिने तऽ चुपचाप माइड़ खा लेने छल।बात खत्मे जेकां छलइ। ओकर महीस जजात जियान केलकइ, तऽ ओकर जुर्माना मे माइड़ खेनाई बनजि छलइ।ई पाठ ओ बच्चेसँपढ़ने छल। लेकिन ओइ दिन तऽ दोसरे ग्रह लग्न रहइ। खेलौनाकऽ हाथ मे महीस चरबऽ लेल छऊंकी छलइ।ओ सटासट चाइर छऊंकी, रामजीवन सिंहकऽ बेटा पर ससाइड़ देलकइ। चिकरइत रामजीवन सिंहकऽ बेटा परेलाह।उनकर चिकरनाई पर उपरसँरमरतियाकऽ हंसी छुइट गेलइ।

ओ पहिले बेर सियान बाबु भैय्याकऽ पिटाईकऽ बाद चिचियेनाई सुनने छलइ। ओकर समाज मे तऽ दस- बीस छऊंकी खेलाकऽ बाद कनी मनी आवाज निकलइ छलइ। अतऽ तऽ एक्के

छऊंकी पर छटपटाय लागल। कथीकऽ मरद हइ, से नञि जाइन।

खेलौनाकऽ बाप हमरा कतऽ दौरल आयल छलइ।पर - पंचयती भेलइ। सवाल ईएह छलइ- पहिने हाथकऽ उठेलक?

जमाना बदइल गेल छलइ। खेलौनाकऽ समाज मे कै टा लाठी भऽ गेल छलइ। आब गल्ती सहीकऽ फरीछौता हुवअ लागल छलइ। एकतरफे फैसला नञि होइ, चाहे कियो होइस।

अही आधार पर खेलौना बांइच गेल। माफी मांइग कऽ छुइट गेल।

आब ओकरा रामजीवन सिंह बाला गट्टीसँतरऊका दुश्मनी भऽ गेल छलइ। ओना गामक हीरो ओ भऽ गेल छल। आब किनको मजाल नञि जे ककरो पीट दैस।खेलौना अगल बगल गाम मे आब पंचइती मे जाय लागल छलाय। सब ओकर चिन्ह लागल छलइ।

अइ माइड़ बाला घटनाकऽ बाद रमरतिया जे नैहर ओहिना मोन बदलऽ आयल छलाय, अतइकऽ रही गेल। खेलौनाकऽ संग ओ रहअ लागल।कऽ ककरा रखलकइ, से नञि फुजलइ। ओना कहऽ बाला ईहो कहइ छइ जे खेलौनाकऽ ई रामजीवन सिंहकऽ बेटाकऽ मारऽ बाला करेज देख कऽ , रमरतिया अपनाकऽ ओकरा निहुछ देलकइ।

ओकर बर, बिदागरी लेल एलइ तं गऊंआ सब बेलगा देलकइ।ई रमरतियाकऽ सब बांझ बुझई छलइ, ओकरासँचाइर टा बेटा भेलइ खेलौना के।

रमरतियाकऽ सोभाव एहन छलइ जे नञि अपने साऊस तर रहल आ नञि पुतउहे सब ओकरा संग रहलइ। दु टा बेटा डड़इवरी करय छइ आ एकटा घरभुजाकऽ दोकान खोलने छइ। चारिम जे सबसं बेशी पढ़ने रहइ ओ एकटा चिरान - मिल मे मुंशी छइ। सब अलगा-अलगी छइ। जाबइत रमरतिया जीबइत छलइ, खेलौनाकऽ नञि कोनो दिक्कत छलइ।ओ किछु ने किछु कमाइये लइत छल। ऊपरसँबकरी पोसने छल, मूंजक डलिया बीनञि छल,एकटा माल सबदिना पोसबे केलक आ ऊपरसँरोपनी- कटनी मे काज भेटिये जाइ छलइ।

रमरतियाकऽ कोन बेमारी भेलइ से नञि जाइन........दसे दिनक जाड़ बोखार मे ओ चइल गेल। खेलौना सोचते रही गेल, प्राईवेट मे नहिये देखा सकलइ ओकरा। सरकारी मे देखेबा मे भइड़ भइड़ दिन लाइग जाइ छलइ। तखनो खेलौना लऽ जाइ ओकरा।कयेक बेर तऽ रमरतिया अपने ककरो दोसराइत मे लऽ कऽ चइल जाइ छलइ। नञि बचबाक छलइ, तैं नञि बचलइ रमरतिया।

गरीब गुरबाकऽ कहियो बड़का बीमारी थोड़बे होइ छइ? बड़का बीमारी ओ भेल , जकर ईलाज मंहग! बीमारीकऽ पता तऽ जांचसँहोइ छइ। जतेक पैभ बीमारी, ओकर जांच ओतेक मंहग। गरीब लोक तऽ डागदरेसँने देखाइत, जांच ओकर बुतासँबाहरक गप होइ छइ। उएह भेलइ रमरतिया संग। डागदरसँतऽ खेलौना देखेलकइ, मूदा जांच नञि करा सकलकइ। कराईयो लइतइ त की दिल्ली बम्बइ ओ लऽ जा सकितइ। ई जे मोन मे अफसोस होइतइ, ओइसँनीक रमरतिया चलिये गेल।

खेलौना काज केनाई रमरतियाकऽ जीबिते छोड़ि देने छल। आब खेलौनाकऽ बेटा सब कतऽ खेबाक पारी लागल छइ।

भोजन तऽ दुनु सांझ भेंट जाइ छइ। चुन-तमाकुकऽ ओकरा तलब छइ। ओइ मे दिकदारी भऽ गेल छइ। देह आब चलइ नञि छइ। बेटा सब खेनाईकऽ अलावे किछु देबइ लेल तैयार नञि छइ। ओना सरकारी ललका कार्ड ओकरा बनल छइ। ओइ पर चाऊर, गहुम सब भेटई छइ। जकरा मे रहइ छइ, ऊयाह बेटा कोटा उठबइ छइ। सरकारक सौ दिना काज करौनिहार मे खेलौनाकऽ नाम सेहो छइ। सरकारी पोखइड़कऽ साफ-सफाई मे चेक बइन गेल छलइ। आब बस ओकर एकाउंट मे अबइये बला छलइ कि कोनो मूंहझौसा कलक्टरकऽ शिकाइत कऽ देलकइ। आब इन्क्वाईरी बइसल छइ। पाइ फईस गेलइ।तैं कनीक दिकदारी मे अइछ।

हम सोचऽ लगलऊं। कोन पाइ फंसलइ? अकरा चलल तऽ जाइ नञि छइ। जन बनिहार मे नाम छइ? पोखइड़ मे कोनो काज भेले नञि छइ। आत्मविश्वास देखू अकर- देर सबेर पाइ भेटबे करतइ। बस ताबइत चुन तमाकु लेल किछु चाही।

खेलौना बाईज रहल छल-

हम आहां कतऽ छोड़ि कऽ दोसर घर नञि धेलऊं।अतउ आब पहिने बाला चुहचुही नञि छइ। पहिने कतेक तरहक काज होइ। मालिककऽ अपन नौकरी नञियो छलइन तइयो दु लोककऽ रोजगार दइ छलखिन। आहां सब पईढ़ लिख कऽ हाकिम भऽ गेलऊं, लेकिन ककरो रोजगार नञि दऽ पेलऊं। कथीकऽ

हाकिम?

हम सोचलऊं जे कतेक अकर उपदेश सुनुं। हमरे दलान पर बइस कऽ हमरे कहीं रहल अइछ जे पहिलका चुहचुही आब एतऽ नञि छइ। कोनो जन बनिहार नञि खइट रहल अइछ। सब तऽ मनखब पर दऽ देल छइ।कऽ खटतइ। जनऽ क मजुरी ततेक ने भऽ गेल छइ, जेकऽ सकताह खेती करबाव मे।

हम कहलियई- ई पाइ लियह। चुन तमाकु कीन लेब। आहां बुढ़ा गेल छी। टीशन अयबाहकऽ नञि काज।

खेलौना परनाम पाती कऽ कऽ चइल गेल।

जाय काल टीशन पर अबइ छी तऽ खेलौना गुमतिये लग भेटा जाइया।हमरा ओकरा देखते फेर मोन खौंझा गेल। फेर अकरा पाइ चहियई..........हमर पिंड ई नञि छोडते.......थेथर भऽ गेल अइछ........कहने रहियइ नञि ओ, तखनो आइब गेल। अतेक बुढ़कऽ कोना ऊवाच कथा कहबइ- हुं हां करइत रहलऊं।

ओ कहलक-

ढेबराकऽ बेटा अतइ टीशन पर टिकट कटई छइ। ओकरे लगसँहम आइब रहल छी। ट्रेन एक घंटा लेट अइछ। हम ईएह बतबऽ जाइ छलऊं।आब आहां आइब गेलऊं त चलु टीसने पर बइसब।

स्टेशन पर ट्रेन लेट हेबाक कारण भीड़ बेशी छलइ। खेलौनाकऽ देखिते ढेबराकऽ बेटा एक गोटाकऽ इशारा केलकइ। हमरा सबहक लेल तीन टा कुर्सी कतउसँआइब गेल। फेर लस्सी। कनी काल मे चाह सेहो।बच्चा सब लेल कुरकुरे।

कतबो पाइ देबऽ चाहलियई, ओ सब नञि लेलक।

खेलौनाकऽ समाजकऽ चाइर गोटे तऽ टीशन पर दोकान खोलने छइ। खेलौना सबकऽ हमर जयबाक बारे मे बतेने छलइ।लोक एकाएकी अबइत छल। हमर धीया पुता ई आदर देख कऽ अभिभुत छलाह।ओकर हम बिदेशिया मालिक भेलियई। ट्रेनकऽ अबिते देख हमर हाथ जेबी मे गेल आ जे भी पाइ रस्ता लेल अलगसँरखने रही, ओ बंद मुट्ठी मे आइब गेल।हम ओ मुट्ठीकऽ खेलौनाकऽ जेबी मे हाथ दऽ कऽ खोइल देलियई।

ट्रेन पर सब सामान हांई हांई कऽ कऽ रखा गेल छल। खेलौना कहलक- हम आब अ़ंतिमे छी बौआ जे आहांकऽ चहुंपावई लेल अबइ छी। अही लेल हमर बेटा सब हमरासँखिसियाल रहइत अइछ।हमरासँअइ अंत काल छोड़ल हैत।हम पाइ लेल नञि, स्नेह लेल अबइ छी। ओइ बुढ़ा मालिक- मलिकाइनकऽ याद मे अबइ छी।उनकर कर्जा चुका रहल छी।

हमर बच्चा सब सेहो गामक पैघ बुजुर्गकऽ जेना पैर छु कऽ आशीर्वादी लइ छलाह, ओहिना खेलौनाकऽ सेहो पैर छुबइ गेलाह।

खेलौनाकऽ आंईख छलछला गेलइ-

जाऊ जुग जुग जीबइ जाऊ।बऊआ मालिकसँभी पैघ हाकिम बनञि जऊ। हमरा जनीकऽ नञि बिसरब।

खेलौना ठीके कहइ छल। जाबइत ओ अइछ, ताबिते ने "बौआ मालिक "। आब गाम गेला पर दोसरकऽ कहत। चुन तमाकुल की, कतबो पाइ देला पर कियो अतेक आबेश करत आ बौआ मालिक

कहत।ई ओइ पीढ़ीकऽ अंतिम लोक अइछ। आबऽ बला जमाना, पोथिये टा मे पढ़तइ, जे खेलौना जेकां लोक समाज मे होइतो छलइ।

टीशन पर बिदा करय लेल खाली खेलौने ठार अइछ। आर कियो गोटे नञि आयल छथि। हम किनको छोड़अ जेबइन ने, तखने ओ सब अऊताह। अतऽ तऽ बरोबरी बाला गप छइ। पाइये सही, आखिर खेलौने मे अतबा माश्चर्य तऽ भेलइ। खेलौना तोरा हम चाहियो कऽ नञि बिसरबऊ।

कल्पवास (लघुकथा)

दहन बाबुकऽ आंगनसँबड्ड इच्छा रहइन - " एक बेर कल्पवास करितऊं "।

उनकर नैहरे- सासुर सब मास दिनक लेल कल्पवास केने छलइन।ओइ कल्पवासक समय भोगल जिनगी, संत महात्माकऽ बोल- वचन, लोकक भीड़, सात्विक जीवन, साधु संतक बड़का बड़का टेंट, कुंभ मे लोकक रेला, ओ मोरक पंख, लोहाक हांसु, लोककऽ हरेनाई आ हरेला पर तकनाई, सरकारक बेबसथा, हड्डी गलबऽ बाला जार, भीजल जारइन, ईंटाक चुल्हा, सांझक बजार, तरकारी बाली सबहक मोल मोलइ , ओ मोटरा- मोटरी, ओ ठगहा स्वामी, ओ वस्तुजातक चोरी, अहीना कतेक रास खिस्सा पिहानी ओ सुनने छइथ।

सासुरकऽ लोक गेल होइथ वा नैहर के, खिस्सा एकरंगाहे। कल्पवास उनका अपना दिश सम्मोहित करय छलइन। ओ एक दु बेर पहिनेहो मोने मोन जायकऽ तैयारी केनहो छलीह लेकिन ऐन मौका पर कोई न कोई विघ्न बाधा सामने ठार भऽ गेलइन। नञि जा सकलीह, मोन मसोईस कऽ रही गेलीह। अपनेकऽ मनेलीह- ओना अखइन तेहन बुढ़ थोरबे भेल छइथ, कल्पवास कोन भागल जाइ छइ।

आब सब जिम्मेदारीसँमुक्त भेली अइछ। ओना त भइड़ जीवन किछु ने किछु लगले रहइ छइ।दुनु बेटी अपन सासुर बसई छइन। बेटाकऽ नीक नौकरी छइन। दु बरखक पोतो छइन। दिल्ली मे बेटा-पुतोहु रहइ छइन।नाइत, नतनी आ पोता भेलाक बाद उनका लागऽ

लगलइन जे आब बुढ़ भऽ रहल छइथ।

ओना देह- दशासँनीक छइथ। कियो नञि कहतइन जे घरबाला नौकरीसँरिटायर कऽ गेल छथीन। ओना ई दहन बाबुकऽ उपराग मे कहितो छथिन- आहां रिटायर भेल छी, हम नञि। से मोन राखु।

कहलो गेल छइ जे पोता भेलाक बाद स्वर्गक रस्ता सीधा खुईज जाइ छइ।

ईएह स्वर्ग सुनला पर तऽ कल्पवासक धुन सवार भेल छइन।अइ बेर सोइच लेने छलीह जे किछु भऽ जाय माघ मे प्रयागराज जेबे करतीह।एक दु टा धरम करम बाली बुढ़ी सबकऽ दोसराइत लेल पुछबो केलखिन, लेकिन ओ सब नञि तैयार भेलखिन।अंत मे हारि कऽ दहन बाबुकऽ कहलखिन- " आहां हमरा कल्पवास मे जा कऽ छोड़ि देब आ फेर एक महीना बाद लऽ आनब"।

से कियैक?

हम कै गोटेकऽ कहलियनि, कियो संग दइ लेल नञि तैयार भेल।

अरे हम छी ने। हम संग देब!

सकारात्मक ज़बाब भेटला पर दहन बाबुकऽ कनिया कनी आर जोशेली। बजलीह-

से तऽ हमरा बुझल अइछ जे आहां संग हमर देबे करब।ओहीसँत कहलऊं।

मूदा हम छोड़ि कऽ नञि आयब?

कियैक?

डर होइया। आहां कोनो बहुरूपिया साधुकऽ नञि पिछोड़ धअ लेबइ।

आब कतऽ जायब। ओतऽ हम धरम करऽ जाइ छी। एहनो नञि छी जे कियो बहला फुसला लेत हमरा।

बात बात मे दहन बाबु अपनो कल्पवास जयबाक इच्छा जतेलखिन।

आब की छलइ। उनकर कनिया तऽ खुशीसँझुमअ लगलीह। सब बेटा बेटीकऽ अपन जायकऽ बारे मे बतेलखिन।

सब बयस भेला पर बदलइत अइछ।दहन बाबु घरो मे कहियो पूजा पाठ नञि केलाह, ओ मास दिनक लेल कल्पवास करऽ जा रहल छथि। सबकऽ अचरज लगलइ।

अगिले दिन इलाहाबाद बाला ट्रेन मे रिजर्वेशनकऽ टिकट अबिती-जयतीकऽ करा लेलाह। समान सबहक लिस्ट बनऽ लागल। जे बुढ़ी सब पहिने कल्पवास केने छथि, उनका सबसँब्रीफिंग पर ब्रीफिंग दहन बाबुकऽ कनिया लऽ रहल छलीह।जायसँएक हफ्ता पहिनेहे सब जरूरतकऽ समान कीना गेल छलइन। इलाहाबाद मे एकटा सीधा संबंधी तऽ नञि, लेकिन जोडुआ तऽ अबस्से कहबइन, उनकर पता आ फोन नम्बर सब लऽ लेने छलाह। उनकासँएकदिन फोन पर गप्प सेहो भऽ गेल छलइन। हुनका अपन आबऽ कऽ प्रोग्राम बता देने छलखिन। कोना की

स्टेशनसँगंगा कात जेबाक छइ, कतेक की भाड़ा लगतइ, कोना आ कत्ते पाइ मे टेंट भेंटतइ, सब बुझझ- सुझझ लेने छलाह।

दहन बाबुकऽ कनियाकऽ होइन की आब तऽ ओ सोझे स्वर्गे जेतीह। ओकरे लेल रस्ता सब बइन रहल छइ।

जायसँएकदिन पहिने सब धीया- पुताकऽ " आलदऽ बेस्ट आ हैप्पी जर्नी" बाला फोन सेहो एलइन। आइ ओ नानी-दादी बाला खाड़ी मे अपनाकऽ असली मे बुझझ रहल छलीह।

जखइन घरसँबिदा भेलीह तऽ भइड़ दिअयद बिदा करऽ आयल छलइन।बुझा रहल छलइन जे कोनो जंग मे जा रहल छइथ। लोक सब कुंभ आ कल्पवासक सुनल सुनायल गप कहइन आ डरबइतो रहइन। दहन बाबुकऽ कनिया पर अकर एक नबको असर नञि छलइन। उनका दहन बाबुकऽ अफसर बाला रौब पर भरोसा छलइन। जे काज ओ हाथ मे लइ छलाह, सफलता भेंटते छलइन। चाहे बच्चा सबहक एडमिशन होइ, ट्रेन मे जतरा होइ, बेटी सबहक कथा वार्ता होइ, सब जगह ई गोटी लालकऽ कऽ घुरल छलाह।

रेलवे टीशन पर छोड़अ लेल एकटा भातिज आ उनकर कनिया मोटरसँआयल छलखिन।एसी बोगी मे रिजर्वेशन छलइन। बेशी भीड़भाड़ नञि छलइ। अपन आरामसँदुनु बेकती रिजर्व सीट पर बइस गेलाह।

जखइन अगिला दिन भोरे इलाहाबाद पहुंचलाह त देखइत छइथ जे एक गोटे उनका सबकऽ लेबइ लेल स्टेशन पर ठार छथि। ई ऊयाह व्यक्ति छलाह जिनकर पितासँदहन बाबुकऽ गप भेल

रहइन।ओतऽ सँओ सब सीधा संगम गेलाह, जतऽ कल्पवासक लेल टेंट सब लागल छलइ। पहिनेहेसँइनका सबहक लेल एकटा टेंट ठेकनायल रहइन।ओ व्यक्ति फाइनल अइसँनञि केने छलाह, इनका सबकऽ केहन नीक लगतइन?

बढ़िया जगह पर ओ टेंट लागल छलइ। सब जगह ओतऽ सँलगे छलइ।थोड़ेक काल मे इनका सबकऽ व्यवस्थित केलाहकऽ बाद ओ व्यक्ति चइल गेलाह। उनकर अनुसार कल्पवासीकऽ किछु काज आइब कऽ ओ अपन खाता मे धर्मकऽ डेबिट कऽ रहल छलाह।

कतउ भी स्थानीय अपन लोक रहलाह पर सब किछु आसान भऽ जाइ छइ। अखइन प्रत्यक्ष मे ई सब देखलाह।थोड़ेक काल मे चुल्हा जड़ा कऽ चाह बनबइ गेलाह आ पीयई गेलाह। भानस भऽ गेल, तऽ बुझु सब भऽ गेल। बदली बला सरकारी नौकरी मे उनका सबकऽ अकर अनुभव छलइन। सबसँपहिने, घर मे घुसिते देरी ओ भंसे घर मे जाइ छलीह आ जै चुल्हा रहइ, ओकरा पजाइर कऽ चाह बनबइत छलीह। अतउ ओहिना भेलइ।

अगिला दिन सं अपन अइ बालु परहक दुनिया शुरू भऽ गेल छलइन। गंगाजी मे प्रातः स्नानसँदिनचर्या शुरू होइन। दिनभर पूजा पाठ, भजन, खेनाई बनेनाई, आ गप्प सरक्का मे बीतइ। अद्भुते अनुभव रहलइन। केना भोरसँसांझ भऽ जाइ, कनियो नञि बुझाई। कोनो तरहक विकार मोन मे नञि अबइ। सुआइत ने लोक मास करऽ

अतऽ अबइ छइ। दिन हो या राइत, चारु कात इजोते -इजोत, अलगे दुनिया छलइ। कोनो ओहन सुविधा नञि रहनेहो, खुब नींद होइ आ भुख सेहो लगइ। गंगा माईकऽ कृपा ठीके अपरम्पार छइन, ओहिने उनकर महिमा।

सुर्यास्तसँपहिनेहे अतऽ लोक रतुका भोजन कऽ लइ छल। ओकर बाद साधु संतक प्रवचन सब सुनञित छल। कतउ कतउ भंडारा सेहो लागल छलइ। इनका सबकऽ पूर्वक संस्कारकऽ कारण लंगर मेकऽ खेनाई खाइत ठीक नञि बुझेलइन। ओना खाय बला प्रसादयकहइ छल। ओ सब अपने बनबइत आ खाई छलाह।

पांचे सात दिनक बाद त कैक परिचित लोक भेटा गेलखीन। आब त सब कियो एकदोसरक टेंट मे जाय आबऽ लागल छलाह। ई कल्पबासीक नब दुनिया बइन गेल छलइ। कियो साते दिन लेल आयल छल त कियो दु हफ्ता लेल, कियो किनको पहुंचाबइ लेल त कियो कुशल क्षेम लेबऽ लेल। सब अपन दुनिया मे रमल छल।

दहन बाबुकऽ कनियाकऽ तऽ कयेक टा मैथलानी चिन्हार परिचयबाली सब भेटा गेल छलखिन। पईंच उधारी सेहो गाम जेकां मऊगी महाल मे शुरू भऽ गेल छल। दहन बाबु चुपचाप सब देखइत रहइ छलाह। उनका होइन जे अतउ उनकर कनियाकऽ सब ठइग रहल छइन।ऊमहर कनिया उनकर कल्पवास मे दान-पुण्य करबाक चाही, सैह सोइच कऽ देब लेब करय छलीह।

सांझ मे एकटा संतकऽ प्रवचन मे ओ सब जाइत। ओ कहइ-

ई संसार मिथ्या थीक। बेटा-बेटी,अपन आन सब भ्रम छइ। जे सच छइ। ओ आत्मा छइ। ईएह अचर, अजर, अमर छइ।

कहियो ओ संत प्रवचन मे कहइ छइ-

ई सब माया छइ। आहां संग ई लोक तकने तक सटल अइछ, जाबइत ओकर स्वार्थ आहांसँजुड़ल छइ। जहिये मतलब खत्म,ओ घुरियो नञि ताकत।संगकऽ रहत? ओ रहत अपन सद्कर्म। अही सद्कर्मकऽ रस्ता पर कोना चलब? ओइलेल अपन सर्वस्व समर्पणकऽ भाव जगाऊ भगवानक प्रति।

अहिना ओ संत तरह तरहकऽ खिस्सा पिहानी सब कहइ। ओकरा अनुसारे "अप्पन " किछु नञि छइ। जखन अइ देहेकऽ भरोस नञि त आर दोसर कथी के,?

ओ संतक बाणी मे तऽ मिठास घोरल छलइ लेकिन ओकर शब्द दहन बाबुकऽ कनियाकऽ लोहछा दइ छलइन।बाकी सब पर ओतेक रंज नञि होइन, जखइन ओ बेटा-बेटी पर कहइ, त ओ इनका कनिको नञि गिराइन।

एकदिन ओ प्रवचन मे कहइ छल- " मनुक्ख अपन स्वार्थ लेल ई माय- बाप आ संतानक जाल बनबइत अइछ। जालकऽ फेर पोखइड़ मे फेंकइत अइछ.......... जाबइत धइड़ ओकरा माछ फंसइत रहइत छइ............जाल नीक बुझाई छइ। जखने जाल मे माछ नञि फंसलइ, ओ जालकऽ ऊल्टबऽ - पल्टबऽ लगइत अइछ। ओकरा होइ छइ जे जाल मे कोनो दोख छइ, ताहि लेल माछ नञि फंसल। दोसर - तेसर जाल बदलइत रहइत अइछ।ओ पोखइड़ मे नञि तकइत अइछ जे ओइ मे माछ छइ वा नञि। माछ नञि जाल मे फंसलाक कारण पोखइड़ मे माछक नञि भेनाइ सेहो भऽ सकइत छइ।

ओहिना ई संसार छइ। जाल भेल स्वार्थ। जाबइत माछ जाल रूपी स्वार्थ मे भेंटइत रहइ छइ.........ताबइत सब नीके छइ। जखने नञि भेटलइ, ओ बदइल लइत अइछ।अतऽ पोखइड़ अइछ आहांक सद्कर्म। ऊयाह आहांक काज पुरा करबइत अइछ। दोसर कियो किछ नञि करइत अइछ।आहां ई झुठहाकऽ मोह-मायासँनिकलु। अइ लोककऽ ज्यों नञि सम्हाइड़ सकलऊं, त ओइ लोककऽ सम्हारू। आहां जरूरतमंदकऽ दियउ, नञि की अपन कहल सखा- संतान के। आहां अखनो देख सकइ छी। मूदा आहांके आंईख पर संतानमोहक पर्दा लागल अइछ.........ओ नञि किछु देखऽ देत।

अहिना ओइ महात्माकऽ प्रवचन सुइन कऽ दहन बाबुकऽ

कनियाकऽ मोन कनी काल लेल हिल-डुल जाइ छलइन।फेर मोन मे अबइन, भऽ सकइत होइ अइ सधुबा संगे बीतल होइ, तैं अपन राग अलापइत रहइत अइछ। दहन बाबु त प्रवचनक समय टेंट मे आराम कऽ कऽ बीतबइ छलाह। ओ नञि अइ पचरा मे फंसई छलाह।

समय कतउ रूकलइया। कल्पवासक मास बीत गेलइन। आबऽ काल मे बैग मे भंसाक समान भरल आ आब सनेशसँभरल। मोरक पंख, लोहाक वस्तुजात,कयेक जगहक निर्माल, प्रसाद, गंगाजलसँभरल बैग लऽ कऽ टीशन आयल छथि, ट्रेन पकड़ई लेल। तखइन पता चललइन जे उनकर ट्रेन तऽ कुंभ लऽ कऽ कैंसिल भऽ गेल छइन। आर जे कीछु चिन्हल जानल लोक सब छलखिन, ओ सब दिल्ली जा रहल छलाह। उनकर सबहक ट्रेन मे रिजर्वेशन छलइन। ओ सब आग्रह सेहो केलखिन। दहन बाबु सोचलाह जे दिल्ली मे उनको बेटा छथिने। अखइन अतइ चइल जाइ छी.......संगत अइछ। मास दिन नीकसँबीतल........ जतरो नीक रहत।ई जे सनेश सब छइ, अखने दऽ देबइन। ओ मंदिरक निर्माल माथ पर सबकऽ टटका टटकी लाइग जेतइन।टिकट लेलाह आ दिल्ली उनकर सबहक संग आइब गेलाह।

आब दहन बाबुकऽ कनिया दिल्ली टीशन परसँबेटाकऽ फोन केलखिन जे हम सब टीशन पर आयल छी।आइब कऽ लऽ जाऊ।

बेटा तामसे घोर भऽ कऽ फोने पर ज़बाब देलखिन-

हम सब दक्षिण भारत आइ जा रहल छी। आहां सबकऽ पहिने बतबऽ कऽ छलाय।एना कतउ हुलेले होइ छइ। हमर सबहक ई टूर छह महीना पहिने बनल छल। आहांके गामक टिकट छल त इमहर किअए एलऊं।

जे बुझाइत अइछ करु।हम अपन यात्रा नञि कैंसिल कऽ सकइत छी।फोन पर पाछुसँपुतोहुकऽ बरबराइत अस्पष्ट बात सेहो सुना रहल छलइ।

दहन बाबुकऽ कनियाकऽ चेहराक भाव देख कऽ पता लाइग चुकल छलइ जे की ज़बाब भेटल छइन।

पटनाकऽ दोसर ट्रेन लागल छलइ। दहन बाबु ओकर टीटी लग गेलाह। अपन परिचय दइत दु चाइर टा रेलवे अधिकारी सबहक बारे मे कहलकिन। ओ टीटी, पटनाक टिकट दुनु गोटेकऽ बना देलकइन आ अपनबाला सीट एसी बोगी मे दऽ देलकइन।

दहन बाबुकऽ कनिया कहलखिन-

हमरा आहां पर भरोसा छल जे आहां रस्ता निकालबे करब।

हम आहांके नेने छोड़ब।अतउ गोटी लाल करबे केलऊं।

आब दहन बाबुकऽ कनियाकऽ ओइ साधुकऽ प्रवचनक सब शब्द मोन पइड़ रहल छइन। सब स्वार्थक संग छइ- संतान सेहो।कियो ककरो संग तखने तक छइ, जाबइत स्वार्थ पूर्ति भऽ रहल छइ। निश्वार्थ ऊयाह परम ब्रह्म अइछ।ओकरा पर यश अपयश, नीक बेजाय, उचित अनुचित , लाभ हान सब छोड़ि दियउ आ जतऽ जेना जहीया तक राखय.....खुशी खुशी रहु।जीवन रेतक टीला अइछ, अइ पर नञि कोनो घमंड आ नञि राखु कोनो भ्रम।

कल्पवास इनका सबकऽ जीवनक पाठ पढ़ा देने छलइन। आब मोह मायासँअपनाकऽ परे बुझइत गाम घुइड़ रहल छलाह। कहिया तक ई कल्पवासक प्रभाव रहतइन, से नञि जाइन।

बच्चनक बचन (लघुकथा)

बच्चन मस्तमौला सोभावक छल।गामक लोक त उनका महादेव सेहो कहइ छलइन। मस्त मलंग छलाह। बेशी चिंता बेगरताकऽ चक्कर मे नञि पड़ई छलाह। नीक बेजाय जे बुझाई छलइन, मूंहे पर कहि दइ छलखिन। अही दुआरे कयेक लोक इनकासँदुरे रहइ छल।इनका ओकर कनिको परबाह नञि छलइन जे ,कऽ उनका लेल, की बाईज रहल अइछ।

ईएह सोभावक कारण घरक लोक सेहो आजिज रहइत छल। जतऽ काज करय छलाह ओतउ बेशी लोक इनकासँपरेशाने छल।ई अलग-थलग अपन परल रहइ छलाह। इनका ओतेक हाब- डिब्बी रहितो नञि छलइन। भगवानकऽ त ई पुछिते नञि छलाह, मनुक्खक लेखे कतऽ ।

ओना अइ विचित्र सोभावसँकतेक लोक इनकर प्रशंसक सेहो छल।अपन दुनिया छलइन। ओही मे ओझरायल रहइत छलाह। कहियो नञि , अइसँबाहर जयबाक कोनो श्रम केलाह।कयेक बेर एहन ने सच गप किनको सामनेहे कहि दइ छथिन जे अगलाकऽ पचेनाई मोश्किल भऽ जाइ छइ।ई सब गुण - अवगुण रहला बादो मलंग जेकां अपन जी रहल छलाह।कियो "बच्चन" कहइन त कियो "बचन"सँकाज चला लियैह।

बचनकऽ किये आइ तक कोनो मंदिर मे माथ झुकबइत नञि देखने छइन। पूजा-पाठसँकोसों दूर रहइत छलाह। समय पर खेला-पीलाह आ सुतलाह। गामक लोक नञि इनकासँधार्मिक काज मे चंदा मंगइन आ नञि ई दइते छलखिन। ई सब लोकक‍ऽ सोचबा लेल बिबश कऽ दइ छलइ - एना कियैक।लोककऽ तऽ अखुनकासँमतलब छइ- टटका टटकी की भऽ रहल छइ। बड़की टा खिस्सा छइ अकर पाछु- जनबा बुझबाकऽ बेगरते ककरा।

बचनक पिता रामबृक्ष बाबु पटना मे नौकरी करय छलाह। हर बरख महालयासँएक दिन पहिने ओ अपन गाम एक महिना लेल अबइत छलाह। दशमी-दीयाबाती बीतेलाक बाद पटना घुड़इ छलाह।उनकर घर पर कयेक टा पंडित सब तेरहो अध्याय दुर्गा पाठ करइत छलइन। रामबृक्ष बाबु आ हुनकर पिता सब कियो पुरा बिध - बिधानसँपाबइन मनबइ छलाह। मनेता कियैक नञि.......कथीकऽ कमी छलइन...... भगवती सब किछु देने रहथिन.......अपन आनंद लइत छलाह।

रामबृक्ष बाबु सब साल जेकां महालयासँएकदिन पहिने पटनासँगामक लेल बिदा भेलाह। पनिया जहाजसँपहलेजा एलाह। ओतऽ सँट्रेनसँमुजफ्फरपुर। आ फेर ओतऽ सँबस पकइड़ कऽ गाम जाइ छलाह।जकरा कम पाइ छलइ या सोम प्रवृत्तिकऽ छल ओ सब ट्रेन सँसमस्तीपुर बाटे सेहो जाइ छल। बससँसमय कम लगइ

मूदा पाइ बेशी खर्च होइ।

रामबृक्ष बाबु तऽ भरल पुरल घरक छलाह आ ऊपरसँउदार सोभाव के, बसेसँगाम घुड़इ छलाह।भोरे पटनासँचलइ छलाह आ देर राइत कऽ गाम पहुचई छलाह।मनुआ पुल पर बससँउतड़इ छलाह आ ओतऽ सँघर पर स आयल टायरगाड़ी पर बइस कऽ गाम। सबसाला रूटीन छलइन। सबके बुझल जे कहिया एताह आ कहिया जेताह।निइत दिन पर जखइन नञि पहुंचलाह तऽ टायरगाड़ी बैलबान सहित भइड़ राइत मनुआ पुल पर इंतजार कऽ कऽ गाम घुइड़ गेल।

उनकर पिता रामकिशुन बाबुकऽ चिंता भेलइन।इमहर आमहर पता केलाह। कोनो खबर नञि भेटलइन। आइ तक एहन कहियो नञि भेल छलइन।अगिला दिन महालया छलइ। पूजा पाठ सब साल जेकां घर मे भऽ रहल छलइन।रामबृक्षकऽ पठाओल चिट्ठी मे सेहो अयबाक बारे मे लिखल छलइन। कयेक बेर उल्टा पुल्टा कऽ चिट्ठी पढ़लाह, कोनो आर माने नञि निकललइन। ज्यों ज्यों दिन बितल जाइ , कोनो अनहोनीकऽ डर सताबइ रहल छलइन।

तीन दिनक बाद दोसर टोल मे बिसुन बाबुकऽ जमायसँपता चललइन जे एकटा बसकऽ भारी एक्सीडेंट भऽ गेल छइ। एक्सीडेंटक समय रामबृक्षक अयबाक समयक लगीचे रहइ। गाम मे

अखबार सेहो तीन दिन बाद अबइ छलइ..... ओहो मे एक्सीडेंटकऽ खबर छलइ। रामकिशुन बाबुकऽ कनियाकऽ पिछला चाइर दिन सं दुध मे जुरपित्ती जेकां बुझा रहल छलइन। किछु संतानक कष्टक आभास बुझाय लगलइन।जखने अखबारक समाचारकऽ चर्चा भेलइ.....चिंता बइढ़ कऽ बेचैनी मे बदइल गेलइन।

आब सब हाल पता करय लेल कमतिया आ एकटा दिअयदक पढ़ुआ भाइकऽ कुशल क्षेम पता करय लेल पठावल गेलइन। अखबारक खबरक अनुसार ई सब जखइन ओइ अस्पताल मे गेलाह त किछु पता नञि लगलइन। फेर पुलिस थाना होइत मुर्दाघर मे लहाश सबकऽ देखलाह त ओइ मे रामबृक्ष, उनकर कनिया आ बेटाकऽ ई सब चिन्हलखिन। इनका सब लग शिनाख्तक कोनो कागज पत्तर नञि रहबाक कारण लहाश सबकऽ सुरक्षित राखल रहइन।आरो किछु तारा- ऊपरी लहाश सब चिन्हबा लेल राखल छलइ।तीन दिन मे लहाश सब फुइल कऽ कुम्भा जेकां भऽ गेल छलइ। ओतइ कियो कहलकइन जे छह महीनाकऽ एकटा बच्चा अइ मरल मऊगीकऽ कोरा मे जीयइत भेटल छलइ। आब ओ कतऽ छइ से पता करु।

पुलिस आ अस्पताल बालासँपुछला पर पता लगलइ जे एकटा नर्सिनिया ओइ बच्चाकऽ दुध पीयाकऽ जियेने छइ।

ओतइ कियो बाजल- " अतेक बीभत्स आ भीषण एक्सीडेंट मे ओइ बच्चाकऽ माय एना कऽ रखने रहइ जे अपने त मइड़ गेल, मूदा अइ जन्मौटी बच्चाकऽ कतऊं खरोंच तक नञि एलइ।"

कहूना कऽ कऽ सब कागजी खानापूर्ति भेलाक बाद ओ कमतिया आ पढुआ भाइ तीनों लहाश आ छह महीनाकऽ बच्चा लऽ कऽ गाम एलाह। पुरा गाम की परोपट्टा मे तहिया मातम पसइड़ गेल छलइ।रामकिशुन बाबु आ उनकर कनियाकऽ शोकसँबड्ड खराब हाल भऽ गेल छलइन। ओइ अबोध बच्चाकऽ देख देख कऽ सब सबुर कऽ रहल छल।

लोक सब अइ बच्चाकऽ देखऽ अबइ। बच्चाकऽ खोज-पुछारी होइत होइत ओकर नामे बच्चासँबच्चन पइड़ गेलइ। ईएह ओ बच्चन छलाह। एकटा खबासिनकऽ सेहो आठ- दस मासक बच्चा छलइ आ ओकरा दुध सेहो खुब होइ। ओकरे रामकिशुन बाबु कतऽ राखल गेलइ। ऊयाह खबासिन अपन दुध पिया पिया कऽ इनका पोसलकइन।

अइ तीन- तीन टा लहाशसँभरल अंगना मे ,कऽ आ ककर पूजा हेतइ। पूजा पाठ बंद भऽ गेलइ। सब अइ बच्चनकटुअर टुअर कहइ। कियो अइ बच्चाकऽ देख कऽ कहइ - "अरूदा रहइ तऽ बइच गेलइ।"

दोसर बाजई- " दुनिया मे अबिते माय बापकऽ खा गेलइ"।"

दस मूंह दस बात। ककरा ककरा मूंह बंद करबइ। रामकिशुन बाबु बाद मे अइ बच्चा लग ककरो नञि जाइ दइ छलखिन।

रामकिशुन बाबुकऽ अपना होइन जे भऽ सकइत छइ जे उनकासँगलती भेल हेतइन, जेकर सजा भगवान इनका अइ एक्सीडेंटकऽ रूप मे देलखिन। लेकिन अइ छह मासक अबोध कोन गलती केलक जे ओकर माय बापकऽ ओकरासँदुर कऽ लेलखिन। ई भगवान नञि छथि। कथी लेल इनका गोहरबियइन। घोर अनर्थ, दुबकी मारने देखइत रहलाह। आब भऽ गेलइन। ओही दिन सं रामकिशुन बाबु कतऽ पूजा पाठ बन्न भऽ गेल छलइन।

कनीक छटगर भेला पर घरे पर मास्टर साहब अबथिन आ पढ़बथिन।

जखइन बुझअ सुझअ जोगर बच्च्न भेला तऽ एकदिन रामकिशुन बाबु बच्चनकबजेलखिन-

"आहां हमरा एकटा बचन दियअ।"

कहू।हम बचन देलऊं।

आहां कहियो बस पर नञि चढ़ब।

ठीक छइ। नञि चढ़ब।

जाबइत छोट छलाह बच्चन ताबइत तऽ नञि किछु बुझेलइन। गाम लगक स्कुलसँमैट्रिक केलाकऽ बाद सबसं पहिने शहर जेबाकऽ जरूरत पड़लइन। आगुकऽ पढ़ाइ त करबाक छलइन।

जबानी आबऽ बला छलइन। ओकरे उमंग मे कयेक कोस साईकिल चला कऽ ट्रेन पकड़ई छलाह। फेर शहर जाइ छलाह- आगु पढ़बाक लेल।

समय बीत रहल छलइ। बेटा पुतोहुकऽ मौतसँशोकायल बाबी जल्दिये मइड़ गेल छलखिन।आदमी जनकऽ भरोस पर रामकिशुन बाबु अपन टेक धेने छलाह। उनका मोन नञि छलइन जे बच्चन शहर जाइथ पढबाक लेल। मूदा बिना पढ़ने जीवन जंजाल भऽ जइतइन। लोकक समझेला बुझेला आ बच्चनकआगु पढ़बाक मोन देख कऽ शहर मे पढ़बाक अनुमति दऽ देलखिन। दु बरख बितइत बितइत रामकिशुन बाबु सेहो परलोक सिधाइड़ गेलाह।

आब बच्चन बीए केलाकऽ बाद गाम आइब गेल छलाह। बिना बसकऽ कतउ आब जाय बला" बचन" उनका बड़ड भारी बुझा रहल छलइन। कयेक लोक कहलकइन-

" बचन" देबऽ बाला तऽ अपने चइल गेलाह।आब आहां बस पर चईढ़ सकइ छी।कऽ देखत आ किछु कहत। जाऊ बस पर चढ्ढु।

जतबे लोक उनका बचन तोड़बाक लेल ऊकसबइन, ओतबे ओ जिदिअयइत गेलाह। नञि चढ़लाह बस पर।

ओ तऽ धन कहू जे नबका प्राईवेट कालेज दु कोस पर खुईज गेल छलइ। ओही मे किछु पाइ दऽ कऽ किरानीकऽ नौकरी भेंट गेलइन। बियाह दान सेहो बगलेकऽ गाम मे केलाह। महफा मे बइस कऽ बियाह करऽ गेल छलाह।

बस बाला" बचन " बढइत बढ़इत मोटर तक पहुंच गेल छलइन। ओ मोटर मे सेहो नञि कहियो बइसलाह। बाद मे कालेज सरकारी भऽ गेलइ। बाद मे बढ़िया दरमाहो भेंटअ लगलइन। धीया पुता सब तऽ बस आ मोटर मे जाय लगलइन। बच्चन अपने आ कनिया हुनकर, सेहो बस आ मोटर मे नञि बइसई छइथ।

कहऽ मे बड़ड आसान छइ जे की हेतइ नञि बइसला सं। मूदा आइ एहन कियो भेटत जे बस आ मोटर मे नञि बइसल होइत। बच्चन अखनो अपन" बचन " निभा रहल छथि। उनका भगवान भगवतीसँईएह शिकाइत छइन जे अइ अबोधकऽ जन्म लइते ओकर माय बापकऽ किअए अपना लग बजा लेलियई। ई केहन न्याय। आहां न्याय नञि कऽ सकइ छी त हमहुं आहांकऽ भगवान नञि मानब।

अजुका लोककऽ जखइन बच्चनकरामकिशुन बाबुकऽ देल बचनकऽ निभावअकऽ प्रणक बारे मे पता चलइ छइन त आदरसँसबहक माथ उनकर सोंझा झुईक जाइ छइन।ओना कहऽ बाला मथछिन्नु सेहो कहइ छलइन।

बच्चनकदुनु बेटीकऽ नीक घर- बर, हिनकर बचनबद्ध गुणक प्रसिद्धिसँभऽ गेलइन। आब एकटा बेटा छइन जे मोटर मे चढइ छइन आ शहर मे रही कऽ पढ़ाइ कऽ रहल छइन। भगवान मे ओकर आस्था छइ, लेकिन बाहरे बाहर ओ भगवानकऽ गोर लगइत रहइया........घर मे अकर अखइन तक नञि कोनो सुरसार छइ।

आब नञि बचन लेबऽ बाला लोक भेटताह आ नञि बचन निभावअ बला लोक।

रखबार (लघुकथा)

गामसँसमाद आयल छल- " हरिया आब घर पर नञि रहइत अइछ। कोनो लोकक बेबसथा आब करऽ पड़तह।"

ई समाद पर मोन भिन्ना गेल। आइ तक दिमागो मे नञि आयल छल जे हरिया हमर घर छोड़ि कऽ चइल जाइत। सबसं पहिने तऽ एकटा रखबारकऽ राखऽ पड़त। चोरी- चहारी कऽ हल्ला अलगे गाम दिश बइढ़ गेल छइ। मुनाई बाबु ओहन दबंग घर, जिनकर बेटो भारतीय पुलिस सेवाकऽ अधिकारी छइन, चोरी भऽ गेलइन।

चौकीदारकऽ जान पर आफत बनल छलइ। पुरा जिलाकऽ थाना- पुलिस आयल छलइन।

किछु भेलइन?

किछु नञि भेटलइन।

उपरसँअइ हाकिम सबहक आयल गेल पर सेवा- सत्कार मे कतेक खर्चा भेलइन।

ओ सब कहइ- "गांवकऽ भीतर घर है। परदेश से चोर आयेगा? यही अगल बगलबाला सब किअए होगा?इस गांव मे चोर सब बसने लगा है।"

दु चाइर टा अगल बगलकऽ दीयाद बादसँपुछोताछ केने रहइ। एकाधकऽ तऽ थानों पर बजेलकइ।

भेटलइन तऽ नञि किछो। उपरसँअगल बगलसँआनो जान बन्न भऽ गेलइन।गाइड़ श्राप अलगे सुनऽ पड़लइन।

बाजु! जई गाम मे अतेक तरहक अफसर भेल। ओइ गाम मे आब चोर बसइत अइछ।

राइत बिराइत आब एक गिलास पाइनो देबऽ बाला गाम पर कियो नञि छइ।

ईएह हरिया अइछ। जहिया घरसँहटबइ छलियई, नञि हंटल।ओ बजलक-

" हमराकऽ अइछ? आब बुढ़ारी मे,कऽ दु सांझ खुआइत।अतेक दिनसँआहांकऽ दरबार मे रही आयल छी, रहऽ दियह। कतेक जिनगी आब बांचले अइछ।"

हरिया ईमानदार अइछ। एक पाइ बिन पुछने आइ तक घरसँनञि उठेलक। ओकर सब जगह अपन कमीशन बान्हल छलइ।

आमक गाछी बिकाइ। पैकार हरियाकऽ अलगसँकमीशन दऽ दइ। किरानाकऽ समान जकरा कतऽ सऽ आबइ, ओ हरियाकऽ सब महिना किछु दइ छलइ।घर मे कोनो टुट फुटकऽ मरम्मत होइ, हरियाकऽ हिस्सा सब बान्हल होइ। जे पाहुन स्टेशन छोड़ला पर ओकरा बख्शीश नञि देलकिन, उनका जाय काल दोसर बेरसँकोनो भंगठी माइड़ दइन।कतउ माइट भराई, ईंटा खसय, मोटर ठीक होइ, गंवारी चंदा होइ,गाछ बिकाइ, कोनो समानक लेब देब होइ, गाड़ी भाड़ा पर लेबाक होइ, बिजली बत्ती ठीक करेबाक होइ, हरियाकऽ जे महत्व नञि देलकिन, उनकर ओ पत्ता काइट दइ छलइन। बिन

ओकर मर्जी, किछु भऽ नञि सकइ छइ। ओकर संपर्क एहन रहइ, जे एक समाद पर सब हाजिर।

ओ गाम मे किनको मोजर नञि करय। हमर अड़ोसी पड़ोसी किछु बजतिन, तऽ सबहक खतिहान ओकरा लग छइ। ओ शुरू भऽ जाइ।कोनो जन मजुरकऽ जे बेशी काज करइत देखिताय, तऽ ओकर करेज फाटऽ लगितइ। ओकरा कियैक अतेक पाइ दइ छियई। हमरे दियह, हम काज कऽ देब। देह सकइ नञि, तैयो पाइयक लोभ मे काजक ठीका लऽ लियाय।

ओकरा बिना हमर सबहक काज आ हमर सबहक बिना ओकर काज नञि चलइ छलइ। अइ करीब चालीस बरखक ओकर , हमर परिवारसँजुड़ाव मे कै बेर ओ रुसल, फुलल, खिसियाल, भागल अइछ । मूदा हफ्ताह दिनक भीतर फेर घुरि आयल।

ओ स्वभावसँततेक ने टन्नुक अइछ, जे कनिको एमहर ओमहरकऽ बात ओकरा खराब लाइग जाइ छलइ। हमरा घर छोड़ि, ओ कतउ खैबो पीबो नञि छलाय। ओकरा अलगसँज्यों कियो कहतइ आ आदरसँलऽ जैतइ, तखने ओ उनका कतऽ खइतै।

हमरा सबकऽ छोड़ि कऽ , बाकी लोकक ओ "हरिजी" छल। हमहुं सब कयेक बेर सोचलऊं जे ओकरा आब " हरिया " नञि कहियइ, नञि भऽ सकल।

हम घर पर कहलियइन- " अपने पांच दस दिन मे आइब जाइत।"

घर परसँज़बाब भेटल- " महिनासँऊपर भऽ गेलइ ओकर गेला। ओना भेटला पर पहिने मना नञि करइत छल, लेकिन आब ओ नञि आइत।तीन चाइर दिन पर टहलइत बुलइत अबइत छलाय, ओना आब रहत नञि।"

ओ जाबइत छल, ओकर डरे एकटा नेबो, की आम, की अमरा, की लीची, की सरीफा, की लताम, घास तक गढ़ऽ कियो टपई नञि छल। आब तऽ हर दु दिन पर किछु ने किछु कियो टपा दइत अइछ।

हरियाकऽ पुरा नाम हरिहर महतो छइ।आठ भाइ अइछ। बापो ओकर सात भाइ छलइ।अकर बच्चे मे बियाह भेल छलइ। चेतन भेला पर गौना भेलइ। कनिया अकर सासुर बसऽ लागल छलइ। एक बेर सरेह मे घास गढ़ऽ गेल छलइ, ओतइ सांप काइट लेलकइ। बहुत झाड़ा फुंकी भेलइ। पुरा देह ओकर नील भऽ गेल छलइ। नञि बचलइ। मईरे गेलइ। ओकर लाशकऽ घइल संग उल्टा बाईन्ह कऽ कमला बलान मे बहा देल गेलइ। ई उम्मेद छलइ जे बहइत पाइनक संग जहर देह मे सऽ उतइड़ जेतइ, तऽ ओ जी जेतइ। ई ककरो बुझल तऽ नञि छइ जे कियो एना जीब गेल छइ, लेकिन तहिया एहने भेलइ।

हरिया ओकर बाद मतछिन्नु भऽ गेल छलइ। ओकर बाप हमर सबहक जमीन बंटाई करय छल।अइ घटनाकऽ पांच - सात बरख बाद ओकर बाप हमरा कतऽ हरवाह मे हरियाकऽ पठवह लगलइ। धीरे धीरे ओ अतइ रहऽ लागल। जे ओकर भाइ सब हरियाकऽ एक सांझ खाई लेल नञि दइ, से एकरा लग पाइ भेला पर मान दान करऽ लगलइ। हरियाकऽ बाल न बच्चा, नीक

पाइ पोस्ट आफिस मे जमा भऽ गेल छलइ।

आब गामकऽ समीकरण बदइल गेल छइ। पंचाइतकऽ पिछला चुनाव मे गाम, महिला लेल आरक्षित भऽ गेल छइ। पच्चीस बरखसँमुखियाजी चुनाव मे जीतइत आइब रहल छलाह। महिला आरक्षित भेला पर उनकर पुतोहु चुनाव मे ठार भेल छलीह। इमहर हरियाकऽ भाभो तेतरीकऽ सेहो ओकर घरक लोक चुनाव मे देखाऊंस मे ठार करा देलकइ। तेतरी आब तेतरी देवी भऽ गेल अइछ। देखहो मे पइनगर छइ आ बजितो ओहिना बढ़िया छइ। बातों बिचारकऽ बढ़िया छइ। बाबू भैयाकऽ सेहो इज्जत करय आ अपन समाजकऽ तऽ बाते अलग।

हरियाकऽ गोतिया अपने बड़की टा छइ। पहिल बेर ओकर घरक लोक मुखिया चुनाव मे ठार भेल छलइ, ओहो मूखियाजीकऽ पुतोहुकऽ खिलाफ।सब जी जानसँलागल छलइ। हरियाकऽ कोनो खास मतलब अइ चुनाव आ घरसँनञि छलइ।

चुनावक परिणाम निकललइ।तेतरी देवी किछु वोटसँचुनाव जीत गेलइ। आब ओ गामक मुखियाइन अइछ। ओकर दलान पर सब जाइत आ समाजक लोक पंचैती लेल अबइ छथिन। कतेक तरहक सर्टिफिकेट पर ओकर हस्ताक्षर लियाई छइ। मुखियाइन बनला पर हरिया लेल सेहो मधुर ओकर भातिज लऽ कऽ आयल छलइ।

शुरू मे तऽ हरिया अपन भाइ भाभोकऽ दुसई छलइ। कोन काज छइ घरे घर बऊआइ के।ई चुनाव तुनाव सब झुट्ठेकऽ होइ छइ। जीततइ मुखियेकऽ पुतोहु। लेकिन जखइन वोटक गिनती भेलइ, तऽ सबहक सोचल फेल कऽ गेलइ।

आब कहियो काल हरिया अपन घर जाय आबऽ लागल छलाय। भाइ- भातिज आब कहइ छलइ कि घरे पर रह। हरिया ओकरा सबकऽ डांट डपट कऽ हमरा कतऽ आइब जाय। फेर सब बात बताबय।

आब हरिया, मुखियाइनकऽ भैंसुर कहाबइत अइछ। मुखियाइनकऽ बेज्जती बुझाई छइ जे ओकर घरक लोक दोसरा कतऽ दरबानी करय। ओ सब हर तरहसँप्रपंच कऽ कऽ देख लेलक, हरिया हमर घर नञि छोड़लक।

गाम मे सबसं बेशी पाइ शराबक बिक्री मे भऽ गेल छलइ। जहियासँसरकार शराबबंदी केलकइ, तहियासँअकर भाव बइढ़ गेल छइ। मुखियाइनकऽ बेटाकऽ एक दिन पुलिस अइ अवैध शराबक गोरखधंधा मे शामिल होबाक लेल पकइड़ कऽ जेहल मे धऽ देलकइ। हरियाकऽ दु टा भाइकऽ सेहो अही केश मे बाद मे पुलिस पकड़लकइ।

मुखियाइनकऽ कहब छइ जे पिछला मुखियाकऽ पुतोहुकऽ ओ चुनाव मे हरेलकइ, तैं ओ सब साज़िशकऽ तहत एकर घरक लोककऽ अइ शराबक केश मे फंसेलकइ।आब हरियाकऽ अपन परिवार पर आयल विपत्ति देखी कऽ नञि रहल गेलइ। ओकर घर पर कोनो पुरुख पातर नञि छलइ। हरिया ओही लेल अपन घर घुड़ल।

आब बाकि सब लोक जमानत पर छुइट गेल छइ। हरियाकऽ दिमाग मे बाबू भैयाकऽ खिलाफ जहर भइड़ देल गेलइ। आब ओ इमहर आइबतो नञि अइछ। पुछला पर साफ साफ रहबासँमना कऽ

देलकइ।

आब हरिहर महतो ओ कहबइ अइछ। अपन जाइत आ समाजकऽ मोछ ऊंचा रखबा लेल दिन राइत काज मे लागल अइछ। समाजक ई विभाजन, कहियो हिंसक संघर्ष मे बदइल जेबाक आशंका हरदम बनल रहइ छइ।

ओही लेल जल्दीसँएकटा रखबार तका रहल अइछ। कोनो भेटाय तऽ कहब।

चंसगर (लघुकथा)

मिहिर गाम गेल छलाह।हाथ- पैर धोलाक बाद निश्चिंतसँबइसला। चाह- जलखइ सब भऽ गेल छलइन। भौजी उनकर किछु परेशान बुझेलखिन।मिहिर ई बात बुझई छलाह जे बेरोजगारक कनियाकऽ भाग्य मे परेशानी लिखैले रहइ छइ।नीक रहितइ तऽ ओकरो घरवालाकऽ नौकरी रहितइ।मिहिरकऽ पुछलो पर नञि किछु जवाब भेंटलइन।

मिहिरकऽ अपन भौजीकऽ ओ हंसइत चेहरा याद आइब गेलइन।जखइन मिहिरकऽ भाइजी सुधीरक विवाहकऽ गप्प इनकासँचलइ छलइन। एक दिन चुपचाप मिहिर भौजीकऽ देखबा लेल उनकर छात्रावास चइल गेल छलाह। ओतऽ सब लड़की मे सुन्नर उनकर भौजिये छलखिन।

बाद मे मिहिरकऽ भौजी कहलखिन - " से बात नञि छलइ। लड़की सब एकसँएक सुन्नर छलइ। आहां हमरा देखऽ आयल छलऊं, हमर होस्टलक वार्डेन बुइझ गेल छलीह।ओतऽ जाइन बुइझ कऽ सुन्नर लड़की सब अपने बाहर नञि निकलइ छइ, जखइन ककरो कियो देखऽ आबइ छइ। ई एकटा अघोषित परिपाटी छइ।"

अच्छा ! से बात छलइ।

हं! तऽ आर की।

सुधीर कनी काल बाद ताश खेला कऽ घर घुरलाह।ताबइत मिहिर मायसँगपशप करइत छलाह। बीच बीच मे टोल पड़ोसकऽ

लोक सब अयलइन।उनको सबसँकनी मनी बात भेलइन।

सुधीर अबिते हाल चाल पुछलखिन।छोट भाइकऽ देखी कऽ प्रसन्न भेलाह। गाम मे तऽ अहिना दिन बीतइ छइ। सांझ्रु पहर पेठियासँअपने जा कऽ बोआरी माछ अनलाह।

बोआरी माछ मिहिरकऽ नीक लगइ छइन। ई सुधीरे टाकऽ बुझल छलइन।

मिहिरकऽ तऽ सब माछे पहिने एक्के जेकां लगइन। बोआरी सस्त भेटई, तैं मिहिर बजारसँईएह खरीदइ छलाह। दोसर कनीक देखऽ मे ई माछ गोर लगइन। गोरका रंगकऽ प्रति आशक्ति बच्चेसँछलइन। अपन पीरसियाम छलाह।तैं मधुरो मे रसगुल्ले नीक लागइन। कियैक तऽ ई उज्जर होइ।मीठ तऽ अतेक नीक लगइन जे गुड़क भेल्लिये खा लइ छलाह आ चीनी तऽ कयेक फक्का, जकर गिनती नञि।

रंगक प्रति एहन ने धुनी छलाह जे कतउ सुइन लेलकिन- " गर्भवती स्त्रीकऽ नारियल खेलाहसँसंतान गोर होइ छइ।"

अपन कनिया जखइन माय बनऽ बाला रहथिन तऽ नारियल खुआ खुआ कऽ उनकर मोन अकच्छ कऽ देने रहथिन।

गाम मे एकटा भातिज नमन छलखिन। ओकरा लेल कपड़ा लत्ता लऽ कऽ आयल छलाह। नमन देखते बड्ड खुश भेल। ओ चट्टसँनबका कपड़ा पहिरलक आ खेलऽ विदा भऽ गेल।

नमन पढ़बा मे ठीके छल। गामे मे आब अंग्रेजी मीडियम प्राईवेट स्कूल खुईज गेल छलइ। ओही मे पढ़ई छलाह। एकटा रिक्शा अबइ छलइ। ओही मे दसियों बच्चा लदा कऽ स्कुल जाइ। ओना स्कुल गामे मे छलइ। दुर तऽ कतउसँनञि कहल जा सकइत छलइ, तखनो रिक्शासँनमन जाइ छलाह।

एतनी दुर लेल रिक्शा?

हं। आब सब बच्चा रिक्शेसँजाइ छइ।

एतबा दुर पैदल या साइकिलसँजायकऽ चाही। स्वास्थ्य सेहो ठीक रहतइन।

मोन तऽ रिक्शो पर गेलासँठीके रहइ छइन। स्कुल मे सबकऽ बतेनाई जरूरी थोड़े छइ जे नमनक बाप गरीब छथिन।

अइ मे गरीबी आ अमीरीकऽ कोन बात?

कियैक ने। खुब बात छइ। खतबे टोलीकऽ सेहो सबटा बच्चा रिक्शेसँअबइ छइ। ओहुसँगैर गुजरल हमर नमन?

नञि नञि। से नञि कहलऊं।

आब जमाना बदइल गेल छइ। सब अहिना स्कुल जाइ छइ। हमरो बेटा तहिना जाइत।

बातकऽ दोसर दिश जाइत देख मिहिरक माय बीच मे बजलीह-

छोड़ह ई सब बात। आर कहऽ। अखइन रहबऽ ने?

हं चाइर दिनक छुट्टी अइछ। ड़इब कऽ चइल जायब। फेर सोमसँआफिस पकड़ा जाइत।

मिहिरकऽ बुझल छइन जे गामक सब खर्चा मायक पेंशनसँचलइ छइन। च्यवनप्राश, टानिक,किछु फल आ दवाई सब माय लेल मिहिर लेने आयल छलाह।

मायकऽ सब पाइ घरे मे लाइग जाइ छइन।फल, दुध, दवाई कतऽ सऽ हेतइन?

मिहिर दुध ऊठौना ठीक कऽ देने छथिन।माय कोना सब दुध अपने पी लेथिन। सब तऽ उनकर संताने छइन। ओइ मे नमन तऽ बीन दुध- दहीकऽ एक्को सांझ नञि खा सकइत अइछ। सुधीरक जीह सेहो पातर छइन। घरक जेठ बेटा मांगल चांगल छलाह। ओ किछु बजई नञि छइथ, मूदा बिन दुध- दहीकऽ ससड़इत नञि रहइ छइन। गारा धऽ लइ छइन। हफ्ता मे एक दिन नोनञि हाट पर जेबे करताह आ घुरती मे करिया पन्नी मे कांट कुश रहबे करतइन। अकर मात्रा जेबी कऽ गर्मी देख कऽ ।

दुपहरिया मे मायसँमिहिरकऽ एकांती भऽ रहल छइन। कतबो मिहिर मायकऽ अपना संग दिल्ली चलय लेल कहइ छथिन, ओ तैयार नञि भऽ रहल छथिन। उनका ई भान छइन- पेंशनक पाइसँसुधीरकऽ आश्रम चलइ छइन। अगर माय नञि रहथिन तऽ कशमकश भऽ जाइ छइन। पाइकऽ दिगदारी भेलासँघर मे कल्लह सेहो होबऽ लगइ छइन।

एक बेर दु महिना लेल मिहिर कतऽ गेल छलीह। घुरला पर सतलखा बाली सब हाल बतेलखिन। सुधीर तऽ हरखन तैयारे रहता- " तोरा जेतऽ जेबाक होइ, तों जो।"

माय बुझई छथिन ई ऊयाह स्वाभिमानी बापक बेटा छइथ ।ओ भुख लगबा पर घर मे जखइन नञि किछु देखथिन तऽ कलम दिश चइल जाइ छलाह आ दु चाइर लग्गा कुसियार खा कऽ क्षुधा शांत कऽ लइ छलाह। घर मे केकरा की कहथिन? सब स्थिति सबके बुझले छइन। सुधीर कखनो मायसँपाइ नञि मंगइ छलखिन।

मायकऽ तऽ जे संतान कष्ट मे रहइ छइ, ओकरे प्रति ओकर ममत्व देखाइत छइ।माय, सुधीरकऽ ओगइड़ कऽ अपन छांव मे रखने छलखिन।

तुं कपड़ा लत्ता कियैह अनञि छहुन। ओकर बदला मे पाइये सुधीरकऽ दऽ देल करहुन।

पाइ तऽ दइते रहइ छियइन। अत्ते नीक कपड़ा इनका सबकऽ अपनासँनञि कीनल हेतइन? तैं लेने अबइ छी।

नीक कपड़ा?

तोहर भौजीकऽ गामकऽ कोन - दन भाइ आयल छलइन। ओ कहलकइन- " ई तऽ दिल्ली मे रेहरी पर बिकाइ छइ"

बस! फेर की छलइन। तोहर देल,नमनकऽ पहिरल टी-शर्टकऽ उतरबेलकिन आ पोंछा बना देलखिन।

आंय। ओ पोंछा बइन गेलइ। ओ तऽ ब्रांडेड कपड़ा छलइ। छये महिना पहिने तऽ अनने रहियइन।ओतेक दामी कपड़ाकऽ ई हाल?

दाम कहां लिखल छलह?

दाम बला लेबल तऽ जाइन बुझ्झ कऽ हटा देलियई। इनका सबकऽ होइतइन जे दाम देखा कऽ अहसान कऽ रहल छइथ। कंपनीकऽ लेबल तऽ लागल छलइ। ओइ कंपनीकऽ कपड़ा तऽ तीन हजार रूपयासँशुरूये होइ छइ।

सेह सुधीरकऽ कहइत सुनने छलियई-" ब्रांडेड कंपनी छइ। हमहुं सब अखइन तक देखने छी, पहिरने नञि छी।"

ओ जे मुंहझौंसा भाइ आयल छलइन, से कहलकइन-" दिल्ली मे नकली लेबल लाइग जाइ छइ। असली रहितइन तऽ दाम बला लेबल सेहो रहितइ की ने?

मिहिरकऽ ई सब जाइन कऽ बड्ड दुख भेलइन। फेर सोचलाह- भाइ तऽ भाइये होइ छइ। आइ भाइ, ज्यों अपना संग शहर मे नञि रखने रहितइथ, तऽ अइ स्थित मे मिहिर थोड़बे पहुंचतइथ। गाम मे रहलासँकेना बुद्धि भ्रष्ट भऽ जाइ छइ। जहिया पढ़ई छलाह भाइ, कतेक प्रगतिशील सोच छलइन। आइ गाम मे रहइत रहइत सब सोचो मे घुण लाइग गेलइन।

माय फेर मिहिरकऽ बुझेलखिन। बाकी सब छोड़ऽ । सब घर मे अहिना होइ छइ।गाछकऽ कतउ पात भारी लगइ छइ। जहिना सुधीर लोकइन रखताह, हम रहबइन।

चाइर दिन लेल अयलाह अइछ। खुशी खुशी अपन जाह।देखियह ने, नमन किछु बइन जेतइन। कतेक चंसगर देखबा मे लगइ छइ। तुहों नेना मे अहिना लगइ छलह।दुनु भाइ अहिना मिलजुल कऽ रहइ जाऽ ।

मायकऽ तऽ अपन बेटा केहनो देखबा मे होइ, सुन्दरे लगइ छइ। मिहिर बच्चा मे कतउसँसुन्दर नञि छलाह। आब कनी मोटेलाह आ पदक गौरव माथ पर एलइन, तऽ कपार चमकऽ लगलइन।

ई नमनकऽ मैट्रिक पास करिते अपना लग राईख लहुन। तोरा लग रहतुन तऽ आदमी बइन जेताह। नञि तऽ गाम मे रही कऽ उजियागर नञि हेथुन। पहिने ईएह गामसँअतेक लोक पईढ़ लिखि कऽ हाकिम हुकुम बनल। नबका मे तऽ मुश्किले लगइत अइछ।

मिहिर हां ना, किछु नञि कहलखिन। मैट्रिक केलाक बाद मिहिर, नमनकऽ अपना संग दिल्ली लऽ एलखिन।अतऽ ग्यारहवीं मे नाम लिखाबऽ सँपहिने स्कुल सब मे परीक्षा होइ छइ। ओइ परीक्षा मे नमन पास नञि कऽ सकलाह। आब दुईये टा रास्ता बचलइन, घुइड़ कऽ गाम मे आगुकऽ पढ़ाइ करस वा दिल्ली मे केहनो स्कुल मे नाम लिखावल जइन।

नमन अपने निर्णय लेलाह जे आब हम गाम मे नीकसँपढ़ाइ करब आ बारहवींकऽ बाद दिल्ली मे रहब।पढ़ाइकऽ माध्यम सेहो एकटा समस्याकऽ रूप मे आयल छलइन।

ईएह भेलइ। नमनकऽ परीक्षा मे असफलता उनका पढ़बाक ओर उन्मुख केलकइन। गामेसँबारहवीं केलाह। ओही साल इंजीनियरिंग मे एडमिशन सेहो भऽ गेलइन।

सुधीर गामक अंगरेजिया स्कुल मे कम्मे पाइ पर पढ़बऽ लागल छलाह। नमनकऽ पढ़ाइकऽ खर्चा दादीकऽ पेंशनसँजाइ छलइन।

नमनकऽ इंजीनियरिंगकऽ अंतिम साल मे कैम्पस सेलेक्शन भऽ गेलइन।दादीकऽ इच्छा लऽ कऽ नमनक विवाह गामसँभेनाइ तय कैल गेल छलइन।

मिहिर सेहो सपरिवार ओइ विवाह मे शामिल होइ लेल गाम गेल छलाह। भौजीकऽ गोर लागऽ गेलाह।

"हमर बेटाकऽ लोक तऽ दु सांझ खाई लेल नञि देलकइ।अपन घरसँघुरा देलकइ। आइ हमर भगवान सुनलाह। "

ई बात सुनिते नमन बजलाह- " मां। ईएह कका छइथ जिनका लऽ कऽ हम अतऽ तक पहुंचलऊं।ओ हमरा दिल्ली डेरा पर रखबाक लेल तैयार छलाह, हमही नञि मनलियइन। हमरा इंजीनियरिंग मे हर महिना पढ़ई लेल पाइ पठबइ छलाह। इनकर निर्देश छलइन जे ई बात आहां ककरो नञि कहबइ।हमर असफलता, आंईख खोललक। समय समय पर हमरा रस्ता देखबइत छलाह।"

मिहिरकऽ किछु देर बाद अइ बातक आशय बुझबा मे एलइन। ओ सन्न रही गेलाह।

नमन तऽ बच्चेसँअपन मायकऽ बाजल ऊकटा पैंची सुनञित सुनञित पैघ भेल छल।ओकरा होइ छलइ जे समयक संग ओकर मायकऽ कटुवाणीकऽ धार मद्धिम हेतइ, मूदा ई बढ़िते गेलइ।

मिहिरक माय सेहो उईठ कऽ एलीह। " हम तोरा कहने रहियह। मोन छह। ई नमन बड़ड चंसगर देखऽ मे लगइ छइ। देखह , आइ सच्च सबहक सोझां मे रखलक।"

मिहिरकऽ भौजी अतेक बरखसँविकार अपन मोन मे रखने ढोअइत छलीह। आइ उनकर सब विकार धोआ गेलइन। ओ नोरसँडबडबाइत आंईखसँमिहिरकऽ तरफ देखइत बजलीह- " हमरा माफ कऽ दियह। अतेक कष्ट सहलो पर आहांकऽ परिवारक मान मर्यादा रखबाक प्रयास कयलऊं। ग़रीबीकऽ कारण हमर सोचऽ कऽ तरीका बदइल गेल छलाय।

जहिया आहां हमरा देखऽ होस्टल मे आयल रही, तहिये आहांकऽ भोलापन देखी कऽ हमरा बुझा गेल छल जे आहांकऽ भाइ आ परिवार केहन भेटत। आहां सबहक सोच सच मे हमर नैहरोसँनीक अइछ।"

सुधीर सेहो आंगन मे ठार भेल सब देख सुइन रहल छलाह। ओ भइड़ पांजि कऽ मिहिरकऽ पकइड़ कऽ कानऽ लगलाह।

मिहिरकऽ मायकऽ आंईखसँसेहो नोर खइस रहल छलइन।

इमहर दुनु बेटाकऽ बीच बढ़ल जाइत दुरीकऽ देखलासँउनकर आंईखसँहरदम पाइन खइसिये जाइन।लोको सब जाइन बुझ्झ कऽ एहने एहने गप करऽ आइब जाइ छलइन।

" आब हम मरबो करब तऽ चैन सं। अपन संतानक बीच मे मतांतरकऽ हम अपन कमी बुझई छलऊं। ई सबहक पाछु गरीबी छइ। ईएह मनुक्खक दिमागकऽ खराब कऽ दइ छइ।"

तइ पर नमन बजलाह- " सब कियो कनिते रहब तऽ हमर बियाहकऽ ओरियान कोना होइत।"

ई सुनिते हंसीकऽ ठहक्का आंगन मे छुइट गेलइ।

दोषी के? (लघुकथा)

एना कहिया तऽ क चलत?- आशा बजलीह।

जहिया तक चाहब, तहिया तक चलत।- अमन बजलाह।

आब हमरा डर होइत अइछ।

कथीक डर?

आहां छोड़ि कऽ तऽ नञि चइल जायब?

एना कियैक सोचई छी? की भऽ गेल अइछ? हमरा मे किछु बदलाव देखलऊं की?

हमरा किछ भेल नञि अइछ। मूदा हमरा बुझा रहल अइछ। आब ई बेशी दिन नञि चलऽ त।

" अतेक दिनसँचइलते अइछ ने। अहिना आगुओ चलऽ त। आब छोड्डु ई सब ढकपैंची। बुझाइत अइछ आहांकऽ आफिस मे बेशी काज नञि अइछ। तैं दिमाग मे अंटशंट बात उम्हड़इत रहइत अइछ"-

ईएह कहइत अमन कसिया कऽ आशाकऽ दबोचला। फेर दु वयस्कक बीचक खेला शुरू भेल। आइ खेला मे आशा ओतेक सहयोग नञि करय छलखिन। अमन ई बुझई छलाह। ओ किछु नब तरीकासँखेलाय लगलाह। फेर धीरे-धीरे आशाकऽ नबका खेला नीक लागऽ लगलइन। बड़ी काल तक चलइत रहलइ। फेर थकला बाद दुनु गोटे एकदोसरा मे गहिया कऽ सुइत रहलाह।

भोरे अमन - आशा एकबेर फेर प्रेमालाप कयलाह। अमनकऽ दिल्ली घुरबाक छलइन। ओ चाह पी कऽ चइल गेलाह। आशा असकर घर मे पड़ल छलीह। थोड़ेक देर बाद दाई अयलइन। एक बेर फेर कड़क चाह बनबइ लेल ओकरा कहलखिन।

आइ काइल कियैक ई सब नीक बेजाय माथा पर नचइत रहइ छइन। आफिस मे सेहो ओतेक मोन नञि लगलइन।अतुका सबसं बड़का अधिकारी ओ छइथ। सब उनकासँछोटे छइन। आफिस जास वा नञि? कियो रोकऽ टोकऽ बाला नञि।

आइ एकटा स्कुलक फंक्सन मे सेहो जायकऽ छइन। ईएह मूख्य अतिथि छथि। आदर्शवादी बात कहऽ मे कतेक नीक लगइ छइ। आशा शब्दक चयन मे महारथ हासिल केने छथि। इनकर संबोधन बड़ड सारगर्भित रहइत छइ।बच्चेसँई डिबेट सब मे प्राईज जीतइत रहलीह। माईक हाथ मे अबिते टोन ऊयाह प्रतियोगिते बाला भऽ जाइ छइन। जखइन समारोहकऽ मुख्य अतिथि मे प्रतियोगी बाला जोश खरोश होइ तऽ ओइ भाषणकऽ कहबे की। खुब लोकप्रिय भेल जा रहल छलीह। अतुका अखबार मे रोज इनकर कोनो ना कोनो समाचार सहित फोटो रहिते छइन।

फेर सांझ्रु पहर ओइ समारोह मे गेल छलीह। ओहिना ओजस्वी भाषण भेलइन। मंचसँआयोजक लोकइन आशा जेकां बेटी सब घर मे होयबाक बात कहलखिन। कतेक लोक इनकासँआशीर्वाद लेलक। जहिना इमानदार ओहिना सुन्नर , कर्मठ आ मृदुभाषी आशा छलीह।

आशा पैघ प्रशासनिक अधिकारी छलीह।बच्चा सब देहरादून मे बोर्डिंग मे पढ़ई छलइन। आशाक घरवाला भरत दिल्ली मे एकटा प्राईवेट कंपनी मे काज करइत छलाह। उनका स्वाभिमान बड़ड छलइन।ओ आशाक दिन- दया पर नञि जीबऽ चाहइ छलाह। शइन ड़इब कऽ आशा लग पहिने अबइ छलाह। दिन पर दिन आशाक व्यस्तता बढ़िते जा रहल छलइन।भरत धीरे-धीरे एनाई गेनाई कम कऽ देने छलाह।

भरत आ आशाकऽ विवाह घरकथासँभेल छलइन। जहिया बियाह भेलइन तहिया अतबे बुझल छलइन - " लड़की प्रतियोगिता परीक्षाकऽ तैयारी कय बरखसँकऽ रहल छइ।"

आशाकऽ सफलता नञि भेट रहल छलइन आ बयस बढ़ल जा रहल छलइन।

आशाकऽ माय बाप पर बिन बियाहल बेटीकऽ रखनाई आब असह्य भऽ गेल छलइन। ओ सब प्राईवेट कंपनी मे काज करइत भरतसँबियाह निश्चित कऽ देलखिन। जखइन आशा परीक्षाकऽ बाद गाम गेलीह तऽ देखइ छथि जे बियाहक कार्ड तक छपा गेल छइ।

घरक इज्जत बेटीक हाथ मे। आशा पर विश्वास कऽ कऽ माय बाप सेहो औकातसँबेशी खर्च दिल्ली मे राईख कऽ पढ़ाबऽ मे केलखिन।सफलता नहियो भेटला पर कोनो कुबाच नञि कहलखिन। आब आशाक पारी छलइन अपन जिम्मेदारी निभावऽ के।

बियाह दान आशाकऽ भरत संग भऽ गेलइन। दिल्ली फेर आशा घुरली तऽ ओ प्रतियोगिता परीक्षाकऽ तैयारी अपने शुरु कऽ लेहली।

भरत जखइन इनकर इच्छा देखलखिन तऽ ओहो इनका संग देलखिन।पढ़ाइकऽ संग गृहस्थ जीवन बीतबइत दु टा बच्चाकऽ माय सेहो भऽ गेलीह। विधिकऽ विधान देखियउ।परीक्षाक परिणाम इनकर पक्ष मे भेलइन। आशाकऽ प्रशासनिक सेवा मे चयन भऽ गेलइन। कैडर सेहो दिल्लीसँसटले हरियाणा भेटलइन।

जई प्रखंड मे आशाकऽ पहिल बेर नियुक्ति भेलइन। ओतऽ एकबेर अमन पहुंचलाह। दिल्ली मे बियाहसँपूर्व परीक्षाकऽ तैयारी करय लेल आशा रहइत छलीह। ओतऽ उनकर की, आरो कतेक छौंड़ीकऽ अमन बड्ड नीक लगइ छलखिन। अमन आ आशाकऽ दोस्ती मर्यादासँआगुकऽ भऽ गेल छलइन।अमन कयेक बेर आशा लेल अपनाकऽ कष्ट देने छलाह।

ओना अमनकऽ दोस्ती आरो कयेक बिंदास छौंड़ी सबहक संग छलइन। अइ लऽ कऽ आशा- अमन मे नोक झोंक सेहो भऽ जाइन। अही बीच अमनकऽ दिल्ली सेवा आयोग मे नौकरी भऽ गेलइन । आशा तऽ गाम घुइड़ गेल छलीह।

आशाकऽ हरियाणा मे ज्वाइन करिते अमन आइब धमकलखिन। आशा- अमन असगर होइते अपनाकऽ नञि रोईक सकलाह।

आब शुरू भऽ गेल छलइन इनकर सबहक पुरना संबंधक खेला। ओना सावधानी दुनु तरफसँबरतल जा रहल छलइ।

भरतकऽ आब आशाक बर्ताव मे बदलाव लाइग रहल छलइन। समाज मे हैसिइत मे अतेक अंतर दुनु गोटे मे आइब गेल छलइन जे भरत अपनाकऽ अपमानित महसूस करऽ लागल छलाह।आशाकऽ बुझबऽ कऽ कोशिश कैला पर, आशा आक्रामक भऽ जाइ छलखिन। अमन जोडुकऽ गुलाम नञि कहाबऽ चाहइ छलाह।

भरतकऽ गेनाई बहुतही कम भेल जा रहल छलइन। जखइन छुट्टी मे बच्चा सब घर रहइ, ततबे दिन भरत आशा संग रहस। आशा-अमनकऽ फोन पर कयेक बेर गप होबऽ लगलइन।

एकदिन भरत आशा मे बहस अतेक बइढ़ गेलइन जे भरत आशा पर हाथ उठा देलखिन। आशा ततेक ने प्रतीकार मे आइब गेलीह जे तखने अमनकऽ फोन पर सब बात कहलखिन।

" आब इनकर कोनो उपाय लगाऊ। हमरा आब बर्दाश्तसँबाहर अइछ।"- आशा बजलीह।

"अच्छा। रुईक जाऊ। हमरा सोचऽ दियह।"अमन बजलाह।

" कहिया तक सोचइत रहब? हमर जान लऽ लेत ई पगलबा, तहिया तक सोचते रहब।आइ गर्दन दबने छलाय। हमरा तऽ भेल की मरिये गेलऊं। ई मूर्ख चपाट कतऽ सँबथा गेल हमर कपारे।"- कहि कऽ कानऽ लगलीह आशा।

अमन उनका बोल भरोस दऽ कऽ शांत केलखिन। दुनुकऽ बीच एकटा योजना बनलइ। अमनक योजना सुनतहि आशा जोश मे आइब गेलीह। अजुका खेल मे अमनकऽ बहुत आनंद आशा देलखिन।

हफ्ताह बितइत बितइत एकदिन दिल्ली मे पुलिसकऽ सुचना भेटलइ जे भरत नशाकऽ कारोबार मे शामिल छथि।

पुलिस उनका पर दबिश देलक आ नशाक पुड़िया उनकर गाड़ी मेसँबरामद भेलइ।

भरत अइ सब पर्दाकऽ पाछुकऽ खेलांसँअन्जान छलाह। पुलिस उनकासँनशाकऽ कारोबार मे शामिल आर लोकक नाम लइलेल दबाव बनौने छल।आशा सेहो अमनक पकड़ेला उपर दऊड़ बड़हा करऽ लगलीह।

नशाक समानकऽ केशक जांच करइत पुलिस अमन तक पहुंच गेल। शुरुआत मे अमन अपन अनभिझता जाहिर करइत रहलाह। पुलिसक सख्तीकऽ बाद अपन संलिप्तता तऽ गइछ लेलखिन लेकिन आशाकऽ नाम ज़बान पर नञि एलइन।

अमनक कहब छलइन-

" हम एकदिसाहे आशासँप्रेम करय छलऊं। हम भरतकऽ जेहलसँछोड़ा कऽ आशाकऽ दिल जीतबा चाहइ छलऊं। अइ अपराधक लेल हम दोषी छी।"

भरत जेहलसँछुइट कऽ आइब गेलाह आ अमन जेहल मे बंद भऽ गेलाह।

आशाकऽ घर आ प्रतिष्ठा टुटऽ सँबांइच गेलइन। अमनकऽ अइ अपराधकऽ लेल ओ बराबरकऽ सांझी छलीह।

पढ़ाइकऽ दिनसँलऽ कऽ आइ तक अमन , आशा लेल त्याग करइत रहलखिन। आइ समय एहन आइब गेलइ जे आशा अमनक त्याग ककरो कहियो नञि सकइत छथिन। अपना नजर मे आशा दोषी त छथिहे।

बतहिया गाछी

ओकरा गाम मे सब "बतहिया" कहइ छलइ। कियो कियो "बताही " सेहो। ककरो गलती नञि छइ। ओकर करनिये एहने रहे। नञि ठीकसँचइल फिर सकइ छलइ, नञि बजबे स्पष्ट करय, नञि नुआ साया पहिरऽ कऽ ढंग, दिमागसँतऽ पैदल रहबे करय, कखइन लेर पोटा बहऽ लगइ तकर सेहो नञि ठेकान, हंसई सेहो अजबे छलइ।

कियो कहइ जे "लोथबी" छइ, कियो अलबटाही त कियो आर किछो किछो।

ओ बऊक बहिर नञि छलइ। नञि कहियो दुखित पड़ई, नञि खाय पीयऽ मे भाभट देखबइ, लाज- धाख सेहो बुझई।अपन दुख तकलीफ नञि ककरो कहइ, नञि हल्ले करय, नञि रूसई, नञि फुलइ, कखइन सुतइ, कखइन ऊठई, लोक तइकते रही जाइ।

ओ छलइ सरदाकऽ बतहिया पुतोहु। सब ओकर मरबाक इंतजार करय छलइ। एहनो कतउ भेलइया।मरण जीयन अपन हाथ मे छइ। एतऽ ओकरा सास- ससुर फंझइतकऽ तऽ र रखने रहइ। एकरा मारबो पीटबो करय सब। तखनो एहन अक्खज रहइ जे किछु

नञि होइ। फेर अगिला दिन दछिनबरिया असोरा पर चऊकी पर विराजमान भऽ जाइ।रोज मांग मे सिन्दुर केनाई नञि बिसड़इ। आंगन बड़की टा रहइ। दस फरिककऽ उएह एक टा अंगना। कियो दुबगलीकऽ कातसँपाछु मे फुसक घर बन्हने छथि तऽ किनको हिस्सा मे ओहो मड़ई नञि।कियो पाछु बला सरकारी पोखइड़कऽ महार भइड़ कऽ एकचारी खसा रहइ छलाय। तखनो सबहक दिन कटिते चलइ।

पुरूख पातर लेल संझिया दलान छलाई। ओतऽ कियो टुटल चौकीकऽ पायाकऽ बदला ईंटा जोईड़ कऽ , तऽ कियो बांसक तख्ती बना, तऽ कियो बाबा आदम जमानाकऽ पलंग पर ओतऽ सुइत रहइ छलइ। कोन फरीककऽ कतेक हिस्सा ? नञि फरिछायल छलइ। ई दलान गोसवरिया बुझु। सबहक बरोबइड़ अधिकार। पाहुन परखकऽ एला पर ई खाली कहबाक लेल पलंगकऽ छोड़ि देल जाइ छलइ। सब नीभल जा रहल छलइ। सरदाकऽ सब गोतिये दरिद्र रहइ। सरदा ओहु मे सबसं सफाचट छलाह। सब चाइट पोईछ कऽ खा चुकल छलाह। आंगन मे एकटा मड़ई आ ई दलान छलइन जे अढ़ छलइन।

बरसात मे ई दलानकऽ छबेतइ के?

जे मालिक हेतइ, सैह ने छबेतइ?

अही फेरी मे एकरो खसले हाल छलइन।

दोसर टोल बला कहइ की ई गैरमजरूआ जमीन मे बनल छइ। सबहक हिस्सा भेलइ। कय बेर माइड़ पीटकऽ नौबत आइब जाइ।

जतऽ गरीबी रहत, ओतऽ संतोनोत्पति बड्ड होइत। खंऊजखेहर जेकां सरदाकऽ गोतिया सब लाठी फट्ठा लऽ कऽ आइब जाइ। अइ लंगा संकऽ लागय। गंऊआ सब घुइड़ जाय। ओना नजर अइ दलान पर सब गड़ौने रहइ छलाय।

सरदाकऽ बाप इनकर नाम श्रद्धानाथ रखने छलखिन। गरीबक पुरा नाम कहियोसँनञि लेल जाइ छइ। श्रद्धानाथकऽ बेटासँछोट सब सेहो इनका सरदयकहइन।कियो सरदा भाइ सेहो कहि दइ छलइन।

गरीब लोककऽ अपमानजनक संबोधन खराब लगितो नञि छइ।सुनञित सुनञित कान आ माथ मे ठेहा पइड़ गेल रहइ छइ। अइ पर आब कोनो असर नञि।

श्रद्धानाथकऽ बेटाक नाम इमहर उमहरकऽ थोड़े हेतइ। इनकर नाम ह्रदयनाथ छलइन। गंऊआ सब ह्रदयनाथकऽ हरदा कहइन। कियो हरदी सेहो।भइड़ गाम मे श्रद्धानाथ टा अपन बेटाकऽ ह्रदयनाथ कहइ छलाह। जखइन कऽ सरदा अपन बेटाकऽ शोर पाड़स, सब सुनऽ बालाकऽ अइ सैहबी पर हंसी छुअइट जाइ। देखू ने छगुन्ता इनकर - ह्रदयनाथ।

सरदाकऽ नञि जमीन जाल छलइन, नञि बापे किछु छोड़ि कऽ गेल छलखिन। अइ हालत मे कोना घरक चुल्हा जड़ई छलइन, सैह अचरजक बात। बाद मे पता चललइ जे सरदाक कनिया गाम मे दु चाइरटा नीक घर पकड़ने छलीह। उनकर सबहक काज - धंधा कऽ दइ छलखिन। बदला मे पसेरी, दु पसेरी अन्न पाइन आ बचल खुचल खेनाई भेट जाइ छलइन। ओहीसँअपन घर चलइ छलइन।

सरदाकऽ बेटा हरदा सेहो तीन बेरे मैट्रिक केलाक बाद इमहर ओमहर बऊआइत छल। एकदिन सरदाकऽ कनियाकऽ जतऽ काज करय छलीह, ओतऽ एकटा हरदाकऽ लऽ कऽ कथा एलइन।कथा की? एकटा अलब्धक लब्ध बाला बात। इनकर कान मे किछु कहल गेलइन। मऊगियाही कथा निश्चित भऽ गेल।नीक पाइ तखने सरदाकऽ कनियाकऽ हाथ मे राईख दियेलइन।अतेक पाइ ओ देखनेहे नञि रहथिन। आब पाइकऽ शक्ति बाजऽ लगलइ।

हं। हं। हम तैयार छी।

ककरो पुछबाकऽ काज नञि।

जखइन मोन हुअय। ह्रदयनाथकऽ लऽ जाऊ।

सरदाकऽ कनियाकऽ आइ बुझाय लगलइन जे बेटाकऽ जन्म देनाई सार्थक भेलइन। अही लेल लोग बेटा लेल मड़इत अइछ।

दऊरल घर घुरलीह। फेर तीनु गोटे गाछी दिश जाइ गेलीह। ओतऽ सब बात कहलखिन। सुनिते सबकऽ खुशीकऽ ठेकाने नञि।हरदाकऽ सर्टिफिकीट सब उनका सबकऽ पठा देलखिन।

दर दिअयद मे नञि ककरो कहल गेलइ।

ककरो नञि बतेबइ।

बुझत तऽ कथा मोइड़ देत।

चुपेचाप दिन तकावल गेलइ। बाहरे बाहरसँकिछु बरियाती संग हरदा गेलाह। बियाह दान भेलइ। बरियातीकऽ बिदाई आ हरदाकऽ दु महीना बाद कारपोरेशन मे पक्का नौकरी भऽ गेलइन।

हरदाकऽ पाइ भेटलइ आ ऊपरसँनौकरी भेट गेलइ। महीने महीने मनीआर्डर सरदाकऽ आबऽ लगलइन। मड़ईकऽ जगह पर पक्का ईंटाकऽ घर भऽ गेलइन। दशमी छुट्टी मे हरदा गाम आयल तऽ दलानकऽ छान्ही नब खरसँछड़वा देलकइ।

अस्सी बरखक पितीया बजलखिन-

हम आइ तक दलानक पुरा खर बदलाइत नञि देखने रही। ठीके कहल गेल छइ - जीबी तऽ की की नञि देखी।

दलान परहक ईंटा लागल चौकीकऽ जगह सखुआकऽ पाया लाइग गेलइ। बांस बाला तख्त पर बढ़ई नब चौकी बना देलकइ। आब दलान बंगली जेकां लागऽ लगलइ। हरदा आब गाम मे ह्रदय बाबु आ ह्रदय भैया कहाय लागल छल।

हरदाकऽ लोथ कनियासँबियाह भेल छलइ।धन सम्पइतकऽ कोनो

कमी नञि छलइ। ओकर कका मंत्री छलइ। ओकरा नैहरा मे सब लोथही कहइ। ओ कय बेर बड़ड जोर दुखित पड़ई। डाक्टर वैद सेहो जवाब दऽ दइ। मूदा फेर लोथही जीब जाइ।

इमहर लोथहीकऽ बयस बढ़इत गेलइ। देह मे अंग सब मे उभार आबऽ लागल छलइ।केदन जोतखी ओकर बापकऽ कहि देलकइ जे अकरा सिंदुर नञि पड़तइ तऽ तोरा दोख हेतह। ईएह दोख छोड़बइ लेल हरदाकऽ नौकरीकऽ लोभ दऽ कऽ सिंदुरदान करावल गेलइ।

सबकऽ उमेद छलइ जे दुखित लोथही दु- तीन बरख मे मइड़ जेतइ। हालत देखऽ मे तहिना लागइ। भरण पोषण लेल एकट्ठे पाइ ओकर नैहरावाला सरदाकऽ दऽ देने रहइन।

कहल गेल छइ- अपन सोचल नञि होइ छइ।

लोथही तऽ सासुर अयलाकऽ बाद डेबा डेबी चलहो लगलइ। अपनेसँकपड़ा लत्ता कहूना बदइल लइ। पुरा देह झांपऽ ओकरा नञि आबइ। लोकक तांक झांक ओकरा नीक लगइ। ओ देह देखबऽ लगइ।

हरदाकऽ माय शुरू मे तऽ झांप तोप कऽ दइ। बाद मे पहिने सरदा फेर ओकर माय लोथही पर हाथ उठाबऽ लगलइ।अकरा सासुर मे बतहिया सब कहइ।

बतहियाकऽ कतबो सासुर मे दुख दइ, ओ ढीठ भऽ गेल छल,लोकक सामने नञि कानञि खीझई।

गामक छौंड़ा बतहियाकऽ देखऽ आबइ। ऊं आं मे ज़बाब दइ। आंईख खुब मटकबइ।टोल परोसकऽ पुरूख पातरकऽ अइ अंगना मे अबरजात बढऽ लगलइ। दलान मे सब बेबसथा रहलाक बादो पुरुख सबहक नजर बतहिये दिश रहइत छलइन। बतहिया उनका सबके निराश नञि करयन।जाइन वा अनजाइन, कहियो किछु देखा दइन। ओकरो लोक नीक लगइ।

हरदा चाइर बरख तऽ बतहियाकऽ मरबाक इंतजार केलक। ओकर बाद ओ बाहरे बाहर दोसर बियाह कऽ लेलकइ।गाम नबकी कनियाकऽ नञि आनञि,मूदा अपने आबय।दोसर बियाहसँनोकरी छुटबाक डर होइ।

इमहर हरदाकऽ कमाइ बढ़ल जा रहल छलइ,ऊमहर बतहिया पर

अत्याचार।

ओही आंगन मे रहनिहार रमनकऽ बतहिया भौजीसँबड़ड गप होइन। ओना रमन बतहियासँबयस मे छोट छलाह, लेकिन दुनु गोटेकऽ पटान बड़ड।इशारे इशारासँसब गप भऽ जाइन।

गंऊआ लेल सरदा निहाइत सज्जन लोक छलाह। घर मे अबिते ओ बतहिया लेल राक्षस भऽ जाइ छलाह। बतहिया अपन देहक चोट सब रमनकऽ देखबइन।

बतहियाकऽ सासुर अयलाक बाद ओकर नैहरसँनञि कियो बजेलकइ आ नञि खोजे पुछारीक लेल कियो एलइ। ओकर नैहरा बला लेल पाइ दऽ देलाक बाद कर्त्तव्य खत्म।

हरदाकऽ शहर मे रहिते धीया पुता भेलइन।सरदा आ उनकर कनिया मइड़ चुकल छलखिन। हरदा गामसँसंबंध तोइड़ लेने छलाह। बतहियाकऽ सब महीना नैहराकऽ जमा कयल पैसाक सुदीसँपोस्ट आफिससँपाइ भेंट जाइ छलइ। आंगन मे कनिया काकी ओकरा दु सांझ भोजन दऽ दइ छलखिन। बतहिया पाइकऽ महत्त्व बुझऽ लागल छलइ। थोड़ पाइ कंतोल मे जमा करय। कहियो दुखित पड़बे नञि केलइ जे ककरो सेवाक काज पड़तइ।

रमन महानगर मे प्राईवेट नौकरी करऽ लागल छलाह। पढहो काल पाइकऽ काज पड़इन तऽ बतहिया भौजी दऽ दइन। आंईखक सुख लेल शुरू भेल दोस्ती धीरे धीरे स्नेह मे बदइल गेल छलइ।

एकदिन रमनकऽ गामसँखबइड़ एलइन। बतहिया मइड़ गेली। लाश आंगन मे पड़ल छइन। हरदा गाम आबऽ सँमना कऽ देलकइ। बतहियाकऽ नैहरबला सेहो नञि कान बात लेलकइ। संपइत किछु छइन नञि। घरारी हरदा कबाला कऽ चुकल छइ। अइ मे बिन धनक लोभ मे पोसपुतो बनऽ बाला कियो नञि छइ। गामक लोक एकाएकी एलइ आ तुलसी पीढ़ा लग राखल लाशकऽ देख कऽ घुरी गेल।

रमन कहलखिन-

हम बतहिया भौजीकऽ मुखाग्नि देबइन। हम आइब रहल छी।

रमन तखने गाम बिदा भेलाह। जे पाइ कौड़ी छेलइन संग लऽ गेलाह।

दाह- संस्कारकऽ बाद जखइन बतहियाकऽ कंतोल खोलल गेलइ तऽ ओही जमानाकऽ बारह हजार रूपया आ पचास भइड़कऽ करीब सोना चांदीकऽ गहना राखल छलइ। एकटा कागजकऽ परची पर लिखल छलइ-

हमर दाह संस्कार करऽ बाला, अइ सम्पइतक बारिस हेताह।

दु हजार खर्चा भेलइ। बाकी पाइसँजमीन कीन कऽ " गाछी" लगावल गेलइ। ईएह गाछी " बतहिया गाछी" कहबइ छइ।सद्योंसँगामक लोक थोड़ बहुत आम अकर खाइत छल।

ओही गाछीकऽ रमनक बेटा सब गाछ बेच देलकइ आ जमीनकऽ प्लाट बना कऽ बेच रहल अइछ। बतहियाकऽ निशानी आब सब खत्म भऽ गेलइ।

डालडा प्रसाद (लघुकथा)

फेकु मिसर ओना कथा वाचक छथि। रामायणकऽ चौपाइकऽ नित दिन पाठ करय छथि। बहुते पांति कंठस्थे छइन। तखनो कहल जाइ छइ, जे कंठस्थ रहलो पर, पोथी सामने रहबाक चाही, तैं रामायण सामने रखइत छथि। इनकर रामायण, तुलसी रामायण नञि छलइन, लेकिन जे भी छइन.......छइन बड्ड कर्णप्रिय। जखइन ओ सांझ मे पाठ करइत रहइ छथि , तऽ राही- बटोही सेहो दु पल लेल रुईक जाइया आ श्रवणक आनंद लइया।जतबे काल फेकु मिसर रामायण बंचई छथि, ओतबे काल प्रसन्न मुद्रा मे देखबइन। बाकी तऽ , गऊंआ लेल ओ झनकटाह छथि। भइड़ दिन उनकर घरसँचिकरा- चिकरीकऽ आवाज अबइत रहत। पुरा घर मे कियो धीरे बजिते नञि छइ।

कथा बंचलासँकी पेट चलइ छइ। आब कहां ओहन धर्मात्मा रही गेलाह अइछ, जे कथा सुइन कऽ किछु सीद्धा(अन्न) रोज हिनका देथिन। महीना दु महिना पर फेकु मिसर नञि जाइन कोन देश जाइ छइथ, ओतऽ सँघुरलाह पर अन्न पाइनक बोरा संग रहइ छइन। अकर बाद थोड़े दिन घर मे शांतिये नञि, चहल-पहल सेहो रहइ छइन। दस- पन्द्रह दिनकऽ बाद फेर उएह रामा- उएह खटोला। गऊंआ सब अभ्यस्त भऽ गेल छलइन इनकर घरक हाल के। घरक शांत माहौलसँपता लाइग जईताय जे फेकु मिसर अखइन नञि छथि।

भगवान गरीबी तऽ दइ छथिन, मूदा ओकर संग कोनो गुण सेहो ओहि लोक मे गइढ़ दइ छथिन।फेकु मिसरकऽ घर मे सबहक गला, सुरीला छइ। हर मंगल कऽ , महावीरजीकऽ कीर्तन उनकर घरक लोक करय छल। ढोल मृदंग, हरमोनियम, झाल सब उनकर घरे मे छलइन। ऊपरसँ"थपरी"कऽ धुन, गीतकऽ आर महो महो कऽ दइ छलइ। परसादी सेहो रहइ छलइ- नञि भेल तऽ थुर्री लतामे! अगवे फुलायल खुद्दीकऽ चौरठ! अहिना किछ किछ।

गामक अपन अपन दर्शन होइ छइ। बड़का कतऽ , नञि कियो बइसऽ कहत, तखनो भेड़िया धसान जेकां सब पहुंचत। गरीबहा कतऽ आबेश भेटलो पर हरसट्टे लोक गेनाई पूजा- तुजा मे अंठियबइ छइ। लेकिन अकर संग, एकटा आर विशेषता छइ, बेटीक बियाह मे सब ओकरा तात्कालिक सम्हाइड़ दइ छइ। बाद मे भले ही बचल-खुचल गाछी- नासी, गड़हा- गुड़ही कबाला कराऽ लइ।

फेकु मिसरकऽ गाम पचकोशी मे छलइन। सभागाछीकऽ लग बाला गाम सबकऽ लोग सब , कथा भजियाबऽ मे बड़ड माहिर होइया। ओ सब सभाकऽ शुरूये मे विवाह योग्य नीक लड़का " टिप" लेत। ओकरा पर नजर गरौने रहत। ओकर जहां कतउ बिबाह निश्चित होवअ लगतइ, ओइ मे भंगठी माइड़ कऽ , कथा गड़बड़ा देत। एना ओकर सबहक फूलप्रूफ ढंग छइ, जे ओकरा

नामकऽ पंसगी भइड़कऽ चर्चा कतउ नञि हेतइ। जखइन सभाकऽ अंतिम एक दु दिन बचतइ, बर बाबूकऽ आब बिन बीयाहले गाम घुरऽ कऽ हालात भऽ जेतइन, तखइन ई सब कथा प्रस्तुत करत। फेर चारु तरफसँहाफ डिबकऽ कऽ , बरकऽ उठाइत आ चलइत बनत।

फेकु मिसरकऽ चाइर टा बेटी छलइन। तीन टाकऽ बियाह अहिना भऽ गेल छलइन। सब नैहरसँबेशी सुखी घर मे गेल छलइन। सिद्धांतकऽ समय सब गइछ लइ छलखिन। देबऽ कऽ रहइन, तहैन ने सोचबाक काज। ओ तऽ बेटी सब सुन्नञिर आ सुघइड़ छलइन ....सब सम्हाइड़ लइन।आब अंतिम कन्यादान छलइन। अहिना एकटा पश्चिम दिशक कलकतिया बर टेबइ गेलाह। बेर पर हथपैंच किछु भेंट गेल छलइन।

सभासँबर- बरियाती नेने गाम पहुंच गेलाह।गामक संझिया पोखइड़ मे एक आनाकऽ दसमा, फेकु मिसरकऽ सेहो हिस्सा पड़इ छलइन। कहियो मछैटा मे इनका एकटा माछ हिस्सा नञि भेलइन, लेकिन कहबा मे तऽ छलइन- " ई हमरे पोखइड़ अइछ।" बरियाती सब पोखइड़ पर दिशा मैदान कऽ कऽ जमा भेल। एकटा बरियाती माथ मे लगबइ लेल " तेल" मंगलकइ। समाद फेकु मिसरकऽ घर पठावल गेलइन। सभाकऽ समय छलइ.........कखइन कोन पाहुन टपकता........ई सोइच कऽ रोशनाई बला खाली दवात मे एक नम्मर करूआ तेल आ नारियर तेल बाला खलिका डिब्बा मे डालडा

गिलेशनसँआइन कऽ रखने छलाह। राजा, देवकऽ आइब जेतइ, से ककरो बुझल थोड़बे रहइ छइ। ऊपरसँफेकु मिसरकऽ सोभाव छइन, किनको उठा कऽ घर लऽ एताह। एक बेर तऽ अहिना सिद्धुल्ली बला चौधरीजीकऽ सभासँनेने चइल अबइत रहलाह। ओइ बेर मिसराइनकऽ समान जुटबऽ मे कतेक थक्का फजीहत भेल रहइन। तहियासँओ पहिनेहेसँकरु तेल आ डालडाकऽ बेबसथा केने रहइ छइथ। अपने किछु खाई? पाहुन परखकऽ सुख्खा सोहारी दइत मिसराइनकऽ अपरतित लगइ छलइन।

जे बरियाती लगसँमाथ मे लगबऽ लेल तेल लइला आयल छलाह,ओ टाटाकऽ नारियल तेलक डिब्बा मे "जमल डालडा" राखल देखलाह। कियो पचमा पास कहू वा छठवां फेल, ओ नारियल तेलक ई डालडासँभरल डिब्बा पोखइड़ पर पठा देलकइ।

बरियातीकऽ तऽ अलगे टशन होइ छइ। ओइ मे एक तऽ पश्चिम आ ऊपरसँकलकतिया सब। एकटा बरियाती तेल मंगने रहइ, लेकिन मूफ्तउआ तेल बुइझ कऽ , ओ सब बर- बरियाती, माथ के,कऽ पुछइया, भइड़ देह रगइड़ रगइड़ कऽ लगेलक।पुरा डिब्बा खाली कऽ देलकइ। सांझ मे चुन कैल मलमलक कुर्ता पहिरकऽ सब फेकु मिसरकऽ दलान पर आयल।

आब डालडा, पेट्रोमेक्सकऽ गर्मी पर अपन करामात देखेनाई शुरू

केलक। एक कान- दु कान होइत होइत , सब एक दोसराकऽ सुंघऽ लागल। ऊपरसँकोनो सरियाती टिहकारी दऽ देलकइ। परिछनसँपहिनेहे बर- बरियाती सब खिसिया गेलइ। सब पराय लागल। फेकु मिसरकऽ पहिने तऽ किछु बुझेलइन नञि। बाद मे डालडा कऽ गरियबइत ओतऽ बरियाती सब लग गेलाह। फेर खने दौड़इत घर पर आबइथ।कऽ नारियर तेलक डिब्बा मे डालडा रखलक?

पुरा गामक लोक जमा भऽ गेल।

फेकु मिसरकऽ कनिया डलडा डकुबा कहि कहि कऽ गाइड़ पढ़ऽ लगलीह। घर मे कन्ना रोहट मइच गेल छलइ। ऊचती- विनती हुअऽ लागल। एहन बढ़िया बर, डालडा दुआरे हाथसँचइल जाय, अइसँबेशी कुसंयोग की भऽ सकइत छइ।

फेकु मिसरकऽ गउआं सब थोर- थाम लगेलक। बर बालाकऽ बाद मे बुझा गेलइन जे ई मजाक नञि, अनजान मे भेल गलती छी। सच पुछु तऽ गलती, डालडा देह मे लगबऽ बालाकऽ छलइन। ओ बरियातीकऽ मुफ्तउआकऽ लोभ मे गंधो नञि बुझ्झ पेलाह। ।बाद मे कयेक टा ललका लाइफ ब्वाय साबुन पोखइड़ पर गेल। बर - बरियाती फेरसँरगइड़ रगइड़ कऽ नहाइ गेलाह। जुर्माना मे फेकु मिसरकऽ अगिला दिन एकटा छागरकऽ काटऽ परलइन। तखइन जा कऽ बर मनलाह।

डालडा डकुबाकऽ चक्कर मे आइ एकटा भेल कुटमैती गड़बड़ा रहल छल। अंत भला तऽ सब भला। बाद मे सब सामान्य भऽ गेलइ। रुसा-फुल्ली खत्म भेल।आब ओइ जमायक नाम "डालडा प्रसाद" सबदिना लेल सासुर मे पइड़ गेल छइन।

की सोचल- की लीखल - दीर्घकथा (पहिल आ दोसर भाग), (अंतिम भाग)

की सोचल- की लीखल (पहिल भाग)

आइ शिक्षा मंदिर स्कुलक नबका भवनक उद्घाटन भऽ गेल। जिलाकऽ सब नामी गिरामी महानुभाव सब पहुंचल छलाह। सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो स्तरीय छल। प्राचार्या रुचिका देवी अपने अतिथि सबकऽ स्वागत लेल ठार छलीह। एक एककऽ कऽ सबकऽ उत्कृष्ट जलपान कराऽ विदा केलीह। जेना लोक बेटीकऽ विवाह मे एक्के पैरे ठार रहइत अइछ, तहिना रुचिका देवी आइ काजक समापन केलीह। सब लोक समारोहक व्यवस्थासँबड्ड खुश छल। लोक सबकऽ विदा केलाकऽ बाद सोझे पलंग पर आइब कऽ अर्राऽ कऽ पइड़ रहलीह। कतबो सब कहलकइन जे किछुओ मूंह जुठिया लीयह....... नञि मोन केलकइन। रौबदार एहन छलीह जे दोबाराकऽ आग्रह करऽ कऽ दुस्साहस करितइन।

मोलायम बिछान पर परलाकऽ बादो देह मे गड़अ लगलइन। पिछला संघर्ष सब आंईखक सोझा मे नाचऽ लगलइन। कतबो सुतऽ कऽ कोशिश करय छलीह.......नींद कोसों दूर बुझा रहल छलइन। परल परल जखइन थाईक गेलीह त ऊईठ कऽ टहलऽ लगलीह। तखइन नजर गेलइन जे ओ तऽ साड़ियो नञि बदलली। सजल धजल जहिना छलीह, तहिना छतिये। ड्रेसिंग टेबलकऽ सामने जा कऽ ठार भऽ कऽ अपनाकऽ

निहारऽ लगलीह। आइ बुझेलइन जे ओ तऽ बड़ड सुंदर अखनो छइथ। ऊपरसँनीचा तक अपन अंग प्रत्यंग सबकऽ शीशा मे गौरसँदेखइ छलीह.......अपन देह उनका आइ अपने आकर्षित कऽ रहल छलइन। हम अतेक सुंदर अखनो छी।अपने पर दुलार आइब रहल छलइन। जखइन दुलार आइबे गेल........त दुलार कइये ली। अपनेकऽ दुलार करऽ लगलीह। कत्ती काल तक अही मे लागल रहलीह। आब गहना गुड़िया सब जे पहिरने रहइत......ओ सब खोलऽ लगलीह........ धीरे धीरे आब ओइ अवस्था मे आइब गेलीह......जखइन ओ आ उनकर देहक बीच मे किछु नञि। अपने देखइत.....अपने मुस्कियाइत....... अपने दोसरासँतुलना मे श्रेष्ठ बुझइत......अपने भिन्न भिन्न अदा देखाबइत........ अपने भाव भंगिमा बनबइत...... अपने अगराइत....... अपने पिछराइत.......अपने ईठलाइत.....अपन आनन्दक झुमर मे झुला झुइल रहल छलीह। अपूर्व आनन्दसँलबल डुबल , अलटइत पलटइत ओही लोक मे विचरण कऽ रहल छलीह। अखइन ओ मनुक्ख आ ओकर देह, ओकर गंध, ओकर रूप, ओकर रंग, ओकर कोण, ओकर निखार, ओकर नाक, ओकर नक्श, ओकर लंबाई, ओकर गोलाई, ओकर ऊंचाई, ओकर सिहरन, ओकर धड़कन, ओकर ऐंठन, ओकर मटकन, ओकर राग, ओकर विराग, ओकर संगीत आ ओकर धुन मे मदमस्त हाथी जेकां जंगल मे असगर बढ़ल जा रहल छलीह। ओ अइ स्वप्न लोकसँबाहर नञि आबऽ चाहइ छलीह। किछु आर बात दिमाग मे आबऽ चाहइ छलइन, तऽ बेरहमीसँओकरा झटईक दइ छलीह। आनंदकऽ एक एक पल ओ जीबऽ चाहइ छलीह। पहिले बेर उनका अपना देहसँअतेक लगाव भेलइन। आब त ओ इनकर संगी भऽ गेलइन। बड़ी काल तक अहिना अही अवस्था मे ओ पड़ल रहलीह।देह

कशमशाइत रहलइन। भावक प्रवाह अबइत जाइत रहलइन। हारि कऽ उठअ चाहलीह लेकिन नञि उईठ पेलीह। ओना सब थकान दुरभऽ गेल छलइन। आब तरोताजा महसूस कऽ रहल छलीह।आइ ओ जीवन मे एकसंगे दु टा सुख भोगलीह। तकरे चमकी छलइन। एकटा सुखक लेल त ओ कहियासँलागल छलीह...... परिश्रम केलीह.......भाग्य आ समय साथ देलकइन .....उमेदो छलइन.......आ पुरो भेलइन। मूदा दोसर त अनायासे। ई आ इनकर देह त सदिखन संगे रहलइन, तखइन ई अनुभूतिसँकियैक वंचित छलीह। ई त भऽ गेल- एकक संग एक फ्री वाली बात। जे भी होइ ई " बात " - आब ओ अइ आनंदकऽ नञि छोड़तीह।

सब बात जनञि लेल रूचिका देवीकऽ अखुनका तकक जीवनकऽ बारे मे जनला बिना काज आगू कोना बढ़त!

रुचिका मे देवी नाम त बाद मे जुड़लइन। पहिने ओ सिर्फ आ सिर्फ रुची छलीह।उनका अपन पितासँबेशी भेंट नञि लेकिन पिता अपन नाम बहुत बाद मे देलखिन। ओ तखुनका समाज लेल अपन पिताकऽ अवैध संतान छलीह......कियैक उनकर माय बापकऽ बीच विधिवत विवाह नञि भेल छलइन। सामाजिक आ कानुनी व्यवस्था एहन छलइ जे उनकर पिता चाहियो कऽ इनका सबके अप्पन घर नञि लऽ जाअ सकल छलाह। ओ पहिने सँबियाहल छलाह आ धीया पुता छलइन।ई नञि छलइन जे प्रयास नञि केलाह मूदा सफल नञि भेलाह।रूचीकऽ माय दोसर जाइतक छलीह लेकिन

छलीह बड्ड स्वाभिमानी। उनकर जाइत मे तहिया मऊगी आसानीसँदोसर तेसर बियाह कऽ लइ छलाय।उनको नैहरवाला सब कहलकइन जे विधिवत विवाह कतउ कऽ लीयह मूदा ओ टससँमस नञि भेलीह। बयस बढ़ल रहबाक बादो पढ़लीह लिखलीह आ सरकारी नौकरी पकड़लीह। अइ नौकरी भेटबा मे उनका सरकारक आरक्षण व्यवस्थासँमदद भेटलइन।ओ स्वावलम्बी भऽ गेल छलीह लेकिन उनकर इच्छा शिक्षिका होबाक छलइन......से नञि पुरा भऽ सकलइन।

रुचीकऽ पिता एकमुश्त पैसा रूचीकऽ मायकऽ नामसँजमाकऽ देने छलखिन। रुचीकऽ माय ओइ मेसँएक ढेला अपना पर नञि खर्च केलीह।

रूचीकऽ बच्चेसँबाहरे बाहर पढ़ावल गेलइन। ओतइ उनकर माता पिता अपन सुविधानुसार भेंट करबा लेल अबइत जाइत रहलखिन।जखइन रुची दसवीं मे छलीह त उनकर पिताकऽ मृत्यु भऽ गेलइन।ओ अपन मायकऽ संघर्ष करइत दुनियाकऽ देख चुकल छलीह। ओ आजन्म अविवाहित रहबाक निर्णय कऽ चुकल छलीह।

महानगरीय शिक्षा लेबाक बाद ओ वापस अपन मायकऽ शहर मे रहबाक लेल आइब गेल छलीह। सुन्दरता त रुचीकऽ बिन ब्याहल

दहेज मे मायसँभेटले छलइन। चारु तरफसँलोक सब जीभ लपलपेने मंड़राइत रहइत छलइन।बिन पुरूखक घर आ ओइ मे बैंक बैलेंस- कतेक लोक तऽ शालीनता लांईघ कऽ धृष्टता तक केलकइन।" यहां न लगियें राऊर माया"- सबसं निबटइत रूची मजबुत होइत रहलीह। कालक्रमेण उनकर माय सेहो परलोक सिधाइड़ गेलीह।

रुची सामाजिक कार्यकर्ताकऽ रूप मे शहर मे स्थापित भऽ गेल छलीह। मायकऽ जीबिते स्कुल खोइल लेने छलीह। अपन पुरा श्रम आ बुद्धिमता ओइ स्कुलक विकासक लेल समर्पित कऽ देने छलीह। अखनो नेतासँलऽ कऽ अधिकारी सब इनकासँअपेक्षा बढ़बइ लेल लालायित रहइ छलाय। सबके ईएह होइ जे "माये एहन त बेटी केहन"।कतउ नम्बर लाइग जाय।

रुचीकऽ शिक्षा मंदिर मे एडमिशन भेनाइ प्रतिष्ठाकऽ बातभऽ गेल छलइ। रूचीकऽ अपना समय मे बिना बापक नामकऽ कारण बड़ड दिक्कत भेल छलइन.... ग्लानिकऽ दौरसँउनका गुजरऽ कऽ पड़ल छलइन। बाद मे उनकर पिता अपन नाम देने रहथिन। अइ स्कुल मे अकर अलगसँकोटा छलइ। रूची आब प्रगतिशील महिला कहबबइ छइथ।अपन सब जमांपुंजीसँशिक्षा मंदिरकऽ नबका भवन आधुनिक ढंगसँबनबेलीह अइछ आ अपन मायकऽ इच्छा पुरा कयलीह.......तकरे खुशी छलइन.......अही लेल प्रयत्नशील छलीह।

आब उम्रक ओइ पड़ाव पर मोन मे किअए भटकाव आइब गेल छइन......सैह सता रहल छइन। कहीं जिला जज श्री मिश्रा त अकर पाछु मे नञि छइथ। ओ स्कुलक सब फ़क्शन मे अबइ छइथ......विधुर छइथ.....पिताकऽ समजाति छइथ। जिला पदाधिकारी हंसी कऽ कहितो छलाह जे श्री मिश्रा पर कृपा बनबियौन।

रुची आब रूचीका देवी भऽ गेल छइथ। मोन मे अबइत भाव सबके दुरदुरा रहल छइथ। आब एना विचार कियैक। फेर मोन पड़इन जे पार्टी मे श्री मिश्राकऽ लोलुप नजर। ओ बजइत त कम्मे छलाह लेकिन संग रहबाक मौकाकऽ तलाश मे रहइ छलाह। कतउ कतउसँउड़इत गप्प रूचिका देवी सेहो सुनने छलीह जे श्री मिश्रा आर रूचिकाकऽ जोड़ी नीक रहतइ।

आइ स्कुलक फंक्शनकऽ परात छुट्टी छलइ......तैं लेटसँउठबाक विचार मे छलीह। तखने घरक दाई उठबऽ एलइन जे जज साहब श्री मिश्रा आयल छइथ। नाम सुनिते रूची देवीकऽ देह सिहइड़ गेलइन।

कहलखिन-

बइसबियउन। हम अबइ छी।

- ओ अपने बैठकी मे बइस चुकल छइथ।

- ड्राईवर सेहो छइन!

- नञि अपने ड्राईवकऽ कऽ अयलाह अइछ।

घबराइत रूची देवी फेरसँड्रेसिंग टेबलकऽ सामने ठार भऽ बैठक मे जायसँपहिने अपनाकऽ निहारि रहल छइथ।

आब की हैथ! जे हमर मोन मे घुमड़इ छलाय, सैह श्री मिश्राकऽ सेहो।

पता नञि। की सोचल आ की लीखल।

ईएह सोचइत अंदेशासँभरल बैठकखाना दिस जा रहल छइथ।

कीसोचल- कीलीखल (दोसर भाग)

परिणामकऽ अंदेशा स पीड़ित रूचिका देवी बैठकी मे गेलीह। ओ त एना डरायल घबरायल छलीह जेना कोनो नेना स्कुल मे गलतीकऽ दइ छइ.......आ ओकरा मरखाहा मास्टरकऽ सामने पठावल जाइ छइ। एक राइत पहिने तक त उनकर सामने लोक सबकऽ घिग्घी बन्हल रहइ छलइ......राइत बितते ई कीभऽ गेलइ।

बैठकी मे इनका जाइते श्री मिश्रा चटसँठार भेलाह। परनाम- पाती भेलइन। कलुका समारोहकऽ बारे मे चर्चा चललइ। रुचिका देवीकऽ स्तुती गाण श्री मिश्राकऽ रहल छलाह। बीच मे दु बेर चाह एलइ। शहर बाजारकऽ गप शप भेलइ...... दुनिया दारी सबपर बहस सेहो भेलइ। धीरे धीरे रूचिका देवी सामान्य भऽ गेल छलीह। पुरा प्रभावशाली ढंगसँअपन पक्ष बहस मे रखइ छलीह........तखइन श्री मिश्रा श्रोता भऽ जाइ छलाह , लेकिन उठबाक नाम नञि लइ छलाह। बीच-बीच मे चुप्पी भऽ जाइ छलइ।रूचिका देवीकऽ बुझा रहल छलइन जे श्री मिश्रा जेना मौकाकऽ तलाश मे छलाह। रुचिका देवीकऽ तरफसँकोनो तरहक लिफ्ट नञि भेंट रहल छलइन। श्री मिश्रा किछु इमहर उमहरसँइशारा मे गप्प उठेबो केलाह। अंत मे हारिकऽ जायकऽ अनुमति मंगलाह।

जाय काल मे भोजन पर नञि बजबऽ कऽ उलहना सेहो केलाह।अइ पर रुचिका देवी बजलीह-

-ई कोनो बात भेलइ! आइये रूकु। भोजन भऽ जेतइ।

श्री मिश्रा बजलाह- नञि नञि। एना नोत थोड़बे लेल जाइ छइ।

- आर केना नोत होइ छइ! मिथिलाम छोड़ु। आब आहांकऽ खाईयेकऽ जाय पड़त। हम सबकऽ एना आग्रहो नञि करय छीयई।

-हं हं। हमरा बुझल अइछ। हम आहांकऽ नीकसँचिन्हइ छी।आब आहां कहइ छी त हम रूईक जाइ छी। जे खुएब से खाईये कऽ जायब।

- जे ?कऽ सोचबो नञि करु! खेनाई टा खुयाब।

-हमहुं सै कहइ छलौं जे भोजन मे जे जे विन्यास रहतइ।

- हम नीकसँबुझई छी ....ई जे जे ?? की छी!

- अच्छा कहू त ? ई जे जे की छइ?

- रहअ दियउ। हम पुरूखकऽ गत्तर गत्तर चिन्हइ छियई।हमरा सब बुझल अइछ जे आहांक अभिप्राय की अइछ।

- जखइन बुझिते छियई तऽ आहांक की विचार अइछ।

- कोनो विचार नञि अइछ! " heard and rejected."- आइ जज सबहक जेना रुचिका देवी बजलीह।

-आहां त जज भऽ गेलऊं!

- फैसला हमरा लेबऽ कऽ छलाय तऽ जजकऽ होइत!

- फरियादीकऽ पक्ष त सेहो सुनऽ कऽ पड़त!एकदिसाह फैसला नञि दियउ।

- ठीक छइ। फरियादीकऽ पक्ष रखबाक मौका देल जा रहल छइ। कहू जे कहबाक अइछ।

आब श्री मिश्रा अपन कनियाक मरलाक बाद जे एकाकीपन जीवन मे भेल छइन - ओइ सब बारे मे खुइल कऽ कहलखिन। उनकर बेटा आ पुतोहु दोसर शहर मे रही रहल छइन।बरख दु बरख पर चाइर दिन लेल अबइ छइन।दूनु गोटे काज करइत छइन। श्री मिश्रा जखइन बेटा कतऽ जाइत छइथ त बेटा पुतोहुकऽ उनका लेल समय नञि छइन। तैं ओतऽ गेनाई छोड़ि देलाह।

कनियाकऽ गुजरलाकऽ बाद एहन नञि छइन जे आर स्त्रीकऽ आमंत्रण नञि एलइन। सब गोटेकऽ नजर इनकर संपइत आ ओहदा पर छइन। कोर्ट मे फैसला करइत करइत मनुक्खक मनःस्थितिकऽ भांपअकऽ क्षमता आ शक्ति दुनु उनका भऽ गेल छइन।दोसर मानसिक स्तरकऽ सेहो सवाल छइ- ओ हमरा एक्के जगह भेंट रहल अइछ। कहि कऽ मौन भऽ गेलाह श्री मिश्रा। आंईख डबडबा गेलइन।

रुचिका देवी चटसँउईठ कऽ श्री मिश्राकऽ एक गिलास पाइन देलखिन आ उनकर पीठ पर हाथ धअ धेलकिन।

श्री मिश्राकऽ गला रूंधल छलइन। रूचिका देवीकऽ स्पर्षसँश्री मिश्राकऽ नोर झहरऽ लगलइन।

रूचिका देवी स्तब्ध छलीह।

श्री मिश्रा, रुचिका देवीकऽ हाथ पकड़ड़ लेलकिन।रूचिका देवीकऽ ई स्पर्ष अचंभित कऽ रहल छलइन।

पहिल बेर अइ तरहक स्थिति उनकर सोंझा आयल छलइन। ओ एकटा प्यादा जकां चलल जा रहल छलीह। नीक बेजाय, उचित अनुचित सबसं विलग ओ बढ़ल जा रहल छलीह। श्री मिश्रा भावुक भऽ उनका अपन छाती मे सटा लेने छलखिन। अतबो होश मे नञि रहइन जे घर मे काजबाली दाई सेहो अइछ। छोट बच्चा जेकां श्री मिश्राकऽ जिद्दक आगु रूचिका देवी बेबश छलीह।

थोड़ेक काल बाद दुनु गोटे अलग भेलाह। पुरा घर मे मौनक पहरा परल छल। दुनु गोटे चुप्प। आब रुचिका देवी उईठ कऽ दोसर घर मे चइल गेलीह। दाईसँसमाद पठा देलकिन जे श्री मिश्राकऽ सेहो वापस घुइड़ जाइ लेल।

रूचिका देवीकऽ आब अपनाआप पर पश्चाताप भऽ रहल छलइन जे ई की कऽ लेलीह। अतेक दिनक तपस्या आइ भंग भऽ गेलइन। अइ शहरक लोक बुझतइ त की कहतइ? दाईकऽ कोन भरोसा- ई त आर नोन मरचाई लगा कऽ सऊंसे ढ़िंढोरा पीटतइ।

तखने मोटरगाड़ी स्टार्ट होबाक आवाज सुनेलइन। बुइझ गेलीह जे श्री मिश्रा जा चुकल छइथ।

कतऽ दाईकऽ कहने रहथिन जे श्री मिश्राकऽ खेनाई बनबऽ लेल, आ फेर ओकरेसँसमाद पठेलकिन जे चइल जाइ लेल। की मोन मे सोचने हैत ई दाई।

किछु नञि फुरा रहल छलइन। ओ जनञि छलीह जे अन्चिन्हार कुमार पुरूख संग रहअ मे बेशी सुरक्षा छइ, बियाहल पुरूख परिचित सं। तखनो गलती कऽ बइसली।

फेर सोचली जे उनकर कोन गलती- ओ त परिस्थितिकऽ गुलाम छलीह। तेना ने सब किछु भेलइ जे ओ कोना अकरा रोईक सकइ छलीह। मर्यादाकऽ रेखा ओ पैघ खींचने छलीह, तैं ने ओ परेशान छैथ। देखू त अजुका लेखे किछु नञि छइ। ई बात दिमाग मे अबिते कनीक मोन हल्लुक भेलइन आ स्नानघर मे नहाइ लेल घुइस गेलीह।

<u>की सोचल- की लीखल (अंतिम भाग)</u>

झरना खोइल देलीह आ ओकर नीच्चा बइस कऽ नहाइत रहलीह। ठंडा पाइन देह पर खइस रहल छलइन....... तैयो तपिश नञि खत्म भऽ रहल छलइन। बड़ी काल तक नहेलाकऽ बाद बाहर निकललीह। मोन तखनो भरियाले रहलइन। माथ भारी - भारी बुझाइन। दवाईयक डिब्बा मे सऽ मथदुक्खीकऽ गोटी निकाइलकऽ खेबो केलीह..... तखनो नञि आराम भेलइन। अहिना भइड़ दिन कछमछ करइत दिन बितलइन। राईतो मे निन्न ठीकसँनञि भेलइन। अगिला दिन स्कुलो नञि गेलीह।

ऊमहर श्री मिश्रा सेहो परेशान छलाह। सुख चैन हरा गेल छलइन। जखनो कोनो मोटरगाड़ीकऽ आवाज सुनाई दइन- चट दऽ पर्दा हटा कऽ बाहर ताकऽ लागस...........होइन जे कहीं पुलिसकऽ गाड़ी त नञि छइ। ई त अपना भान छलइन जे ओ रुचिका देवीकऽ निजता मे हस्तक्षेप केलकिन........स्त्रीकऽ बयान पुलिसकऽ अक्षरशः मानऽ कऽ पड़ई छइ। कहीं ओ पुलिस मे शिकाइत कऽ देलीह त सब नाम गाम, इज्जत मान एक्के बेर मे खत्म।उनकासँतऽ अतुका पुलिस अधीक्षक पहिनेहेसँखार खेने छइन। ओ कयेक बेर सम्मन पठा कऽ ओकरा कोर्ट मे बजौने छइथ।अगर ओकरा पता लाइग गेलइ त ओ तऽ चाइर टा आर धारा लगा देतइ।आबऽ काल मे रुचिका देवीकऽ देखियो नञि सकल छलाह जे केहन प्रतिक्रिया छलइन। ईएह सब सोचइत परेशान छलाह। ओना अगिला दिन ओ कोर्ट गेल छलाह। आइ जे पुलिस वाला सब गवाही मे आयल छलइन, ओकरा सबसँनीकसँगप्प केलाह.......आन दिन जेकां फटकारलकिन नञि। घर घुरलो पर

कयेक बेर मोन केलकइन जे रूचिका देवीकऽ हाल पता करी..... लेकिन साहस नञि जुटा सकलाह।

एक दिनक छुट्टीकऽ बाद रूचिका देवी स्कुल जाय लगलीह। ओतऽ त बच्चा आ स्टाफ मे समय बीत जाइन लेकिन घर अबिते परेशान भऽ जाइ छलीह।जखनो कोनो मोटरगाड़ी अबइ त बुझाइन जे श्री मिश्रा त नञि छथि? स्कुलो मे जखइन फंक्शनकऽ संदर्भ मे श्री मिश्राकऽ चर्चा भेलइन त अनमने जकां ओ अइ पर किछु बजलीह।फोनक घंटी बजइन त होइन जे कहीं श्री मिश्रा त नञि छइथ। हाल चाल लइ लेल फोन केने हेताह? मूदा उनकर फोन नञि एलइन।

अहिना ड़इब आइब गेलइ। आइ फेर उएह समय मे मोटर गाड़ी एलइ......... दाई कहलकइन जे श्री मिश्रा छइथ.........ओहिना बैठकी मे बइसऽ कऽ समाद दाई मार्फत देलकिन .... आ अपनो गेलीह।

आइ कनी काल गंभीरता रहलाकऽ बाद सामान्य माहौल मे गप्प होबऽ लगलइन। दाई अपने चलितराईह रहय...........ओ झुट्ठे कहि देलकइन जे ओकर बेटा दुखित छइ......... घर ओकरा जेनाई जरूरी छइ..............कहि कऽ ओ चइल गेलइन। अपना मोने ओ इनका सबकऽ एकान्ती देलकइन। रुचिका देवी हां वा नञि किछु कहितथिन, ओइसँपहिने ओ जा चुकल छल।

आइ ओही दिन जेकां फेर गप्प शप आ प्रेमालाप

भेलइन। बाहरसँखेनाई मंगावल गेलइ। सांझ मे फेर श्री मिश्रा अइ वादाकऽ साथ घुरलाह जे ओ फेर ड़इब कऽ आइब रहल

छइथ।

आब सब ड़इब कऽ श्री मिश्रा आबऽ लगलाह। भइड़ दिन ओतइ रहइ छलाह। बीच बीच मे आब ओ सब बाजार आ सिनेमा सेहो संगे जाय लागल छलाह। छोट शहर मे त जखने मऊगीकऽ दोसर पुरूखकऽ संग देखइ छइ.........खिस्सा बननाई शुरू भऽ जाइ छइ। आब जगह जगह इनकर सबहक संबंध पर चर्चा शुरू भऽ गेल छलइन........ओना दुनु गोटे व्यवहार मे पुरा सावधानी बरतइ छलाह, लेकिन ई सब कतउ छीपलइ आय।एक कान, दु कानसँहोइत, ईहो सब सुनलाह।

आब श्री मिश्रा कहलखिन

- हमसब विवाहक बंधन मे बंईध जाइ।

- आहां एकबेर अपन बेटा आ परिवारकऽ लोक सबसँअइ विषय मे गप्पकऽ लीयह। रूचिका देवी बजलीह।

-बेटाकऽ की पुछबइन। ओ तऽ अपने आप मे मस्त छइथ।हम जनञि छी ओ त खुशे हेताह। बात रहल बाकी लोक के, हम की उनकासँविचार लेबइन।

- नञि नञि कमसँकम बेटाकऽ बता दियउन।

-आहां कहइ छी त कहि दइ छियइन।

राइत मे श्री मिश्रा अप्पन विवाहक संबंध मे बेटाकऽ कहलखिन। बेटा अकचकेलकिन लेकिन किछु क्हलकिन नञि।

थोड़े कालकऽ बाद पुतोहुकऽ फोन, श्री मिश्राकऽ अयलइन।

ओ त फोने पर लगलखिन श्री मिश्राकऽ उद्धार करऽ ।

-आहांकऽ अइ उम्र मे बेशी जबानी चईढ़ गेल अइछ। हमरा सबकऽ लोक की कहत? आहांकऽ कनिको विवेक नञि! ओइ मऊगीकऽ चक्कर मे आहां फंईस गेल छी। धुर छी। हमरा त आहां पर घिन्न आइब रहल अइछ। कोन परिवार मे हमर बाप बियाईह देलाह। ..आर बइजते रहलीह।..............

अगिला ड़इबकऽ भोरै भोर बेटा पुतोहु , श्री मिश्रा कतऽ आइब धमकलइन। दु बरखसँकोनो अबरजात नञि। एकदिसाहे श्री मिश्रा बेटा पुतोहुकऽ फोन करय छलखिन। आइ देखू ने। सब हाजिर।

थोड़े काल मे श्री मिश्राकऽ बहिन - बहिनोई सेहो दोसर शहरसँआइब गेलखिन। बेरू पहर गामसँबुढ़ कक्का सेहो अपन पोता संग छड़ीलऽ कऽ आइब गेलाह। बड़का मजमा श्री मिश्राकऽ घर मे लागल छलइन। बेटा पुतोहु एकदिसाहे बाईज रहल छलइन। सब संबंधीकऽ उएह सब फोनकऽ कऽ बजौने छलखिन।

आइ श्री मिश्रा अपने घर मे अपराधी जेकां कटघढ़ा मे ठार छेलाह आ उनकर पुतोहु सरकारी वकील जेकां इनकर खिलाफ सबुत सब दऽ रहल छलखिन। जजक कुर्सी पर कक्का बइसल छलाह- मौन।

सब ड़इब कऽ श्री मिश्रा , रूचिका देवी कतऽ नियमित जाइ छलाह।आइ जखइन ओ नञि पहुंचलाह तऽ रुचिका देवी चिंतित भेलीह। फोन केलखिन त कियो नञि उठेलकइन- अइ हो हल्ला मे फोनक घंटी कतऽ सुनेतइ। तखइन अपने गाड़ीलऽ कऽ आइब गेलीह।अतऽ त दोसरे लीला चइल रहल छल।

रुचिका देवीकऽ देखिते मातर श्री मिश्राकऽ पुतोहुकऽ पारा चईढ़ गेलइन। ओ अंटशंट बाजअ लगलीह-

ई राक्षसी पाइकऽ लोभ मे इनका फंसेलकइन अइछ। -हमर सबकऽ की होइत? से नञि सोचलक ई हरा शंखनी। अकरे चाइल छइ। हम सब त सड़क पर आइब जायब। अकरे बच्चा राज पाठ सम्हारतइ। ई नागिन कतेककऽ डंसने होइत। आर कथी कथी................

बाकी सब गोटे ठकमूड़ी केने बइसल। आब रूचीका देवीकऽ नञि रहल गेलइन। ओ बजलीह-

पुईछ लियउन, सामने बइसल छइथ। हमर नञि, इनकर प्रस्ताव छलइन। आहां सब दु बरखसँदेखबो केलियइन जे बापक की हाल अइछ। आइ पहुंचलऊं आय। ई जाइतो छलाह आहांकऽ डेरा पर, एक्को दिन छुट्टियो लेलियइन इनका लेल.........कतउ घुमेबो फिरेबो केलियइन कहियो। सब मे त जय जगन्नाथ। आब संपइत लेल दौरल आयल छी। त सुइन लियह- हमरा इनकर संपइतकऽ कोनो काज नञि अइ। हम त विवाह नञिये करऽ चाहइत रही। हम आहां सबकऽ लिख कऽ दऽ दइ छी जे हम कहियो " मां " नञि बनब। बच्चा पैदा नञि करब। आहांकऽ राज पाठ हमर बच्चा हेबे नञि करत त ओ लेबे नञि करत। हम काइल आपरेशन करा लेब। भऽ गेल समस्या समाप्त।

कतबो लोक मना केलकइन- रुचिका देवी अगिले दिन आपरेशन करा लेलीह। ओकर बाद दुनु गोटे कोर्ट मैरिज कऽ लेलीह। जे लोक सब श्री मिश्राकऽ बुझाबऽ आयल छलखिन ओ सब अइ

विवाह मे शामिल भेलाह। रूचिका देवीकऽ शिक्षा मंदिर मे बड़का रिसेप्शन पार्टीकऽ आयोजन भेल। भइड़ शहर मे रूचिका देवीकऽ त्यागक बखान भऽ रहल छइन।सबके मूंह पर एक्के चर्चा- सच मे रुचिका"देवी" भऽ गेल छलीह।जिला पदाधिकारी फेर रुचिका देवीकऽ कहलखिन- श्री मिश्रा पर तऽ कृपा कऽ देलियइन.........बकियौता हमरो पर कऽ दियह। फेर बड़ी जोरकऽ सब ठहक्का मारलक।

पैबंद- उपन्यास (पहिल-सातम भाग), (अंतिम भाग १-२)

पैबंद (उपन्यास)

(पहिल भाग)

आइ कनिया बाबी अग्निश्च वायुश्च भेल छथि। जे कियो दलान पर जाइ छइन सबके उएह गप्प " बदरी नाक कटा देलकइ "।

कीकऽ देलकइ। भोर मे त पोखइड़ पर देखने रहियइ। बाध दिस जाइत रहय।

" कीकऽ देलकइ"। हद्द करय छं तों सब। बेशी काबिलभऽ गेलह हय। स्टेशन गेल छलह।

हं गेल छलहुं। तीन चाइर दिन पहिने। रमपट्टी वाला पीसाकऽ छोड़ई लेल।

कीछ देखलहक।

नञि।

तोरा सबके नजइड़ कतउ आर रहइ छह। की देखबहक।

ककरो किछु बुझा नञि रहल छलइ कि की भेलइ। कनिया बाबी फेर देखलखिन ककरो जाइत। ओकरो बजेलखिन। ईएह गप्प फेर सं। तोहर बाप पुरखा सबकऽ नाक कटा गेलह। बड़ड शानसँजे कहइ छलह जे हम फलां, हम चिल्लां परिवारकऽ छी से आबकऽ पतियेतह। बदरिया त सब नाशकऽ देलकह।

धीरे धीरे कयेक गोटे कनिया बाबीकऽ दलान पर जमाभऽ गेल छल। पुरा बात अखनो नञि बुझल किनको। मुदा अतबा त बुझा गेल छलइ जे बदरी किछु करस्तानी केलकइ अइछ। फेर सब सोचईते, एहन कीभऽ गेलइ जे बदरी केलक आ किनको नञि बुझल।

गाम मे हर नामकऽ पाछु किछु दर्शन रहइ छइ। जेना जिनकर नाम पढुआ कका ओ बुझु बेशी पढ़ल लिखल लोक, साहेब कका माने ओ जे पैघ सरकारी पद पर छथि, बिड़ला कका माने नबका धनिक, मालिक कका माने जमीन बेचकऽ फुटानी करऽ बाला, बाऊ कका माने शांत लोक, लाल कका माने गोर नार लोक, छोटका कका माने सब भैयारी मे छोट, जर्मन कका माने अंगरेज बाला रंग, जे बामा हाथे लिखय ओ लटेरी कका। अही तरहे नामकरण होइ छइ। ई कनिया बाबीकऽ सेहो अहिना नाम पड़लइन। इनकर घरबाला सब दिअयदी भैय्यारी मे छोट। जहिया बियाहभऽ क अइ गाम अयलीह त इनकर बरसँपैघ जाऊत सभ। तुलसी पात छोट की पैघ। जाऊतक धीया पुताकऽ त ई बाबी भेलखिन। ओ सब कनिया बाबी कहऽ लगलइन फेर आरो लोक सब। शुरू मे त नबकनिया मे कियो बाबी कहइन त नीक नञि लगइन। धुर छी, धुर छी करऽ लगइथ। मुदा बाद मे सुनऽ कऽ अभ्यस्तभऽ गेल छलीह। नैहर बालाकऽ गर्वसऽ सुनबथिन। सुनु हमरा कतेक कतेक टा पोता-पोती अइछ। पैघ पैघ जाऊत जईधी सब पैर छुअइबकऽ गोर लगइ छलइन त तिरपितभऽ जाइ छलीह। नैहर मे सबसं छोट छलीह तैं बड़ड गोर लागत पड़य छलइन। सासुर मे त अबिते गिरथाइनभऽ गेल छलीह। कनिया बाबीकऽ घरबालाकऽ जल्दी त नञि कहबइ मुदा चलिते फिरते अधबयसे मे मइड़ गेलखिन।

किछु दिन त सोगायल रहलीह। फेर घरकऽ सम्हारलीह।

आब कनिया बाबी उज्जर चकचक सारी सटुआ पहिरऽ लगलीह। खेत पथार सेहो देखऽ लगलीह। उपजा बारीकऽ हिसाब राखऽ लगलीह। लोककऽ जरूरत परलाह पर सुद व्याज पर नुकऊआ पाइ सेहो देबऽ लगलखिन। दोसरोकऽ जमीन जथा भरना पर लेबऽ लगलीह। माल जाल सेहो पोसऽ लगलीह। दुध सेहो उठौना पर लगेलीह। बोरिंगसऽ ज्यों कोई पम्पिंग सेट लगबइ, ओहो मे घंटे हिसाबे पाइ लेथिन। आवाजों ओहिना टनगर रहइन।दलाने परसऽ बजथिन त गाछी मेसऽ जारइन बिछअ बाली, घास गढ़अबाली सब पराअ जाय। दुकऽ चाइर पाइकऽ खुब करऽ अबइन। पाइ भेलासऽ किछु लोक आगु पाछु करऽ इन। अपने त आगु बढ़ल छलीह मुदा बेटा सब पाछुये रहअ बाला बनलइन।

ईएह गुनधुनभऽ रहल छलइ जे बदरी की केलकइ आखिर। ओना ओ तिरकाल छल। तिरकालक मतलब तहिया होअइ जे तीन समय जे भांग घोंटय। भोर, दूपहरिया आ सांझ। सब कहलकइन कनिया बाबी कहुं त की केलक ओ बदरिया। कहलखिन जे हमर बेटा स्टेशन लग बदरीकऽ देखलखिन रिक्शा चलबइत। बाजु त एहनो होअइ। आइ तक कियो चलेलक अइ रिक्शा। कहुं त पुरखाकऽ नाक कटल की नञि। लोक सोचऽ लागल जे कियो घरे घरे पंडिताई करय छथि, कियो दोकान मे मजुरी करय छथी, कियो ट्युशन पढबइ छथि, कियो दलाली करय छथि, कियो हेराफेरी करय छथि, कियो स्टेशन पर मटरगश्ती करय छथि, कियो तारी-दारु पीबकऽ दिने मे टुन्न रहइ छथि, कियो मायबाप आ स्त्रीकऽ सदिखन फजैतकऽ तर केने रहइ छथि, कियो पेटपोसुआ जेकां

कोनो संबंधी कतऽ पड़ल रहइ छथि आरो कतेक बात। अइसऽ किछु नञि आ रिक्शा चलेलासऽ कीभऽ गेलइ।

कनिया बाबी कहलखिन जे आहां सब ओकरा बइलाऊ अतऽ सं। रहत त की की नञि करत ई बदरिया। कखनो बदरी कहथिन मुदा जखन बेशी खीस बरइन त बदरिया कहऽ लगइ छलखिन। गरीब लोककऽ पुरा नाम कहऽ कऽ कष्टकऽ करत।

बदरी सांझ मे घर घुड़ल त सब पता चललइ ओकरा। ओ कहलक जे कनिया बाबी कय बेरसँओकरा घरारी आ गाछी कबाला करय लेल कहइ छलखिन। नञि त बदलेनेकऽ लियअ।

कतेक बेर नोत दकऽ नीक नुकुत खुओबो केलखिन।ओ तैयार नञि भेल। ओकरा कहब छइ जे बाप सब जथा बेचिये देने छथि। दु कट्ठा घरारी, एक कट्ठासऽ कनी बेशी गाछी आ दस धुर बंसबिट्टी ओकरा बांचल छइ। ओ मइड़ जाइत लेकिन ओ ई नञि बेचत। ओकरा पांच बरखक बेटा छइ जे माय संग कलकत्ता मे रहइ छइ। सब दिन कि ओ गरीबे रहत। ओकर बेटाकऽ काइल ज्यों पाइभऽ जाइ त ओ घर कतऽ बनेतइ। चाइर खाढ़ी मे दिन घुमई छइ। तेसरभऽ गेल छइ।भांगक नशा मे बदरी बाईज रहल अइछ। चारिम खाढ़ी आबऽ वाला छइ। ओ नञि बेचत घरारी। कनिया बाबीकऽ कोठाकऽ आगु ओकर कांच ईटाकऽ भीतक घर उनका पैबंद लगइ छइन। ओ कोनो ने कोनो रुपे ओकरा उजाइरकऽ अपन बढ़बऽ चाहइ छथि।बदरी कलकत्ते रहइ अछि। ओतउ त ओ रिक्शे चलबइत अइछ। पेटक आइग बुझबइ लेल त किछु करहे परतइ। कलकत्ता मे जखइन मोन अजबजा जाइ छइ त गाम आइब जाइया बदरी। गामो मेकऽ एक्को दिन खुवेतइ। पाइ जाबइत छलइ,

कीछु बांस बेचने छल ,बइसकऽ खेलक। आसानीसऽ त रिक्शे चलाकऽ पेट भरतइ ने। ओकरा त एकरे हुनर।

सब बुअइझ गेल कनिया बाबीकऽ ई तेला-बेला। ओ पैबंद परिवारकऽ प्रतिष्ठाकऽ नामे हटबऽ चाहइ छलीह।

पैबंद (दोसर भाग)

आइ जतरा बेशी दिन गामे मे रहि गेल बदरी। पर पंचैती आ किदन सब। ओइ सब मे ओझरायल रहल ओ। कतेक बेर मोन मे अयलइ जे बेच बिकीनकऽ परा जाय गाम सं। फेर डीहक एहन मोहभऽ जाइ जे सब पर भारी पड़इ। जखने डीह बेचऽ कऽ गप चलइ त कनिया बाबी टा नञि, आरो लोक सब थाह लेबऽ लागइ। ओना ओकर समांग सब झखिते रहइ छलाय पाइ लेल, मुदा डीह कीनबा मे सब ताराउपरी तैयार। आनो टोलक लोक ओकर हाल चाल पुछह लगलइ। एक गोटे त ओकरा अतेक तक कहलकइ जे कनिया बाबीकऽ नञि बेचमे त नञि बेच, हमरादऽ दे। कियो कहइ जई ओ कनिया बाबीकऽ एजेंट छइन। जमीन कबाला तोरासऽ अपन नाम करोतउ आ बाद मे उनका नाम लिख देतइन। ओकरा अतेक पाइ कतऽ सऽ एतइ। ओ त उनकर बले फऊंकइ अइ। अही सब मे तीन महीनासऽ ऊपर लाइग गेलइ। बदरी किछुभऽ गेलइ, डीह नञि बेचलक।

उमहर दिन पर दिन बीतल जाइ, बदरीक कोनो खबर नञि कलकत्ता

मे। ओकर कनिया इमहर ओमहरसऽ हथपईंचलऽ क कहूना बच्चाकऽ पेट भड़इ छल। अपने ओ कखनोकऽ भुखलो सुअइत जाइ। ओकर कलोनी जे जे कलोनी कहबइ। जे जे मान झुग्गी झोपड़ी। अइ कलोनी सब मे सबकऽ सबहक हाल पता रहइ छलइ। सब किछु खुल्ले मे होअइ। दुलार मलार आ घिन्न घुनाईज आ मारा पिटी आ गारा गारी आ बेटी पेटखऊंकी-सब बिना अहर के। बदरीकऽ कनियाकऽ सेहो अपना देसक किछु लोकसऽ अबरजात रहइ। ओतऽ मरदयमऊगी बच्चा सब काज करय। बदरीकऽ ई पसंद नञि कि ओकर कनिया काज करय। ताहि लेल ओकर कनिया काज पर नञि जाइ। कयेक मऊगी सब ओकरा बोलियो दइ -ई जे महंथाइन बनल बइसल रहइ छें, देहकऽ हिलो डोलो, बरकत हेतउ तखने। ओ किनको जाबत जरूरत नञि होअइ नञि किछु कहइ। ओना कियो कियो बुझिये गेलइ जे ओकर सैंय मना केने छइ। अइ पर ओ सब कहइ तोरा मे कोन सुरखाबक पर लागल छऊ जे हमरा मे नञि अइ। जो धेकरी बनल रह। बाद मे बुझेतउ।

आब बदरीकऽ कनियाकऽ पैंच उधारी सेहो भेंटनाई बंदभऽ गेल छलइ। राशनक दोकान बला सेहो सीद्धा उधारी मे देबऽ सऽ मनाकऽ देलकइ। ओना ओ दुकऽ चाइर लइ उधारीकऽ बदला मे, मुदा ओहो मनाकऽ देलकइ। ओकरा दोसर झुग्गी बला कहीं देलकइ जे कोन ठीक बदरिया कतउ मइड़ खइप त नञि गेल। ओ दोकान बलाकऽ कहबो केलकइ- नञि देबऽ त नञि दैय। ऐना अलच्छ बात नञि बाजअ।

घर मे एक्को कनमा अन्न नञि। कतउसऽ किछूके उम्मेदो नञि। अपन पेटे टा रहितइ त भुखले सुअइत रहितै। लेकिन भगवान एकटा ननकीरबोदऽ देने छथिन। ओ केना भुखले रहतइ। किछु चटरंगी मऊगी सब अपन धंधा मे आबइ लेल कहबो केलकइ। बियाहल छैं- चामक देह छइ- की फरक पड़इ छइ।चइलकऽ देख ने। बदरीकऽ कनिया नीकसँचिन्हइ छलाय ई सब छिनाइड़ के। आब करय त की करय। सांझ भेल जाइ छलइ, ओ मोनेमोन अपन सोखाबाबाकऽ गोहराबय लागल। अहीं रस्ता देखायब।आंईखसऽ नोर सेहो बहइत छलइ। नोर बहिते बहिते निन्नभऽ गेलइ कि की भेलइ।

जखइन आंईख खोलइ अइछ त देखइत अइछ जे ओकर ननकीरबा ओकर देह पर लटकल छइ। बगलकऽ एकटा ओकरे देशक मऊगी ओकर माथ पर पाइन छींटई छल। ओ दुनुकऽ भइड़ पांईज कऽ पकरलकऽ । कनी काल बाद मोन हल्लुक भेलइ। ओ सब बात बुझलकइ। दुनु मे किछु गप भेलइ। ओइ राइत ऊयाह मऊगी अपन झुग्गी कहुं या घर कहुं, ओतइसऽ पनपीयाई बनाकऽ अनलकइ।

बदरीकऽ ननकीरबा बगलबाला मऊगीकऽ घर पर छोड़ि देल गेल। ओ ओइ मऊगी संग एकटा घर मे दुनुं सांझ खेनाई बनबऽ कऽ काज करऽ लागल। ततेक नीक जे ओ खेनाई बनबय

जे ओ मालिक अपन संबंधी कतऽ सेहो लगा देलकइ। दुनु घर लगीचे छलइ। अइ मालिककऽ बुटीकक दोकान बाजार मे रहइ। बदरीकऽ कनिया त अखनो हाथेसँचट दं अपन ननकीरबाकऽ सब जामा लता सीब दइ छलइ। झुग्गी मे सेहो नुकऊआ कीछु कपरा सीबकऽ कखनो किछू कमा लइ छलाय। ओकर हाथ कपरा सीबऽ मे बड़ड साफ छलइ। किछु महीना अहुना बीत रहल छलइ। बदरीकऽ बेटा बिजईया मुसपैलटीकऽ सकुल मे पढ़ाइ शुरूकऽ देने छल।

इमहर जखइन बदरी कलकत्ता पहुंचई या त कलोनी मे घुसिते राशनक दोकान बाला ओकरा कनियाकऽ कतऽ कतऽ जाय बला गप कहलकइ। कनी घर तरफ बढ़ल त फेर कियो किछु आर कहलकइ। ओकर दिमाग भिन्ना गेलइ। झुग्गी पहुंचल त ओतऽ ताला लागल छलइ। बेटा बिजईया खेलऽ धुपअ गेल छलाय।बगलकऽ झुग्गी बाली चाभी दकऽ चइल गेलइ। घर मे जखइन घुसल त सामने देखलक नबका बटलोही आ केटली। देखते मातर ओकर पारा ऊपर चईढ़ गेलइ। एक तऽ राकस दोसर नोतल। पहिनेहे राशनबाला आकऽ के सब की की कहने रहइ, ओइ पर घर मे नब बरतन। देखते ओकरा ऊर्री बिर्री लागऽ लगलइ। बटलोही आ केटलीकऽ पटईक पटईककऽ पचका देलक। सब सामान इमहर ओमहर फेंक फाईक देलक। जे जे कलोनी मे टेलीगरामोसऽ जल्दी समाद फैलइ छइ। बिजईया लग खबर पहुंचलइ कि ओकर बाबु आइब गेलइ। ओ लंके दंके दौरल घर आयल। ओकरा कयेक टा गप बाबुकऽ कहऽ कऽ रहइ। सकुल के, नबका दोस के, चश्मील्ली मस्टरनी के, खुसठ बुढबा

लमनचुस बेचनिहार के, नबका मायक मेमसाब - साहेब के, तरह तरहकऽ खेनाईकऽ परकार सब के। अतऽ बापक रौद्र रूप देखकऽ डरा गेल आ केवारीकऽ बाहरे नुका गेल। मायकऽ अयबाक इंतजार करऽ लागल।

सांझ मे माय कऽ जखने अबिते देखलकइ बिजईया। दौर कऽ सब गप बाबु बला रस्ते मे कहीं देलकइ। माय संगे डराईते डराईते ओ हो घुसल। बदरीकऽ खीस फेर कनियाकऽ देखते बइढ गेलइन। खुब चिल्ला चिल्लाकऽ बजई छलाह।गाईरे पढ़अ लागल छलाह। बिजईया दिस तकबो नञि केलकीन।ततेक खीस मे छलाह। जखइन बजिते बजिते शांत भेलाह।तखन कनिया सब टा गप कहलकइ। कतेक दिन भुखले अपने सुतल। बदरी त कोनो खबरों नञि लेलकिन। कहलकइन जे आहां सोचलऊं जे हम बेटाकऽ मुंह मे जाबी लगा देबइ। ओ की खेतइ। जखइन सब वस्तुस्थितिसँअवगत भेलाह त बदरी बिजईया आ ओकर माय दुनुकऽ एक्के संगे पांजा मे कसलाह। कतेक काल तक सब अहिना रहलइ। फेर बदरीकऽ कनिया उठल। खेनाई पिनाई बनेलक। बिजईया त बाबुक कोरे मे सुअइत गेल छलाय। माय ओकरा उठेलकइ। नञि खाई छलाय त माय कहलकइ -भुखले सुतमे त एक बगेरीकऽ बरोबइड़ माउस कमभऽ जेतउ। बिजईया त बगेरी देखनेहे नञि अइ। अंदाज लगेलक एहन ओहन होइत। बाद मे अपन बाबुसऽ पुईछ लेत।

भोर भेलइ। सब अपन काज मे लाइग गेल। बिजईया सकुल गेल।

माय अपन मेमसाब कतऽ खेनाई बनबऽ । मेम त अंगरेजक घरबाली सब होइ छलइ। आब त करिया भुजंग मऊगी सब सेहो मेमसाबभऽ गेल छलइ। जे होअइ। बदरीकऽ कनिया ओकरा मेमसाब कहइ। ओ अइसऽ कहइ जे जहिया ओ पहिल बेर ओकरा कतऽ काज करऽ गेल छलाय त ओकरा जे मउगी काज दियौने रहइ से सीखेने रहइ। पुरूखकऽ साब आ मऊगीकऽ मेमसाब कहबाक छइ। तैं ओहो कहइ छलाय। बदरी लेल खेनाई बनाकऽ गेल छलइ ओकर कनिया। अपन घरक त बदरियो साहेबे अइछ। अतऽ त ओकरे जुइत।आइ भइड़ दिन ओ साहेब सबकऽ ड़इब जेकां आरामे केलक।

अगिला दिनसऽ ओहो अपन पुरनका काज पर लाइग गेल। रिक्शावालाकऽ काज मे कहियो बेरोजगारी नञि छइ। नञि कोनो सर्टिफिकेट आ नञि डिग्रीकऽ काज। आइ काल्हि गारेन्टर सेहो मांगइ छइ। ओ त कोनो रिक्शा बाला बइन जाइ छइ। ओकरा लग छइये कि जे बदला मेलऽ जेताह। नञि हरायकऽ डर, आ नञि चोरीकऽ खतरा।

बदरीक कनियांक नाम रामरति रहइ। मेमसाबकऽ ई बरकी टा आ पुरान नाम लगलइन।ओ रति कहऽ लगलखिन। उनका बुटीक काज मे करीगर छुट्टी मे घर चइल गेल रहइन।ओ रतिकऽ किछु कपरा सीबाक लुइड़ सीखा देलखिन।ओ झटसऽ सीख लेलक। ओ आब रतिकऽ अपन बुटीक परलऽ जाय लगलखिन

आ खेनाई बनबऽ लाय रति दोसरकऽ ठीककऽ देलकइन। बिजईया तेहन ने चंसगर छलइ पढ्अ मे जे पंचमे पास करइत ओकरा अगिला बरख चश्मा बाली मैडम नबोदयकऽ फारम भरा देलखिन। अपने संगेलऽ गेलखिन परीक्षा दियौलखिन। बिजईया पासोकऽ गेल।

इमहर बुटीक बढ़िया चलइ छलइन। किछु बदमाश सब ओकर बाहर मे अड्डा जमावअ लागल छलाय। बदरीकऽ देह दशा त बलंठ छलइ। ओ एकदिन बुटीक पर रतिकऽ कोनो समाद कहइ लेल गेल छल। ओकर चाइल मे अकर छलइ। पुलिसक सिपाही जका ओ चलइ छल। ओकरा अबिते देखकऽ ओ दोकानक बाहर ठार छौंरा सब ससइड़ गेल। ई सब रतिकऽ मेमसाब शीशाकऽ तरसऽ देखइ छलीह। जखइन बदरी, रतिसँभेंटकऽ क चइल गेल तखइन ओ रतिकऽ कहलखिन जे रिक्शाकऽ जगह ज्यो गार्डक काज करइत त कि बेजाय।

रति अपन महादेवकऽ चिन्हइ छलीह। आब उनका नीक पाइ बुटीकसऽ भेंटई छइन। उनको रिक्शा उघनाई ठीक नञि लगइन। दोसर आब बयस सेहो बइढ़ रहल छलइन। कहने रहथिन बदरी के। ओ त ततेक सनियल जे कहलकइ -ओ,आब हम बहुकऽ कमायल खायब। हमर देह मे कि घुण लागल अइछ। ओ तहिया नञि तैयार भेल छल।

फेर अइ बेर डराईते डराईते कहलखिन। ओ हंसऽ लागल आ तैयारभऽ गेल। कहलकइ आब रिक्शा मे ओ बात नञि रहलइ।

बदरी कनीकटा मोछ बढ़ा लेलक आ एक टा लाठी किनलक। आब मोछ पर ताव दइत, लाठी हाथ मे लकऽ ओ बूटीकक बाहर स्टुल पर कखनो बइसय नञि त ठारे रहइ छलाय।अइ मे त कोनो काज नञि, आ पाइ महीना पुरिते चिक्कन। मजा आइब रहल छलइ आब ओकरा जिनगी मे। गाम आब मोनो नञि पड़इ।

इमहर बिजईयाकऽ नवोदय मे नाम लिखा देल गेल छलइ। ओ आब ओतइ रहय। कहियो काल बदरी आ रति मेमसाबकऽ गाड़ी मे नबोदय स्कुल जाइ छलाय। आब ओ सब एकटा जनता फ्लैट किनलक। बदरी कलकत्ता मे मकान मालिकभऽ गेल। आब अप्पन घर मे रहइ छलाय। गऊंआ सब जे संबंध तोरने छलखिन जे कहीं बदरी किछु मांगि नञि लय।आब अबइ जाय लागल छलखिन। अपन लोक सबसँअबरजात शुरूभऽ गेल छलइ।

एक दिन बदरीकऽ दोकानक बाहर एक टा पुरान बैग खसल भेटलइ। पहिने त ओकरा भेलइ जे कहीं बम नञि होइ। फेर की नञि फुरेलइ- बम भोलेकऽ नामलऽ क ओकरा खोइल देलकइ। ओइ बैग मे रुपये रूपया आ कतेक रास कागज सब। बदरी बैगलऽ जा कऽ मेमसाबकऽ देलकइ। ओ ओइ कागज पर लिखल फोन नम्बर सब पर फोनकऽ क ओकर मालिककऽ बजेलकइ। ओकरा पाइसऽ भरल बैग सोइप देलखइ। बैगक मालिक ईनाम मे

बहुत रास पाइ बदरीकऽ देबऽ चाहलकइ। बदरी पाइ लेबऽ सऽ साफ मनाकऽ देलकइ। ओकर कहबाक छलइ जे चौकिदारी त हमर काज अइछ। अकर हमरा दरमाहा भेटई अछि। हम कोनो अलग काज नञि कयलऊं। ई हमर कर्तव्य थीक। ईनाम नईंहे टा लेलक बदरी। आइ घटनाकऽ पुरा बजार मे चर्चा। अखइन तक बरका अफसर सबकऽ ईमानदार आ कर्त्तव्य किछु होइ छइ, सैह बजार वाला सब सुनने छल। बदरी त हद्देकऽ देलकइ। सब कहइ पता नञि, कोन माइट पाइनकऽ बनल छइ।

आइ घटनासऽ एक टा भेलइ। बदरीकऽ एकटा बरका बनिया अपन ओफिस मे नजर राखइकऽ काज लेल ओकर मेमसाबसऽ मांअइग लेलकइ। मेमसाब हाथ जोइड़ लेलकइ बदरीकऽ सामने। बदरी आब शीशाकऽ बाहर से भीतर, एसी मे ड्युटी करऽ लागल। दरमाहा दुगुनाभऽ गेलइ। एसी मे ड्युटीसऽ रंग सेहो साफ होबऽ लगलइ।

समयक बहाव देखू। बिजईया दसमीकऽ बाद दक्षिण भारतकऽ स्कुल मे नवोदयकऽ विद्यार्थीकऽ अदला बदली योजना मे पढअ चइल गेल। ओत रहिकऽ अंग्रेजी बड्ड सुन्नर सेहो बाजअ लागल। बंगलोरकऽ कालेजसऽ ग्रेजुएशन केलक ओ घुरती बरख सिविल सर्विसेज मे IAS मे ओकर चयनभऽ गेलइ।कैडर सेहो बिहारे भेटलइ।

जिलाकऽ कलक्टर आ पुलिस कप्तान ओकर गाम तकइत घर पहुंचलकिन। बधाई देबऽ बालाकऽ लाइन लागल छइ। कनिया बाबी घर पर दऊर दऊरकऽ सबकऽ चाह जलखइकऽ बेबसथा करय छथि। टेलिविज़न बाला सब टोलक लोककऽ इंटरव्यूलऽ रहल छइ।

बदरीकऽ गामक कच्चा माइटक भीतक घरकऽ ईमानदारीकऽ प्रतीक मानल जा रहल छइ। बदरीकऽ त्यागक खिस्सा चइल रहल छइ।

जे घर पैबंद छल से आब ओइ गामक पहचानभऽ गेल। बिजईया आब बिजय बाबुभऽ गेल छथि। पुरा गाम बिजयक गामभऽ गेल। कनिया बाबी सबकऽ फेर शोर पाइरकऽ बजा रहल छथिन आ टेलिविज़न परकऽ इंटरव्यू देखा रहल छथिन।

पैबंद (तेसर भाग)

बिजयकऽ IAS मे चयनक समाचार गाम-गाम फइल गेलइ। बदरी आ ओकर कनियाकऽ त खुशीकऽ ठिकाने नञि। दऊर कड् मधुर किनलक आ महाबीर मंदिर मे चढ़ेलक। गामो मे समाद देलकइ जे सोखाबाबा आ भगबतीकऽ मधुर चढ़ा दइला।भरी टोल मे परसादी मे मधुर बटवेलक।

आब ओकरा कनिया बाबीकऽ बेटा-पुतोहुसँघुट्टा-सोहारभऽ गेल छइ।

फोन पहिनेहुसँउनके कतऽ छलइन। ओ जखइन पहिने फोन करय त ओकर गप्प पर कियो धेयान नञि दइ। उल्टा कयेक बेर ओ फोन पर सुनने रहे कि ई भंगेरीकऽ हम सब समदिअय छी। एकर सपरतिब ने देखू, हमरा कतऽ फोन करय अछि-जेना अकर बापक गुलाम होइयई। अकरे ले जेना फोन लगेने होइ। कोनो काज नञि छइ- समाद कहबा के। पड़इक गेल अइछ। ताहि दुआरे रामरति, कहियो फोनकऽ क बदरीकऽ हाल नञि लइ। कयेक बेर करय लेकिन ओ सब कोनो कान बात नञि दइ छलखिन। तखइन आजिजभऽ क छोड़ि देलक।

आब त उल्टे गंगा बहअ लगलखिन अइछ। उनके सबकऽ फोन आबऽ लगलइन। तैं रामरति कहियो देलकइन कनिया बाबीकऽ पुतोहु सं। से ठीके। ओ बारह सै रूपयाकऽ मिठाई कीनली, भगवान भगवतीकऽ ऊसरगाकऽ भरी टोल लोक पिछु एक एक टा बंटवेली। ऐना त आइ तक नञि भेलइ। दु टाकऽ मधुर बैनक

चलन छलइ। कनिया बाबी त महो महोकऽ देलखिन। लोक गइन गइनकऽ मधुर पठबेलखिन। अबसरे एहन छलइ।

मधुर खेलाक बाद ओकरा टोलक लोगकऽ सेहो फोन एलइ। ओकरा सबकऽ कहब छलइ जे कनिया बाबी बुढ़ारी मे टेलीविजन पर आयल छलीह, ओकरा बदला मे ई मधुर छइ।

दिअयदी होइते सैह छइ।हर बात मे तेसरे खिस्साभऽ जाइ छइ। तैं ज्यों संयम रहय त किछु करी वा नञि करी, किछु शगुफा छोड़ि दी। देखू ओ घुमइत घमाइत, नाना परकारक एक्सपर्ट कौमेट आहांकऽ मंगनीये मे सुनऽ कऽ भेट जाइत। उएह भेलाई अहि बेर। बदरी समाद देलकइ मधुर चढ़बऽ के- लोक कनिया बाबीकऽ टेलिविज़नसऽ जोइड़ देलकइ। कोई त नबका दोस्ती पर किछु आरे तंज। त कियो लल्लो चप्पोकऽ तेसरे कारण- बिन कारण टिटही नञि बाजय। आहां रोईक नञि सकइ छी सबके अपन विश्लेषण करबा सं।

लोक जे भी कहइ। बदरी त निश्चितकऽ लेने अइछ जे मधुरकऽ एक एक पाइ जोअइड़कऽ द देतइन कनिया बाबी के।

जेना भदबारी अबैत, बेंग सब कतऽ ने कतऽ सऽ आइबकऽ टर्र टर्र करऽ लगइ छइ, ओहिना बदरीकऽ संबंधी सब ऊपर होबऽ लगलइ।अखइन तक सब निपत्ता रहइ। अहन मीठगर गप्प सप्प सब करय जे बदरीकऽ बिसवासे नञि होइ कि ओकरे कान ई सब सुअइन रहल छइ। कयेक बेर भेलइ कि सपना त नञि छइ। अपना जांघ मे बिट्ठु काइटकऽ देखलक। ठीके सब सद्यःभऽ रहल छलइ।

बिजय ट्रेनिंग मे मसुरी चइल गेलइ। जायसऽ पहिने कलकत्ता मे सब संगी साथीसऽ भेंट गांठ केलकइ। जेजे कालोनी वाला संगी सबकऽ पार्टी देलकइ। मुस्पैलिटी बाला सकुलकऽ मास्टरनीकऽ मधुर जाकऽ द एलकइ। आरो किछु नबोदय बाला संगी सब कतऽ गेल। रामरतिकऽ साहेब जेकर गाड़ी मे नबोदय जाइ, ओकरो कतऽ गेलइ। सबसँहिलल मिलल रहल। लोक ओकर सोभावकऽ प्रशंसा करय छलइ। बदरीकऽ परोछ मे बेटाकऽ प्रशंसा सुनऽ मे बड़ड नीक लगइ। सीना ओकर बइढ़कऽ 56 इंचकभऽ जाइ।बिजय अकदम्मे सरल छलाह। घमंडक एको मिसिया लेश नञि।

बदरीकऽ आब ओकर बाबु जे चारिम पीढ़ी बला गप्प कहथिन, ओइ पर बिसबास होबऽ लगलइ। ओ याद करय छल कि आर कोन कोन गप्प कहइ छलखिन। मुदा किछु याद नञि परलइ। आब ओकर खाढ़ी बला चारिम चक्र पुराभऽ गेल छलइ। ओकर दिन घुइड़ गेलइ। आब कतउ ओ जाय, ओकरा अनकट्ठल मोजर भेटअ लगलइ। ई सब ओकरा सोहाइ नञि। ओकरा पहिलके जिनगी नीक लगइ छलइ। आब ई सब ओकर हाथ मे थोड़े छलइ। सोचनाई छोड़ि देबऽ चाहइ छलाय, लेकिन फेर उएह उधेरबुन। माथक ओधबाधभऽ जाइ छलइ ओकर। आब एकटा तेसरे खेला शुरूभऽ गेल छलइ। ओहो खुब खेलाय लागल।ओकर हाल ओहनभऽ गेल छलइ जेना जखइन बुनी पड़इ छइ तो राही बटोही, भीजअसऽ बचई लेल गाछ-बिरीछकऽ अढ़ लइ या। जखइन भीजअसऽ नञि बइच पबइया वा बुनछेक नञि होइ छइ त ओइ मुसली बरखा मे आगु निधोख बइढ़ जाइया-अगिला ठिकाना दिस। आब बरखा मे भिजनाअइ वा भिजकऽ तर भेनाइ ओकरा नीक लगइ छइ। ऊयाह हाल

बदरीकऽ भ गेल छइ।

ई खेल छइ। कथा-वार्ताक खेल। आब बदरी लग कन्यागतक लाइन लाइग गेल छइ। एक पर एक परिचय सब। बदरीकऽ बुझेबे नञि करय कि ई बाबु भैया सबकऽ की जबाब दइ। सब ओकर सामने दीन-हीन जकां कल सेहो जोइड़ लइ।कयेक लोकसऽ त ओकरा अइलऽ क टेना मेनी तकभऽ गेलइ। रामरति ओकरा सीखबइ ।

-एना नञि उसठल जकां जबाब देल जाइ छइ। भागक गप्प जे तोरा दुआरी ई लोक सब अबइ छह। चुप रहल करऽ ।

-फेर बदरीकऽ किछु अनटोटल बजाअ जाइ। ओ अइ जिनगी स अनघुआर रहल अइछ। पेट मे किछु आ ज़बान पर किछु।

लोक सबसँगप्प सब करिते आब ओहो रेहल खेहलभऽ गेल अइछ। सीख गेल बदरी कि केना ज़बाब देल जाइ छइ।

आब ओकरा लग सौ टासऽ बेशी कन्याक परिचय जमाभऽ गेल छइ। सब थाह लगबइ जे कतउ कथा ठीक त नञि भेल छइ।

आब अप्पन भीतरका गप्प ओ किनको नञि कहय।

अइ सौ टासऽ बेशी परिचय मेसऽ दस टा ओ अलग केलक। कोन आधार पर केने छल ओ रामरतिकऽ सेहो नञि बुझअ देने छलइन। कियो जं पुछइ त कहइ जे उपरका दस मे आहांक नम्बर नञि अइ।

सामने वाला मुंह छोटकऽ क चइल जाय। ईएह नंबर ओकर तकिअए कलाम छलइ। अही मे ओ सबके ओझरेने छल।

जेना नेना सब खेल मे माइटक महल बनबइ आ सांझु पहर घर जयबाक काल ओकरा ढाहि दइ छइ। फेर दोसर दिन नब घर, आ सांझ होइते ओकरे पहिलुका दिनक बाला हाल। ई क्रम चलिते रहइ छलइ, भरी गर्मी छुट्टी। ओहिना बदरी रोज ख्याली महल बनबय आ भोर नीन टुटीते सब ढही जाइ। लालाजीकऽ ओफिस मे जायकऽ तैयारी शुरूभऽ जाइ। आइ काल्हि लेटोभऽ जाइ त मनेजर नञि किछु कहय। कतउ बेबहार मे अंतर ओकरा देखाय लागल छलइ।

अही सब मे ओ लागल रहइ छलाय।एक दिन त गाड़ी वाला ओकरा धक्का सेहो माइड़ देलकइ। ऊपर से उपराग सेहो जे मरऽ कऽ छह त कतउ आर जा। लोक सब कहलकइ जे ओ गाड़ी बला कतेक बेर हार्न देलकइ।माय ओकर खरजितिया केने छलइ तांय ओ बइच गेल। बदरियेकऽ गलती रहइ। जे भी हो। बदरीकऽ ई बुझाई लगलइ कि ओ बेशी सोचऽ लागल अइ। दिमागक खर्च ओकरा बइढ़ गेल छलइ। अपने पर हंसी आबइ। बदरी आ सोचनाई। सोचऽ सऽ बचई लेल त ओ भांग पीबइ छल। जखने दिमाग पर जोर बूझाई ओ झटसऽ दु गिलास खींच दइ। फेर मस्ती मे चइल जाइ छल।

कयेक बरखसऽ ओ भांग छोड़ि देने छल। आइ ओकरा बुझेलइ जे अजुका एक्सीडेंट भांग छोरबाकऽ कारण भेल छइ।मोन मे फैसलालऽ लेलक जे आइ भांग पीइत। रसते मे दोकान छलइ

पान बला के, ओ चोराकऽ भांगो बेचई छल। ओतइसऽ किनलक। ओकरा आब रामरति पर जोर कम चलइ छलइ। ओ त किन्नऊ ने भांग पीसतय ओकरा लेल। ऊपरसऽ चाइर टा पुरखाकऽ सुनाईयो दइतइ।

घर जा कऽ भांगक छुटल कोटा अपन पुरा केलक। आब ओ सीधा अपन पुरनका दुनिया मे चइल गेल। अतऽ दिमागक कोनो वार्ता नञि। जे देलकइ कनिया, अपन खेलक आ बिचरण करऽ लागल अहि लोक-ओहि लोक।

बिजयक फोन अबइ त रामरति कहइ कथा सबहक बारे मे। बिजय कीछु ज़बाब नञि दइ।

- एकटा कन्यागत त खाली चेकलऽ आयल छलखिन। -जे भरबाकऽ अइछ भरी लिया। हमरा ई लड़कादऽ दियअ।

अहिना कोनो कोनो गप्प सब।

बदरी आ रामरतिकऽ ई पुरा भरोसा छलइ जे बिजयक बिबाह ओकरे अनुसार हेतइ। तही मांदयकनी चुर, दुनु बेकती रहअ लागल रहय।

एक दिन बिजयक फोन एलइन। फलां बाबु दिल्लीसऽ अऊताह। ओ जे जे कहताह, आहां सबकऽ लेब।

बदरी घर मे दु दु फीट खीस मे कुदऽ लागल। बेटा हमर, जनम हम देलियई आ ओ जे कहताह सेकऽ लेब।

दु चाइर दिन दिमागक खर्च बुझाय परलइ। तखने बदरी भांगक घुंटदऽ दइ। सोचबाक काजे खतम।

दिल्लीसऽ फल्लां बाबु अयलाह। कहलखिन सब गप्प बिजय बाबुसऽ हमराभऽ गेल अइछ। हमरा दु टा कन्या छथि। बरका जमाय, बिजय बाबु जकां पद पर छथि। ऊयाह मध्यस्थ छलाह। आइसऽ हम आहां कुटुम्ब भेलऊं। ओहि धराने एक दोसरकऽ शुभचिंतक।

एक हफ्ता नञि बितलइ कि गामसऽ समाद अयलइ जे फलां बाबू (दिल्ली वालाक)कऽ मनेजर पुरा ताम झामक संग आयल छल। बिजयक भीतक घर ढाहि देलकइन। ओहि पर तीन तल्ला नबका डिजाइन बाला घर बननाई शुरू छइ। थानाक दु टा सिपाही राइत दिन चौकिदारी मे लागल अइछ। अतरे दिन छोटा बाबु सेहो काज देखऽ अबइ छथि।

चाइर महीना मे घर कि कोठी कहियउ, बइनकऽ तैयारभऽ गेल। गाछी मे एकटा बंगली सेहो बनलइ। फलां बाबू सेहो अंत मे आइबकऽ देख लेलाह।

बिबाहक दिन निश्चितभऽ गेल छलइ। आब बरियातीक लिस्ट बनञि छलइ। कतेक काट-पीटकऽ बाद बदरी लिस्ट फाइनल केने छल। ओइ लिस्ट मे उधारी सीद्धा देबऽ बाला बनियाक नाम सबसं ऊपर रहइ, ओकर बाद जेकरासँरिक्शा भारा पर लइ छलाय-ओकर नाम, फेर रिक्शा गारेन्टर जे बनञि-ओकर नाम, जे रामरतिकऽ पहिल नौकरी दियेलकइ-ओकर नाम,फेर जे मास्टरनी बिजयकऽ मुसपेलटी स्कुल मे बिन कागजकऽ नाम लिखलकइ-ओकर नाम, जेकर गाड़ी से नबोदय जाइ-ओकर नाम, कनिया बाबीकऽ बेटा सबहक नाम, अपन दिअयद सबहक नाम। अहिना बरकी टा लिस्ट रहइ। दिल्ली बाला फलां बाबू बदरीकऽ कहनेहो रहथिन जे जतेक लोककऽ आइन सकी, से आइन लेब। भगबतीकऽ देल हमरा सब किछु अइ। कहां अशौकर्य नञि करब।

बिजय अइ लिस्टसऽ सहमत नञि छलाह।ओ नाम कम करऽ कहलखिन। कलकत्ता बाला लोककऽ अतइ बड़का होटल मे भोज देबऽ पर सहमति भेलाह। गामसऽ घर पिछु एक आदमी पर तैयार भेलाह।

बिबाहक कार्ड थानाक छोटाबाबु गाम मे बंटला।उनके भार छलइन जे सब बरियातीकऽ हवाई जहाजसँदिल्ली अनबाक लेल। सात दिन पहिने एकटा गेस्ट हाउस मे बदरी आ रामरति चइल गेल छलि। कनिया बाबीकऽ लिआनकऽ क बजावल गेल रहइन। बदरीकऽ अतबे जिम्मेदारी देल गेल रहइन जे किछु बाजई लेल नञि। से ओ

जखने बाजअकऽ मोन करयन जेबीसँभांग गोली निकालइथ आ सुखले घोओईंठ जाइथ।

बिबाह बड़ड धुमधामसऽ भेलइ। सब बरियातीकऽ एक नम्बरकऽ धोती कुर्ता,तउनी, पाग, डोपटा, मिठाईकऽ डिब्बा आ जनऊ सुपारी संग पाइक लिफाफा भेटलइन। सब कियो जय जय करइत गाम घुरलाह।

आइ फेर बदरी भांगकऽ नशा मे बाईज रहल अइछ से ठीके चारिम खाढ़ी मे ओकर दिन घुरलइ। कोठा बइन गेलइ। कथुक कमी नञि छइ। बस अतबे छइ जे किछु बाजय नञि।

आब बदरीकऽ पहिलुके दिन याद पइड़ रहल छइ। मोनक गप तकऽ सकइ छल। आब त ओकरा ई सब घर ,दुआर, लोक,बेद,पावर, पैसा जीबनक पैबंद लगइ छइ। बदरी अर्र बर्र अहिना बरबरा रहल अइछ। डाक्टर माथ लग आ रामरति पैर लग ठार छइ। सब बुझिते कियो किछु बाईज नञि सकइत अइछ।

जे बदरी अपन घरक साहेब छल से आइ पाबंदी मे जीब रहल अइछ।

पैबंद (चारिम भाग)

बिजय बिबाहक बाद घुमई फिड़इ लेल कनिया संग बिदेश चइल गेल छलाह। ई परिपाटीयेभऽ गेल छइ कि सोहाग राइत आब कोबरा घर मे नञि, बिदेश जाकऽ मनावल जाइ छइ। नञि कोनो उपाय त लोक काठमांडू वा पोखरा ओतइ चइल जाइत अइछ। नञि मामा त कनहा मामा।

कोनो भी बिधकरीकऽ आब जरुरत नञि छइ। कनिया सब अपने पाकल परोर रहइ छइ। पहिनेहो त बिधकरी, कनियेकऽ मददक लेल होइ छलइ। पुरूखकऽ त बियाबान सासुर मे असगर धकेलकऽ छोड़ि दइ जाइ छइ। जेना माल-जालकऽ बच्चाकऽ हेलल नञि सिखावल जाइ छइ, सीधा जलकर मे हुला दियउ, अपने चारू पैर माड़इत, उबुक-डुबुक करइत, कात लाइग जाइया वा पारकऽ जाइया। ओहिनाहे हाल पुरूखकऽ सासुर मे होइ छइ।बिजय अपन ऊबडुब करइत बिदेश मे हनीमून मना रहल छलाह।

इमहर बदरीकऽ दिमाग मे हलचल बइढ़ गेल छलइन। किछु भांगक असर सेहो। त्रिकाल जे पहिने छलाह, ओहो त अपन रंग देखेतइ। शरीर कमजोर पड़ला पर चारू तरफसऽ बीमारी सब खेहाड़इ छइ। कयेक टा जांच सब भेलइन। किछुकऽ रिपोर्ट तखने भेटलइन आ किछुकऽ लटकल रहलइन। रामरति, बदरीकऽ

बेमारीलऽ क बुटीक गेनाई छोड़ि देने छलीह। बिजयकऽ कोनो फोन फान नञि अबइ छलइन। पाइ कौड़ी लग मे रामरतिकऽ रहइन। तैं सब निबहल जा रहल छलइन। कखनोकऽ मोन मे होइन, जे कोन लगन मे ई बियाह भेल। जहियासऽ भेल, किछु ने किछु अटपट भईये रहल छइ। ककरो नजर गुजर त नञि लाइग गेलइ। घर मे भगबानक पूजा सेहो बड़ड दिनसऽ नञि भेल छइ। बदरी ठीक हेताह त सत्तनारायण भगबानक पूजा करबे टा करब। मोने मोन रामरति ई निश्चयकऽ लेने छलीह।रामरतिकऽ बिजयक सासुरक रंग-ढंग नञि ठीक लगइन। कोना बिजय इनकर चक्कर मे फंईस गेलाह, से नञि बुझाई छलइन। जन्म, बियाह आ मरण ककर हाथ मे रहलइ, से ठीके। कतऽ दोसर दोसर कथा, कतऽ ई टपसऽ फाइनलेभऽ गेलइ।

बिजयक ससुरक खिस्सा बड़ड रोचक छइन। नाम छइन रामबाबू। ई दु भाइ छथि।हिनकर जेठ भाइ बिदेश मे नौकरी करय छथि। उनकर बच्चा सबहक रंग दुधिया गोराई छइन। ऊपरसऽ बरका हाकिम सेहो छलाह। कयेक बरख पहिने ओ रामबाबूकऽ कहलखिन जे तोहर दुनु बेटीकऽ रंग झामर छह।ऊपरसँतो हाकिम सेहो नञि छह। तोरा बेटीकऽ नीक कथा मे दिक्कत हेतह। जैह भेटतह,कऽ लियह। बेशी मीन मेख नञि निकालियह। रामबाबू कहलखिन-

-भैया। सब अपन अपन भागलऽ क अबइ छइ। जे लिखलाहा हेतइ, सैह ने हेतइ।

बात आयल गेल, चइल गेल। सब बिसइड़ गेल लेकिन रामबाबू नञि

बिसरलाह। ओ बेबसाई छलाह। दबाईयक कम्पनी हिमाचल मे खोलने छलाह। ओ चइल गेलइन। बड्ड पाइ बनेलाह। अठारह टा त उनके महानगर सब मे घरे छलइन। जकरा छु दइ छलखिन सोनाभऽ जाइ। मकान खरीद बिक्री मे सेहो खुब कमेला।

जखइन जेठकी बेटी बियाह जोगर भेलइन त अपने मसुरीकऽ IASकऽ ट्रेनिंग सेन्टरकऽ बाहर ठारभऽ क अपन बिरादरकऽ कुमार लड़का सबकऽ ठेकनबइत छलाह। देखबाक मे सुन्दर हुआय, तकरे फिराक मे रहइ छलाह। जेठका जमाय अहिना भेठलखिन। आब बिजय बेर मे त ऊयाह ई भार ऊठालेलकिन। दुनु जमाय देखबा मे सिनेमाक हीरो सब जकां लगइन। रामबाबूकऽ भाइकऽ जमाय त देखऽ मे केहने दन छलइन। एक त अपन समाजक नञि, दोसर रांचीकऽ आदिवासी। कनिको मेल नञि। रामबाबू एकसुत्री कार्यक्रम मे लागल छलाह, आ सफलो भेलाह। नौ टा घर त उनकर कनिया बेटीकऽ खोंईछ मे देलखिन। ओना सब उनके सबहक। तखनो अपन मान मनोरथ पुरा केलीह।

बदरी कऽ मोन ठीक भेलइन।बिजय सासुरसऽ सीधा मसुरी चइल गेलाह। उनकर जनता फ्लैट मे पुतोहु केना अयतिन। रामबाबू कलकत्ता मे एक टा मकान भाड़ा पर लेलाह। ओही मे बदरी आ रामरति सेहो रहअ लगलीह। सब सेट भेलाकऽ बाद पुतोहु सेहो एलखिन।तीन प्राणी ई सब घरबइया, आ पांच टा बहरिया। ड्राईवर, माली, भंसिया, झाड़ू पोंछा बाली आ मनेजर। ई आठ लोकक खेनाई बनञि। सब ओतइ रहइ। रहबाक घर ओकर सबहक अलगसऽ बनल रहइ। बिजयक आग्रह आ बीमारीकऽ देखइत बदरी दुनु प्राणी

नौकरी छोड़ि देला। कोनो सरकारी त छेलइ ने जे ग्रेच्युटी आ पेंशन। गेनाई बंद, नौकरी खत्म। रिजाइन देबाक कोनो काजे नञि। जेबिये मे रिजाइन आ ज्वाइन। काज पर गेलऊं त नोकरी नञि त छुट्टी। आब सब दिना छुट्टी।

बदरीकऽ त कलकत्ताकऽ हीर हीर बुझल। मनेजर जे रहइ से महग महग सामान सब खरीदइ। आखिर पाइ त ओकरे पुतहुकऽ लगइ छलइ। ओ मनेजरसऽ सामानक लिस्ट लइ आ अपने बस पकइड़कऽ चइल जाय आ सस्त चीज सबलऽ आबय। कतउ चाइर घंटा लाइन मे लागय पड़ई त ओहो लाइग जाय। घर मे परल परल की करिता।समय ऐना बीत जाइ आ अपना मोने दु टा पाइ बचेबो करय। बिजयकऽ ट्रेनिंग खतमभऽ गेल छलइन। आब पोस्टिंग पर जायकऽ रहइन। ई लंबा छुट्टी छलइ। कलकत्ता मे लोक उनका कहलकइन जे आहांकऽ बाबु समानक लाइन मे लागल देखलियइन अइछ त कखनो कांख पर झोड़ा ढ़ोइत। घर मे गाड़ी ड्राईवर, तखनो बदरी ई सब काज अपने करय। पुतोहुकऽ ई सब नीक नञि लागइन। ओ मनेजरकऽ बिगड़थिन। मनेजर बेचारा की करय। ओकर त नौकरी छइ।अपन सईह लय सबके।बिजयकऽ ई सब गप्प कहलकिन कनिया।

बिजय कहिकऽ हारि गेलाह त एक टा रस्ता निकाललाह। बदरी आ रामरतिकऽ गाम रहबाक कहलखिन आ कनियाकऽ अपना संगे मसौढ़ी पोस्टिंग परलऽ गेलखिन।

बदरीकऽ आब कलकत्ता मे नौकर चाकर संग रहबाक आदतभऽ गेल छलइन। पुतोहुकऽ रोब दाब करइत सेहो देख लेने रहथिन।आब ओ गामो मे तकरे नकल करऽ लगलाह।उनका कनिया बाबीकऽ ढहल कोठासँसांप छुछुंदरकऽ आबऽ कऽ आशंका लगइन। उनकर घोठा पर जे मालजाल रहइन, ओकर दुर्गंध लगइन, काज करऽ लेल जे दाई अबइन ओकरो कोनो ने कोनो बहाने दुरगइत करइत रहइ छलाह।अपन बंगली लग ककरो टपअ नञि दइ छथिन। काज तेहार मे कयेक लोक मंगलकइन मुदा नञि देलखिन। निहोरा पर टस से मस नञि भेला। अपनाकऽ कथी दुन बुझअ लागल छलाह।सुख दुख मे ककरो कतऽ जाइतो नञि छलाह। गाम मे से छजितइन। कनी दिन त लोक बर्दाश्त केलकइन। देनाई एक पाइ ने आ रोब सऊंसे। ई कतऽ चलत।

आइ भइड़ गऊंआ बइसल आ बदरीकऽ बाइड़ देलकइन।भतबरीभऽ गेलइन सब सं। ओकरा सबहक लेल बदरी फेर अछोपभऽ गेलाह। गामक पैबंद छथि बदरी आ मुफ्ते मे मारल गेलीह रामरति जिनका लोकक अते सनेह।

पैबंद (पाचम भाग)

समय अपन गतिसँचइल रहल छल। बिजय आब गामक बगल बाला जिलाक कलक्टरभऽ गेल छलाह। बिजईयासऽ बिजय आ बिजयसऽ आब बी एनभऽ गेल छलाह। अधिकारी वर्ग मे हुनका लोक आब बी एन कहइ छल। नबका फैशन छइ ईहो नाम बदलबाक। बिजय नारायण आब बी एन। घरबाली सेहो BN कहइ छलखिन। गरीब गुरबाकऽ त बी एनसँबियनभऽ जइतइ। ऊयाह बियन जे हथ पंखाकऽ कहइ छियई। बियन डोलबइत अखनो लोक गाम घर मे भेंट जाइत। ज्यों गरमीकऽ मौसम होइ आ बिजली गुल हुअय, त देख लियअ ई बियनक चलती। एक हाथसँदोसर हाथ घुमिते इनकर दिन बितितइन। बड़ड भाव बइढ़ जाइ छइन बियन के। कियो इनका छोड़अ नजि चाहइ अछि। सुतऽ बाला घर तक मे इनकर पहुंच अइछ। मुदा अखन जे BNकऽ चर्चभऽ रहल अइछ ओ कलक्टर बिजयक नबका नाम अइछ।आब बी एन जे बच्चा मे कंचा आ गुल्ली डंडा खेलाई छलाह से बिलियड्‌र्स आ स्नुकर खेलाई छथि। एक बेर बड़का मेडल सेहो भेटलइन।

BN कयेक टा पोस्टिंगकऽ लेलाह अइछ। सुखल आ तरिगर बिभागक थाह लाइग गेल छइन। पोस्टिंग केना होइ छइ, सेहो बुझ्इ गेल छथि। अतुका पोस्टिंग त उनका एकटा MP करबेलकइन अइछ।ओना ओ ईमानदार मे गनल जाइ छथि।

शुरू मे जखइन पोस्टिंग भेलइन त लत्ती फत्ती जोइड़कऽ कयेक लोक, संबंधीभऽ गेलखिन। आब पहिनेहे BN कहि देथिन जे पुरा जिले हमर संबंधी अइ। अयबाक मूल बात बताऊ। सब कियो कोनो ने कोनो काजेसँअबइ छलाह। ई नञि किनको मददयलेल कहलखिन नञि बाधे बनलखिन। तखनो लोककऽ सही काजभऽ जाइ। उनका तक पहुंच, लोकक लेल बड़का उपकार छलइ। नहियो चाहिते, जश बढ़इत गेलइन।

पहिल बेर राखी मे एकटा गामक बहिन एलखिन। आइ तक त बिजयक हाथ सुन्ने छलइन राखीक लेल। कहियो कोनो बहिन नञि आयल छलइन आ ने बजेने रहइन। ईहो बहिनकऽ संबंध उनका फरिछायल नञि छलइन।तैयो नीक लगलइन। बहिनकऽ जाइ काल किछु टाका जे जेबी मे रहइन से देलखिन आ पी एकऽ कहलखिन जे इनका घर छोड़बा दियउन।अफसर सबहक जेबी मे कखनो बेशी पाइ नञि भेटत। बिजयक सेहो उएह हाल। पाइकऽ जरूरत परला पर अपन पी एसऽ लइ छलाह। बहिनक मोन खुशीसँफुलल जाइ छलइन। लाल बत्ती बाला गाड़ी मे पहिल बेर जीबन मे बइसली।मोने मोन खुब आशीर्वाद देलखिन बिजय के। आब देखू अगिला बरख राखी मे कयेक गोटे आइब गेलखिन। अइ बेर पी एकऽ कहलखिन जे टेम्पु वा रिक्शा पर बइसबा दियउन। किराया हमरा सलऽ लेब। बिजयकऽ आब बुझाय लागल छलइन जे सब संबंध पद आ पाइसऽ जुड़ल छइ। कतेक नेता, अफसर, डाक्टर, ईन्जीनियर, ठेकेदार, प्रोफेसर , पत्रकार सब उनकासऽ कोनो ने कोनो संबंध जोइड़ लेने छलाह। उनको सरकारी काज मे

टटका सुचना सब अइ नबका संबंधी सबसऽ   भेट जाइ छलइन।दुनु एक दोसरकऽ   उपयोग करय छलाह। बरका लोक अपन इर्द गिर्द रहअ बालाकऽ   केना काज लइ छइ, तइ मे बिजय निपुणभऽ   गेल छलाह।

उनकर गामक लग एक टा राज्यकऽ   मंत्रीकऽ   सेहो गाम छलइन। ओ ओतुका बिधायक सेहो छलाह। अपन बेटीकऽ   बिबाह गामेसऽ   क रहल छलाह। अइ बहाने सब वोटरकऽ   भोज सेहोभऽ   जेतइन। ई नेता सब सदिखन, की केलाहसऽ   फायदा होइत, ओकरे जोगार मे रहइत अइछ। अइ बिबाह मे पटनासँकमिश्नर सेहो आइब रहल छलाह। तैं बिजयकऽ   उपस्थिति अनिवार्य छलइन। बिजय गेलाह आ घुरती मे सोचलाह जे गामो चइल जाइ। बहुत दिनसऽ   भेट नञि भेल रहइन।

गाम बिना खबरकऽ   पहुंचलाह। बदरी आ रामरतिकऽ   खुशीकऽ ठिकाने नञि।बिजय असगरे आयल छलाह। कनिया दिल्ली गेल छथिन। बिजय किछु कालक लेल आयल छलाह। माय कहलखिन जे आयल छह त रुईक जा।किछु गप्प करबाक अइछ। थोड़े कालक बाद दुनु माय बेटा एकांती मे बैसलीह। रामरति सब गाम घरकऽ गप्प कहलकिन। बिजय सेहो अनुभवकऽ   रहल छलाह जे पहिने गाम पहुंचते कतेक लोक उनकासऽ   भेट करऽ   पहुंचई छल। अइ बेर भइड़ दिन बीत गेलइ कोनो कऊओ तक पुछारी करऽ नञि अलइन। सांझु पहर, बिजय सबहक घर भेंट करऽ   गेलाह।

उनका देखते देरी सबके मोन गदगद भेलइ। अगिला दिन बिजयकऽ जाइ काल भइड़ गऊंआ छोरऽ अयलइन। बिजय त दिन राइत तरह तरहकऽ लोकक बीच मे रहइ छलाह। ओ बुझि गेलाह जे गांठ कतऽ छइ। अइ बेर अपना संग माय बापकऽ सेहो नेने अयलाह।

बिजय जखइन नौकरी मे आयल छलाह त उनका एक टा जनता फ्लैट कलकत्ता मे रहइन। आब जे ओ सरकारकऽ सलाना सुचना देलखिन ओइ मे महानगरक आठ टा घरक बिबरण छलइ।ई घर तक उनकर कनियाकऽ खोईंछ मे भेटल छलइन। आब जे सब इनकर बिरोधी छलइन ओकरा सबकऽ मौका भेंट गेलइ। बिजयकऽ आब बुझेलइन जे कतेक लोग उनकासँखार खा कऽ बइसल अइछ। अकर मूल छल- बिजयक बिबाह। उनकर जाइतक मंत्री, अफसर, बिधायक, बेबसायी आरो कतेक शक्तिशाली लोक कथा पठेने रहइन।ओ सब कथा नञि भेला सं, अपन बेइज्जती बुझलक। आ कारण तकइ छल।

ई सम्पत्तिक लेखा जोखा रोज अखबार मे छपअ लगलइ। टेलिविज़न पर बिजयक आमद खर्च पर बहस होबऽ लगलइ। उनकर खिलाफ नारेबाजी आ हो हल्ला शुरूभऽ गेल छल। अइ आइग मे घीकऽ काज केलकइ ओहो भ्रष्ट लोग सब, जेकर गलत काज मे बिजय साझेदार नञि छलाह आ किछु उनके अफसर वर्गकऽ लोक, जे इनकर प्रसिद्धिसऽ जड़ई छल।

अतेक ईमानदार रहलाहकऽ बादो बिजयक खिलाफ राज्य मे माहौल बइन गेल छलइन। बिजय केन्द्र मे डेपुटेशन पर आइब गेलाह। बदरी आ रामरति सेहो दिल्ली मे इनके संग रहअ लगलीह। बिजय गाम समाजकऽ त आब नीकसँबुझअ लागल छलाह लेकिन बदरी त अइ सबसँअंजान। बदरी त गामो मे असगरुआभऽ गेल छल। तैं अइ बेर ओ खुशी खुशी दिल्ली मे रहअ लागल।

दुनु बेकत मे ज्यों घरबाला बेशी सुन्नर रहइ छइ त एहन मे ओकर कनिया बड्ड आज्ञाकारी आ देखभाल करऽ बालाभऽ जाइ छइ। अतउ बिजय देखिते ततेक सुन्नर छथि आ कनिया उनका सामने बेश दबऽ । बिजयक कनिया अइ कमीकऽ अपन बेबहारसऽ भरने छथि। कियो कहि नञि सकइत अइछ कि अतेक पाइ बालाकऽ बेटी। जेकरा कहइ छइ ".सर्वस्य समर्पित" से हाल छलइन। बिजयकऽ पुरा खुश रहबाक प्रयास करय छलखिन। बिजय आब पिछला जिनगी बिसरल जा रहल छलाह।

आब कियो कहलकइ जे चारिम पीढ़ी मे दिन त घुमत मुदा संग संग डीह सेहो बदलत। आब कि बिजयक बच्चा घुइड़कऽ गाम जेतइ। कथमपि नञि। आब बिजय दिल्ली बालाभऽ गेलाह। ईएह उनकर डीह डाबर भेलइन। पीढ़ीकऽ चक्र, ई सांप सीढ़ीकऽ खेल जकांभऽ गेल छइ । क्षण मे ऊपर, क्षण मे नीचा।

बगलकऽ गामबला जे मंत्रीजी छलखिन, उनका बिजय अपन घर आ बंगलीकऽ बेचबाक भारदऽ देलखिन। डीह नञि, आब घरभऽ

गेल छइ। सही दामक इंतजार छइन। घरारीकऽ बोली लाइग गेलइ।

आब बिजयक घरकऽ पता भेलइन-

मकान नं-420, नजि दिल्ली।

पैबंद (छअम भाग)

बिजय आब दिल्ली मे रहनाई शुरूकऽ देने छलाह। अइ महानगरकऽ उनका अनुभव नञि छलइन। कलकत्ता आ बंगलोरे उनका जीवन्त शहर लगइन। अतऽ आइबकऽ त ओ गुमभऽ गेलाह। आब बुझेलइन कि लोक दिल्ली अबइ लेल किअए आफनतोड़ने रहइया।

गाम बला घर आ गाछी सब बिका गेलइन। अइ मे ओ मंत्री बड़का गेम खेलेलक। पिछला चुनाव मे बिजयकऽ दिअयदीसऽ ओकरा वोट नञि पड़ल रहइ। अखनो जाइतक समीकरण मे ओकरा वोट भेटअ बाला नञि छइ। ओ बिजयकऽ नीक गहकीकऽ बारे मे बतेलकइन आ सब पाइ पहिनेहेदऽ देलकइन। पाइ, बजार भावसऽ बेशी छलइ, तैं बिजय पुछताछ केनाई उचित नञि बुझला। जखइन रजिस्ट्री करऽ पहुंचला त देखलाह कि ओ त उनके गामक छट्टल बदमाश सोलकन अइछ। अकरा पर कै कीत्ता मोकदमा चइल रहल छलइ। गलत काजकऽ क पाइ जमाकऽ नेने अइछ। एको टा कुकर्मसँई बाचल नञि अइछ। आब मुदा अपन समाज मे पाइ खर्चक बदला मे जगह बना नेने अइछ। मंत्री जीकऽ चमचा - बेलचा छल ओ। अकर ईनाम ओ दिअय देलकिन।

पढ़ल लिखल लोक सेहो कयेक बेर कनीक फायदा लेल अइ सब मे फंईस जाइ अइछ। चिट-फंड कंपनी सब ईएह छइ ने। बेशी फायदा शुरू मे दइ छइ। बस अपन सर्वस्य लोक बेशी फायदा लेल फंसा दइया। ओकर बाद कम्पनी बंद- घोटाला उजागर। अऊ बाबु,

जखने कियो बेशी फायदा दियय त बुअइझ जाऊ, किछु राज छइ। बिन कारण टिटही नञि बाजय। मुदा सब किछु बुझितो लोक तात्कालिक फायदा कलऽ क फंईस जाइत अइछ। अतऽ देखू ने, बिजयसऽ बड़का अफसर के? पाइ कौड़ीकऽ सेहो कोनो कमी नञि। तखनो एहन आदमीसँकबालाकऽ रहल छइथ जे कतउसँउनका लेल सही नञि। रजिस्ट्री अफसरकऽ सेहो आश्चर्य लगलइ जे साहेब ककरा हाथे बेच रहल छथि। आब ऊपाये की। मंत्रीजी अपन एकटा आदमीकऽ पठौने छलाह- ओइ सोलकन संग। बिजय रजिस्ट्री आफिससँपटना लेल घुरी गेलाह। चट दं गाड़ीकऽ दुनू शीशा उठा लेलाह आ किछु पढ़अकऽ नाटक करऽ लगलाह - ककरोसँआंईख नञि मिल जाय।

आब बिजयक घर मे ओ सोलकनमा रहत। ई घर सब दिअयदक बीच मे पड़इ छइ। आइ तक कियो दोसर जाइत अइ मे एको धुर नञि कीनने छल। ज्यों किछु बिकेबो करय त आपसे मे सबकऽ लइ छलाय। मंत्रीजी बदला लेलक कसिया कऽ ।

बिजय दिल्ली आइब गेल छलाह- डीहक रजिस्ट्री सोलकन संकऽ क। बदरीसँपुछनाईयो उचित नञि बुझला। फोन परकऽ गप्प सुअइनकऽ बदरी आ रामरतिकऽ ई बुझा गेल छलइन जे बेचऽ जा रहल छथि। आब उनकर सबहक सबटा भार त बिजय उठेने छथिन- तखइन कथीकऽ पुछा-पुछी। घर मे सन्नाटा पसरल छइ। बिजय आइ तक किछु बेचने नञि छलाह। ई काज उनको ठीक

नञि बुझेलइन। पाइलऽ क की करताह। कथीकऽ कमी छलइन। रामबाबू कतेक जतनसँई घर बेटी जमाय ले बनबौने छलाह। सब वस्तु एक नम्बरकऽ लागल छलइ। अकर नक्शा अपने इंजीनियर साहेब कतऽ जाकऽ फाइनल केने छलाह। रामबाबूकऽ ई निशानी छलइन। बिजयक कनिया तनुजाकऽ सेहो दुख भेलइन। ओहो घर मे कहियो बेचऽ बाला गप्प नञि सुनने छलीह।

सबकऽ अपन अपन याद जुड़ल छलइ। रामरति केना दुरागमनकऽ क अइ घर मे आयल छलीह। पहिने रिक्शा पर नैहरसऽ बिदा भेलीह। फेर घर लग आइबकऽ महफा मे बइसल छलीह।ओना नैहरसँसीधा महफोसँआइब सकइ छलीह। ओ महफा बाला बेशी पाइ मंगलकइ। ताई लेल रिक्शा कयल गेलइ। रामरतिकऽ नैहर अर्थक हिसाबसँबड पातर। सौराठ सभासऽ बिबाह ठीक भेल छलइन। शुद्धक अंतिम दिन छलइ। नञि बदरीकऽ कोनो कथा आयल रहइन आ नञि रामरतिकऽ बाबूकऽ कोनो ठेहगर कथा अभरलइन। अंतिम दिन एकटा घटक कहलखिन जे ई बदरी बाला काजकऽ लियअ। बिबाहक खर्च टा लागत। रामरतिकऽ बाबूकऽ जेबी मे एको नबका पाइ नञि। फेर जेना तेना सब भेलइ। अहिना होइ ओइ जमाना मे । ककरो बेटी कुमाइड़ नञि छुटई-सबके घर बर होइ। बाकी त अपन भाग। एक बहिन सासुर हाथी पर जाइ आ दोसर कतऽ सब दिन चुलहो नञि जड़ई। रामरतिकऽ नैहर मे भीतक घर रहइ। अतऽ त कच्चा ईंटाक घर छलइ। नैहर मे बाबूकऽ दुटा घर भीतक अलावा किछु नञि, अतऽ त छोटे छिन गाछी त रहइ, बंसबिट्टी सेहो छलइ। ओना संझिया पोखइड़ मे

दु पाइ ओकरो सबकऽ हिस्सा छलइ। लेकिन फरछायल नञि रहइ। सभा मे कियो कहलकइ ओकर बाबुकऽ जे बरकऽ जथा पात नञि छइन। ओइ पर ओकर बाबु झटदऽ कहलकइ जे दुत्ती बर त नञि छइ, कोनो अंग भंग त नञि छइ, सऊतिन तर मे त नञि रहबाक छइ। देह-दशासऽ स्वस्थ छइ। अपने कमेतइ खेतइ। बाकी अपन भाग। आइ सब टा गप रामरतिकऽ याद पड़इ छलइ। आंईख मे नोर भइड़ जाइ।

ऊयाह हाल बदरीकऽ रहइ। कनिया बाबी बाला सब गप याद पड़इ छलइ। आब अफसोस होइ की उनके लिख देतियइन। बिजयक बिबाह मे त ऊयाह एक पैर पर ठाढ़भऽ क सब समहारलीह। आब लोक की कहइत हेतइ-गाम मे। सब थु थु त करीते हैत।

ई सब काज बिजय भाबना मे बहिकऽ केला। दु चाइर दिन कनी मातम जेकां छलइ। सब दुखी छल। कियो अइ बिषय मे ककरोसँचर्च नञि करय। सबकऽ सब गप बुझल। ओना मंगनी त कियो देलकइ नञि आ नञि कियो जबरदस्ती छिनलकइ। अपने सोइच समइझकऽ निर्णय लेल गेल, फेर अतेक पश्चाताप कियैक। ईएह छइ लगाव। जतऽ जतेक स्नेह ओतऽ टुटला पर ओतेक टीस।

समयसँपैघ किछु नञि।सब आब ओइ बातकऽ बिसइड़ गेल।

जीवनक पहिया आगु बइढ़ रहल छल। बिजय आब गोल्फ खेलाय लगलाह अइछ। शूरू मे त शइन आ ड़इबकऽ खेलाई छलाह। आब त बेशी काल औफिससऽ सीधा गोल्फ कोर्स चइल जाइत छइथ। ओतऽ सऽ देरीसँघर घुड़इत छइथ। कनिया तनुजा सेहो किट्टी पार्टी सब मे सदिखन जाइत रहइत छइथ। कहियोकऽ इनको घर पर सब अबइ छइन। जहियाकऽ इनकर घर पर पार्टी होइ छइ तहिया त बुझ्झु बदरी आ रामरतिकऽ जेलो मे जेल। एक कोना मे चुपचाप परल रहइ छथि दुनु गोटे।

बिजयकऽ दु टा बेटा भेलइन। जन्मो ओकर सबहक मातृक मे भेलइ आ लटकल सेहो ओम्हरे बेशी रहइत अइछ। जखइन बिहार मे पोस्टिंग रहइन त उनका सबहक हिसाबे ओतऽ स्कुले नञि छइ। जतऽ नानाकऽ फैक्ट्री छइन हिमाचल मे, उम्हरे कतउ ओहो सब पढ़ई छथि। बिजय लग कम अबइ छथि। छुट्टी मे सेहो मातृके। बदरी लेल सब धन सन। जतऽ रहैथ नीके रहैथ। कलकत्ता मे कतेक नौकर चाकर रहइन। अतऽ त एक्के टा छइन, उएह खेनाईयो बनबइ छइन आर बजारो हाट करय छइन। कयेक बेर बिजयक ससुर चाहलकिन जे किछु नौकर चाकर पठा दइलाय। बिजय अकर सख्त बिरोधी। बिहार मे जे उनकर खिलाफ अखबार बाजी भेलइन, ओइसँओ हरदम सचेत रहइ छथि। बेटा सब पैघभऽ रहल छइन। बिजयक बारे मे कोनो भी अनट सनठ समाचार, ओकरा सबकऽ दिमाग पर खराब असर करतइ। ओ तनुजाकऽ बुझबइत रहइ छथिन जे ओ ऐना नञि करु।

बदरी आ रामरति, बऊक बहीर जकां परल रहइ छथि। आब जाइथ

त कतऽ जाइथ। कलकत्ता वाला जनता फ्लैट तहिये बेच लेने रहइत। गाम सेहो सुड्डाह। आब की रास्ता। कोना मे परल रहइ छथि। चलनाई फिरनाई छुअइट गेल छइन। मोनो खराबे रहअ लगलइन। उनका सबकऽ हिदाइत छलइन जे जखइन बाहरकऽ लोक वा किट्टी पार्टी होइ तखइन बहरी घर मे नञि अबइ लाय। ओना, नञि कोनो रोक छलइन। असली गप जे समये नञि छलइ ककरो लग। बदरी आ रामरति अपनाकऽ बिजयक घरक पैबंद बुझअ लागल छलाह।

पैबंद (सातम भाग)

बिजय आब बेशी काल घरसऽ बाहरे रहइ छलाह। तनुजा सेहो अपन सखी बहिनपा मे व्यस्त छलीह। कहियो काल गाम समाजकऽ हरायल भुतियाल कियो पहुंच जाइ छलइन- बदरी आ रामरतिकऽ जिगेसा मे। ज्यों आगंतुक किछु सलाह तनुजाकऽ बदरीकऽ बारे मे दइ छलखिन त उनकर नाक कान लालभऽ जाइ छलइन- आ उनका चाहो पर आफत। एहन देहक स्थिति रामरतिकऽ नञि रहइन जे ओ अपने उईठकऽ बना लइतइथ। नौकरबा त अपने देहचोर रहइन। जाबइत कियो कहितइ नञि -ओ नञि उठितय। दस बेर त तमाकुए खाय बालकोनी मे जाइ छलाय। ओना सामने बला घरक काजबालीसँओकरा घुट्टा सोहार छलइ। जखने मौका लगइ, गप्प करबाक मे लाइग जाय। घर मेकऽ ओकरा किछु कहितइ। ओ बुइझ गेल छल जे बदरी आ रामरतिकऽ जेहने रहने, ओहने नञि रहने। नौकर चाकरकऽ ई बुझबाकऽ शक्ति भगबान तरफसँअद्भुत भेटल छइ- कोन पाहुनकऽ केहन आगत स्वागत होइन। कयेक लोककऽ त बिना चाहेकऽ जाय पड़इ छइन। आर नञि किछु त तखने बाथरूम मे घुअइस रहथ आ जखइन बुझा जेतइ जे पाहुन गेलाह, तखने निकलथ। ऊपरसऽ बजबो करत- जाह चइल गेलाह। हम त काफी बनबऽ जाइ छलऊं। सुइनकऽ त आइग लाइग जाइन बदरी के। मूदा उपाये की। बुझई छलाह जे कतेक परेशानीकऽ क दिल्ली मे कियो अबइ छइ। अपन बुझलक तखने ने आयल। आ अतबोसऽ ओ गेल। आब कम्मे उमेद जे ओ फेर आऊत। ईएह त तनुजा आ नौकरबा दुनु चाहइ छलाह।

बिजयकऽ इमहर अपन साद्धु कतऽ उपनैन मे जायकऽ मौका लगलइन। बड्ड नीक लगलइन ओतऽ ।दुनु दिशक लोक आयल छलइन। जगक सफलता अही पर ने, जे कतेक दुरक कुटुम्ब अयलाह। उनको सेहन्ता भेलइन कि हमरो बेटा सबकऽ उपनैन अहिना करी।

जखइन बेटाकऽ स्कुल मे छुट्टी हेतइन, ओइ समयक दिन देखेबाक लेल पंडी जीकऽ कहलखिन। बदरी-रामरति त खुशीकऽ मारे पागल भेल छइथ। पहिल खुशी जे बेटा उपनैन बुझलखिन दोसर अइ मे कतेक लोकसँभेट होइत। बिजयकऽ उपनैन त ओ कपलेशर मे जाकऽ करौने छलाह। या त मनौती रहइ छइ या खगता रहइ छइ- लोक कपलेशर मे करयया।कऽ सब आइत, कतऽ रहत, केना भोज, की बिदाई,कऽ बनत ब्रह्मा, हजमाकऽ बेबसथा, केशक भसान आरो कतेक तरहक गप्प। पंडीजी ततेक चलता पुर्जा छल जे ओ सबहक संपर्क मे। ओकरे बेशी इमहरका भार देल गेलइ। बदरीकऽ सासुर दिशसऽ आयल छल, तैं तनुजाकऽ ओकर योग्यता मे कोनो संशय नञि छलइन।

आब एकटा समस्या आइबकऽ सोझा ठारभऽ गेलइन। बरुआकऽ आचार्यकऽ बनत। कतऽ दन अपने खानदानक लोक बइन सकइ छइ। बदरीकऽ त गामसऽ संबंधे नञि। ओना पंडी जी कहलखिन जे शास्त्र मे सबहक बेबसथा छइ। कुशक आचार्य बइन जेताह। ऊपरसँसीताजी बला खिस्सा सेहो सुना देलखिन जे कोना

कुशक बनाओल गेल छलइ।

ई पंडीजी त संकटमोचन बनल जाइ छलाह। सब समस्याकऽ समाधान अपन पतरा मे रखने छलाह। उनकर मोजर हर जतरा मे बढ़ल जा रहल छलइन। रामरति एक दिन जखइन नञि कियो रहइ त पंडीजीकऽ कहलखिन- एहन कतउ भेलइ अइछ। कुशक आचार्य।।

-आहां करौने छी एहन उपनैन।

पंडीजी चुप।

रामरति आगु बिजली

-आहां अपन जे मोन होइया करू बिजयक संग। मुदा कुशक आचार्य बाला सलाह नञि दियउन। आचार्यकऽ अलग स्थान होइ छइ। ओकरा मरला पर कर्ते जेकां चेलाकऽ सेहो कयेक कर्मक बिधान छइ। एक बेर गाम मे समाद देथिन बिजय। कियो ने कियो गछबे करतइन।

पंडीजी त बुझिते छलाह ई सब।

पंडित लग ज्यों समाधान नञि त लोक पंडित बदइल लइत अइछ। पंडीजी जजमानक खुशीकऽ लोकाचार कहइ छथिन।

बिजयकऽ अयलाह पर पंडीजी कहलखिन-

कियो अपन लोक आचार्यभऽ जाय त उत्तम।कुश वाला अंतिम,

ओना निखिद्ध नञि।

बिजय तखने कनिया बाबीकऽ बेटाकऽ फोन केलखिन आ आचार्यकऽ भार देलखिन। ओ सहर्ष गइछ लेलखिन। आरो दिअयद बादकऽ उनके जिम्मा देलखिनलऽ क अबइ लेल दिल्ली।

सासुरबाला बरका लिस्ट छलइन। गामसऽ लोक आइत आ दिल्ली मे जे सब संबंधी छैत ओ नञि रहताह त केना दन लगतइ। सबहक कतऽ बिजय दुनु बेकत गेलाह आ उपनैनकऽ लियैन कैलाह।

असली बात त ई रहइ जे उनकर साढुकऽ गऊंआ बड़ड आयल रहइन उपनैन मे। बिजय ओइसँकोन कम। डेकसी आ इड़खा, मनुक्खक सोभाव छइ।सब मे कमोबेश रहइ छइ। नीके कहू एकरा। अही बहाने सबसँभेट भेलइन। पहिल बेर संबंधी सबहक घर गेल छलाह। कियो नीको स्थिति मे छलाह आ कियो लचरलो त कियो संघर्षो। किछु जगह त गाड़ी जयबाक रस्तो नञि छलइन। ड्राईवर कहबो केलकइन-

साहब पता नहीं कहां कहां संबंधी का घर ढुंढकऽ जाते हैं।

बिजयकऽ जाइते मातर देखल सुनल एरिया लगलइन।बुझेलइन जे ओ एतऽ आयल छथि। दिमाग पर जोर देलाह त याद आइब गेलइन जे अहिना त उनकर कलकत्ताकऽ जे जे कलोनी छल।

जे जे कलोनी कलकत्ताकऽ होअइ या दिल्ली या बंगलोर, एक्के रंग लोक आ एक्के रंग सब ताम झाम बेबसथा।

कोठी बाला मोहल्ला मे से समानता नञि भेटत।

"मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना " वाला हाल रहइ छइ। नञि दु लोकक बिचार मिलतइ आ नञि घर।

उपनैनक दिन आइब गेलइन। एकटा घरे लगक मंदिर मे उपनैनक जगह निश्चित छलइन।सासुर बला आ अपन गाम बला दुनु पाहुनकऽ रहअकऽ फराक बेबसथा छलइन। ई सब मंदिरक लगे छलइ। टहलइतो आइब सकइ छी। तखनो दु टा गाड़ी दूनु जगह लागल रहइ- पाहुन सबहक सुविधा लेल।पंडी जी एक्के दिन मे उद्योग, चरकुट्टा चरकुट्टी, माइट मांगर, कुमरम सलऽ कऽ उपनैन तक करा देलखिन। एकऊ टा बिधि छुटअ नञि देलखिन। जयंती जनता एक्सप्रेस बनल छलाह पंडी जी। ऊपरसँकोल्ड ड्रिंक ब्रेक्स सेहो। सब खुशी खुशी भेल। आइ कम्मे ब्राह्मण भोजन छलइन। पंडी जी विद्यापीठसऽ बजौने छलाह। गाड़ी पठौलकिन, आ सब एक संगे आइब गेल। बरूआ हाथे सब ब्राह्मणकऽ दक्षिणा सेहो दियेलखिन। ब्राह्मण सब दक्षिणा भेटलाकऽ बाद खुब प्रशस्त मंत्रोच्चारकऽ संग आशीर्वाद देलखिन आ बिदा भेलाह।बिजय अपने एकटा आचार्य बइन गेल छलाह ई सब झंझटसँबचबा लेल। तनुजा, पंडीजी आ बिजयक एकटा सासुरक लगुआ भगुआ सब बेबसथासऽ जुड़ल छल।

असली गप त काजक बाद निकलइ छइ। आब ई भेद खुजलइ जे बिजयक सासुरक लोक लेल एसी गेस्ट हाउस आ इमहरका संबंधी लेल धर्मशाला जेकां होटल। ऊमहर नौ छौकऽ बेबसथा आ इमहर सुखा-सुख्खी। उमहर बाला सबकऽ बिदाई मे पटोर आ ब्रासलेटक धोती आ इमहर चांदनी चौकक फुटपाथी कपड़ा लत्ता। उमहर बालाकऽ पुछारी पर पुछारी, इमहर कोनो ऊचावर्च नञि। नञि खाईकऽ कोई पुछअ बाला आ नञि कोनो आरे बार्ता। बदरी आ रामरति निरीह जकां बइसल देखइ छलीह। ओ सब त अतबेसऽ प्रसन्न जे हमर पोताकऽ उपनैन त भेल।

चारिम दिन रातिम छल। ओहि दिन दिल्ली बाला आन समाज आ बिजयक अतुका लोकबेदकऽ भोज नञि, पार्टी छलइ। अइ मे सब तरहक बेबसथा रहइ। गाम बला लोक सब सेहो शामिल भेल अइ पार्टी मे।

जेना घुरती बरियातीकऽ कियो पुछइ नञि छइ। भेल बियाह मोर करताह की।

आब त उपनैनभऽ गेलैन। शोभा सुनर अपना अनुसारे पुरा छलइन। आब किनको कुनो पुछारी नञि। लोक बिजय कतऽ सऽ बिदाभऽ क, आन आन संबंधी कतऽ चइल गेल।

बिजय सेहो केना गामक लोकक भावनासऽ खेलेलाह- से देखू। कनिया बाबीकऽ बेटाकऽ आचार्य बनबा काल कहलखिन -

जेना बाबी हमर बिबाह कलकत्ता आइबकऽ सम्हाइड़ देली, ओहिना आहां आइबकऽ हमर बेटाकऽ उपनैनकऽ जग सम्पन्न कराऊ। हमरा आहांकऽ छोड़ि क,कऽ अप्पन अइ।

आइ तक बिजय किनको काज मे बिहार मे रहितो नञि उपस्थित भेल छलाह। कोन मुंहे ककरो अयबाक अपेक्षा रखितइथ।

सब किछु बुझितो, गामक लोक आयल। फेर ओकरा सबकऽ उपयोग, अपना सेहन्ता पुरबइ लेल,कऽ लेल गेलइ।अइ उपनैनक बाद फेर कहियो कोनो संबंधी कतऽ बिजय वा उनकर परिवार नञि गेलइन। किछु लोक जे आदतसँमजबुर अइछ, हांजी हांजी करऽ मे, ऊयाह सबकऽ एकदिसाह संबंध छइन।

गामक लोक अइ उपनैन मे अपनाकऽ पैबंद जेकां बुझई छल।फेरो छला गेल ओ सब।

ईएह छइ समाज।आइये नञि, सबदिना ईएह रहिलइ अइछ। कहियो कनिया बाबी लेल बदरीकऽ जे स्थित छलइन, उयैह आइ बदरीकऽ बेटाकऽ लेल, कनिया बाबीकऽ बेटाकऽ स्थित छइन। जेकरा जेतऽ , जे भेटई छइ, दोसरसँफायदा उठबऽ कऽ ताक मे रहइ छइ।ई अर्थे तक सीमित नञि अइछ, अकर दायरा बढ़ल जा रहल अइछ।कहावत छइ-

"मतलब निकल गया तो पहचानते नहीं"।

आब बिजय आ तनुजा,किनको नञि चिन्हइ छथिन। बिजय त टोकला पर लोक लाजे हाल चाल गऊंआकऽ पुछियो लइ छथिन। तनुजा त टोकलो पर कहइ छथिन- "हम नञि चिन्हइ छी"।

लोक कहइ छइ जे तनुजाकऽ असली रुप आब बाहर एलइन अइ। ओ त बिजयक कारण, बदलल बदलल छलीह।आब बिजयकऽ समग्रसऽ काइटकऽ अपन आंगुर पर नचा रहल छथि।

भोजपुरी मे सेहो तनुजा जेकां लोक पर कहल गेल छइ-

" सियरा उहे बा, रंग बदलले बा"।

बदरीकऽ होइ छइन जे अइ जीबनसऽ मरले नीक।

जे सब कहियो नञि सोचलाह, से सब भगबान पुराकऽ देलखिन। आब जे चाहइ छइथ, ओइ पर किछुओ नञि। भगबानोकऽ लीला अपरम्पार।

केकरा परतापे सब नीक भेलइन, आ केकरा सरापे ई दुर्दिन भेलइन- सोचइत दिन घसियाड़इ छथि।

पैबंद (अंतिम भाग)

१

बिजय घर मे कम्मे काल रहअ लगला अइछ।देर राइत घर अबइ छथि। पैर डगमगाइत रहइत छइन। कखनोकऽ ड्राईवर सेहो हाथ धेने रहइ छइन। आइबकऽ सीधे बेडरूम मे चइल जाइ छथि।बेशी तर रतुका खेनाई बाहरे खाकऽ अबइ छथि। तनुजा सेहो कयेक बेर इंतजारकऽ क सुइत रहइ छथि। बिजय लेल एक्के लोग जागल रहइ छइन घर मे। ओ छथि रामरति।

बच्चेसँजाबइत बिजय नञि अबइ छलाह, ओ अपनो नञि खाई छलीह। अखनो खिड़कीकऽ शीशासँतकइत रहइ छथि। जखन बिजय आइब जाइ छथि, तखने बिछान पर परऽ जाइ छथि। बिन बिजयकऽ देखने निन्न नञि होइ छइन। बिजय, रामरतिकऽ घरक बत्ती जड़इत देखकऽ बुइझ जाइ छथि जे मां जागल छथि। तनुजाकऽ सुतल देखकऽ त पहिने फझइत करय छलखिन लेकिन धीरे-धीरे किनको किछ नञि कहइ छथिन। रामरतिकऽ बुझाई छइन जे बिजय, बदरी जेकां नशा करऽ लगला अइछ। बदरी जहिया नशाकऽ क घर घुरय त सटक सीतारामभऽ जाय। चुप्पी सधने रहय। बाजत त मुंह महकतइ, तैं चुप्पे रहय। बिजय पर ओकरा बिशबास नञि होइ छइ जे ओ निशा करताह।

तनुजा बेटा सब लग गेल रहइत। सुतली राइत बदरीकऽ छाती मे दर्द उठलइ। रामरति तेल मालिशकऽ देलकिन। किछु आराम भेलइ। फेर कनी काल बाद बड़का उल्टी बिछाने परभऽ गेलइ। रामरति जाय लागल बिजयकऽ ऊठबइ लेल त बदरी ओकरा मनाकऽ देलकइ। ओकर बाद ओकर हाथ पकइड़कऽ कानऽ लगलइ। आब हम जा रहल छी। जमराज ठार छथि। तौं बिजयकऽ देखियौन।

ई अनट बिनट गप सुअइनकऽ रामरति डरा गेल। कहबो केलकइ जे ऐना किअए बजई छं। ठीकभऽ जेबह। पहिल बेर कोनो दुखित परलह अइछ। गैसभऽ गेल हेतह। तैं ऐना उल्टी भेलह।

बाईज त देलक रामरति, मुदा ओकरा लक्षण ठीक नञि बुझेलइ। ओ बिजयकऽ जा कऽ उठेलकइन। बिजय कहूना उईठकऽ एलाह। नौकर सेहो ऊठल। बिजय तुरत्ते डाक्टरकऽ फोन केलखिन। ओ आयल लेकिन ताबइत बदरी देह छोड़ि चुकल छलाह। तखने तनुजाकऽ फोन भेलइन। भइड़ राइत रामरति आ बिजय, बदरीकऽ लाश लग बइसल रहल। आंईखसऽ नोर झड़इ लेकिन दुनु गोटा मे ककरो मुंह नञि खुजई। मोन करय रामरतिकऽ भोकासी पाइरकऽ कनञि के, अतऽ कऽ सुनतइ। बिजयकऽ अपने दहो बहो नोर खइस रहल छलइन।

भोर भेल। किछु बिजयक कलोनी बाला आ आफिसक लोक आयल। तनुजा असगरे घुरलीह। बेटा सबकऽ नञि अनलखिन या नञि अयलइन, सेकऽ पुछतइन। दस-बारह लोक श्मशान घाट गेल। ओ उपनैन बाला पंडी जी सेहो पाछुसऽ दौरल एलाह। बिजयक कन्हा पर उतरी परल छइन। बिजयकऽ मोन भेलइन जे गाम मे सबकऽ खबर तकऽ दी। तनुजा चट ज़बाब देलखिन जे देखलियई उपनैन मे केहन लीला ओ सब केने रहय। कुनु काज नञि छइ- ओकरा सबकऽ बजबय के। बिजय मौनभऽ गेलाह। रामरति सकऽ पुछइया।

पंडीजी फेर संस्कृत बिद्यापीठसऽ ब्राह्मण सबकऽ बजेलाह। एकादशा-द्वादशा मे ऊयाह सब आयल। कहूनाकऽ दरिद्र सबकऽ जेना कर्म सम्पन्न भेल।

रामरति त एकदम्मे असकरुआभऽ गेलीह। बदरीकऽ टहल टिकोरा मे समय बीत जाइत छलइन। ऐना जीबन पहाड़ लगइन। बदरीकऽ पहिल बरखीसऽ पहिनेहे रामरति मइड़ गेलीह।उनका ई चिंता छलइन जे बिजय, बापक बरखी करताह की नञि। ओ पंडीजी उनका बुझबइ छलइन जे जे बजट होइन बरखी के, से बिजय उनकेदऽ दऊथ। ओ अपनकऽ देतइन। रामरतिकऽ ई सब ठीक नञि बुझना जाइ छलइन। ओहीसऽ परेशान रहइ छलीह। उनका त ई पंडित एक रत्ती नञि सोहाइन। तनुजाकऽ ओ ओहिना प्रिय। बजई जे छलीह-हंईस हंईस क- बाह रे पंडीजी, आहां त हमरा

सब समस्यासऽ ऊबाइड़ लइ छी।

रामरति मोन मे बजइत- कपार उबारतइन। बिजयक पाइ ठगइ छइन ई पंडितबा।

बिजयकऽ साफ कहब छलइन जे माय घर मे असकर नञि रहत। अइलऽ क तनुजा, बहिन कतऽ वा नैहर नञि जा पबइ छलीह। आइसऽ उनका रामरतिकऽ अरूदा, पहाड़ लगइ छलइन। फोन पर कतेक बेर बजइत रामरति सुनने छलीह जे ई बुढ़ी नञि जानी कहिया टघरती। कतेककऽ अंकुरी खेतीह। रामरतिकऽ देह सिहइड़ जाइन ई सब सुअइन क। सोखा बाबा आ भगबतीकऽ गोहरबइत जे आबलऽ चलु। ज्यों बिछान पर पइड़ जायब त ई पुतोहु जीते माइड़ देत।

भगबती सुनलकीन। सुतले रही गेली रामरति। चलिते फिरते चइल गेलीह।अगल बगल बाला उनका भागमंत कहइन। असली त उनके बुझल।

बिजयकऽ बापक श्राद्धक अनुभव छलइन। अइ बेर सब चटपटभऽ गेलइन। पंडीजीकऽ जे संग छलइन।

बिजयकऽ बेटा सब बाबा-बाबीकऽ किनको काज मे नञि आयल।

ओ सब नाना नानी आ मौसा मौसीकऽ अलावा कोनो आर संबंधी होइ छइ, से बुझबे नञि केलकइ। बाकी सब लोककऽ अंकल आंटी मे ओ राईख लइ छेलाह।

दुनु बेटा पारा पारी बिदेश गेल। एक टा पढ़ई लेल आ दोसर नौकरीकऽ लेल। छोटका जे पढ़अ गेल छलइन से ओतइकऽ अपनासऽ पैघ लड़कीसँबियाहकऽ लेलकइन। बिबाहक बाद बिजयकऽ खबर केलकइन। अतबे नञि, भारतक नागरिकता सेहो छोअइड़ देलक ओ। जेठका बेटाकऽ बियाह बाद मे भेलइन। अइ मे अतबे संतोख जे लड़की भारतीय त कमसँकम रहइन। अइ बिबाह मे बिजय गेल छलाह।

बिजयकऽ ई सब बेटाकऽ फैसला सही नञि लगइ छलइन। तनुजाकऽ सब बुझल छलइन ओ बिजयकऽ नञि बतबइत छलखिन। उनकर पुर्व सहमइत छलइन।

आब तनुजा, दिल्ली आ बिदेश अबइत जाइत रहइत। बिजय पर उनकर कोनो ध्यान नञि। कखनो अइ बेटा त कखनो ओइ बेटा। आइ देश त ओइ देश, अही मे ओझरायल रहलीह।

बिजय अबसाद मे चइल गेलाह। लंबा छुट्टी पर जाय परलइन।ककरो

मोनक गप कहि नञि सकइ छलाह। तनुजा बेटा पर ध्यान देलीह लेकिन बरकऽ गांठ नञि बुअइझ पेलीह। ईएह सबकऽ बीच,बिजय असगर अस्पतालकऽ बेड पर, अइ दुनियाकऽ छोड़िकऽ चइल गेलाह।

एकटा उठइत घर, धरधराकऽ ढही गेल। अइ भीड़ मे सब ई परिवार कऽ बिसइड़ गेल।

अप्पन लोकक आदेश छल जे मैथिल बड्ड आशावादी होइत छइथ। किछु बाम भईयो जाइ छइन तऽ ओकरा "लिखल" माइनकऽ स्वीकारकऽ लइ छइथ। पैबंदक अंत "नीक" होबाक चाही।

२

बिजय बाबुकऽ मरलाकऽ बाद आब एकटा नब समस्या सोंझा एलइ। सासुरक जे अतेक सम्पइत छलइन ....ओकर व्यवस्था केना होइ। तनुजा त ललबबुनी छलीह। उनका लोक ठकनाई शुरूकऽ देने छल। नञि ठीकसँमकान सबसँकिराये अबइ छलइन आ नञि नैहरक जमीनसँउपजा बारी। जे कमतिया आ देबानजी सब छलखिन सब झूठ फुस कहिकऽ बहलबइ लागल छलखिन। बिजय बाबुकऽ रूतबाक आगु सब ठीकसँचइल रहल छलइ। आब कखनो अइ जमीन पर झंझट त कखनो ओइ जमीन पर, ईएह सब समाद अबइत छलइन। नैहर जईते सब समस्यालऽ कऽ आइब जाइ छलइन। तंगभऽ गेल छलीह तनुजा। होइन जे बिजयकऽ जाइते सब श्रेयंश खत्मभऽ गेल होइ जेना।

एक बेर त हद्देभऽ गेलइन। समाद एलइन जे पटना बला मकानक किरायादार घर खालीकऽ देने अइछ। दोसर आइत त घर देल जेतइ। तनुजा दिल्ली अयलाकऽ बाद कहियो पटना वाला मकान देखहो नञि गेल छलीह। एकटा सबंधिये किराया वसूल कऽ आगु-पाछु पाइ पठा दइ छलखिन। दस महीनाक बाद ओहिना मोनभऽ गेलइन, त पटना गेलीह। घर पर जाइ छइथ त देखइत छथि जे किरायेदार त अछिहे। अगल बगलसँपता लगलइन जे घर कहियो खालीये नञि भेलइन। आब त उनका संबंधी सब परसँबिसवासे उठअ लगलइन। सब लुटहे लागल छलइन। एहन बिसवासी लोक , एना

झुठ बाईजकऽ पैसा ठगत.....सोइचकऽ परेशानभऽ गेल छलीह।

सब बात दुनु बेटा कऽ कहलखिन। बड़का बेटा बिपुलकऽ गाम घरसँलगाव बुझेलइन।छोटका विनयकऽ ओतेक मतलब नञि, अइ सब सं। महीना दिनक भीतर बिपुल सपरिवार भारत अयलाह।

तनुजाकऽ संग बिपुल आ उनकर कनिया सब संपइत सब देखलाह। ओकर बाद मातृक गेलाह। गाम मे त किछु छलहेने नञि, तैं नञि गेलाह। आब अफसोस भेलइन जे एकटा ठांवो रहितै गामो मे। "जब चिड़िया चुग गइ खेत, फिर क्या पछताने।" आब ऊपाये की!

मातृक मे बंटवाराकऽ बादो बड्ड संपइत छलइन। बिपुलसँबेशी उनकर कनियाकऽ गांव नीक लगलइन। बिदेशो मे कोनो बढ़िया स्थित मे ओ सब नञि छल। गामक जीवन ओकरा शुकुन वाला लगलइ। पहिले बेर ओ बिशनपुर गाम आयल छल। ततेक ने लोक भेंट करऽ अयलइ। लोकक आबेश देख कऽ ओ अभिभुतभऽ गेल छल। बिपुल आ उनकर कनिया दीप्ति निर्णय केलक जे ओ सब आब बिशनपुर मे रहत आ अतइसऽ सब संपइतकऽ देखभाल करत।

तनुजाकऽ खुशीकऽ ठेकाने नञि। अपना लेल त उनका पेंशने बहुत छइन। संपइतकऽ जे छीछालेदर होइ छलइन, तइसँओ दुखी छलीह।आब सब सम्हइड़ जेतइन, से उनका भरोस छलइन।माय -बापकऽ मरलाकऽ बाद बहिन -बहिनोई संपइतकऽ चक्कर मे इनका दिअयद बुझअ लागल छलखिन।

बिपुल आ दीप्ति एक महीना रही कऽ बिदेश गेलाह आ ओतऽ सँबोरिया बिस्तर बांईधकऽ भारत घुइड़ गेलाह। आब अप्पन आशियाना बिशनपुर मे बनेला।

गाम मे खेती वैज्ञानिक तरीकासँशुरू कयलाह। सबसं पहीने माइट आ पाइनक जांच करेलाह जे की उपजा सकइ छइथ। ओकर बाद ओही अनुसारे फसल सब बाऊ कयलाह। जन सबहक संग अपने दुनु बेकती खेत मे रहइ छलाह। गामक लोककऽ त एकटा खिन्नांश करबाक मौका भेटलइ। बिपुल अइ सबसँकनियो नञि विचलित भेलाह। बिपुलसँबेशी दीप्ति अपन निर्णय पर डटल छलीह। धीरे धीरे सब शांतभऽ गेलइ।

ततेक ने उपजा भेलइन जे खिन्नांश करऽ बाला सब बिपुल लग सलाह मांगऽ आबऽ लगलाह। बिपुल आ दीप्ति यथासंभव सबकऽ मदद करऽ लगलखिन।

अइ परोपाटा मे ई नब प्रयोग छल। कियो आइ तक माइटक जांच कराकऽ खेती नञि कयने छल। बिपुलकऽ सफलता देख कऽ दोसरो गामसँलोक आबऽ लगलइन। बीच बीच मे बिपुल दोसरो शहरक संपइत सबकऽ देख सुअइन अबइ छलाह।

सारा दिन त खेती नञि होइ छइ। बाकी समय मे दीप्ति गामक स्कुल मे बिना पाइकऽ अंग्रेजी बिषय पढ़बऽ लगलीह। लड़की बच्चा सबकऽ घर पर अलगसँबिना पाइकऽ पढ़बइ छलखिन।

गामक आर सामाजिक काज मे बइढ़ चईढ़कऽ दीप्ति भाग लेबऽ लगलीह।चाहे स्कुलक समिति होइ वा अस्पतालक, चाहे सड़क बनञित होइ वा पुलिया, चाहे गरीब गुरबाकऽ कोनो कष्टक समय

होइ वा धनिकहाकऽ कोनो सलाहक काज- सब जगह दीप्तिकऽ सेवा हाजिर रहइ छलइन।

दीप्ति-बिपुलक जोड़ीकऽ प्रसिद्धि चहुंओर बइढ़ रहल छलइन। अइ मे चाइर चांद लाइग गेलइ जखन बिपुल दीप्ति अपन बेटाकऽ नाम गामक सरकारी स्कुल मे लिखेलाह।स्कुलक पढ़ाइकऽ स्तर बढ़इत जा रहल छलइ।

उनकर सबहक काज आब समाजक सोंझा आबऽ लागल छलइ।कयेक छोट पैघ अखबार मे उनकर सबहक जीवनी आ कार्यकलापकऽ बारे मे लिखल छपल। जिलाक अधिकारी सब सेहो इनकर सबहक बुद्धिमताकऽ गाहे-बगाहे उपयोग करऽ लगलाह। आब इलेक्ट्रॉनिक मीडियाकऽ सेहो इनका सब पर नजर गेलइ। आब टेलीविजन पर इनकर बिषय मे समाचार अबइ। गामक प्रसिद्धि सेहो होबऽ लगलइ।

अखबार आ टेलिविज़न मे समाचार अयलाकऽ बाद बिजयक गामक लोक अलगसँसंपादक सबकऽ चिट्ठी लिखकऽ कहइ जे बिपुल आ दीप्ति उनके गामक छथिन। बिजयकऽ वोटरलिस्ट बाला कागजक कापीलऽ कऽ कनिया बाबीकऽ बेटा टेलिविज़न पर इंटरव्यू देने छलाह।

इनकर सबहक नाम गाम देख कऽ ओतुका नेता सबकऽ खतरा बुझाय लगलइ। ओ सब किछु किछु षड़यंत्र इनकर सबहक खिलाफ करऽ लागल। बिजय दीप्ति खुइलकऽ ओकरा सबकऽ कहलखिन जे राजनीतिसँउनका कोनो लेना देना नञि छइन। तखइन ओतुका नेता सब इनका सबकऽ सहयोग केनाई शुरू कयलक।

ततेक ने इनका सबके ऊपर ओतुका लोककऽ विस्वासभऽ गेल छलइ जे आब पर पंचैती मे सेहो बजबइ छलइन। जिलाक अस्पताल मे दवाई आ खेनाईकऽ बेबसथा सेहो दीप्तिकऽ अगुवाई मे संपन्नभऽ रहल छल।

आब इनका सबकऽ ततेक ने व्यस्तता बइढ़ गेल छलइन जे नियमित खेत पर नञि जा पाइब रहल छलाह। आब तनुजा ई सब सम्हारने छलखिन। कहियो खेतीकऽ ए बी सी डी नञि बुझअ बाली तनुजा आब खेती पथारीकऽ हीर हीर जानऽ बुझअ लगलीह। अतबे नञि, कोन नक्षत्रक बाद कखइन पाइन बुन्नी परबाक संभावना प्रबल रहइ छइ- सेहो उनका बुझल। उनका मे जे परिवर्तन भेल छलइन से सब अचंभित छल। छोट भाइ विनय सेहो बीच बीच मे आइबकऽ मनोबल बढ़बइ छलखिन।

बिपुल आ दीप्ति फेरसँओइ परिवारकऽ ऊंचाई परलऽ गेल छलाह। कियो बिनोबा कहइन त कियो बाबा आमटे कहइ छलइन । सद्भावनाक संग समाजक सेवा ओ सब कऽ रहल छलाह। नब डीह आ नब सोचक संग, नब समाजक निर्माणभऽ गेल छल। जे परिवार कतउकऽ पैबंद छल......कतेककऽ संबल अइछ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड १

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय/ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्त्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान (फेसबुक आ ई-मेल पत्राचार)

खण्ड १ उपखण्ड १

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

9:17 

Anshuman Pandey asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in" Inbox 

 Anshuman Pandey 12 May 2011  
to me ^

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Facebook notification+zl6=efi1@facebookmail.com
To	Prity Jha Thakur kumaripritty@gmail.com
Date	12 May 2011, 1:12 AM

Anshuman asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in". As an admin of this group, you can approve this request. Please note that if another admin has already processed this, it may not appear when you visit Facebook.

To approve this request, follow the link below:
http://www.facebook.com/n/?home.php&sk=group_104458109632326&mid=434e3bcG40558dd5G25a32faG15&bcode=TxU45m8c&n_m=kumaripr ity%40gmail.com

===

9:13 

[Videha www.videha.co.in] Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode... Inbox 



Anshuman Pandey 17 May 2011  

to me ^

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Reply to comment g+41tiz5k000000hum6s5001a7p3ikk0900110z e5g2ti1s93o@groups.facebook.com
To	Prity Jha Thakur kumaripriy@gmail.com
Date	17 May 2011, 10:25 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in



Anshuman Pandey 17 May 22:25

Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode was reviewed and accepted by the Unicode Technical Committee. Now the proposal will be reviewed by the ISO technical group JTC2/SC2/WG2. If ISO approves the script, then Tirhuta will be officially placed in the queue for inclusion in a future version of Unicode.

9:12 

[Videha www.videha.co.in] Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO!... Inbox 



Anshuman Pandey 11 Jun 2011  

to Videha ^

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Reply to comment g+4473mbk000000hum6s5001c28m0v4c3001 10ze5g2ti1sx46@groups.facebook.com
To	Videha www.videha.co.in videha@groups.facebook.com
Date	11 Jun 2011, 12:16 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in



Anshuman Pandey10 June 23:46

Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO! Now Tirhuta will have its own encoding. I will provide more details soon.

खण्ड १ उपखण्ड २

विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान

3:23 

bug maithili wiki  Inbox 



Rajesh Ranjan 16 Feb 2013  

to me ^

From	Rajesh Ranjan	rajesh672@gmail.com
To	Gajendra Thakur	ggajendra@videha.com
Date	16 Feb 2013, 9:13 PM	

Please check and create a account here:

https://bugzilla.wikimedia.org/

Our bug for mailing list:

https://bugzilla.wikimedia.org/show_bug.cgi?id=44938

•••

Reply Forward

3:08 

[Bug 45091] Please move Maithili from incubator to mai.wikipedia.org  Inbox 


bugzilla-daemon 17 Feb 2013  

to me

From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	17 Feb 2013, 3:05 PM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com, rajeshkajha@yahoo.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.


bugzilla-daemon 17 Feb 2013  

to me

Alex Monk (Krenair) changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		krenair@gmail.com, mfwarburg@googlemail.com

Comment # 1 on bug 45091 from Alex Monk (Krenair)

3:13 

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' Inbox 



bugzilla-daemon 17 Feb 2013  

to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 3:21 PM

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

3:13

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

Inbox

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:13 

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 17 Feb 2013  

to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:10

Comment # 1 on **bug 45091** from **Alex Monk (Krenair)**

https://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

...



bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me





From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	17 Feb 2013, 7:03 PM

MF-Warburg changed bug 45091

What	Removed	Added
Status	UNCONFIRMED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 2 on **bug 45091** from **MF-Warburg**

marking as invalid: The creation of this wiki was not approved by the language committee.

[It would also currently have no chance because of a lack of activity in the test-project. Please address any questions on the page on Meta]



1:53







[Bug 44938] Create a mailing list for Maithili (mai) Wikipedia  Inbox 



bugzilla-daemon 17 Feb 2013  

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 8:13 PM

Sam Reed (reedy) changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 3 on bug 44938 from Sam Reed (reedy)

```
See also bug 45091 as the wiki doesn't
exist.

(In reply to comment #2)
> marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
> language
> committee.
>
> [It would also currently have no
chance because of a lack of activity in
the
> test-project. Please address any
questions on the page on Meta]
```

You are receiving this mail because:

3:12









bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me ^




From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	18 Feb 2013, 10:41 AM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		amir.aharoni@mail.huji.ac.il

Comment # 3 on bug 45091 from Rajesh Ranjan

```
Thanks!

I understand, but once the language did
a good improvement. We just created
this bug to track the things we need
to do to release it. The language grp
had
put around 1000 article on incubator
for the same.

Please specify what we need to do to
release our language Maithili on
wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the
details.
```

Thanks!

3:12 

I understand, but once the language did a good improvement. We just created this bug to track the things we need to do to release it. The language grp had put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

•••



bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me ^



From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	18 Feb 2013, 10:44 AM

Comment # 4 on bug 45091 from Amir E. Aharoni

Bugs like this one are usually opened by language committee members after all the requirements for starting a new project are satisfied.

The most convenient page for tracking this is https://meta.wikimedia.org/wiki/Language_committee/Status/wp/mai

•••

Reply | Forward



You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me



Comment # 4 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

Amir, I put here a request for mailing list only after the consultation with you. Please check and let me know what makes my request invalid.

•••



bugzilla-daemon 24 Sep 2014

to me

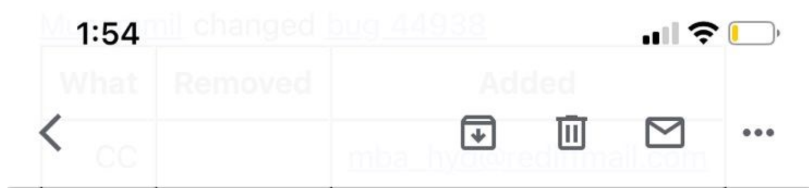


Muzammil changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		mba_hyd@rediffmail.com

Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

There is need to re-examine the refusal:



Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

There is need to re-examine the refusal:
1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
2) Likelihood of the Wikipedia in the near future (see: http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-focused-approach-for-maithili-wikipedia/)
3) Growing social media activity for the Wikipedia: https://www.facebook.com/MaithiliWikipedia?fref=ts

Regards,
Muzammil.

...



bugzilla-daemon 24 Sep 2014

to me





Comment # 6 on bug 44938 from Andre Klapper

Hi Muzammil,

> 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.

1:42 

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

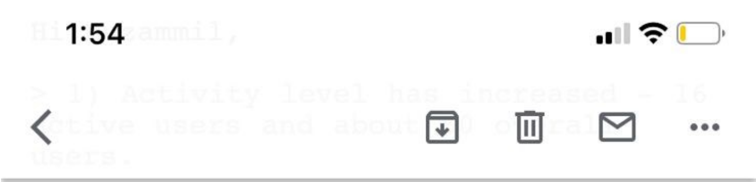
twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni <amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator: https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue.
>
> I thought about proposing it for approval, but one thing that I'm supposed to make sure before I go forward is that it's indeed Maithili. It's part of our Language Committee's required bureaucracy :)
>
> You're the only Maithili speakers I know, so can you please approve that the pages there are written in correct Maithili?
>
> Thanks!

•••

Reply   Forward



Where exactly? Link welcome.

...



bugzilla-daemon 24 Sep 2014

to me



Comment # 7 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to Andre Klapper from comment #6)
> Hi Muzammil,
>
> > 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
>
> Where exactly? Link welcome.

Cf: https://tools.wmflabs.org/meta/catanalysis/index.php?cat=0&title=Wp/mai&wiki=incubatorwiki

...



bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me



John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	RESOLVED	REOPENED

1:42



twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in






---------- Forwarded message ----------
From: **Rajesh Ranjan** <rajesh672@gmail.com>
Date: Thu, Sep 25, 2014 at 8:06 AM
Subject: Re: Mathitili Wikipedia
To: "Amir E. Aharoni" <amir.aharoni@mail.huji.ac.il>
Cc: Runa Bhattacharjee
<rbhattacharjee@wikimedia.org>

Hi Amir,

Thanks!

This is Maithili.

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni
<amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator:
> https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity

1:40 

Fwd: Mathitili Wikipedia  Inbox 



Rajesh Ranjan 25 Sep 2014  

to me

Hi Gajendra jee,

Please check fwd msg.

Hopefully soon Wikipedia Maithili dream will come true.

Do you know Firefox browser for Android now also available in Hindi:

ftp://ftp.mozilla.org/pub/mobile/releases/31.0/android/mai/

Gajendra jee, the most important work for us remaining is that we need to request people to use it...here I see people talk much for Maithili but don't work for the language and use it. Please spread the new of Android browser availability.

1:55

What	Removed	Added
Status	RESOLVED	REOPENED
CC		johnflewis93@gmail.com
Resolution	INVALID	---
Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

Comment # 8 on bug 44938 from John F. Lewis

```
There has been an increase in activity.

THO forwarded me an email regarding a
reconsideration of this request, I
personally see no issue with this and will
deal with this.

@Muzammil: Who would the list administrators
be now since the original request
was made well over a year ago?
```

•••



bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me



John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	REOPENED	ASSIGNED

•••



bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me



Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

1:55 

 bugzi  Ringer   

to me

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original
> request was made well over a year ago?

I think you can add me also an administrator for the list. I will discuss with
Biplab to see if he too is interested as he is very active on the incubator project.

•••

 bugzilla-daemon 28 Sep 2014  

to me



1:55



Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original
> request was made well over a year ago?

Already mentioned, add Gajendra Thakur (see comment #2) and myself for mailing list admin!

Good to see its moving!

•••

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.



bugzilla-daemon 28 Sep 2014

to me

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to John F. Lewis from comment

1:56 

बिप्लब आनन्द changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

Comment # 11 on bug 44938 from बिप्लब आनन्द

```
Thanks @Muzammil .....
ok add me too for the admin

--We are very close,let make it happen-
-- Jai Mithila Jay Maithil------
```

•••



bugzilla-daemon 6 Oct 2014  

to me ^

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 6 Oct 2014, 1:25 AM

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	FIXED

Comment # 12 on bug 44938 from John F. Lewis

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड २

खण्ड १ केर पत्राचारसँ सभ किछु स्पष्ट भऽ गेल हएत। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।

खण्ड १ उपखण्ड १ तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

पहिने खण्ड १ उपखण्ड १ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय अपन आवेदन देने रहथि। मिथिलाक्‌षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ कँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। १२ मई २०११ कँ अंशुमन पाण्डेय विदेहक फेसबुक ग्रुप https://www.facebook.com/groups/videha पर सदस्यता लेलनि। १७ मईकँ यूनीकोडक टेकनिकल कमेटी द्वारा आवेदन स्वीकृतिक आ ओकरा आइ.एस.ओ. कँ पठेबाक ओ सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलन्हि। १० जून कँ आइ.एस.ओ. द्वारा तिरहुता यूनीकोडक स्वीकृतिक सूचना सेहो विदेहक फेसबुक ग्रुपपर ओ देलन्हि जे भारतीय समयानुसार ११ जून छल। आब ई फॉण्ट सभ बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड (Google's Noto Fonts project/ C-DAC)

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट डाउनलोड करू

मिथिला यूनी

कैथी

खण्ड १ उपखण्ड २ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्त्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान

आब खण्ड १ उपखण्ड २ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।
फेडोरा प्रोजेक्ट मोजिलामे योगदान देनहार राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक चर्चा हम विदेहमे कतेक बेर केने छी, हमर अंग्रेजी-मैथिली कंप्यूटर डिक्शनरीमे सेहो हुनकर नाम आयल अछि। ओ हमरा कहलापर विकीपीडियाक समिटमे मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे इस्त्रायलक आमिरसँ गप सेहो केलन्हि।
२००८ क पहिनहियेसँ ऐपर काज शुरू भऽ गेल जकर विस्तृत विवरण खण्ड ३ मे अछि। कोना भोजपुरी आ बिहारीसँ होइत मामिला मैथिली धरि आयल। फेर मीडियाविकी आ अनुवादक कार्यक्रमक प्रारम्भ भेल आ फेर १००० सँ बेशी आलेख ओइमे देल गेल जे-जे विकीपीडिया लैंगुएज कमेटी राजेश रंजन जी कें अढ़बैत गेलन्हि से ओ हमरा अढ़बैत गेलाह। एतऽ ई बता दी जे ऐ १००० आलेख जे मैथिली विकीपीडिया इनक्यूबेटर (माने ड्राफ्ट) मे रहै, मे १००% विदेहक योगदान छै, बादमे किछु आर योगदान एलै, मुदा जखन

मैथिली विकीपीडिया इन्क्यूबेटरसँ लाइव भेलै तखनो ९९% विदेहक आलेख ओइमे रहै, आ अखनो ९५% आलेख विदेहेक सौजन्यसँ ओतऽ छै। १८ फरबरी २०१३ केँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) ऐ गपकेँ मानलनि जे प्रोजेक्टक सभ काज पूर्ण भऽ गेल अछि कारण लैंहुएज कमेटीक सदस्य ऐ तरहक बग तखने बनबैत छथि। बगजिलामे हमरा १७ फरबरी २०१३ केँ जोड़ल गेल छल मुदा किएक तँ एक्टिविटी बड्ड कम रहै से लैंगुएज कमेटीक अप्रूवल नै भेटलै। मुदा राजेश रंजन जी तकर विरोध केलन्हि, हम सेहो विदेह आ सोशल मीडियापर विभिन्न आइ.एस.पी.सँ एक्टिविटी बढ़ेबाक अपील केलौं मुदा अत्यंत खेदक संग सूचित करय पड़ि रहल अछि से गएर-विदेह सदस्यक योगदान शून्य रहल। मुदा जे से एक्टिव यूजरक संख्या बढ़ि कऽ १६ आ सम्पूर्ण यूजरक संख्या बढ़ि कऽ ६० भेल (देखू २४ सितम्बर २०१४ क स्क्रीनशॉट)। जखन हम सभ मैथिलीभाषीक संख्या करोड़मे गनबै छी की ई संख्या अहाँकेँ निराश नै करैत अछि?

२४ सितम्बर २०१४ केँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) राजेश रंजन आ रुना भट्टाचार्यकेँ सूचित केलन्हि जे आलेख १००० सँ ऊपर छै, एक्टिविटी सेहो ठीके-ठाक छै, आ ओ राजेश रंजनक अतिरिक्त आन कोनो मैथिलीभाषीकेँ नै चिन्हैत छथि, से ओ पुछलन्हि जे सूचित करी जे ई सभ मैथिली भाषे मे छै ने। आ जँ से हेतै तँ ओ एकर अप्रूवल लेल प्रोपोजल देता। २४ सितम्बर २०१४ केँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) केँ राजेश रंजन सूचित केलन्हि जे ई सभट हजारसँ बेशी आलेख सरिपहुँ मैथिलिये मे छै।

राजेश रंजन २५ सितम्बर २०१४ केँ हमरा सभटा मैसेज फॉरवार्ड करैत छथि आ कहैत छथि जे मैथिली विकीपीडियाक सपना आब

पूरा होइये बला अछि। आइ हमरा ई देखि आश्चर्य होइत अछि जे जकर कोनो योगदान नै से सभ कूद-फांग कऽ रहल छथि आ राजेश रंजन आ रुना भट्टाचार्य एतेक करितो चुप्पे छथि। मैथिली भाषा भाग्यशाली तँ अछिये! राजेश रंजन ओही ई-पत्रमे लिखै छथि जे मूल प्रश्न अछि जे लोक किए खाली लग्गा-भरि नमगर गप छोड़ै छथि मैथिलीक नामपर मुदा ऐ लेल काज बा एकर उपयोग नै करै छथि। मुजम्मिल सेहो विकीपीडिया दिससँ जुड़ै छथि। हमरा एडमिन बनै लेल राजेश रंजन फोन करै छथि, ओना हुनका बूझल छन्हि जे हम राजरोगसँ दूर रहै छी आ तइ मे मात्र साहित्य अकादेमी सम्मिलित नै अछि। हम बिप्लब आनन्दक नाम मुदा हुनका दैत छियन्हि जे ओ युवा छथि आ नेपाल दिससँ छथि से भऽ सकैये निरपेक्ष व्यवहार करता जे विकीपीडिया लेल आवश्यक अछि, मुदा मैथिलीमे से होइ कहाँ छै। २७ सितम्बर २०१४ कँ राजेश रंजन जी बिप्लब आनन्दक नामक अनुशंसा करैत छथि जे मानि बिप्लब आनन्दकँ २८ सितम्बर २०१४ कँ मैथिली विकीपीडियाक एडमिन बनाओल जाइत अछि। बिप्लब आनन्दक वर्तनी आ निष्ठा दुनूमे सुधारक खगता हम अनुभव करैत छी, मेहनती धरि ओ छथि, से शुभकामना।

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड ३

१

[सम्पादकीय: 'विदेह' ८५ म अंक ०१ जुलाइ २०११ (वर्ष ४ मास ४३ अंक ८५)]

सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल- http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity ...

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कैँ मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचना: ३.विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate... ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत

दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ कें (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।'' आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक ''लैंगुएज कमेटी'' आब बुझि गेल अछि जे मैथिली ''बिहारी नामसँ बुझल जाएबला'' भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...)

-''ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे ''नै''। ''

रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थेँ आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका

लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

२

विदेह गोष्ठी: (६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१०/ फेर अन्तिम परिचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ केँ मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट, गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आवेदनक स्वीकृतपर आ विकीपीडिया मैथिली पर परिचर्चा आ तकर सन्दर्भमे प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन निर्मली, जिला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास सम्बन्धित एक्सपर्ट उपस्थित रहथि। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ देल जा रहल अछि।)

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक . देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py...

आ http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en...

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्रा कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह द्वारा कैल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्रा कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्रा कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू; ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कैं मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इन्जिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि। https://www.google.com/webhp?hl=bh अछि लिंक [गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्रा

कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।]

-ऐ विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ लिंकपर।

मुदा ई तँ प्रारम्भ अछि।

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्रा कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "https://www.google.com/webhp?hl=bh
Sir, एहि लिंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अस्तित्व में अछि..
फेर इ टटका-टटका.... जश्न (or whatever) कथिलए ?"
Gajendra Thakur ट्रान्सलेट बला ऑप्शन लेल लेख पढ़ू.. http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.
बेवजह परेशानी देबए लेल हम क्षमाप्रार्थी छी.."
अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत: http://www.google.com/language_tools?hl=bh
अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत, पहिने बिहारी एतऽ छल क्लिक केलापर मैथिली अबैत छल|
http://www.google.com/language_tools
अपडेट २८ मार्च २०१२।]
[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra

Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity
...
ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कें मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचना: ३.विकीपीडिया मैथिली:
मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate... ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट

अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूचित केने रही- ‘‘विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।’’ आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक ‘‘लैंगुएज कमेटी’’ आब बुझि गेल अछि जे मैथिली ‘‘बिहारी नामसँ बुझल जाएबला’’ भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...)

-‘‘ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक

स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे "नै"। "
रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थें आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?
उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha:

A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered

valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐसँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखिनिहारकेँ नहिये यूनीकोडक विषयमे कोनो जानकारी छन्हि आ नहिये वेस्टर्न वा यूनीकोड दुनू फॉन्टक निर्माण कोनो प्रारम्भिक ज्ञान छन्हि। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत्व छै जे सीखय चाहै छथि जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐसँ पहिने चेतना समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! तिरहुता यूनीकोड आवेदनकर्ता अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि तँ हम हुनका कहने रहियन्हि जे विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरक दोकान छन्हि, ओतऽ सँ अहाँ मैथिलीक किताब कीनि सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ सँ घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकन्हि जे सभ दिन अहाँ अबै छी, से ई समिति अखन कमसँ कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू ग्रुपमे झगड़ा-झाँटी भऽ गेल छै। ई अनुभव

लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मँगलापर एक गोट विद्वान् (!) हुनका कहलखिन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नै देलखिन्ह आ तखन दोसर ठामसँ हुनका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

३

[https://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-post_08.html?fbclid=IwAR2oAS6in4rKo0uC1CK1sX2dM7ivqI_CuF8KFNAbIN7NH12-pTuPKlkdMsE] समदिया ८ जनवरी २०१२

विदेह गोष्ठी: *(६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१०/ फेर अन्तिम परिचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ कें मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट,* गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकें यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आवेदनक स्वीकृतपर आ विकीपीडिया मैथिली *पर परिचर्चा आ तकर सन्दर्भमे प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन निर्मली, जिला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास* सम्बन्धित एक्सपर्ट *उपस्थित रहथि। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ देल जा रहल अछि।)*

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक . देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837

आ http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह द्वारा कैल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू; ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

ऐ
लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en केँ मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे
-विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इन्जिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि। https://www.google.com/webhp?hl=bh अछि लिंक [*गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।]*

-ऐ विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा

देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ लिंकपर।
मुदा ई तँ प्रारम्भ अछि।
अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:
http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।

Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote:
"https://www.google.com/webhp?hl=bh
Sir, एहि लिंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अस्तित्व में अछि..
फेर इ टटका-टटका.... जश्न (or whatever) कथिलए ?"
Gajendra Thakur ट्रान्सलेट बला ऑप्शन लेल लेख पढ़ू.. http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.
बेवजह परेशानी देबए लेल हम क्षमाप्रार्थी छी.."

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत: http://www.google.com/language_tools?hl=bh

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत, पहिने बिहारी एतऽ छल क्लिक केलापर मैथिली अबैत छल|
http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ मार्च २०१२।]

/सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कें मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचना: ३.विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ।

किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूचित केने रही- "विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।" आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक "लैंगुएज कमेटी" आब बुझि गेल

अछि जे मैथिली “बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

-“ई सूचना *मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक* विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे “नै”। ”

रामविलास शर्माक लेख (*मैथिली और हिन्दी*, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थें आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि? उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐसँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखिनिहारकेँ नहिये यूनीकोडक विषयमे

कोनो जानकारी छन्हि आ नहिये वेस्टर्न वा यूनीकोड दुनू फॉन्टक निर्माण कोनो प्रारम्भिक ज्ञान छन्हि। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत्व छै जे सीखय चाहै छथि जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐसँ पहिने चेतना समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! तिरहुता यूनीकोड आवेदनकर्ता अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि तँ हम हुनका कहने रहियन्हि जे विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरक दोकान छन्हि, ओतऽ सँ अहाँ मैथिलीक किताब कीनि सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ सँ घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकन्हि जे सभ दिन अहाँ अबै छी, से ई समिति अखन कमसँ कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू ग्रुपमे झगड़ा-झाँटी भऽ गेल छै। ई अनुभव लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मँगलापर एक गोट विद्वान् (!) हुनका कहलखिन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नै देलखिन्ह आ तखन दोसर ठामसँ हुनका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

TWITTER IN MAITHILI

TWITTER IN MAITHILI, PLEASE

CLICK http://translate.twttr.com/welcome and go to bottom of this link. You will find[[Don't see your language? We're continually reviewing the list of languages we support, and would love your feedback]] - click feedback and apply for Maithili and submit alongwith reason why you need twitter in Maithili. Seeking your cooperation in large numbers again.

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड ४

"विकीपीडिया"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो.. अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल ट्रान्सलेट
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
प्रारम्भ:
विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)
गूगल ट्रन्सलेट २३ जून २०११क लिंक
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/

138489416229195/

गूगल ट्रांसलेशन टूलमे

"बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू,

आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh *(links closed)*

विकीपीडिया मैथिली लिंक

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv

इन्टरनेटक संसारमे मैथिली

भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक भर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइभ https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला रत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion
मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz
मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex
मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1
http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ। (links closed)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

"विकीपीडिया"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो.. अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

विदेहक तेसर अंकमे (०१ फरबरी २००८) जे खुशखबरी पाठक लोकनिकेँ मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे देल गेल छल तकर

सुखद परिणति कएक साल पहिने भेटल छल।

मैथिली गूगल ट्रान्सलेटक सम्बन्धमे विदेहक फेसबुक पृष्ठपर २०११ मे देल गेल तकर सुखद परिणति ११ मई २०२२ कें भेटल।

मैथिली अमेजन अलेक्साक सेहो आरम्भ शीघ्रे हएत।

(लिंक-स्क्रीनचित्र नीचाँ देल जा रहल अछि।)

https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA2#v=onepage&q&f=false

https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/

9:25 

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरवरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)
विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह
Videha विदेह http://www.videha.co.in/ [redacted] मानुषीमिह संस्कृताम्

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही,आ' सूचि करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 कँ भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे,विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कय एहि प्रोजेक्टमे अहाँ सभ सहयोग करब, से आशा अछि। पछिला अंकमे देवनागरी कोना लिखू ,एहि पर हम लेख लिखने रही। इंगलिश कीबोर्ड पर ओहि तरहे लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम. गेरार्डक माध्यमसँ श्री अंशुमन पाण्डेयक, जिनकर मैथिलीक युनीकोडमे स्थानक आवेदन लंबित अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सूचना मँगलन्हि जाहि सँ स्पष्ट रूपसँ बंगला लिपि आ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञात भय सकय।ई सूचना हम एम. गेरार्डक माध्यमसँ हुनका पठा देलियन्हि, कारण पाण्डेयजी ईमेल एड्रेस हमरा नहि अछि। विकीमे पूर्ण स्वीकृतिक हेतु एहि लिंक सभ पर राखल प्रोजेक्टकेँ आँगा बढ़ाऊ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

नई दिल्ली *गजेन्द्र ठाकुर*

01.02.2008

© सर्वाधिकार लेखकाधीन आ' जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन।
विदेह (पाक्षिक) संपादक-गजेन्द्र ठाकुर। एतय प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक अधिकार एहि ई-पत्रिकाकेँ छैक। रचनाकार अपन मौलिक आ, अप्रकाशित रचना सभ(जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखकगणक मध्य छन्हि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.co.in केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc,.docx, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि।रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय(बायोडाटा) आ' अपन स्कैन कएल मेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक संग ई घोषणा रहय-जे ई रचना मौलिक अछि आ' पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह(पाक्षिक)-ई-पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्रतासँ (सात दिनमे) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत।

Digitized by Google

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरवरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)
विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह
Videha विदेह http://www.videha.co.in/ [redacted] मानुषीमिह संस्कृताम्

9:53 

  Gajendra Thakur shared a link. 

Admin 23 Jun 2011 ·

गूगल ट्रांसलेशन टूलमे "बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

google.com
Google in Your Language

  Comment  Send

 You, Ashish Anchinhar and 7 others



Gajendra Thakur
Author Admin 

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-

9:54 

Gajendra Thakur shared a link.
Admin 23 Jun 2011 ·

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

google.com
Google in Your Language

  Comment  Send

You, Ashish Anchinhar and 7 others



Gajendra Thakur
Author Admin 

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाउ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/

ओहि समयमे विदेह सम्पादक मण्डलमे ई लोकनि रहथि: सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा । कला-सम्पादन: वनीता कुमारी आ रश्मि रेखा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अन्वेषण: डॉ. जया वर्मा आ डॉ. राजीव कुमार बर्मा । सम्पादका नाटक-रंगमंच-चलचित्र: बेचन ठाकुर। सम्पादक सूचना-सम्पर्क-समाद: पूनम मंडल अ प्रियंका झा। सम्पादक अनुवाद विभाग: विनीत उत्पल । स्पष्ट अछि जे "सम्पादक अनुवाद विभाग" विनीत उत्पल (आब असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आइ.आइ.एम.सी. जम्मू) क विशेष सहयोग रहल, आशीष अनचिन्हार सम्पादक मण्डल मे नहियो रहला उत्तर कोनो सम्पादकसँ कम काज नै करैत छथि। मैथिलीक पाठक वर्ग सेहो अपन यथाशक्ति योगदान देलनि।

https://books.google.co.in/books?id=zmIugpjpOKYC&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false
https://books.google.co.in/books?id=-U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q&f=false

गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:
https://translate.google.com/about/contribute/

गूगल ट्रान्सलेट कार्यक्रम देखू

https://youtu.be/nP-nMZpLM1A

Google Translate:04:45to06:25 (24 new languages at 06:00)

Detailed Description

Tune in to find out about how we're furthering our mission to organize the world's information and make it universally accessible and useful. To watch this keynote with American Sign Language (ASL) interpretation, please click here: https://youtu.be/PeUXBvRExic

0:00 Opening Film

1:47 Introduction, Sundar Pichai

6:21 Knowledge

15:45 Knowledge&Search

27:15 Skin Tone Equity

32:00 Computing

33:08 Assistant

43:34 Computing: AI Test Kitchen

53:08 Safer with Google

1:04:38 Safer Way to Search

1:11:20 Android: Opening

1:45:45 Android: Wear OS&Tablet

1:25:32 Android: Better Together

1:31:22 Hardware: Opening

1:33:22 Hardware: Pixel Phone&Buds

1:45:44 Hardware: Ambient&Beyond the Phone
1:54:32 Augmented Reality&Close

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ ।

३. पद्य

३.१.राज किशोर मिश्र- भैआरी

३.२.गजेन्द्र ठाकुर- शुनः शेपक मृत्युदण्ड वा बलि

३.३.आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

भैआरी

माएक मरला बाद,भ्रातृ द्वय।
केवल पओलक, पितृ -सिनेह,
परिवारक अर्थव्यवस्था के,
एखनो छलथिन्ह पिते, मेह।

कनिके पढ़ि, दूनू भाइ करए
लागल खेती -पथारी,
भ' जाइत छलै, तरकारी -तीमन,
नमहर छलैक, बाड़ी ।

ओहि गाम भरि मे, दुहु भाइ,
भ्रातृत्व -सिनेहक, छल प्रतिमान,
बनले रहल, विवाह उपरान्तो ,
भ्रातृत्व -अपनापन, समान।

देआदनी के बीच मे,

मेल क' कनिको ने अभाव छल,
परिवार मे सुमतिक जेना ,
जबरदस्त, प्रभाव छल।

किछु बरखक पश्चात्, हिनक
पिता क' भए गेलन्हि स्वर्गवास,
बढ़ि गेलै, दूनू भाइ के ऊपर,
उत्तरदायित्व,बहुत रास।

पाइ -टका ल'क' किछु दिन सँ,
मतान्तर भेल, भैआरी मे,
कलह, दलानसँ आँगन आएल,
बाध-बो न, घराड़ी मे।

भनकी लागल किछु गौआँ के,
पओलक जेना सुअवसर,
चढ़बए लागल दूनू दिस,
किछु एमहर, किछु ओमहर।

खेते ल' क' नहि फरिछाएल,
पूर्ण नहि भेल बटबारा ,
जुआएल, अँकुराएल अड़ारि ,
इरखासँ भरल, पमारा।

बनल मंतव्य पंचैती के,

झंझट आरो, ओझरा गेल,
वाकयुद्ध, फेर मारि -मरौअलि ,
कतेको क' मोन जुड़ा गेल।

केलक मामिला, एक दोसर पर,
गाम क' चर्चा क' विषय छल,
आरो बढ़तै बात, तकर
भारी संशय आ भय छल।

की मोल रहल ओहि भातृत्वक?
जे'क्षणहि बिका गेल धन क' हाथ,
भैआरी जे उपमान बनैत छल,
टिक ने सकल ओ रातुक प्रात।

नहि रहल सिनेह, अँगना उदास,
अधिपत्य जमा लेलक इरखा ,
द्वेष, भुजंग सन, घूमि रहल छल
लपलपबैत जीह बड़का ।

एहि अन्हार मे अहंकार,
देखा रहल ओ निज भुजदण्ड ,
शालीनता, भ्रातृत्व के,
किए भोगि रहल छल एहन दण्ड ?

भेलै अंत निर्दोष सिनेहक,

हइर लेलकै ओकरा क्रूर द्वेष,
कुनह, कहू बढ़ि गेलै कते,
आबए धरि -धरि को न भेष?

चलि ते रहलै ओहिना कलेस,
भ' गेलै बन्द आब खान -पान,
टुटैत गेल संबंध सहोदरक'
खसि पहुँचल ,अंतिम सोपान।

जखन, कुमति चढ़ैत अछि सिर पर,
करैछ, सुबुद्धि निर्मूल,
सभटा उनटे होइत छै,
काल होइछ प्रतिकूल।

विनाश, मित्र बनि, बजा लैत अछि ,
सभटा, ध्वसं, अनिष्ट,
संकट सँ भरि दैत छै,
दुर्बुद्धि क' भाग -अदिष्ट।

अमंगल भरल, मोन मे,
सोच, कुटिल योजना सँ,
माथा चलैत रहै छै सदिखन,
षड्यंत्र, प्रवंचना सँ।

घोर द्वेषक वातावरण मे,

संबंध खसैत अछि बहुत तेज,
रोकए अबैत अछि मर्यादा ,
मुदा, के करतै ओकर परहेज?

कटुता, व्यंग्य भरल मुख सँ,
निकलैत अछि जे, शब्द -वाण,
हृदय बेधि व्रण करैछ तेना,
मोसकिल, ओकर छूटब निसान।

संबंधक अधो पतन सँ,
भए गेल कलंकित भैआरी ,
रुकल कहाँ? दूनू कए लेलक,
विनाशक अंतिम तैआरी।

अदनो सँ अदना, भेलै अपन,
भए गेल सहोदर, आन -आन,
अपनापन, इरखा कोना रहतै?
संग -संग दुहू एक मिआन।

कोना, अपन अपना के उजाड़ल ?
लेब 'चाहए ,एक -दोसरक प्राण,
'सहोदर सन ने किओ जगत् मे',
मिथ्या भ' गेल एकर प्रमाण।

काल -चक्र घूमल आगू,

जेठ भाइ पड़ि गेलै बेमार,
इला जत' चललै, मुदा
अउषधि ने पाबए दुः खक'पा र।

भीतरे -भीतरे, लगै जेना ,
जड़ि आएल छै मन मे कचोट,
छै उठल ,भावना के बिहारि ,
मामूली ने ई छोट -मोट।

धिक्कार अछि निज जीवन पर,
जे, अनुज सँ हमरा भेल द्वेष ,
नहि देलिऐ,ओ सिनेह हम,
अधिकार जाहि पर, ओकर अशेष।

बाल्य -काल सँ, छोट भाए के,
करैत छलै ओ कतेक दुलार?
जमल सिनेह जेना घमि क'
बनि नोर, बहय नोरक पलार।

जेना बान्ह, टुटि गेलै मोन मे,
बहि चललै, भ्रातृ -सिनेह क' धार,
भेलै, डुबा देत हृदय -मोन के,
कोना क' उतरब एहि सँ पार?

अपने त' छल मौन, मुदा

ताकए आँखि, हरदम, कोनो बाट,
दुखित जानि, आओत अनुज,
किओ कहने हेतए, बाट -घाट।

इलाज होइत रहलैक, मुदा
स्थिति मे नहि भ' सकलै सुधार,
मोने -मोन, अहुरिआ काटए,
भाए पड़ए मोन, बारम्बार।

कुहरए लागल, कानए लागल,
अंत ओकर, उपस्थित भेल,
मुह मे भाएक नाम एलै,
आ, बाट तकैत, परलोक गेल।

'अंतिम काल 'के खबरि पाबि ,
एलैक अनुज, दौड़ल -दौड़ल,
चिचिआइत 'भैआ -भैआ,'ओ
अग्रज क' पएर पर खसि पड़ल।

पछताइत छलैक, मोन अनुज के,
फटैत छलैक ओकरा कुहेस,
पश्चात्तापक आगि मे,

धधकै,ओकर हृदय -प्रदेश।

"रुसल चलि गेलाह भैआ,

माफीओ ने माँगि सकलहुँ हम ,
सहोदर त' ने होएत दोसर,"
बाजए, नयन नोर सँ नम।

आँखिक नोर द', जमल द्वेष
बनि तरल, खसल धरती पर,
भ्रातृत्वक अपराजित सिनेह,
हरिआए गेल परती पर।

डारि -पात त' सुखा गेलै,
मुदा, सिनेहक जड़ि ने सुखाएल,
पर, अपसोच एहि बात क' जे,
'सारा'पर किएक फुला एल?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



गजेन्द्र ठाकुर

शुनः शेपक मृत्युदण्ड वा बलि

१

इक्षवाकु वंशक वेधस राजाक पुत्र हरिश्चन्द्रक सए पत्नी

घरमे पर्वत आ नारद दूटा ऋषि रहैत छलन्हि

नारदक निर्देशपर वरुणसँ कहलन्हि- सन्तान दिअ,

जइसँ हम अहाँक यज्ञ कऽ सकी।

माने सन्तानक बलि?

रोहित नाम्ना पुत्रक जन्म भेल

वरुणसँ १० दिनक समय मांगलन्हि हरिश्चन्द्र।

फेर दाँत हेबा धरिक समय मांगलन्हि,

फेर दुद्धा दाँत खसबा धरिक समय मांगलन्हि।

फेर नव दाँत हेबा धरिक समय मांगलन्हि।

फेर ओकर शस्त्रधारी होएबा धरिक समय मांगलन्हि।

जखन रोहित भऽ गेल शस्त्रधारी

तखन रोहितकेँ कहलन्हि हरिश्चन्द्र वरुणक लेल यज्ञक

कबुलाक लेल ओकर बलि देबाक गप।

मुदा रोहित तीर-धनुष लऽ बोन दिश चलि गेलाह,

मना कऽ देलन्हि।

आ तकर एक बरख बाद वरुण हरिश्चन्द्रकेँ पकड़ि लेलन्हि

वरुण छथि जल-देवता,

आ फूलि गेलन्हि पेट हरिश्चन्द्रक।

घुरल इन्द्र पुरुषक रूपमे कहल

जे मनुष्यक बीचमे रहने नीक सेहो अधलाह भऽ जाइए।

विचर एक साल

विचरलासँ पएर फूलयुक्त हेतौ।

आत्मासँ फल बहार होइए आ ओ ओकरा काटैए

एक साल

भाग्य ठाढ़क ठाढ़

बैसलक बैसल

आ सूतलक सूतल

से विचर एक साल

कलि सूतल-पड़ल

द्वापर उड़ैत

आ त्रेता ठाढ़

से तोँ सत्य जेकाँ विचर एक साल

सूर्य विचरैत नै थाकैए

तोरा मधु आ उदुम्बरक मिठगर फल भेटतौ

विचर एक साल

सुयवश ऋषिक पुत्र अजीगर्तक परिवार

भूखल पत्नी

तीन पुत्र शुनःपुच्छ, शुनःशेप, शुनोलांगूल

बापक प्रिय शुनः पुच्छ आ माएक प्रिय शुनोलांगूल

से सए गाए दऽ

शुनःशेपकेँ कीनल

राजसूय यज्ञ भेल

होता रहथि विश्वामित्र

अध्वर्यु जमदग्नि

उद्गाता अयास्य

आ ब्रह्मा रहथि वशिष्ठ

से बलि बान्हत के?

एक सए गाए आर

मांगलक अजीगर्त

अग्निक आवाहन आ परिक्रमा

आब वध के करत?

एक सए गाए आर दिअ

मांगलक अजीगर्त

पिजबैत तरुआरि

शुनःशेप केलक

प्रजापतिक आवाहन

कहलनि ओ

जो अग्नि लग

अग्निक आवाहन शुनःशेप केलक

जो सविता लग

कहलनि ओ

सविता कहलनि

जो वरुण लग

वरुण खलनि

जो फेर अग्नि लग

अग्नि कहलनि

जो जो विश्वदेव लग

विश्वदेवक आवाहन शुनःशेप केलक

कहलनि ओ

जो इन्द्र लग

इन्द्रदेवक आवाहन शुनःशेप केलक

जो आश्विनौ लग

दुनू अश्विनक आवाहन शुनःशेप केलक

जो उषा लग

उषाक आवाहन शुनःशेप केलक

मंत्र पढ़ैत-पढ़ैत बन्धन खुजैत गेलै शुनःशेपक

इक्ष्वाकुक पेट ठीक भऽ गेल

फेर ओ ऋत्विज् भऽ यज्ञमे सम्मिलित भेल

विशेष विधि

“अंज सव” विधिसँ निकाललक सोमरस

आ राखलक ओकरा द्रोणकलशमे

फेर स्वाहा

फेर अन्तिम कृत्य

फेर शुनःशेप विश्वामित्रक कोरामे बैसि गेल

अजीगीर्त कहैत छथि- विश्वामित्र दिअ हमर पुत्र

विश्वामित्र कहै छथि- नै ई अछि आब देवरात विश्वामित्र

अजीगीर्त पुत्र शुनःशेप बाजल

आउ देखू

शुनःशेप कहैए- हे अजीगीर्त- तीन सए गाए हमरासँ पैघ?

विश्वामित्र कहै छथि- हे पुत्र मधुच्छन्दा

ऋषभ,

रेणु

अष्टक

शुनःशेप भेल अहाँक ज्येष्ठ

मधुच्छन्दाक पचासटा पैघ भाएकेँ ई नै पड़लन्हि पसिन्न

विश्वामित्र ओकरा सभकेँ देलन्हि त्यागि

२

आ आब त्याग करबाक समय आबि गेल अछि

भय केर त्याग, लोभ केर त्याग

भोजन केर त्याग

आ ग्रहण करबाक समय सेहो अछि

वएह जकरा कैएक बर्ख धरि राखने रही नुका कऽ, बझा कऽ

हाथ जोड़लौं, नै करू तंग हमरा, नै तँ बुझि जायत ई

बड़ड आदर करैए ई हमर

जँ ओकरा बुझि पड़तै जे अहाँ कऽ रहल छी हमर अपमान

तँ फेर ई हमरो गप नै मानत

अखन हम हाथ जोड़ने नेहोरा कऽ रहल छी

फेर अहाँ करब नेहोरा जखन ई शुरू करत नाराशंसी

अखन तँ एक्केटा खिस्सा सुनेलौं अछि

आ अहाँ कहै छी जे एकर ऐ मामिलासँ की छी सम्बन्ध

तँ फरिछा दइ छी ऐ सम्बन्धकेँ आइ।

शुनः शेपकेँ देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?

उत्तर दिअ, हम छी प्राश्निक आ अहाँकेँ सुना कऽ खिस्सा

परीक्षाक लेल तैयार केलौं अछि ई पहिल प्रश्न,

आ एकर उत्तर निर्धारित करत जे कतेक बुझनुक छी अहाँ

आ तखने हम अही खिस्सासँ नब प्रश्न पूछब

बा भऽ सकैए कोनो नब खिस्से सुना दी अहाँकेँ

जँ हमरा लागत जे ऐ खिस्सासँ नब प्रश्न पुछला सँ कोनो फाएदा नै।

शुनः शेपकेँ देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?

आ बाजब आस्ते, कारण ओ हमरा बड्ड मानैत अछि।

जँ कनियो ओकरा बूझि पड़तै अहाँक हमरा प्रति क्रूर आचरण

तँ ओ बर्दास्त नै कऽ सकत, हमरो रोकलापर नै रोकि सकत अपनकेँ।

तँ आस्तेसँ दिअ उत्तर- शुनः शेपकेँ देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बलि?

(अनुवर्तते)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल

१

अपने जरलै अनचिन्हार अनचिन्हार
मिझा कऽ चमकै अनचिन्हार अनचिन्हार

पूरा जीवन आमने सामने रहितो
दुन्नू रहलै अनचिन्हार अनचिन्हार

हमर आँखिमे हुनकर आँखि गुणा करियौ
तखने हेतै अनचिन्हार अनचिन्हार

सर्किल कतबो बड़का हो मुदा बिन पाइ
दुनियाँ कहतै अनचिन्हार अनचिन्हार

दर्दक छतपर असगर असगर चुप्पे चुप
खुब्बे टहलै अनचिन्हार अनचिन्हार

सभ पाँतिमे 22-22-22-22-22-2 मात्राक्रम अछि। दूटा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

२

हुनकर बाजब काँटे कूस
सुनबैया के मनुआ झूस

हमरा चाही हुनकर नेह
बाजू लेबै कत्ते घूस

भागल रौदी दाही बेर
खाली आबै माघे पूस

धर्मी डूबल बिच्चे धार
बड़का पापी अनका दूस

नेता भेलै लड्डूलाल
जनता भेलै लेमनचूस

सभ पाँतिमे 22-22-22-21 मात्राक्रम अछि। "धर्मी डूबल बिच्चे धार" ई पाँति कबीरक एक पदसँ प्रेरित अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर

Videha e-Learning



....

[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)] [FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI ALSO]

....

[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल/ FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_03 (श्री शम्भु कुमार सिंह द्वारा संकलित)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज/ प्रश्न-पत्र- १ आ २

TEST SERIES-1- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-2- गजेन्द्र ठाकुर

....

MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

MAITHILI (OPTIONAL)

TOPIC 1 [Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 2 (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 3 (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान

शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 4 (बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 5 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 6 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 7 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा-बानगी)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 8 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 9 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 10 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 11 (वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 12 (वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 13 (तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

TOPIC 14 (आधुनिक नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या- शम्भु कुमार सिंह)

TOPIC 15 (स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता- अरुण कुमार सिंह)

TOPIC 16 (यू. पी.एस.सी. मैथिली प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन, मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता, मैथिली साहित्यक आदिकाल, मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण- शम्भु कुमार सिंह)

TOPIC 17 (मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-“ए”, क्रम-५])- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 18 [मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]- गजेन्द्र ठाकुर

…………………………………………………………………

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1 - गजेन्द्र ठाकुर

GS (Mains)

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

SANSAD TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

....

OTHER OPTIONALS

IGNOU eGYANKOSH

....

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning

पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

....

शब्द-व्याकरण-इतिहास/ मूलपाठ/ समीक्षा/ अतिरिक्त पाठ

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीरामदेव झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY (COMPLETE)- GAJENDRA THAKUR

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY- गोविंद झा

अणिमा सिंह -Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL SITE

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा "टिल्लू" अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देवशंकर नवीन- Adhunik_Sahityak_Paridrishya

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल

अखियासल CIIL SITE

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

फेर एहि मनलग्गू फाइल सभकेँ सेहो पढ़ू:-

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

कुमार पवन (साभार अंतिका)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा) डायरीक खाली पन्ना

योगेन्द्र पाठक "वियोगी"

विज्ञानक बतकही	नरक विजय (सम्पूर्ण)	नरक विजय (संशोधित)	हमर गाम	पिरामिडक देशमे

डॉ. रमण झा

भिन्न-अभिन्न	मैथिली काव्यमे अलङ्कार	अलङ्कार-भास्कर	मैथिली काव्यमे ज्योतिष

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

VIDEHA MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

http://videha.co.in/new_page_15.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

पोथीक लिंक

मैथिली साहित्य संस्थान

https://www.maithilisahityasansthan.org/resources *(online pdf of Reasearch Papers/ books)*

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली ऑडियो बुक्स)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ (online maithili journal)

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

प्यारे मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq30LIck2tNw8BI4t8jjzQg (प्यारे मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल)
जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

....

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

-गजेन्द्र ठाकुर

....

विदेह-सदेह [विदेह www.videha.co.in पेटार] मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन (विदेह ई-पत्रिकासँ बीछल रचना)

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]देवनागरी

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- दोसर संस्करण देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६] तिरहुता

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]देवनागरी

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७] तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]देवनागरी

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८] तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]देवनागरी

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९] तिरहुता

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]देवनागरी

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११	*विदेह:सदेह १२*	*विदेह:सदेह १३*	*विदेह:सदेह १४*	*विदेह:सदेह १५*
विदेह:सदेह १६	*विदेह:सदेह १७*	*विदेह:सदेह १८*	*विदेह:सदेह १९*	*विदेह:सदेह २०*
विदेह:सदेह २१	*विदेह:सदेह २२*	*विदेह:सदेह २३*	*विदेह:सदेह २४*	*विदेह:सदेह २५*

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008 Videha_15_06_2008_Tirhuta 12

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008 Videha_01_11_2008_Tirhuta 21

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

videha_01_10_2010 videha_01_10_2010_tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

videha_15_11_2010 videha_15_11_2010_tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

videha_15_12_2010 videha_15_12_2010_tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

videha_01_03_2011 videha_01_03_2011_tirhuta 77

७) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

videha_01_01_2012videha_01_01_2012_tirhuta 97

८) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

videha_01_08_2012 videha_01_08_2012_tirhuta 111

९) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

videha_15_03_2013 videha_15_03_2013_tirhuta 126

१०) गजल आलोचना-समालोचना-
समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

videha_15_11_2013 videha_15_11_2013_tirhuta 142

११) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

१२) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१३) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१४) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१५) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

१६) मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA_313

१७) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA_317

१८) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_319

१९) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA_320

२०) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA_333

२१) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

....

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

विदेहक दू सए नौम अंक Videha_01_09_2016

....

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अप्पन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार 'विदेह' क ३२७ म अंक ०१ अगस्त २०२१

....

एडिटर्स चोइस सीरीज

एडिटर्स चोइस सीरीज-१

विदेहक १२३ म (०१ फरबरी २०१३) अंकमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहिसँ बेशी सिहराबैबला कविता कोनो भाषामे नहि रचल गेल अछि। सात सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-२

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल, कारण एहि कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चोइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-३

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जाहिमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-३ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-४

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदानन्द झा मनुक एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे एहि उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

एडिटर्स चोइस सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-५

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने

कहा था" पढ़ने हेता, कें बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकें रचि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकें एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा एहि रचनाकें पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकें आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकें सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-५ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन एहि क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ एहि अकालकें जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नहि छला आ तँ बिसाँढ़पर कथा नहि लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल एहिपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नहि वरण् अवहट्टमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नहि भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन

अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। एहि पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्चा स्वरूपमे।

एडिटर्स चोइस सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नहि होयत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

एडिटर्स चोइस सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-८

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चोइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

....

Maithili Books can be downloaded from: MAITHILI BOOKS

....

गजेन्द्र ठाकुर

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

संकर्षण (नाटक)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन

सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

सहस्त्रजित् (पद्य संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

The_Science_of_Words

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script

Learn Kaithi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

उल्कामुख (नाटक)

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङ्क बड़ौरा (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

गंगा ब्रिज (नाटक)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

भऽ जाएब छू*(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहरिमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

बड़द करैए दाउन ने यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

टोस्ट	बड़ीटा! क नियेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
वुयो	कच-कच कचाक	चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ	नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल	अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला
हारू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	मोट राजा पातर - दुब्बड़ कुकुड	बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सूंघि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	करू नीक, भोगू नीक	ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखन इकड़ू स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मशीन सभ
टिंग टोंग	पाउ-म्याऊ-वाह	कुकुड़क एकटा दिन	हमरा नीक लगैए	रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसि	लाल	भूत-प्रेतक	आउ पए	कतऽ अछि ई अंक

यौ ने!	बरसाती	नाट्यशाला	र गानी	५?

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC MAITHILI OPTIONAL- गजेन्द्र ठाकुर

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-“ए”, क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-1- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

TOPIC 1 - गजेन्द्र ठाकुर

....

....

....

....

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह [विदेह www.videha.co.in पेटार]

मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन (विदेह ई-पत्रिकासँ बीछल रचना)

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]देवनागरी

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- दोसर संस्करण देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६] तिरहुता

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]देवनागरी

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७] तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]देवनागरी

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८] तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]देवनागरी

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९] तिरहुता

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]देवनागरी

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११	*विदेह:सदेह १२*	*विदेह:सदेह १३*	*विदेह:सदेह १४*	*विदेह:सदेह १५*

विदेह:सदेह १६	*विदेह:सदेह १७*	*विदेह:सदेह १८*	*विदेह:सदेह १९*	*विदेह:सदेह २०*
विदेह:सदेह २१	*विदेह:सदेह २२*	*विदेह:सदेह २३*	*विदेह:सदेह २४*	*विदेह:सदेह २५*

VIDEHA-SADEHA

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

“विदेह” ई-पत्रिकाक पुरान अंक: देवनागरी वर्सन/ मिथिलाक्षर वर्सन/ ब्रेल वर्सन (अंक ००१ सँ १४९)

VIDEHA 150-250

VIDEHA 251-ONWARDS

GOOGLE VIDEHA BOOKS
AUDIO ARCHIVE FOLDER
MITHILA_PAINTING-MODERN ART-PHOTOS
VIDEHA OLD ISSUES FOLDER
VIDEHA CLASSICAL SITES FOLDER

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र १७ टा पी.डी.एफ. फाइलमे)

दूषण पंजी

मोदानन्द झा शाखा पंजी

मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन

प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल)

उतेढ़ पंजी

पनिचोभे बीरपुर

दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि

छोटी झा पुस्तक निर्देशिका

पत्र पंजी

मूलग्राम पंजी

मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी

मूल पंजी-२

मूल पंजी-३

मूल पंजी-४

मूल पंजी-५

मूल पंजी-६

मूल पंजी-७

....

....

....

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)
जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध
जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili_English_Dictionary_Vol.I

MaithiliEnglishDictionary_Vol.II_GajendraThakur

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

VIDEHA ENGLISH MAITHILI DICTIONARY

English-Maithili Computer Dictionary

....